# राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत अखिल भारतीय तथा विशेपत राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भापानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

*प्रधान सम्पादक*

**पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य**

सम्मान्य सचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी,
निवृत्त सम्मान्य नियामक ( ऑनरेरि डायरेक्टर ),
भारतीय विद्याभवन, बम्बई, प्रधान सम्पादक,
सिंघी जैन ग्रन्थमाला इत्यादि

**ग्रन्थाङ्क ४६**

मुंहता नैणसी कृत

# मुंहता नैणसीरी ख्यात

## भाग २

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

**सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान**

जोधपुर ( राजस्थान )

मुंहता नैणसी कृत

# मुंहता नैणसीरी ख्यात

## भाग २

सम्पादक

श्री बदरीप्रसाद साकरिया

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

**सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान**

जोधपुर ( राजस्थान )

| | | |
|---|---|---|
| विक्रमाब्द २०१८ | भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८३ | ख्रिस्ताब्द १९६२ |
| प्रथमावृत्ति ७५० | | मूल्य ९.५० |

मुद्रक– श्री हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर

RAJASTHAN PURATANA GRANTHAMALA

PUBLISHED BY THE GOVERNMENT OF RAJASTHAN

A series devoted to the Publication of Sanskrit, Prakrit, Ap abhramsa, Old Rajasthani-Gujarati and Old Hindi works pertaining to India in general and Rajasthan in particular

*

GENERAL EDITOR

PADMASHREE JIN VIJAYA MUNI, PURATATTVACHARYA

Honorary Director, Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur
Honorary Member of the German Oriental Society, Germany,
Retired Honorary Director, Bharatiya Vidya Bhawan, Bombay,
General Editor, Singhi Jain Series etc. etc.

* *

NO. 49

# MUNHATA NAINSIRI KHYAT

of Munhata Nainsi

Part-Second

* * *

*Published*

*Under the Orders of the Government of Rajasthan*

*By*

The Hon Director, Rajasthan Prachya Vidya Pratisthana
( Rajasthan Oriental Research Institute )
JODHPUR ( RAJASTHAN )

*V S 2018* ]  [ *1962 A D*

RAJASTHAN PURATANA GRANTHAMALA

*General Editor* - Padmashree Jin Vijaya Muni, Puratattvacharya
[ Honorary Director, Rajasthan Prachyavidya Pratisthan, Jodhpur ]

# MUNHATA NAINSI-RI KHYAT

[ Rajasthani ]

## Second Part

*Published by*
Rajasthan Prachyavidya Pratisthana
[ The Rajasthan Oriental Research Institute ]
Government of Rajasthan
JODHPUR

*V S 2018* ]  [ *1962 A D*

## सञ्चालकीय वक्तव्य

मुहता नैणसी विरचित ख्यातके प्रथम भागका प्रकाशन राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाके ४८ वे ग्रन्थाङ्कके रूपमे किया जा चुका है। अब उक्त ख्यात का यह द्वितीय भाग प्रस्तुत किया जा रहा है।

'मुहता नैणसीरी ख्यात' राजस्थानी भाषामे लिखित गद्यकी एक महत्त्वपूर्ण रचना है और इसके पूर्ण रूपेण प्रकाशित होने पर अनेक वर्षोसे अनुभव किये जाने वाले एक अभावकी पूर्ति हो जावेगी। ऐतिहासिक दृष्टिसे भी यह रचना कम महत्त्वकी नही है। प्रस्तुत रचनामे मुख्यत राजस्थानका प्राचीन और मध्यकालीन इतिहास निगुम्फित है किन्तु प्रासङ्गिक रूपमे राजस्थानसे सलग्न प्रदेशो, जैसे गुजरात और मध्यभारत आदिकी इतिहास-विषयक पर्याप्त सामग्री भी उपलब्ध होती है। मुहता नैणसीकी इतिहास-विषयक व्यापक जानकारीका परिचय भी इस रचनासे प्राप्त होता है।

राजस्थानी भाषाके इस महत्वपूर्ण ग्रन्थका प्रकाशन भारत सरकारके वैज्ञानिक और सास्कृतिक मंत्रालयके सहयोगसे आधुनिक भारतीय भाषा-विकास-योजनाके अन्तर्गत किया जा रहा है, जिसके लिए हम भारत सरकारके प्रति आभार प्रकट करते है।

मुहता नैणसीरी ख्यातकी शेष सामग्री तृतीय भागके रूपमे शीघ्र ही प्रकाशित करनेका प्रयत्न चालू है। ग्रन्थगत नामानुक्रमणिका और सम्पादकीय प्रस्तावना आदि भी ग्रथके तृतीय भागमे ही प्रकाशित किये जावेंगे।

जोधपुर
ता० ३ अप्रेल, १९६२ ई.

**मुनि जिनविजय**
सम्मान्य सञ्चालक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
**जोधपुर.**

॥ ॐ शिव ॥

# विषयानुक्रमणिका

# मुंहता नैणसीरी ख्यात

### भाग २

## अथ ख्यात भाटियांरी लिख्यते

अै जदुवंशी कहीजै[1]। वज्रनाभ प्रदुमनरो वेटो, श्रीकृष्णदेवरो पोतरो[2]—

१ खीर।
२ खडेर।
१ जादव वाघोर करोली वाळा।
१ जादव गिरनाररा धणी।
१ साम श्री कृष्णदेवरो वेटो। जाडेचा सामा कहावै। हाल रायधण[3]।

सरवहिया अरधविंवरा[4]—

१ वोटी।
१ खीटवाळ।

रावळ वछु। १ पाहु वापै रावळरो। वापो रावळ वछुरो—

१ सिंघराव वछुरो।
१ रावळ विजैराव चूडाळो।

चूडा समारो उतन[5] भडियाद, काप, धोळहरा। अै तीनूं चूडा समारै वैसणा गाम छै, परगनै धाधूकै लागै[6]। भडियाद हमार[7] भोज भीव। चूडा समारो वेटो सवळसिंघ देवीदास धवळहरै वसै छै।

राणा राजपाळरा पोतरा—राणो राजपाळ सागारो। सागो मझमरावरो—

१ वुध।
१ लहुवा।
१ छेना।
१ छीकरण।
१ पाहोड।
१ अटेरण।
१ लपोड।
१ हईया।
१ भईया[8]।
१ जैतुग तणुरो। तणु वडा केहररो। विकूपुर, जैसळमेर, वीकानेर विचै।
१ अभोहरिया रावळ दुसाझरा[9]। पीरोजशाह

---

1 ये यदुवंशी कहे जाते हैं। 2 पोता। 3 श्री कृष्णदेवका पुत्र साम्ब, जिसके वंशज सामा-जाडेचा कहलाते हैं। वर्तमानमे रायधण इस शाखाका है। 4 अर्द्धबिम्बके वंशज सरवहिया कहलाते है। 5 निवास स्थान। 6 ये तीनो गांव चूडा समाकी वैठकके है, जिनका परगना धंधुका लगता है। 7 अभी। 8 दूसरी कई प्रतियोमे यह नाम नही है। 9 रावल दुसाझके वंशज अभोहरिया भाटी।

पातसाहरो मामो भाटी दोलतखान खधारवाळो किलेदार ।

लाजो विजैरावरा[1]–

१ राहड जैसळमेर ।

१ मगरिया, इणरा थळ गाव ४० मुसलमान हुवा[2] ।

१ गाहडरो गाव बीकानेर कनै गाहिडवाळो[3] ।

रावळ सालवाहनरा–

१ वानर, इणारै जैसळमेररै देस गाव डाभलो[4] ।

१ कडवारै जैसळमेररो गाव भैसडो । रावळ काल्हणरा पोतरा[5] ।

१ सीहड, साल, वीकमसी, लखमसी, श्रै काल्हणरा । जैसळमेर वडा रजपूत । परधान गाव ब्रह्मसर[6]।

१ जैचद लखमसी काल्हण ।

१ भुणकमल झाझण काल्हण जैसळमेर विकूपुर ।

१ जसहड, पाल्हण, काल्हण, इणारो वडो धडो[7] । रावळ लखमणरा पोतरा ।

१ रूपसी, जैसळमेर गावका छै[8] ।

१ राजधर ।

१ उरगो वैरसीरो सावडा-वाळो ।

१ सतो वैरसीरो । रावळ लखणसेनरा पोतरा ।

१ मूळपसाव ।

१ लूणराव ।

रावळ केहररा पोतरा–

१ सावतसी केहररो ।

१ मेहाजळ केहररो ।

१ जैसो कलकरणरो । कलकरण केहररो ।

रावळ केलणरा–

१ विकूपुररा ।

---

1 लाजा विजयरावके वशज । 2 मगरिया (मगलिया), इसके थलके (थरके) ४० गाव एक साथ मुसलमान हो गये । 3 गाहडके नामसे बीकानेरके पास गाहिडवाला गाव है । 4 वानर, इनका जैसलमेरमे डाभला गाव। 5 रावल काल्हणके पोते कडवा भाटियोके जैललमेरका गाव भैसडा । दूसरी प्रतियोमे कडवोका उल्लेख नही है । उनमे भैसडा गाव वानरोका तथा वानर राव काल्हणके पोते बताये गये है । 6 सीहड, साल, बीकमसी और लखमसी ये काल्हणके वशज । जैसलमेरमे वडे राजपूत । इनका प्रधान गाव ब्रह्मसर । 7 इनका समूह वडा । 8 रूपसी जैसलमेरके काछा गावमे ।

१ पुगळिया ।
१ वैरसल पुरिया ।
१ किसनावत ।
१ खीवा ।
१ नेतावत रिणमलरा पोतरा ।
१ खरडवाळा केलण ।
१ अकै केलणोतरा पोतरा सेखासर[1] ।

रावळ राजरा पोतरा–
१ उरजनोत ।
१ हमीर ।

राणा रतनसीरा पोतरा–
१ ऊनड ।
१ कीता गोगलो ।
सोमसीरा पोतरा ।

## वात भाटियांरी

अै सोमवसी, एकादसमे तीसमे अध्यायमे जादवस्थलमे इतरा जादवारा वस कह्या[2] । प्रभासखेत्र श्रीकृष्णजी नावै वैस पधारिया समुद्र माहे[3] । सरस्वती नदी प्रभासखेत्र छै, तिणरो महातम कह्यो छै[4] ।

विगत–

१ दसार्क । १ विष्ण । १ अधक । १ भोज । १ सत्वात ।
१ मधु । १ अर्वुद । १ माथुर । १ सूरसेन । १ कुत ।
१ विसरजन । १ कुकर ।

अथ जैसळमेररै देसरी हकीकत वीठळदास लिखाई[5]–

जैसळमेरथी खडाळरो छेह[6] कोस १० कणवण देवडावाळो । नै[7] पैलो[8] छेह ताणुकोट जैसळमेरथी[9] कोस ४०, कोर डूगरसू कोस ५०, तिणमे[10] अतरा[11] गाव खडाळमे छै ।

---

1 केलणका बेटा अकाके पोते शेखासरमे । 2 ये भाटी सोमवशी कहलाते हैं । महाभारतके एकादश और तीसवे अध्यायमे यादवस्थलीके वर्णनमे यादवोके इतने वश कहे है । 3,4 उसमे प्रभासक्षेत्र श्रीकृष्णजी नावमे बैठ कर समुद्रमे पधारे और सरस्वती नदी जो प्रभासक्षेत्रमे है—उन सबका महात्म्य उसमे कहा गया है । 5 जैसलमेर देशका वृत्तान्त जो विट्ठलदासने लिखाया । 6 किनारा, सीमा । 7 और । 8 दूसरा, आगेका । 9 से । 10 जिसमे । 11 इतने ।

विगत खडाळरा गावारी–

१ खीरड खालनारी। १ खीवलसर वाभणारो खालसो रु० ४०००)रो।

१ टेहियो। १ डावर। १ नेहडाई। १ हाबुर। १ मुगाह। १ सपहर। १ देवो। १ सीतहळ। १ लवीह। १ भरो। १ दुजासी। १ मायथी। १ आकुवाई। १ तणोट। १ वाधडो। १ सापली। १ माडाऊ। १ सजडाऊ। १ खारी। १ घटियाली। १ दुजासर। १ आसो। १ कोळू। १ घोडाहडो। १ हडेल। १ फलीडी। १ देरासर। १ तणूसर।

इतरा जैसळमेररै उगवणनू गाव[1]–

१ वासणीपी। १ जेराइत। १ डाभळो। १ आकळ। १ पछवाळो। १ तई अईतरो। १ मोकळाइत। १ जेमु राणारो। १ जगिया। १ चाहड्। १ आहप। १ छोडो। १ आसणी कोट[2]। १ बोळो। १ वाहाळो। १ कोटडी। १ भभारो। १ आसलोई। १ वीभोतो। १ वसाड। १ गोयद। १ सावतसीरो गाव ईकड। १ खुहडी। १ मालगाडो। १ काणाऊ। १ कुछाऊ। १ खत्रियाळो। १ आहाळो। १ टीवरियाळो। १ खडोरारो गाव। १ बालारो गाव। १ भावरी। १ रावतसर। १ लाणेलो। १ गोही। १ काछो। १ ब्रह्मसर। १ काणावद। १ कीलो डूगर। १ खवासरो। १ जीजियाकी। १ भादासर। १ रबीरो। १ गजिया गाव। १ हेकल। १ तेजसीरो गाव। १ चापासर। १ सोभेवो। १ अरजणियारो। १ थहीयायत। बुजेरो। खडीण। उनावा।

जैसलमेरथा[3] कोस ५ आथूणनू[4] काक नदीरो पाणी आवै।

---

1 इतने गाव जैसलमेरकी पूर्व दिशामे। 2 अन्य दो प्रतियोमें 'आसणीको नीट' लिखा है। 3 से। 4 पश्चिम दिशाको।

कोटडो, छहोटणरा भाखरारो[1] पाणी आवै तिणसूं[2] भरीजै, पाखती[3] च्यारू तरफ भाखर छै, नै वीच ऊंडाळ छै[4]। कोस ३ वीच पाणीसूं भरीजै, तद दस पनरै वास पाणी चढै[5]। पाणी निकलणरी ठोड को नहीं[6]। सवळो भरीजै तद हासल इजाफा हुवै[7]। काठा गोहूं मण १५००० वीज वावै तिकै साठा नीपजै[8]। वीज वावै तितरो भोग आवै[9]। वीजी लागत घणी छै[10]। पाणी घटै तद माहै वेरी दोय सौ, च्यारसौ आग्वारी सी हुवै छै[11]। ऊपर छोतरा, गोहूं, तरकारी हुवै। पाणी मीठो। विणा,[12] फागुणिया मूग, जवार, सेलडी सोह[13] हुवै। तिण ऊपर गाव १२ वाभणारा[14] छै। हैसा ५, दोढवाड कूतो[15]।

गावारी विगत–

१ खीवो। १ थुळाया। १ वोधरी। १ दमोदर। १ नीभिया। १ गलापडी। १ सेलावट। १ कूभाररो कोट। १ जिगिया। १ नीनरिया। १ जाळिया। १ घामट।–१२

मुहारागै खडीणरो उनाव[16] जैसळमेरसूं कोस ६ तथा ७ दिखणनूं वडी ठोड कोस ५ माहै उनाव भरीजै। पाखतीरा भाखरारो पाणी आवै। माहै गोहूं मण ५००० वीज वहै तितरो भोग अखै[17]। पाणी निठै[18] जदी वेरा[19] माहै २० तथा २५ वधायोडा, पाणी घणो मीठो। तिणा कोसीटा[20] गोहूं, छोतरा, तरकारी, सेलडी[21] हुवै। वडी हासलरी ठोड। तिण ऊपर गाव ३ वाभणारा–

---

1 पहाडोंका। 2 जिससे। 3 पासमे। 4 और वीचकी भूमि गहरी (ऊंडी) है। 5 वीचकी उस भूमिका भाग ३ कोस तक भर जाता है तब उसकी गहराई दससे १५ वास तक हो जाती है। 6 पानी निकलनेकी जगह कही नही है। 7 खूब भर जाता है तब हासिल अधिक आता है। 8 १५००० मन काठे-गेहूंओका वीज वोया जाता है जो साठा (साठ गुना) उत्पन्न होता है। 9 जितना वीज वोया जाता है उतने ही भोगके (एक करके) रूपमे गेहूं प्राप्त होते है। 10 दूसरे करोंकी आमदनी भी वहुत है। 11 जव पानी घट जाता है तव उसमे दोसौ-चारसौ कुइयोमे सिचाई होती है। 12 कपास। 13 सव। 14 ब्राह्मणोके। 15 ड्योटा कूता (अनुमानित उपज) किया जाकर उसका पाचवा भाग लिया जाता है। 16 एक जल-स्थानका नाम। 17 उसम ५००० मन गेहूं वोये जाते है और इतना ही भोग आता है। 18 खतम हो जाता है। 19 कुए। 20 चरसे द्वारा सिचाई किये जाने वाले कुए। 21 गन्ना।

१ गोरहरो वाभणारो ।

१ जाभोरो वाभणारो ।

१ सीयळारो ।

सीयळ पवार लुद्रवारी रैत ज्यो भोग दै[1] । मुहार रावळ भीमरी वार माहै खेतसी मालदेग्रोतनू थो[2] । पछै रावळ मनोहरदासरा मान खीमावतनू पटै दियो थो ।

अतरा[3] गाव कोटडारा जैसळमेर वासै[4] राणा चापा पछै जको[5] रावळ टीकै बैठो तिकै[6] लिया–

१ मांडाही । १ वीजोराही । १ कौडीवास । १ रिडी ।
१ पेथोडाई । १ सीतहडाई । १ भूवो । १ धनवो । १ ओळो ।
१ वापणसर । १ जालेळी । १ डागरी । १ सागण ।
१ सोळियाई । १ पीपळवो । १ नेगरडो । १ भागीनडो ।
१ ओडो । १ आरम । १ चोचरो । १ जानरो । १ कानासर ।

जैसळमेरथी[7] कोस ७० सोढारो ऊमरकोट छै । तिण माहै कोस ३५ आधोफरै[8] दागजाळ छै, तठै[9] ऊमरकोट जैसळमेर सीव[10] छै । तठै नजीक[11] गाव १ भाभेरो कोस १८ ।

भूण कामळारो उतन[12] । १ दहोसतोय भाटी सतारो जैसळमेरथा[13] कोस २२ । १ फूलियो भाटी मेहाजळरो जैसळमेरथा कोस ३० तिण[14] आगै कोस ५ दागजाळ छै ।

जैसळमेररा देसरी हकीकत मु॥ लखै मडाई,[15] समत १७००रा माह वदी ९ मुकाम मेडतै ।

---

1 सीयल पँवार भी लुद्रवाकी प्रजाकी भाति भोग (नाजके रूपमे दिया जाने वाला एक कृषि-कर) देते है । 2 मुहार गाव रावल भीमके समय खेतसी मालदेग्रोतको मिला हुआ था । 3 इतने । 4 वादमे, पीछे । 5 जो । 6 उसने । 7 से । 8 आधी दूरीमे, ठीक वीचमे । 9 जहा । 10 सीमा । 11 पास । 12 भूण गाव कामलोका निवास-स्थान । 13 से । 14 उसके । 15 लिखवाई ।

मालरो वाव[1]–

कसवामे महाजनारै घर १ दीठ दुगाणी[2] ८।

महाजनारा घर हजार २५००–रु० ५००)री ठोड[3]।

५००···············।

१५०० ओसवाळारा।

५०० महेसरीयारा।

दीवाळी होळीरै मिलणरा रु० ५००) गुळरा पेसकसी मगळीकरी[4]। इण भात रु० १५०००) रजपूत मुसलमान खालसैरा सिगळै[5] देसरा आवै। देसवाळी लोगांरै जेजियो[6] नै वावरा करी रु० ४०००)री ठोड २००००)।

दाण तुलावट[7]—

दाणगे ऊठ १ तोल २०रो मण वारै वहतीवाण[8]–

| | | | |
|---|---|---|---|
| रेसम | रु० ३५)। | रुई | रु० ५)। |
| मजीठ | रु० ५)। | मैण[11] | रु० ६)। |
| घ्रत | रु० ५)। | फीटकडी | रु० ४)। |
| खारक[9] | रु० ५)। | लाख लोवडी[12] | रु० ६)। |
| नाळेर[10] | रु० ५)। | किराणारै[13] ऊठ | रु० ३)। |

वीकानेररै देसथा वहै तिणनू रु० ।।।) देसमे वहतीवांणनू लागै[14]।

घोडै १ दीठ रु० ४) वहतीवाण कारवान नै लागै[15] सरव रु० १५०००)री ठोड वरस १री तुलावट विकरी। कसवै वस्तु विकै

1 माल पर लगने वाला कर। 2 कस्बेमे महाजनोंके प्रति घर ८ दुगानी लगती है। (दुगानी=एक प्राचीन सिक्का)। 3 महाजनोंके घर २५०० जिनमें रु० ५००) निश्चित कर। 4 दिवाली और होली आदि मांगलिक त्योहारो पर गुडके नामसे लिखी जाने वाली भेंट। 5 सब। 6 जजिया। 7 तुलाई पर सायर महसूल। 8 सीमामे होकर चलनेका महसूल। 9 छुहारा। 10 नारियल। 11 मोम। 12 लाखसे रंगा हुआ (लाखी रंगका) लोवडी वस्त्र, अथवा लाख और लोवटी वस्त्र। 13 किराना। 14 वीकानेरके देशमे सीमामे चलने वालोंसे वहतीवान कर बारह आने लगते हैं। 15 कारवांके साथ प्रति घोडेके रु ४) वहतीवान लगता है।

तिणरो मण १ सेर १ नै रु० ४०) पीरोजी १ रु० ५,०००)री ठोड ।

टकसाळ व्याजमे हैसो[1] ४, मुदत उपरत[2] हुवा हैसो ८ तिणरा रु० २०००)री ठोड ।

परचूण पाट १ खतरी, कसाई तवाखु और ही बाब रु० १०००)।

खारो, गूगळ, लूण इण भातरी रकम ४ तथा ५ छै। रु० ८०००)री ठोड रु० ३०००), १०००), ४०००)।

रु० ३१००) गावारो हासल। बाभणीके[3] गावै लागै–गाव ६० तथा ७० छै। भोग दे, हैसो ५मो, मणरो दोढ मण लीजै। सावणु हैंसो ४ तोल २०रो भोग म० २०००) ऊनाळी[4] हैसो ५मो, मणरो दोढ मण लीजै। भोग म० १०००) देसवाळिया लोगारै गाव छै तिणामे बीजो[5] रजपूतानू पटै चाकरी करै[6]।

जोड नाचणो जैसळमेरथा[7] कोस २ ऊगवणनू[8] कोस १, घास करड, ग्रैहखरो। जैसळमेरथा दिखणनू कोस २ घास सेवण, कोस २रै फेर[9]।

खरणो, लुद्रवा कनै[10]। घोडा, ग्राव, वडी वाकी ठोड,[11] मुहारा दिसी,[12] जैसळमेरथा कोस १६, खडाळामे।

ग्रासणीकोट गावथा कोस २ घास सेवण। वाभणीका गाव कोटडा दिसै नै ग्राथूणनू[13] जैसळमेररै परै।

१ वीझोळाई। १ सीतहळाई। १ कौडियावास। १ माहिडिहाई। १ पेथेडाई। १ उनो। १ रिडियो। १ वाझनाइयो। १ धनुवो। १ बुचकठो। १ लोलापुडी। १ लाणेलो।

खाडररी तरफ जैसळमेरथा ग्राथूण दिसी–

१ जेमुराणो। १ गुलियो। १ कुळधर। १ चदेरियारो गाव।

---

1 हिस्सा। 2 उपरान्त। 3 ब्राह्मणोके। 4 चैती फसल। 5 दूसरा। 6 राजपूतोंके जिम्मे चाकरी करना। 7 से। 8 पूर्व दिशाको। 9 दो कोसके फैलावमे। 10 पास। 11 घोडो और पशुग्रोके लिये बहुत अच्छी जगह। 12 मुहार गावकी ओर। 13 पश्चिम दिशाकी ओर।

१ खेतपाळियारो गाव । १ टीबो । १ देवो । १ नेहडाई । १ टेईयो । १ भानियो । १ जानड । १ पोटळियो ।

जैसळमेरथी पोकरणरी तरफ ऊगवणनू—

१ वासणपी । १ आसणीकोट कोस १२ ।

## वात

भाटियारी पीढी चारण रतनू गोकळै इण भांत मडाई[1]—

१ आद श्रीनारायण ।
२ कमळ ।
३ ब्रह्मा ।
४ अत्रि ।
५ सोम ।
६ बुध ।
७ पुरूरवा ।
८ प्राग ।
९ परीअाइत ।
१० निरघोस ।
११ राजा जजात[2] ।
१२ राजा जदु ।
१३ जादम[3] ।
१४ सहस्रार्जुन ।
१५ सूरसेन ।
१६ वसुदेव ।
१७ श्री कृष्णदेव ।
१८ प्रद्युम्न । १८ साम्ब ।
१९ अनिरुद्ध ।
२० वज्रनाभ ।
२१ प्रेतारथ ।
२२ रुचिरा ।
२३ पदमरिप[4] ।
२४ गोतम ।
२५ सहजसेन ।
२६ जैतसेन ।
२७ अरधविव ।
२८ राजा सालवाहन । बोटी नै खोटीवाल डीडवांणै कनै[5] ।
२९ भाटी नै राजा रीसाळू भाई ।
३० वछराव ।
३१ विजैराव ।
३२ मभमराव ।
३३ मगळराव ।

---

1 गोकुल रतनू चारणने भाटियोंकी पीढिया इस प्रकार लिखवाई । 2 ययाति । 3 यादव । 4 पद्म ऋषि । 5 राजा शालिवाहन जिसके वंशमेसे बोटी और खोटीवाल शाखाएँ चली जो डीडवानाके पास रहते है ।

३४ केहर वडो, जिण केहरोर वसायो[1] ।
३५ तणु, जिण तणोट वसायो ।
३५ विजैराव चूडाळो, केहर वडारो[2] ।
३६ देवराव, तिण देरावर वसायो ।
३७ मुध ।
३८ वछु । अणघा, पाहू, वापैरावरो सिंघराव[3]।
३९ दुसाझ ।
४० रावळ जेसळ दुसाझरो।
४० देसळ, जिणरा अभाहरिया भाटी, अभोहर वीठाडा कनै । औ पीरोसाह पातसाहरो मामो । भाटी दौलतखान[4] ।
४१ रावळ सालवाहन ।
४१ रावळ कालण जेसळरो। वानर भाटी डाभला वाळा । भेसडेवा वासणपी वाळा ।
४२ रावळ चाचगदे ।
४२ तेजो रावळ कालणरो।
४३ रावळ करण ।
४४ रावळ जैतसी वडो ।
४५ रावळ मूळराज ।
४५ राणो रतनसी जैतसीरो।
४६ रावळ घडसी रतनसीरो।
४७ रावळ केहर देवराजरो।
४८ रावळ लखमण केहररो।

भाटियारै नव गढ कहीजै, तिणारा नाव[5]—

१ जैसळमेर । १ पूगळ । १ विकूपुर । १ वरसळपुर ।
१ ममणवाहण । १ मारोट । १ देरावर । १ आसणीकोट ।
१ केहरोर ।

रावळ वछु मुधरो, आक, ३८—

३९ बापो रावळ तिणरो बेटो पाहू । इणरा इतरा गाव जैसळमेररै देस,[6] गाव ३—

---

1 केहर वडा जिसने कहरोर वसाया । 2 विजयराव चूडाला वडे केहरका बेटा । 3 राव बापाके बेटे अणघा, पाहू और सिंहराव । 4 देसलके वशज अभाहरिया भाटी जो अभोहर वीहाडाके (भटिडाके) पास रहते है । यह बादशाह फिरोजशाहका मामा था । भाटी दौलतखा इसी शाखाका था । 5 भाटियोके नौ गढ कहे जाते हैं, उनके नाम ये हैं । 6 इसके इतने गाव जैसलमेरके देशमे है ।

१ चीभोतो । १ कोटहडो । १ सेतोराई जैसळमेरथा कोस ८ ।

किसनावत भाटियारा गाव आगै तो पूगळ वासै हुता,[1] हमै तो वीकानेर वासै छै[2] । अै गांव ४० तथा ५० पाहुवैरो कहावै[3]–

१ खीरवारो । १ राणेहर । १ रायमलवाळी । १ हापासर । १ मोटासर ।

४९ रावळ वैरसी लखमणरो ।
५० रावळ चाचगदे वैरसीरो । ऊमरकोटरै सोढै मारियो[4] ।
५१ रावळ देवीदास चाचारो ।
५२ रावळ जैतसी ।
रावळ लूणकरण ।
रावळ मालदे ।
हरराज । भानीदास । सिंघ ।
रावळ हरराज ।
रावळ भीम ।
रावळ कल्याणमल ।
अरजन । भाखरसी ।
सुरताण ।
रावळ मनोहरदास कलाउत ।

इतरी साखरा राणा राजपाळरा वेटा-पोतरा[5]–

१ वुध । १ पोहड । १ छेना । १ छीकण । १ लहुवा । १ अटेरण । १ लपोड़ । १ हईया । १ भईया ।

राणो राजपाळ साणो, मभमराव, मगळराव, विजैराव, तिको मुथरा राजथांन हुतो[6] । राजपाळनू मुगलां मथुरा मारियो तरै राजपाळरो वेटो वुध उठाथी[7] छाडनै खरड़ आय वसियो। तिका खरडवुधेरो अजेस कहावै[8] । तिण वासै गाव १४० कहीजता । आ ठौड पोकरण-फळोधी नजीक ।

वुध राजपाळरो वेटो वाप कनै[9] आय वसियो । तिणरो वेटो

---

1 पूगलके पीछे थे । 2 अब वीकानेरके पीछे (अधिकारमे) हैं । 3 इन ४० व ५० गावोका समूह 'पाहुवेरो' कहलाता है । 4रावल चाचगदेव वैरसीका वेटा । इसको उमरकोटके सोढोने मारा । 5 राणा राजपालके इन वेटे-पोतोंसे इन्ही नामोकी शाखाए चली । 6 इनका राजस्थान मथुरामे था । 7 वहासे । 8 अभी तक वह 'वुवेरो खरड' कहलाती है । 9 पास ।

कमो घोरधार बापसू कोस १ वावडी तठै[1] वसतो, तिको राणा रूपडै पडिहाररी बेटी परणियो थो ।

खरडरा गाव–

१ वाप । १ बावडो । १ नींबली । १ कानासर । १ चूनी । १ लीकडा । १ भदळो । १ अहवा । १ नाचणो । १ सतिहाहो । १ घटयाळी । १ वारू । १ कमळो । १ सेखासर । १ खीरवो । १ झाडहर । १ बूटहर । १ अतरगढो ।

आ[2] खरड कमो भोगवतो[3] । पछै राणै रूपडै चूक करनै[4] कमानू मारनै पडिहारै खरड लीवी । तठा पछै रावळ केलण विकूपुर पूगळ धणी हुवो, नै मूवो जदी टीको रिणमल केलणोतनू हुवो[5] । तिको रिणमल मूवो तरै टीकै जगमाल रिणमलोत बैठो । पछै जगमालरो भाई अचळो रिणमलोत मुलताण जाय तुरकारो कटक ले आयो । जगमालनू मारनै अचळो आपरा वडा भाई गोपानू पाट विकूपुररै बैसाणियो,[6] तरै जगमालरो बेटो जैतो पडिहारारो भाणेज हुतो[7] सु नीबलाया नानाणै[8] वसियो । तठा पछै पडिहार दिन दिन गळता गया[9] अै दिन दिन वधता गया । पडिहार भूका,[10] तरै इणे पैहली घोडा ऊठ दीठा[11] तिकै लिया । पछै क्यू देनै गाव लिया । पछै पडिहार तूट गया[12] । सारी खरड केलणा हेठै आई[13] । आ खरड विकूपुरसू जुदी । अै जैसळमेर जुदी चाकरी करै, सु पडिहार अजै इणा गावा माहै रहै छै । वडा-वडा तळाव, कोहर इणा गावा पडिहारारा खणाया छै । मुदै[14] गाव छारू, तिणमे कोहर[15] १२, वडो कोहर १ हेमराजसर पडिहारारो खणायो[16] ।

पोहड राणा राजपाळरो । आगै इणारै धणी धरती हुती[17] । इतरा कोट पोहडरा[18]–

---

1 वहा । 2 यह । 3 उपभोग करता था । 4 दगा करके । 5 और जब मर गया तब टीका केलणके वेटे रिणमलको हुआ । 6 वैठाया । 7 था । 8 ननिहाल । 9 जिसके बाद पडिहार दिन-दिन कमजोर होते गये । 10 असमर्थ, गरीब । 11 देखे । 12 पीछे पडिहार कमजोर हो गये । 13 सारा खरड प्रदेश केलण भाटियोके अधिकारमे आ गया । 14 मुख्य । 15 कुए । 16 खुदवाया हुआ । 17 थी । 18 पोहडोके इतने कोट है ।

१ नाहवार । १ वीझणोट । १ नांढणौ । १ कोटडो । १ काळो डूगर । १ वछणोट । १ जेसूराणो । १ सापली । १ द्रेग ।

पोहड़ारै कोहेक[1] दिन कोटडो हुतो । नीभड पोहड कोटडै धणी हुतो, सु रावळ मालारै भैंस १ वेल नामा[2] हुती, तका कोटडारो गांव सिव, तिणरी वाड़ी[3] भैंस खाय जाय, तरै मालो वाडीरो धणी कोटडारा धणी नीभडनू पुकारियो, तरै उण वेल नावै भैंस वाढी नीभड,[4] तिण ऊपर पोहड नै राठोडै वेढ हुई[5] । पछै रावळ मालै द्रेग ऊपर हईया मारिया, सु हिंदू हुता । पछै राणा राजपाळरा पोतरा पोहडरा भाई उण मामलै हईया पोहड भेळा माराणा[6] । रावळ मालानू उण मामलारो गीत छै तिण माहै नाव आणिया छै[7] ।

## वात रावळ घड़सीरी

रावळ घड़सी घणा दिनांसू जैसळमेर वोलायो छै । नै तद[8] धरती माहै हईया पोहड सवळा[9] माणस द्रेग रहै, सु रावळ घडसीनू को वदै न छै[10] । अमल मानै न छै[11] । पण पोहच सकै नही[12] । सु रावळ मालदेजी पिण हईयारै परणिया छै सु रावळजी हईगासू घणी मया[13] करै छै नै रावळ घड़सीनू पिण रावळ मालदेजीरी वेटी दी छै[14] सु रावळ घड़सी नै जगमाल मालावत सुख घणो,[15] सु रावळ मालदेजी देवीरी जात द्रेग आया छै । रावळ घडसी जगमाल मालावत साथै छै, सु रावळ घडसी जगमालनू कहै छै—"अै हईया पोहड द्रेग वसै छै, तिकै अै म्हानू लिगार मात्र वदै न छै[16] । अै जठा ताई[17] जैसळमेररी धरतीमे छै, तितरै[18] म्हानू धरतीरी आस

---

1 किसी दिन । 2 नामक । 3 वाटिका । 4 तब उस वेल नामक भैंसको नीभडने कटवा दी । 5 जिस पर पोहड और राठोडोमे लडाई हुई । 6 उस मामलेमे (लडाईमे) हईया और पोहड साथमे मारे गये । 7 उस लडाईमे रावल मालाका एक गीत (छद) है जिसमे उन सबके नाम दिये गये है । 8 उस समय । 9 सबल । 10 सो रावल घडसीको कोई कुछ नही समझता है । 11 उनके अमलको कोई नही मानता । 12 लेकिन वश नही चलता । 13 कृपा । 14 वेटी व्याही है । 15 प्रेम बहुत । 16 ये हमे किंचित भी नही मानते । 17 जब तक । 18 तब तक ।

काई[1] नही।" तरै जगमाल कह्यो–"इणानू मारण सहल छै,[2] पण इणासू रावळजी मया करै छै।" तरै घडसी बोहत दिलगीर हुवो। तरै जगमाल कह्यो–"जमैखातर राखो, इणानू तोत कर मारस्या[3]।" सु रावळजीनू सवारै[4] जाय कह्यो–"म्हे फलाणो गाव मारस्या सु राज साथनू हुकम करज्यो[5]।" सु रावळजी मालदेजी दातण-कुरळा-सिनान करनै दिन पोहर १ चढतो तठा ताउ[6] बोलता नही, सु जगमाल हईया पोहडानू दरबार बैसाणिया[7] नै पछै रावळजी कनै जायनै कान माहै कह्यो[8]–"म्हे फलाणा[9] गाव ऊपर चढा छा,[10] राज[11] साथनू हुकम करो।" तरै रावळजी साथनू बोलिया तो नही नै हाथसू हुकम कियो। तरै जगमालजी साथनू कह्यो–"सको उठो,[12] रावळजी हुकम कियो छै सु काम करा।" बाहिर आयनै साथनू कह्यो–"हईया पोहड मराया छै,"[13] सु कूट मारिया[14]।

गीत रावळ भीव हरराजोतनू भवनो रतनू वसावळीरो कहै[15]। असुधसो गीत छै[16]–

दादै जैतल करण दादै देदल वानगदेव,
वैरसीह लखमण विरद-विसाळ[17]।
मालाहरौ[18] मनमोट[19] मोटै पाट मेरगिर,
भाटिया भवाडै भला भीवजी भोवाळ[20]।।१
धरमी केहर देदे घडसी घेरणा धर,
छोगाळा रतन मूळू जैतसी छात्राळ[21]।
करन तेजल कुळ-कळाधारी[22] नवे कोट,

---

1 कुछ। 2 इनको मारना सहज है। 3 तसल्ली रखो, इनको धोखेसे मार देंगे। 4 दूसरे दिन प्रात काल। 5 हम अमुक गाव पर छापा मारेंगे अत आप साथको (सरदारोको) हुक्म दें। 6 तब तक। 7 हईया और पोहड भाटियोको दरबारमे बैठा दिया। 8 पासमे जाकर कानमे कहा। 9 अमुक। 10 चढाई करते है। 11 आप। 12 सभी उठो। 13 हईया और पोहडोको मारनेकी आज्ञा हुई है। 14 अत मार दिया। 15 रावल भीम हरराजोतके सबधमे रतनू भवनाने वशावलीका गीत कहा है। 16 गीत अशुद्धसा है। 17 विशाल विरुद वाला। 18 मालाका वशज। 19 उदार, दानी। 20 भूपाल। 21 छत्रधारी जैसलमेरके रावल। 22 प्रकाशमान्।

हराउत[1] खागधारी[2] रेणा - रखपाळ[3] ॥ २
चाच कालहण सालवाहण जसल चाह,
दुसाझ वछुह मुध देद विजपाळ।
हुवा तेणे वस हुवो हिंदूकार हरि हस,
राव राजा जाणै राणा रावळ रंढाळ[4] ॥ ३
तणु केहर मझमराव मागळराव तुगेस,
भूपाळे भूपाळ भाटीवटी[5] वखत-वडाळ[6]।
जादव जगत-जेठा[7] जेसाणै[8] भीमेण जेम[9],
जांणणा छतीस भाख साख उजवाळ ॥ ४
वाळ वुधतणा व्रद सोढाळ गज समाण,
वरज अनुरुध वस सूरत विसाळ।
प्रदमन कान्ह पाट परम भगत पूरो,
मुवरण सुजाण देह सोहै साखपाळ ॥ ५

भाटी छत्राळा कहीजै छै तिणारी[10] वात। समत १७०६रै फागुण सुद १५ आढा महेसदास किसनावत कही, जिणरा दोय भेद[11]—

१ रावळ टीकै वैसै[12] तरै[13] छत्र आपरै वारहटा माथै मडावै, सु दान छत्र दियो, तिण छात्राळा कहावै[14]।

१ कहवत यू छै[15]—एक गढा माहै दिली छत्र, एक गजनी छत्र, हिंदुसथानरा गढां ऊपर है जैसळमेर छत्र। तिण कारण भाटी छात्राळा कहीजै[16]।

## वात

भाटियांरी सोमवसी हरिवस पुरांण माहै इणारी[17] उतपत कही—

पहला तो कृष्णजीरा वेटा प्रदमनरी[18] औलाद, औ[19] भाटी गुणा गीता माहै कह्या छै। नै जाडेचा भुज नवानगररा धणी, औ

---

1 हराका वेटा। 2 खड्गधारी। 3 पृथ्वीकी रक्षा करने वाला। 4 जवरदस्त। 5 भाटी क्षत्रियोका देश, भाटीपा। 6 भाग्यशाली। 7 जगतमे श्रेष्ठ। 8 जैसलमेर। 9 जिस प्रकार। 10 जिनकी। 11 जिसके दो भेद है। 12 वैठे। 13 तव। 14 जिससे छात्राला कहाते है। 15 एक लोकोक्ति यो भी है। 16 हिन्दुस्थानके गढो ऊपर जैसलमेर छत्र है इस कारण भाटी छत्राला कहे जाते है। 17 इनकी। 18 प्रद्युम्नकी। 19 ये।

स्यामा कहावैं, तिकै कृष्णजीरा बेटा सामरी[1] ओलाद सुणिया छै।

कृष्णजीसू पीढी। राजा जदु पेहला हुवो छै, तिणासू[2] जदुवसी कहावै छै। नै भाटी, प्रदमन पछै पीढिया······हुवो छै, तिणरो नाव[3] भाटी हीज हुतो, तिणरा पोतरा सारा भाटी छै। मुथरा छूटी तरै[4] भाटी कोहेक दिने गूढो कर लखी जगळमे भटनेररी ठोड रह्या था। पछै ओ[5] सहर वसियो, तिणरो नाव भटनेर पडियो।

इतरी साख–

१ जाडेचा भुज, नवैनगररा धणी।

१ सरवहिया जूनैगढरा धणी।

१ चूडासमा भखछरा धणी। हमै धाधुकारै परगनै ग्रासिया[6] छै।

१ जादव वाघोर करोलीवाळा, वज्रनाभरी ओलाद। पीढी मगळराव मझमरावरो। ऊपरली पीढीसू तो पीढी ३३ छै पण अठा आगै डणसू हीज[7] आदरो[8] आक दियो छै।

१ मझमराव।

२ मगळराव। तिण मगळरावरो परवार–

३ सागम मगळरावरो।

४ राणो राजपाळ। केलणावाळी खरडरो धणी। तिणसू इतरी साख चाली[9]। राणो राजपाळ मुथरामे हुवो। पछै उठै मुगले धरती लीवी, तरै वुध नै बीजा[10] बेटा खरड आया। खरडरो नाव बुधेरो।

५ बुध।

५ लहुवो।

५ छेना, तिणारो[11] गाव १ जैसळमेररै देस गोरोटी लुद्रवै कनै। तळाई १ माणल देवाइतरा तळाव कनै चापा छैनैरी कराई, वीकानेररै देस छै। पाणी मास ८ तथा १० रहै।

---

1 माम्वकी। 2 जिससे। 3 जिसका नाम। 4 तब। 5 यह। 6 ग्रास रूपमे जागीर पाने वाला जागीरदार। 7 इससेही। 8 आदिका, शुरूका। 9 जिससे इतनी शाखाएँ प्रचलित हुई। 10 दूसरे। 11 जिनका।

५ छीकण।

५ आटेरण।

५ पहोड।

५ लपोड।

५ हईया।

३ केहर वडो, जिण आपरै नांवै[1] सिंधमे केहरोर नवो सहर वसायो।

४ तणु केहररो, वडो रजपूत हुवो। जिण आपरै नावै[2] खाडाळ माहै लणोट कोट करायो। पछै तणु ऊपर अरोड-भाखररी फौज आई, तरै तणु वाज मुवो[3]। तिणरा वेटा—

५ विजैराव चूडाळो।

५ जैतूग।

विजैराव चूडाळो निपट वडो रजपूत आखाडसिद्ध[4] हुवा तणुरो वेटो। इणरी ठाकुराई पैहली तो आछी ती, पछै तिण ऊपर सिंधरी वडी फोज आई नै विजैराव नीसरणवाळो[5] रजपूत नही, सु आप देवीजीरी घणी पूजा करतो, सु तरै देवीजीसू इछना[6] करी, मो आगै आ फोज भाजै तो हू तुरत देवीजीनै म्हारो माथो चाढू। मन माहै इछना की। वात किणहीनू जणाई नही। देवीजी रथ आया, वेढ हुई, विजैराव जीतो, मुगल भागा। पछै राव आपरै घरै आयो। आ वात किणहीसू जणाई नही[7]। आधी रातरा आप एकलोहीज ऊठ नै देवीजीरै देहुरै गयो। उठै जाय हाथ-पग धोयनै आपरी तरवार काढ नै कवळ-पूजारै वास्तै गळा ऊपर मेली[8]। तरै देवीजी कह्यो—"मा! मा[9]!" तरै इण जाणियो, वासै[10] कोई माणस आयो, सु तरवार परी कीवी[11]। बीजै फेरै वळै तरवार काढैनू माडी,[12] तरै देवीजी मोहडै वोलिया[13]— "तू विजैराव कवळपूजा मत करै, म्हेतो थारी पूजा मानी।" इतरो कहि अवोला रह्या[14]। तरै इण वळै काधैनू तरवार माडी। तरै

---

1 नाम पर। 2 जिसने अपने नाममे। 3 तव तणू युद्ध करके काम आया। 4 युद्ध-विशारद। 5 भाग कर निकल जाने वाला। 6 इच्छा, कामना। 7 यह वात किसीको प्रगट नही होने दी। 8 मस्तक अर्पण करके पूजा करनेके निमित्त (शिरच्छेदन करनेको) अपनी तलवार गर्दन पर रखी। 9 मत, नही। 10 पीछे। 11 सो तलवार हटा दी। 12,13 दूसरी वार पुन तलवारसे कवेका सन्धान किया तव देवीजी मुहसे वोली। 14 इतना कह कर चुप हो गई।

देवीजी वळै कह्यो–"तोनू म्हे बगसियो,[1] उबारियो,[2] तू कवळपूजा मत कर।" तरै इण कह्यो–"माताजी, यू तो हू मानू नही।" तरै माताजी आपरा हाथरी सोनारी चूड उतार नै विजैरावरै हाथै पैहराई नै सीख दी, कह्यो विजैरावनू–"घरे जा।" पछै घरे आयो। विजैरावरै हाथ देवीजी चूडी घाली तठाथी विजैराव चूडाळो कहायो।

तठा पछै वरहाहा रजपूत, कहै छै, पँवारा भिळै, तिणारी ठाकुराई ऊचदेरावर कनै छै, तठै हुती। नै खाडाळ माहै विजैराव रहै, सु भाटियारो साथ वरिहाहारा सासता[3] विगाड करै, सु इणानू जोर खारा लागै[4] तरै दीठो, बीजो तो पोहचा नही, नै दाव करा[5]। तरै विजैरावनू वरिहाहे नाळेर मेलियो। तरै आपरै नावै तो विजैराव न झालियो, नै देवराव वरसै ५मे बेटो हुतो, तिणरै नावै नाळेर झालियो, नै साहो थापियो[6]। रावळ आप नान्हा बेटारै कोडरै वास्तै आयो[7]। पैहलै दिन वीमाह[8] हुवो नै बीजै दिन गोठ की, नै साथ सदोरो हुवो, तठै चूक कर नै विजैरावनू माणस ७५०सू मारियो[8]। तरै देवराजरी धाय डाही थी,[9] तिण देवराजनू प्रौ॥ लूणानू सूपियो, कह्यो–"थारै साढ[10] १ हाथबाथ छै,[11] तिका नावजादीक छै। थे इतरो आपणा धणीरो बीज उबारो, ले नीसरो[12]।" तरै प्रौ॥ लूणो देवराजनू ले नीसरियो। वासै देवराजनू वरिहाहे डेरामे घणो ही जोयो पण लाधो नही[13]। तरै कह्यो–"मारगमे पग देखो, को ले नीसरियो न छै?" तरै उणै साढरा पग मारगमे दीठा। तरै कितरोहेक साथ वासै वाहर चढियो। सु साढ वाहर अपडावण सारीखी

---

1 तुझको हमने वख्शिश किया। 2 बचाया। 3 निरतर। 4 सो इनको बहुत ही बुरा लगता है। 5 तव देखा कि छल करनेके अतिरिक्त इनको पहुच (जीत) नही सकते। (बीजो=अतिरिक्त, अलावा)। 6 और विवाहका दिन निश्चित किया। 7 रावल स्वय अपने छोटे बेटेके लाड-प्यारके लिये साथमे आया। 8 वहा धोखा करके विजयराजको ७५० मनुष्योके साथ मार दिया। 9 तब देवराजकी धाय जो वडी समझदार थी। 10 ऊँटनी। 11 अपनी इच्छाके अनुसार तेज गतिसे चलाई जा सकने वाली है। 12 अपने स्वामीके बीजको (वशको) बचानेके लिये इतना काम करो और इनको लेकरके यहासे निकल जाओ। 13 परतु मिला नही।

नही[1]। प्रोहित लूणारा घर पोकरण कन्है था, तठै देवराजनू ले कुसळै आय पुहतो[2]। वरिहाहारो साथ वासै हुवो आयो। आयनै वाभण रतन लूणोतरानू पूछियो–"थे देवराजनू ले आया छो ?" तरै वाभण लाप कह्यो–"म्हे तो किणनू ही ले आया नही।" वळै उणानू कह्यो–"थारै मन माहै कू भरम रहै छै तो थे म्हारा घर जोवो[3]।" उणा फिर फिर सारा वस्तीरा डावडा[4] जोया। जोवता जोवता देवराजनू उणा माहै ओपरो सो दीठो,[5] तरै वाभणनू पूछियो–"ओ डावडो कुण छै ? ओपरो सो दीसै छै।" तरै वाभण कह्यो–"ओ म्हारो बेटो छै।" तरै उणै वरिहाहारा आदमिया कह्यो–"थाहरो बेटो पोतरो छै, थे भेळो ले जीमो, ज्यू म्हे परा जावा[6]।" तरै वाभण आप तो भेळो ले न वैठो नै वडा वेटा रतनानू देवराजरै भेळो वैसाणियो नै जीमियो। तरै वरहाहारा आदमी फिर गया। देवराज तो इण भात वचियो। तठा पछै वीजा वाभणा रतनरा भाईया रतननू पात माहिथा परो काढियो[7]। तरै रतन जोगी हुयनै सोरठ गयो। उण वाभणरी जात लूणोत नाव लाप वसुदेवरो सीहथळी गाव वसै छै[8]।

तठा पछै देवराज मोटो हुवो। तुरकारी चाकरी गयो। वासै रवारी सागी देवराजरो वरिहाहारै उठै गयो हुतो सु उण रवारीनै वरहाहारी वैर[9] रवाय भाई कह वतळायो तो मु उण रवारी आयारी खवर रवायनू हुई, तरै उण रवारीनू रवाय तेड लियो[10]। वात-विगत पूछनै वेटी हुरड दिखाय नै जीव दोहरो करण लागी, तरै रवारी मागी कह्यो–"थे किण वासतै जीव दोहरो करो छो[11] ?"

---

1 वह माढ (ऊटनी) पीछा करने वालोकी पकडमे आ जाय वैसी नही है। 2 पहुचा। 3 तुम्हारे मनमे कोई वहम है तो हमारे घर देख लो। 4 लडके, वच्चे। 5 देखते-देखते उन सवमे देवराजको कुछ अजनवी सा देखा। 6 तुम्हारे वेटे-पोतोमे से ही है तो तुम उसको अपने शामिल वैठा कर भोजन करो, ताकि (हमारा वहम मिट जाय और) हम चले जाय। 7 जिसके वाद दूसरे ब्राह्मणो और रत्नके भाइयोने पक्तिमेसे निकाल दिया (जाति-च्युत कर दिया)। 8 वह वसुदेवका पुत्र लाप नामसे लूणोत जातिका ब्राह्मण सीहथली (सिंह-स्थली) गावमे रहता है। 9 स्त्री। 10 तव उस रैवारीको अपने पास बुला लिया। 11 तुम किसलिये जी उदास कर रही हो।

तरै कह्यो–"बेटी इतरी[1] मोटी हुई, नै इणरै[2] वररी[3] खबर ही नही। न जाणा मुवो,[4] किना[5] कठी[6]ही जोगी सन्यासी हुय गयो।" तरै रबारी सागी कह्यो–"मोनू[7] वधाई दो, थाहरो[8] जमाई सलामत छै, मोटो हुवो छै, लायक छै।" तरै रवायनू घणो सुख हुवौ। पछै वणी अजीजी की—'जु किणही सूल देवराजनू अठै आणो,[9] तिका वात करो।" तरै इण कह्यो—"मोनू थाहरो, थारा धणीरो वेसास नावै[10]।" तरै रवाय घणा वचन किया। तरै रबारी सागी देवराजनू छानै[11] ले आयो। रवाय घर माहै ले राखियो। कितराहेक दिन वतीत हुआ। रवायरो धणी जाणै नही। पछै कितरैहेक दिने हुरडनू आधान रह्यो,[12] तरै बैर[13] किणही भात आपरा धणीनू समभाय नै बोलबध[14] लेनै देवराज आपरा धणीसू मिळायो। पछै देवराज को दिन उठैहीज[15] रहतो हुतो। उठै देवराज मैडीमे पोढै छै, तठै जोगी बाबो रैहतो। एकरसा[16] इणरो कूपो[17] रवायनू सूप गयो थो। भरम भागो न थो[18]। सु उण कूपा माहिथा टबको १ छण नै हेठो पडियो,[19] तिको देवराजरी कटारीरै लागो, सु लोहरी थी सु सोनारी हुई। तरै सवारै देवराव दीठी,[20] तरै विचार दीठो जु–"इण कूपा माहै काई बलाई छै।" तरै ओ कूपो देवराज उरो लेनै कबज कियो[21]। सवारै मैडो रातरी बाळदी,[22] तरै रवाय जाणियो–"कूपो माहै बळ गयो।" तठा पछै कितराहेक दिने उठाथी देवराव सुसरा सासूनू कह्यो–"मोनू लोक सको[23] 'हुरडवनो[24]' कह वतळावै छै। हू थासू जुदो वसीस[25]। तरै नदीरै पैलै काठै[26] जाय आपरो गूढो कर रह्यो। तिणनू ही लोग 'हुरडवाहण' कैहण लागा। तिका ठोड हमैही 'हुरडवाहण' कहीजै

---

1 इतनी। 2 इसके। 3 पतिकी। 4 मर गया। 5 अथवा। 6 कही। 7 मुझको। 8 तुम्हारा। 9 किसी भी प्रकार देवराजको यहा लाओ। 10 तुम्हारे पतिका विश्वास नही होता। 11 गुप्त। 12 हुरडको गर्भ रहा। 13 पत्नी। 14 वचन। 15 वहा ही। 16 एक बार। 17 कुप्पा। 18 सदेह दूर नही हुआ था (कुप्पेमे क्या वस्तु थी, इसका पता नही था) 19 उस कुप्पेमेसे छन कर एक बूद नीचे गिरी। 20 देखी। 21 तब इस कुप्पेको देवराजने लेकर अपने कब्जेमे कर लिया। 22 दूसरे दिन मैडीमे आग लगा दी। 23 सभी। 24 हुरडका पति। 25 मैं तुम्हारेसे अलग रहूँगा। 26 परले किनारे।

छै। तरै देवराज मनमे विचारियो—हूं अठै रहू तो म्हारा माईतारो नाव जाय[1]। तरै उठाथी छाड़ नै मामा भुटादेरावर नजीक[2] किणही ठोड रहता था तठै नजीक आय रह्यो, नैं मामारी घणी चाकरी करी, नै माल तो देवराज कन्है उण रस कूपा कर घणोई[3] छै। सासतो[4] पाच दस कोस फिर आवै। मु एक ठोड गढनू देखतो फिरै छै। सु किणहीक देवराजनू, जिण ठोड हमे देरावर छै, तिका ठोड वताई। कह्यो–"कोस ४०री सिंध दिसा उजाड छै, कोस ६० तथा ८० माड[5] दिसा उजाड छै, नै इण ठोड़ पाणी छै।" तरै मामा भुटारी घणी चाकरी करण माडी। मामो खुसी हुवो, कह्यो–"तूठो भाणेज[6]! क्यू मांग[7]। म्हे म्हारा घर सारू दा[8]।" तरै इण देवराज कह्यो–"ब्रह्म-वाचा, रुद्रवाचा, हू दिन दोय मांही विचार नै मागीस[9]।" तठा पछै दिन दोयनू कह्यो–"एक आसरा जोगी ठोड फलाणी जायगा पाऊ[10]।" तरै इण मामै कह्यो–"भली वात।" तरै उणरै परधानै भाइया-बधवा मामानू समझायो, कह्यो–"ओ किण घररो छोरू छै[11]। ओ अठै रह्यो थानू दुख देसी।" तरै वळै नटियो[12]। तरै देवराज कह्यो–"मैं कदै था कना धरती मागी थी[13]। थे थारी उचितसू मोनू तसलीम कराई थी[14]। हमै तो म्हारो थारो ना कह्यो भलो न दीसै। हमैं पाचै लोगै वात सुणी।" तरै भुटै कह्यो–"म्हे थोडी धरती देस्या।" तरै कह्यो–"जिका[15] राज[16] खुसी होय देस्यो तितरी म्हे माथै चढाड लेस्या[17]।" मामै लिखदी–एकण भैसरा चाम माहै आवै तितरी दीनी। पछै देवराज पटो माथै चढाय लियो। भुटै साथै आदमी दिया। तरै कह्यो–"राज! आदमियानू हुकम करो, हू भायसो[18]

---

1 मैं यदि यहा रहता हू तो मेरे माता-पिता का नाम चला जाता है। 2 नजदीक। 3 बहुत ही। 4 निरतर। 5 जैसलमेर प्रान्त (पहले मड्ड जैसलमेरसे अलग प्रदेश माना जाता था)। 6 भानजे! तेरे पर मै प्रसन्न हुवा। 7 कुछ मागले। 8 हम अपने घरकी हैसियतके अनुसार तुमको देंगे। 9 मागूगा। 10 आश्रय योग्य एक स्थान अमुक जगह पर पाऊ। 11 पुत्र, औलाद। 12 तब फिर नट गया। 13 मैंने कब तुम्हारे पास धरती मागी थी। 14 आपने अपनी इच्छासे मुझे अगीकार करवाया था। 15 जितनी। 16 आप। 17 उतनी हम सिर चढा कर लेंगे। 18 भैंसका आला (विना कमाया हुआ कच्चा) पूरा चमडा।

भिजोय चीराइ नै वाध[1] कढाईस, तिण हेठै आवसी तितरी लेईस[2]। भुटै दीठो वुरी हुई, पिण कासू करै। 'बोल वोलिया, धन पराया,' तिका वात हुई। देवराज अठै आड नै भायसो एक भिजोय नान्हो चीराय नै[3] जटै पाणी हुतो तितरी धरती दोळो[4] फेर आपणी कीवी। पछै घणो साथ राखियो। घणा घोडा लिया। गढ घातणरी राग रोपाई[5]। भीत हूण लागी,[6] सु उठै खेडा देवत,[7] सु भीत दीहारी[8] करै, तिसडी रातरी पाड़ नांखै[9], वाज आयो[10]। पछै देवी ऊपर लाघण[11] पाच दस किया। देवी प्रसन हुई, कह्यो—"तूठी, माग।" तरै कह्यो—"गढ करण दीजै, गढरी राज रिख्या[12] करो"। तरै देवीजी हुकम कियो—"एक थारी पाकी ईट, एक माहरै नावै काची ईट, इण भातरो गढ कराय, वज्रमई दुरग[13] अविचळ हुसी। बाहिरलो कोई ले नही सकै, माहिलारो दियो जासी[14]।" पछै इण भात देवराव देरावर देवीरै हुकमसू करायो। वडो दुरग हुवो। कोहर[15] ४ कोट माहै, कोट भरत हुवो[16]। तळाव १ कोट माहै, तळाव १ काचो पाको कोटरा पट्टा हेठै खाईरी ठोड छै। कोहर ४ कोट माहै सीगीबद[17], पाणी मीठो। वडो कोट हुवो। सारी सिधरै फळसै[18]। सारारै ऊपर माडरो गढ हुवो[19]। सारो राह मुलतान सिधरो अठै वहै[20]। बाहिरला मिळनै तळावरो पाणी पीवै। जोरावरी को साम्हो जाय न सकै। देरावर नागजो कोट छै[21]। लगाव को नही। निपट वडो अगजीत कोट[22]। कोस १० तथा १५ उरै पाणी कटै ही नही। कोट तयार हुवो, तरै देवराज घणा घोडा रजपूत उण

---

1 लम्बी पट्टी। 2 लूगा। 3 सैंकडा चिरवा कर। 4 चारो ओर। 5 गढ वनानेकी नीव रखी। 6 दीवाल होने लगी। 7 स्थान देवता, क्षेत्रपाल। 8 दिनको। 9 उतनी ही रातका गिरा डाले। 10 हैरान हो गया। 11 लघन। 12 रक्षा। 13 दुर्ग। 14 भीतर वालोका दिया हुआ जायेगा। 15 कुएँ। 16 कोट सर्वांग सपूर्ण हुआ। 17 पक्के बँधे हुए। 18 समस्त सिधके द्वार (सीमा) पर। 19 सब गढोके ऊपर माड प्रदेशका यह गढ तैयार हुआ। 20 मुलतान और सिधके सभी मार्ग इधर होकरके चलते है। 21 देरावर नही टूटने वाला कोट है। (वि० एक प्रतिमे 'देरावर नागोजोगी कोट छै' लिखा है।) 22 नही जीता जाने वाला वहुत वडा कोट।

रस-कूपारो माल करनै राखिया[1]। तठा पछै वरिहाहासू दावो माग-णरी मनमे राखै[2], सु घणो साथ राखियो। घणा घोडा पायगाह किया। वडी राजवट जमतो गई। पाखर[3], जीन सालरो[4] वडो सामान कियो नाळा आरावैगढ साझियो[5]। सुवरिहाहां मारणनू हजार दाव प्रपच करै। सु जिसडो[6] साथ करै, तिसडी जाण उठै पडै[7]। सु वरि-हाहा पिण चकिया[8] रहै छै। तिसडै समै ऊ[9] रस-कूपा वाळो जोगी देवरावरी सासू रवाय कनै आयो। कह्यो–"ऊ कूपो लाव।" तरै इण कह्यो–"ऊ कूपो म्हे माळिया माहै मेलियो थो[10], म्हारो जमाई माहै सूतो थो, सु एक दिन लाय लागी[11], सु कूपो माहै वळियो।" तरै जोगी मनमे जाणियो, दीसै छै, "उण माहिली कोईक बूद पडी छै, तिणसू लोहरो सोनो हुवो छै। तिण भरम मिटावणनू जाणीजै छै लाय लगाई छै नै कूपो उण लियो छै[12]।" तरै जोगी रवायनू कह्यो–"कूपो वळै नही, पिण लायरो उपाय थारै जमाई कियो[13], नै कूपो उण लियो छै।" तरै कह्यो–"ऊ जमाई हमै माहरै हाथ नही[14]। उण माहरी धरती कितरीहेक तोत कर ली,[15] नै हमै म्हानू मारणनू सामता साथ करै छै। नै ओ देवराज उठाथी कोसै ३० वैठो छै। नवो गढ करायो छै।" तरै उण जोगी लोगानू पिण[16] समाचार पूछिया। लोगै पिण अैहीज समाचार कह्या[17]। तरै जोगी देरावर आयो। देवराज पैहला हीज जाणियो–"ओ कूपा वाळो जोगी छै।" तरै निलाड[18] पिण दीठी, मुहडारो नूर अटकळियो[19]। देवराज आय साम्हो पगै लागो। घणो जोगीरो आदर-भाव कियो। जोगी पिण

---

1 तब देवराजने उस रस-कुप्पेके द्वारा (लोहेसे सोनेका) माल बना कर बहुतसे घोडे और राजपूत (सैनिक) रख लिये। 2 जिसके बाद वरिहाहोंसे प्रतिकार लेनेकी मनमे धारे हुए है। 3 हाथीकी झूल, हाथीका कवच। 4 घोडेका कवच। 5 बदूको और आरावोंसे गढको सजाया। 6 जैसा, जितना। 7 वैसी ही उधर जानकारी हो जाय। 8 सावधान। 9 वह। 10 रखा था। 11 सो एक दिन आग लग गई। 12 मालूम होता है उस सदेहको मिटानेके लिये आग लगा दी गई है और कुप्पा उसने ले लिया है। 13 आग लगा देनेका प्रयत्न तुम्हारे दामादने किया। 14 वह दामाद अब हमारे वशमे नही। 15 धोखा करके ले ली। 16 भी। 17 लोगोने भी ये ही समाचार कहे। 18 ललाट। 19 अनुमान किया, समझा।

देवराजनूं देख प्रसन्न हुवो । देवराजरो दिन पिण वळियो[1] सु सामीरै मनमा भली हीज आई । दिन १ तो सामी देवराजनूं वात पूछी ही नही । देवराज सेवा निपटही घणी करै, सु सामी एक समै देवराजनूं एकलो देखनै कह्यो—"बाबा ! उण कृपारो कांई विचार हुवो ?"[2] तरै देवराज कह्यो—"जिका वात हुई सु बाबाजीरूं मालम छै । मानूं तो कदू राज सोंपियो न थो[3] । नै जिको भलो छै, जिको रावळो प्रसाद छै[4] ।" सु देवराजसूं सामी प्रसन्न हुयनै कह्यो—"थान हूं सु म्हे जाणी । हिमै तूं नाव, सिक्को म्हारो माथै ऊपर राख[5] ।" तरै देवराज कह्यो—"भली वात । म्हारै माथै भाग, जो राजरा हाथ माथै ऊपर हुसी[6] । कनो हूं मोटो हुईस, नै म्हारी धरती गई छै सु वाळीस[7] । म्हारो दावो वरिहाहा माहै छै, सु वळसी । राजरी मेहरसूं म्हारे सोह वात भली हुसी[8] ।" तरै जोगी देवराजनूं कह्यो—"थारा वळरो विरद वधो[9] ।" नै मेखळी, नाद दियो, पात्र दियो, नै कह्यो—"ओ थे पाट बैसो तद दीवाळी दसरावै धारिया करो ।" । तरै जोगी वावै कयो सु या कबूल कियो । तरै जोगी आपरी मेखळी, नाद पात्र देवराजनूं दिया । तिका मेखळी देवराज गळैमे घाती[10], नाद गळा माहै घालियो,[11] पात्र आगै मेलियो, नै जोगीरो सिक्को धारियो । तरै जोगी खुसी हुय दवा दीनी[12] ।—कह्यो—"थारी ठाकुराई दिन दिन वधसी, थारै पगसूं आ धरती कदै नही जाय, थारा दावा वळसी[13] ।" सु जोगी तो दवा दे रमतो हूवो नै देवराज वरिहाहा माथै मारणनूं साथ भेळो कियो, सु हरेक रोजरो रोज[14] वरिहाहानूं खबर दे नवा-नवा रूप करि । तिण कर वरिहाहानूं देवराज

---

1 देवराजका दिन भी फिरा (सुदिन आया) । 2 उस कृपाका क्या हुआ ? 3 मुझे तो कोई आपने सौंपा नही था । 4 और जो कुछ अच्छा है वह आपकी कृपाका फल है । 5 अब तू हमारा नाम और सिक्का अपने मस्तक पर धारण कर । 6 बहुत अच्छी बात, मेरा सौभाग्य जो आपके हाथ मेरे सिर पर होंगे । 7 और मेरी धरती गई है उसको लौटा-ऊंगा । 8 आपकी कृपासे मेरी सब बातें भली होंगी । 9 तेरे वंशकी कीर्ति बढ़ा । 10 पहिनी, डाल दी । 11 पहिन लिया । 12 तब योगीने प्रसन्न होकर आशिष दी । 13 तुम्हारे पांवोंसे यह धरती कभी नही जायेगी और तुम्हारे स्वत्व तुमको मिलेंगे । 14 प्रति दिन ।

मार सकै नही । सु एक दिन देवराज माचै बैठो थो, सु हुरड़ मिनकीरो[1] रूप कर माचा हेठासू नीसरी[2] । देवराज अटकळी[3] । तरै वरछी पडी थी सु लेनै मिनकीरै दीनी, सु अठै मिनकी मुई,[4] नै उठै हुरड मुई । तठा पछै साथ करि देवराज वरिहाहा ऊपर गयो सु आदमी ६००सू वरिहाहानू मारियो । वरिहाहारो गाव लूटियो । सासू ग्वायरा लूगडा खोसाणा[5] । सु देवराज देखता खोसाणा । सु देवराज खोसणवाळानू पालिया नही,[6] नै सासू देवराजनू माटी छानो राखियो थो,[7] घणा हीडा ख्वाय किया था[8] । सु ख्वाय उण वखत दूहो कह्यो–

"विरस भलो वरिहाह, मित न भल्लो भाटियो ।
जे गुण किया ख्वाह, ते सव कालर भल्लिया[9] ॥" १

## वात

वरिहाहारो खानो खणियो[10]। घणो माल, वित, घणा घोडा, ऊठ सारो सामान हाथ आयो । धरती सारी आपरो अमल कियो । विकूपुर देरावर विचै आ धरती चित्रागलस आ अजेस[11] 'वरिहाहो' कहीजै । सु आ धरती सारी हाथ आई । कितरीहेक माडरी धरती देवराजरै रावळै उघरै छै[12]। तिण समै देवराज रतननू चीतारियो[13]। रतनरै वाप लापनू सीहथळीती तेडायो[14] । वात पूछी–"थाहरो वेटो रतन कठै ? जिको थे मो भेळो वैसाण जीमायो थो[15] ।" तरै लाप कह्यो–"उणनू तो तदहीज उणरै भाया पात वाहिर काढियो, सु जोगी

---

1 विल्ली । 2 निकली । 3 जान लिया । 4 मर गई । 5 सास ख्वायके वस्त्र खोसे गये । 6 देवराजने खोसने वालोको रोका नही । 7 और सासने देवराजको अपने पतिसे छिपा कर रखा । 8 ख्वायने उसकी वहुत सेवा की थी । 9 वरिहाहा-क्षत्री शत्रु भी अच्छा, किन्तु भाटी क्षत्री मित्र भी अच्छा नही । ख्वायने जो उपकार (देवराजके साथ) किये, वे सव कल्लर भूमिमे वर्षाके समान हुए (निरर्थक हुए) । 10 वरिहाहोका खोज उठा दिया । 11 अभी तक । 12 कितनी माड प्रदेशकी धरतीका राजस्व देवराज प्राप्त करता है । 13 याद किया । 14 रत्नके वाप लाघको (सिंह-स्थली) सीहथलीसे बुलवाया । 15 जिसको तुमने मेरे शामिल वैठा कर भोजन करवाया था ।

हुय सोरठ-गुजरातनू गयो । तरै देवराज लापनू कह्यो"–थे उठै जावो, म्हारा आदमी खरच दै साथै थाहरै मेलस्या,[1] दावै तठासू ले आवो,[2] म्हारै माथै रतनरो घणो किरावर छै[3] । म्हे रतनसू घणो भलो करस्या[4] ।" पछै लापनै देवराजरा आदमी सोरठसू रतननू ले आया । पछै देवराज रतननू आपरो वारहटो[5] दियो । माथै छत्र मडायो । तिणरै पछै देथा चारणारी बेटी देवराज मागनै रतननू परणाई । तिण रतनरै पेटरा भाटियारै चारण रतनू छै[6] ।

तठा पछै एक वार रावळ देवराज धार ऊपर गयो,[7] तद आपरा भाणेजनू देरावर सूप गयो हूतो, सु एक वार तो भाणेज फिर वैठो हुतो[8]। पछै देवराज गढनू ढोवो कियो,[9] तरै उण डरनै प्रोळ खोल दी । तरै देवराजरै मनमे वात आई । इण गढरी ठोड सूरमी न छै[10] । तदसू बीजी ठोड खाटणरी मन धारी[11] । तिण दिन लुद्रवै पँवारारी वडी ठाकुराई छै । बीजी ही तिण ठोड घणी ठोडा पँवारारी ठाकुराई छै । सु देवराज लुद्रवो लेणरा दाव-घाव घडै छै[12] । तरै पैहली तो पँवारासू मास ४ कागळवाई[13] कीवी । काई अबीरी भली वस्तु व्है सु मेलै[14] । तिणा साथै आपरै घर माहै रूडेरा आदमी मेलै[15] । उणा आदमियानू कहै–"उठारो चास-वास देख आवो[16]।" यू करनै आवो-जाव कीवी । पछै मास ४ आडा घात नै लुद्रवारा धणिया पँवारा कनै आदमी ४ आपरै घर माहै रूडा हुता सु मेलिया । उणा साथै सिधरी तरफरो कपडो, घोडा मेलिया नै कागळ दिया । कहाव करायो[17]– "कहो तो खाडाळ माहै पाणीरो तळाव न छै, नै माहरै तळाव ३ करावणा छै । थे कहो तो म्हे खाडाळ माहै तळाव करावा,

---

1 मेरे आदमियोको खर्च देकर तुम्हारे साथ भेजूगा । 2 चाहे जहासे ले आओ । 3 मेरे ऊपर रत्नका वहुत उपकार है । 4 रत्नके साथ वहुत भला व्यवहार करूगा । 5 वारहटका पद । 6 उस रत्नके वशज भाटियोके रतनू चारण कहलाते है । 7 धार ऊपर चढ करके गया । 8 सो एक वार तो भानजा वदल गया था । 9 पीछे देवराजने गढ पर धावा किया । 10 इस गढकी भूमि शूरवीर (वीरभूमि) नही है । 11 जवसे दूसरी जगह प्राप्त करनेका विचार किया । 12 घाव करनेके प्रयत्न (दाव-पेच) सोच रहा है । 13 पत्र-व्यवहार । 14 कोई अनोखी अच्छी वस्तु हो सो वहा भेजे । 15 उसके साथ अपने घरके चतुर मनुष्योको भी भेजे । 16 वहाके रग-ढग (भेद) देख कर आओ । 17 कहलवाया ।

नाव माहरो हुसी नै तळाव काम थाहरी रैतरै थाहरा रजपूतांरै आवसी[1]। तरै एक वार तो पँवार नटिया, पछै देवराजरा परधान मास खड उठै रहिनै पाखा देवळी सारी भरमारी[2]। आपरै हाथ पईसारै पाण सोह वस करनै जैसळमेरसू कोस····· काळो डूगर खाडाळरै मध्य भाग छै, तठै तळाव ३रो हुवो कढायो,[3] नै परधांन देवराज कनै आयो। सु देवराज गाढो राजी हुवो। तळाव ३ मडाया—

१ तणुसर।

१ विर्जरावसर।

१ देवरावसर।

अै तीन तळाव मडाया[4]। तिणा करणनू पैहला तो आपरो कामदार मुसालो मेलियो[5]। पछै तळावरै वाहनै उठै वस्ती कीवी[6]। उठै सादीसी आपरै रहणनू हवेली वणाई[7]। पछै आप पिण आया करै। जिको पवारारो आदमी आवै तिण आगै पवारारी घणी वडाई[8] करै। अै वडा ठाकुर छै। तळावा माहै माहरो[9] कासू[10] छै। जिणारी[11] धरती छै तिणारो[12] धरम छै। जिको आवै तिणनू पईसा दे राजी करै। मुसालानू सासता आदमी लुद्रवै आवै। तिणा साथै परधाना, कामदारा, खवास, पासवाना, छडीदारा सारानू भली-भली वस्त मेलै। सारी साहिवी हाथ कीवी। कोई यू रोकणहार नही रह्यो, जु—"ओ देवराज मास-मास दोय-दोय मास अठै रहै छै सु भलो नही।" यू करता तळाव तो पूरा हूणरी तयारी हुई, तठै पंवारा ठाकुरासू कहाव कियो[13]—"मोनू रावळी वेटी दो, मोनू राजपूत करो[14]।"

---

1 नाम तो मेरा होगा ही किन्तु ये तालाव तुम्हारी प्रजा और राजपूतोके लिये काम आयेंगे। 2 पीछे देवराजके प्रधान मनुष्योंने मास-दिन वहा रह करके सभी कर्मचारियोको वहुत धन देकर अपने वशमे कर लिया। 3 वहा तीन तालाव करवा देनेकी आज्ञा प्राप्त की। 4 य तीन तालाव करवाने शुरू किये। 5 उनको वनवानेके लिये पहले तो अपने कामदारको और पत्थर-चूना आदि ममाला भेजा। 6 पीछे तालावोके मिम वहा पर कुछ वस्ती भी वमाई। 7 और एक मादी हवेली भी अपने रहनेके लिये वहा वनवा ली। 8 प्रशसा। 9 हमारा। 10 क्या। 11 जिनकी। 12 उनका। 13 कहलवाया। 14 मुझको अपनी कन्या दें और मुझको राजपूत वनाये (मुझे भी योग्य राजपूतोमे समझ कर अपनी कन्याका विवाह मेरे साथ करें)।

तरै पवारै कह्यो–"म्हे देवराजसू डरा ।" तरै आदमी फिर पाछा आया । मास २ वीच पाडिया । राजलोगनू, राणीनू भली-भली वस्त मेलनै आपरै हाथ किया[1] । मास २ पछै राणी साथै कहाव करायो । तरै राजा कह्यो–"ओ खोटो आदमी छै, कोहेक दगो दै ।" तरै कह्यो–"किसो अठै दगो देसी[2] ? उणरा आदमियानू सूधो कहिस्या,[3] सो १०० आदमियासू आवो । इधक[4] आदमियासू आवण न दा ।" तरै आ वात थापी[5] । तरै देवराज कह्यो–" भली वात ।" पिण आदमी पाछा मेलिया, कहाडियो–"म्हारै माथै वैर छै,[6] हू फलाणा[7] दिनरै साहा ऊपर आईस । घणो जताव राज किणहीसू मत करो[8] । नै लुद्रवारी बारै प्रोळ छै, सु म्हे अवेरा-सवेरा किणही प्रोळि आवस्या[9] । सारी प्रोळिरा प्रोळियानू[10] हुकम कर राखो, म्हे जिण प्रोळि आवा, म्हानू उण प्रोळि माहै असवार १०० एक वीद[11] आवण देज्यो ।" इसडो दूवो कढायो,[12] नै आया सु प्रोळिया सारानू पईसासू पैहली भर मारिया था[13] । सारानू राजी कर राखिया था । पछै साहारै दिन बारैसो १२०० असवार जीनसाळिया[14] करि ऊपर ढीला वागा पैहर केसरिया करनै बारै वीदारै माथै मोड बाधनै बारै जान[15] करनै एकण समचै[16] वारा ही प्रोळि माही पैठा[17] । माहै जाय पवारानू कूटमार देवराज लुद्रवो लियो । आपरी आण-दाण फेरी[18] । वडी साहिबी जमी । पछै कितरेके दिनै देवराजनू अरोडरै तुरके सिकार रमतानू मारियो[19] ।

---

1 अपने वश किये । 2 यहा कौनसा दगा देगा । 3 उसके आदमियोको स्पष्ट कह देगे । 4 अधिक । 5 तव यह वात निश्चित हुई । 6 हमारे ऊपर शत्रुता रखने वाले है । 7 अमुक । 8 आप किसीको इस सवधकी अधिक जानकारी नही होने दे । 9 सो हम वेर-अवेर किसी समय किसी भी पोल मे आयेंगे । 10 पोलके पहरेदार । 11 दूल्हा । 12 ऐसा हुक्म निकलवाया । 13 सवको पैसे देकर अपने वशमे कर लिये थे । 14 कवचधारी घुड-सवार । 15 वरात । 16 एक ही सकेतमे, एक ही साथ । 17 प्रवेश किया । 18 अपनी आन-दुहाई प्रवर्त की । 19 फिर कितनेक दिनोके वाद अरोडके मुसलमानोने देवराजको शिकार खेलते हुएको मार डाला ।

## बात

तिण समै धार पवार धणी छै। पवारारै एक मुहतो[1] वडो आदमी छै। परधान वडो आदमी नावजाद[2] छै। तिणरै माथै केहेक रुपिया हुवा, नै हाथी सोएक माथै हुवा[3]। सु पईसा तो ज्यू त्यू कर भरिया, नै हाथी कठैही जुडै नही[4]। सु उण परधानरो कबीलो सारो अटक माहे[5], तिको विना हाथी दिया छूटै नही। सु मुहतो घणी ही राईतना फिरियो,[6] पिण हाथी कठैही जुडै नही। हाथी मागिया कुण दै ? सु तिण दिन रावळ देवराज वडो दातार, वडो जूझार, वडो नावजाद। सु धाररा धणियारो मुहतो रावळ देवराज कनै आयो। सु ओ मुहतोई नावजाद थो, सु देवराजरा हुजदारासू[7] मिळियो, उणा घरै उतारियो[8]। घणो आदर-भाव कियो, वात पूछी, कह्यो–"क्यू आया छो ?" तरै आपरी वात माड कही[9]। नै देवराजरा हुजदार पिण वडा माणस हुता, तिण भलो समो[10] जोयनै धाररा मुहतानू रावळसू मिळायो। वात एकत मिळ सको कीवी[11]। आगला राजा सती हुता[12]। अचडा बोल उवारणरी घणी वात मन मा राखता[13]। तरै देवराज कामदारानू कह्यो–"ओ वडो मुहतो वडै दरवाररो परधान इतरा[14] राईतन[15] छोडनै मोनू जाणनै इतरी भूय[16] आयो, तो इणरो जरूर अरथ सारणो[17]।" तरै हाथी सौ दिया। मुहतानू घोडो सिरपाव दै सीख दी[18]। हाथियारै वाट-खरचरा दाम लेखो कर दिया[19]। महावत भोई साथै दिया। कह्यो–"धार जायनै पोहचाय

---

1 महता, कामदार, प्रधानामात्य। 2 अपने नामसे पहचाना जाने वाला। 3 जिसके ऊपर कई रुपयोका और एकसौ हाथियोका कर्जा हो गया। 4 और हाथी कही भी मिले नही। 5 सो इस कारण उस प्रधानका सारा परिवार भी जेलमे। 6 सो वह प्रधान कई रजवाडोमे फिरा (राईतन=राजा)। 7 प्रमुख कर्मचारियोसे। 8 उन्होने उसे अपने घरमे ठहराया। 9 तब अपनी अथसे इति तक कही। 10 मौका। 11 एकान्तमे मिल कर सब बात कही। 12 पहलेके राजा दानी थे (सती=दानी, सत्यवादी)। 13 श्रेष्ठ पुरुषोकी बात (प्रतिज्ञा) निवाहनेकी मनमे बहुत उत्सुकता रखते थे। 14 इतने। 15 रजवाडे, राज्य, राजाओको। 16 दूर। 17 तो इसका काम जरूर पार लगाना। 18 प्रधानको घोडा और सिरोपाव देकर रवाना किया। 19 हाथियोके जैसलमेरसे धार पहुँचने तकके मार्गमे लगने वाले दिनोकी खुराक खर्चका हिसाब करके उतनी रकम भी दी।

आवो ।" पछै कितरेहेक दिनै मुहतो हाथी ले धार आयो । हाथियानू भली-भात सातरा करनै धाररा धणीरी नजर गुदराया[1]। तरै धाररा धणीनू इचरज[2] हुवो, नै पूछियो "ऐ हाथी किण दिया[3]?" तरै कह्यो–"रावळ देवराज भाटी दिया ।" तरै आप मनमे ऊणो गयो[4] । जु–"हू इसडा घरा छोरुवानू घर-घर भीख मगाडी[5] नै देवराज उपगाररै वास्तै सौ, सौ हाथी दै ।" मनमा तो आ वात जाणी, नै मुहडा ऊपर कहण लागो[6]–"भाटियारै हाथी भूखा मरता हुता, आखिया अदीठ किया[7] । इणरै माथै चढाया[8] ।" पछै मुहतैरा माणस छूटा[9] । नै माहवता, भोयानू मुहतै मारग खरच देने सीख दी । वे पाछा देवराज कनै देरावर जाय मुजरो कियो । मुहतारा कागळ गुदराया[10] । तरै रावळ वात पूछी जु–"धाररै धणी ऐ हाथी देखनै कासू कह्यो[11] ?" तरै किणीहेक[12] कह्यो–"पवार कहण लागो, भाटियारै हाथी भूखा मरता हुता, आखै अदीठ किया ।" तरै आ वात रावळ देवराज सुणनै घणो बुरो मानियो । तरै आदमी दोय माणस[13] घरा चाढनै मेलिया । कहाडियो[14]–"म्हे भूखा माहरा हाथी आखिया अदीठ किया था सु उरा दीजै[15] । नही दो तो म्हा नै था बुराई होसी[16] । वे रावळरा आदमी धार गया । पवारसू जाय मिळिया । रावळ कहाडियो थो सु कह्यो । वात हँसीरी विख-सी हुई[17] । "देवराज नामसाद इसडो जु सको जाणै[18] मुहडा वारै काढी छै तो करसी[19]। पिण वयू सौ, सौ हाथी वाता साटै दिया जाय नही[20] ।"

---

1 हाथियोको अच्छी तरह सजा कर धारके स्वामीको पेश किये । 2 आश्चर्य । 3 ये हाथी किसने दिये ? 4 तब आप मनमे लज्जित हुआ (ऊणो=छोटा, कम) । 5 मैंने ऐसे प्रतिष्ठित घरके सुपुत्रको घर-घर भीख मागनेके लिए विवश किया (छोरू=पुत्र, चिरजीव) । 6 और प्रगटमे कहने लगा । 7 भाटियोके यहा हाथी भूखे मरते थे, आखोंमे दूर किये । 8 इसके ऊपर एहसान चढा दिया । 9 पीछे प्रधानके कुटुम्बीजन मुक्त हुए । 10 प्रधानने जो पत्र देवराजके नाम लिखे थे, पेश किये । 11 धारके स्वामीने इन हाथियोको देख कर क्या कहा । 12 किसी एकने । 13 अच्छे आदमी । 14 कहलवाया । 15 हम भूखे (असमर्थ) है इसलिये हमने अपने हाथियोको आखोसे अदीठ किये लेकिन अब वापिस दे दे । 16 नही देओगे तो हमारे और तुम्हारे वीचमे लडाई हो जायेगी । 17 हसीकी वातमे विष (कटुता) पैदा हो गया । 18 देवराज ख्यातिप्राप्त है सो सब जानते है । 19 जो वात उसने मुहसे निकाली है तो वह कर वतायेगा । 20 परतु सौ, सौ हाथी वातोके वल पर दिये नही जा सकते ।

माहोमाहे परधाना नै पवारारै बोलाचाली हुई[1]। नै परधान पाछा आया। हाथी पवारा न दिया। तठा पछै रावळ देवराज धार ऊपर कटक कियो,[2] सु पवारारा वावसूता त्या रावळ चढियारी खबर दी[3]। तरै पवार सामा मेडतै आया, हाथी लाया और डड दे मन मनायो देवराजरो।

रावळ मुध देवराजरै पाट हुवो।

रावळ मुधरा बेटा–

१ रावळ वछु। १ जगसी।

## वात भाटियांरी

भाटिया माहे एक साख[4] मगरिया छै। पैहली तो सुणियो थो, अै मगळरावरा पोतरा[5] छै। पछै गोकळ रतनू कह्यो–"अै विजैराव लाजो रावळ दुसाझरो तिणरी औलादरा छै। पैहली हिंदू था, हमै[6] तो किणही सवव मुसलमान हुवा छै। तिकै जैसळमेरथा[7] कोस २५ आथवणनू[8] मगळीका-थळ छै, तठै रहै छै। वा ठोड मगळीका-थळ कहावै छै। तठै द्रम छै[9]। सु भोमियो होय सु डाडी आवै[10]। असैधो डाडी टळै सु घोडो असवार गरक हुजाय[11]। अभूमियो डाडीसौ टळै सु मरै[12]। इगारो ऊमरकोट खाडाहळसू सीव-काकड[13] एकण-कानी[14] चीन्हासू सीव। मिथरै सावडासू सीव, भाखरराा गाव हीगो-ळजासू सीव। एकण कानी मैहरसू सीव। खाटहडा खारी सौ, मैहर तुरक थळ माहे रहै छै, सु जैसळमेररा चाकर। गाव साखली, खुहियो,

---

1 भाटियोंके प्रधानोंमे और पवारोंके परस्पर कहा-सुनी हो गई। 2 चढाई की। 3 पवारोंके जो जासूस थे उन्होंने रावलकी चढाईकी खबर पहुँचाई। 4 वशशाखा। 5 पौत्र। 6 अब। 7 से। 8 पश्चिम दिशाकी ओर। 9 वहा एक ऐसा मरुस्थल है। (द्रम=प्रचड वायुवेग—आधियोंके कारण निरतर बदलते रहने वाले टीबोंका मरु-प्रदेश। 10 जानकार हो सो तो पगडडी चला आवे। 11 अपरिचित यदि पगडडीसे टल जाय तो घोडा और सवार दोनो उसमे धँस जाते हैं। 12 अनजानसे यदि पगडडी छूट जाय तो वह मर जाता है। 13 सीमा-सरहद। 14 एक ओर।

लाखारो-घट अै जागीर छै, थटैरा पातसाही चाकर[1]। तेरै माणस २०००री जोड[2]। उण मगरियारा ३ धडा छै—१ चावडदे, १ वीरमदे, १ ढेढिया[3]। इणारै मुदै गाव वीरमो छै[4]। बीजारै[5] साहळवो छै। तीजारै[6] गाव झडवो-सुरडियो छै। गाव चाळीस वसै छै। सूनी धरती घणीही छै। पाणी पुरसै १४, कठैही पुरसै ३०, कठैही ६० साठै[7]। चाडीसो महादेव उठै छै[8]। तठै मकर-सक्रात लागै तद दिन आठ पाणी वेंहत १ हेठै नीसरै[9]।

रावळ वछु मुधरै पाट बैठो।

रावळ दुसाझ वछुरो।

रावळ दुसाझरा वेटा—

१ रावळ जेसळ।

१ रावळ विजैराव लाजो।

१ देसळ, जिणरा अभोहरिया भाटी[10]।

राहड आक ४०, रावळ विजैरावरो बेटो। तिण राहडारै इतरी ठोड जैसळमेररै देस—

गाव ३ खाडाळ माही। भोपत राहडोतरा पोतरा।

२ वाराहा, नहवरथा कोस १० तठै धडा २, १ पुनराजरो, १ साजनारो। १ देवरासर तळाव माथै गाव २० वसै। कोहर नहवरथा कोस ५ छै। १ नीलपो। १ समदडो। १ काका। १ देवरासररी वावडी। १ वीखरण माहै वावडो १४०१नू वणी[11]। १ राहडधोधा राणा राहडोतरा पोतरा, गाव माळोगडो। ऊमरकोटरै काठै[12] जैसळमेरथा[13] कोस १५ तठै घर ५० तथा ६०। तिण नजीक अै गाव—

---

1 साखली, खुहियो और लाखारो-घट ये तीन गाव जागीरीके है जो (जागीरदार) थट्टेके वादशाहके चाकर हैं। 2 इनके पास दो हजार मनुष्योकी (सुभटोकी) जोड है। 3 उन मगरियोके चावडदे, वीरमदे और ढेटिया ये तीन धडे (विभाग) है। 4 वीरमो इनका खास गाव है। 5 दूसरोका, दूसरे धडे वालोका। 6 तीसरे धडे वालोका। 7 कही-कही ६० पुरुष तक गहरा। 8 वहा चडीश्वर महादेवका (मन्दिर) है। 9 जब मकर-सक्राति लगती है तब वहा (उस निर्जल भूमिमे) आठ दिन तक सिर्फ एक वालिश्त नीचे ही पानी निकलता रहता है। 10 देसल, जिसके वशज अभोहरिया भाटी है। 11 वीखरणमे एक बावडी स० १४०१मे बनी हुई है। 12 किनारे (सीमा) पर। 13 से।

१ हट-हटारो । १ सीहडाणो । १ करडो सत्तारो । १ पोछीणो । १ वीकानेररै देस पीलाप, भरेसर नजीक । माड राठीवाळी तठै वास[1] ४ राहड वैरसळ जसारो वसै छै[2] ।

रावळ विजैराव लाजो, रावळ दुसाभरो वेटो । वडो माणस ठाकुर हुवो[3] । सिद्धराव जैसिंघदेरै पाटण परणियो हुतो[4] । उठै सिद्धरावरै कपूर-वासिया पाणीगे क्यू चरचा हुई[5] । तरै रावळ विजैराव पाटण माहे कपूर थो सु सारो मोल लेनै[6] सहसलिंग तळाव माहै नाखियो[7] । सारै सहर कपूर-वासियो पाणी पियो । तठाथी रावळ विजैराव 'लाजो' कहाणो[8] ।

रावळ विजैरावरा वेटा–

१ भोजदे रावळ । १ राहड । १ देहुल । १ मागरिया । इतरी साख लजे विजैरावरा पोतरा[9]–

१ पाहु वापैरावरा । वापोराव विजैरावरो[10] ।

१ साख 'गाहिड' भाटिया माहे तिकै रावळ विजैराव पोतरा । जोधपुररै देस वगाड कदीम गाहिडारो गाव । वीकानेररै देस गाहिड-वाळो गाव, वीकानेरथा कोस ३ छै ।

रावळ भोजदे विजैराव लाजारो वेटो लुद्रवै धणी हुवो । निपट वडो रजपूत हुवो । कहे छै वरसा १५ तथा १६री ऊमर माहै पचास वेढ जीता हुती[11] ।

वात गजनी पातसाहरी छै–

---

1 राठी वालोका माड गाँव जिसमे चार अलग-अलग वस्तिया है। 2 राहट गाँवमे जसाका पुत्र वैरसल रहता है। 3 वडे व्यक्तित्व वाला ठाकुर हुआ। 4 विजयराव लजा जिसका विवाह पाटणके सिद्धराव जयसिंहदेवके यहाँ हुआ था। 5 वहा सिद्धरावके यहा कर्पूर-वासित पानीकी कुछ चर्चा चली। 6,7 तव रावल विजयरावने पाटणमे जितना कपूर था सो सव खरीद करके सहस्रलिंग तालावमे डलवा दिया। 8 सारे शहरने कपूर-वासित पानी पीया। तवसे रावल विजयराव 'लजा' कहा जाने लगा। (लजा=वहुत शौकीन। खूव रगीला) 9 लजा विजयरावके पोतोंसे इतनी शाखायें प्रचलित हुई। 10 विजयरावका पुत्र राव वापा और राव वापाका पुत्र पाहु, जिससे पाहु शाखा चली। 11 कहा जाता है कि रावल भोजदेवने १५-१६ वर्षकी आयुमे ५० लडाइया जीती थी।

तिण समै विजैराव लाजो आबूरा पवारारै परणियो, तरै सासू निलाड दही दियो तरै कह्यो[1]–

"बेटा! उत्तर दिसि भड-किवाड हुए[2]।" सु रावळ विजैराव तो काळ-प्राप्त हुवो छै[3]। तिण समै गजनीरो पातसाह आबू ऊपर अजा-गजकरो[4] जाय छै। रावळ भोजदेनू कहाडियो, आगै आदमी मेल[5]–"म्हे पँवारा ऊपर आबू जावा छा, तू आगै खबर मत देई। म्हे थारो विगाड क्यू नही करा, तू थारा[6] लुद्रवा माहै बैठो रहै।" सु तिण दिना जेसळ दुसाझरो ग्रासियो हुय बारै नीसरियो छै[7]। पातसाहनू कहै छै–"पँवार इणारै मामा छै, ओ खबर दिगर दिया रहसी नही।" नै भोजदे पातसाहसू वात की छै, "म्हे कटकरी खबर आवू नही दिया[8]।" आ वात भोजदेरी मा सुणी, तरै भोजदे कनै आइ कहण लागी,–"थारै बापरी निलाड म्हारी मा दही दियो तरै कह्यो थो–"बेटा जमाई! उत्तर-दिस भड-किवाड हुए। तरै थारै बाप वात कबूल की थी। तिको बोल थारा बापरो जाय छै। आखर एक दिन जायो पूत मरेवो छै[9]।" तरै रावळ भोजदे नगारो दियो[10]। पातसाह लुद्रवाथी कोस १ मेढीरो माळ छै, तठै उतरियो थो सु पातसाह ही नगारो सुणियो[11]। आगै जेसळ लगावतो हुतोईज[12]। पातसाह चढ लुद्रवा ऊपर आयो। रावळ भोजदे बाज काम आयो [13]। पातसाह सारो सहर लूटियो। रावळरो घर-भार-भरत जेसळनू दियो[14]। जेसळमेर माथै टीको काढ रावळाई दी[15]। पातसाह फिर पाछो गयो। भोजदे बाळक थको काम आयो। बेटो नही[16]।

---

1 तोरन-द्वार पर जब सासने विजयरावकी ललाट पर दहीका तिलक निकाला था, तब कहा था। 2 बेटा! तू उत्तर दिशाका रक्षक होना। 3 रावल विजयराव तो मृत्युको प्राप्त हो गया। 4 अचानक। 5 आगे आदमी भेज कर रावल भोजदेवको कहलवाया। 6 तेरे। उन दिनोमे दुसाझका पुत्र जेसल ग्रासिया होकर बाहर निकल गया है। 8 हम तुम्हारे कटक लेकर आनेकी खबर आवू नही देंगे। 9 आखिर एक दिन जिस पुत्रने जन्म लिया है वह तो मरने वाला है ही। 10 तब रावल भोजदेवने युद्धका नगाडा बजवाया। 11 लुद्रवासे एक कोश पर 'मेढीरो माळ' नामक स्थान पर बादशाह ठहरा हुआ था, वहा उसने नगाडा सुना। 12 इधर जेसल भोजदेवके विरुद्ध उसे भडका ही रहा था। 13 रावल भोजदेव लड कर काम आया। 14 रावल भोजदेवके घरका सभी सामान, मालमत्ता जेसलको दिया। 15 जेसलके तिलक निकाल कर जैसलमेरका रावल पद दिया। 16 इसके बेटा नही।

## वात

रावळ जेसळ दुसाझरो वेटो, तिणनू गजनीरै पातसाह रावळ भोजदेनै मारनै लुद्रवो दियो, सु जेसळ मन माहै जाणै जु "आ ठोड पाधर[1] माहै नै माहरै माथै हजार दुसमण छै, सु कठै कै म्है वाकी ठोड देखनै गढ वीजो[2] करावा।" तरै गढरी ठोड देखतो फिरै छै। पछै जेसळमेरथा कोस... आथवणनू[3] सोहाणरा भाखर[4] छै, तठै गढ मडायो, मु वांभण ईसो वरस १४०रो हुवो थो[5], उणरा वेटा रावळ जेसळरी चाकरी करता था मु गढनू कवाडो[6] जाय, मु गाडा नीसरै, तिणरो सोर-हावो हूंण लागो[7]। तरै ईसो वेटानू पूछियो—"ओ सोर कासू हुवै छै[8]।" तरै ईसारै वेटा कह्यो—"रावळ जेसळ लुद्रवासू राजी नही, मु सोहाणरै भाखर गढ करावै छै, भुरज दोय हुवा छै।" तरै ईसै वेटानू कह्यो—"रावळ जेसळनू थे मो ताई तेड आवो[9]। म्है गढनू ठोड जाणा छा, तिका वतावसा।" पछै ईसारा वेटा जाय नै रावळ जेसळनू तेड लाया। तरै ईसै जेसळनू पूछियो—"थे कठै गढ मडावो छो?" तरै जेसळ सोहाणरी ठोड वताई। तरै ईसै कह्यो—"अठै गढ मत करावो, नै म्हारो नाव राखो जु गढरी ठोड हू वताऊ। मै पुरातन वात सुणी छै, नै एक वात मै मुणी छै।" ईसै वात कही सु कवूल कीवी जेसळ। तरै ईसै वात कही—"एक तो वात मै थू सुणी छै—"एकण समै[10] श्री कृष्णदेव अठै किणही काम नीसर आया। अठै म्हारी डोळी छै, कपूरदेसररी पाळ हेटै, तठै आया[11]। अरजुनजी साथै छै। तद भगवान अरजुनजीनू कह्यो—"इण ठोड वासै माहरी अठै राजधानी हुसी[12] तठै जेसळमेर गढ माडियो छै[13]। अठै तिण माहै जेसळु मुदायत वडो

---

1 मैदान। 2 दूसरा। 3 पश्चिम दिशाकी ओर। 4 पहाड। 5 ईसा नामका एक ब्राह्मण जो १४० वर्षकी आयुका हो गया था। 6 मकान आदि वनानेका सामान। 7 जिसका शोर-गुल होने लगा। 8 यह शोर क्यो हो रहा है। 9 रावल जेसलको तुम मेरे पास वुला लाओ। 10 एक समय। 11 यहा कपूरदेसर तालावकी पालके नीचे मेरी डोलीकी जमीन है, वहा आये। (डोहली, डोळी=दानमे दी हुई भूमि)। 12 यहा हमारे पीछे (हमारे वशजोकी) इस स्थान पर राजधानी होगी। 13 जहा जैसलमेरका गढ वना है।

कोहर छै[1] । तठै अरजुननू कह्यो "अठै वडो पाणीरो कुड तळसीर[2] छै । ओ वचन छै ।" नै ईसै कह्यो–"उठै म्हारी डोहळी[3], कपूरदेसररी पाळ हेठै, तिण कपूरदेसर माहै सिला १ लवी फलाणी[4] ठोड छै, सु थे उठै जाय, वा सिला उथळ देखो, उण वासै लिखियो छै सु करीजो[5] । उठै वडो गढ हुसी । लकारै आकार तिखूणो करज्यो[6] । थाहरै घणी पीढी रहसी । वडो अगजीत दुरग हुसी[7] ।" पछै जेसळ कारीगरा सारानू ले उठै आयो । सिला वताई थी सु उलट दीठी[8] । उण हेठै लिखत नीसरियो[9]–

दूहो—"लुद्रवा हूती ऊगमण, पाचै कोसै माम ।
ऊपाडै ओ मडज्यो, तिण रहै अमर नाम[10] ॥१

## वात

वाभण ईसारै कहै रावळ जेसळ कपूरदेसररी पाळ कनै रडी[11]सी थी उण कुडरा पाणी ऊपर समत १२१२रा सावण वद १२ आदीत-वार मूळ नखत्र रावळ जेसळ जेसळमेररी राग[12] मडाई । थोडो-सो कोट, आथवण दिसली[13] प्रोळ तयार हुई । वरस ५ पछै रावळ जेसळ काळ कियो । पाट रावळ सालवाहन जेसळरो वैठो । आक २ ।

रावळ सालवाहन जेसळरो । जेसळ पछै जेसळमेर पाट वैठो । सालवाहण निपट वडो ठाकुर हुवो । जेसळमेररो गढ जेसळ मडायो थो पण गढ, मोहल, प्रोळ कोहर सारो काम सालवाहण करायो[14] । जेसळमेर सालवाहण वडो करमप्रसाद[15] धणी हुवो । घणी धरती नवी

---

1 और उसमे जेमलू नामका मुख्य और वडा कूप है । 2 तल-स्रोत वाला । जिसमे तल-स्रोतका अपार पानी हो । 3 दानमे दी हुई भूमि । 4 अमुक । 5 उसके पीछे जो लिखा हुआ है उसके अनुसार करना । 6 लकाके त्रिकोण गढके आकारमे वनवाना । 7 किसीसे नही जीता जाने वाला वह दुर्ग होगा । 8 जिसको उथल करके देखा । 9 उसके नीचे यह लिखा हुआ निकला । 10 लुद्रवासे पाच कोस पूर्व दिशामे जो स्थान है उसके पास यह गढ वनवाना, जिससे नाम अमर हो जायगा । 11 पथरीली ऊची भूमि । 12 नीव । 13 पश्चिम दिशा वाली । 14 जैसलमेरका गढ जेसलने वनवाना शुरू किया था किन्तु गढ, महल, पोल और कुए आदि दूसरा सारा काम शालिवाहनने वनवाया था । 15 भाग्यशाली ।

खाटी[1] । वरस २२ राज कियो । पछै काळ कियो[2] । तरै सालवाहनरो वेटो वेंजल एकरनूं पाट वैठो[3] । वैंजलमे लखण क्यूही नही । मात्रईथा चूको[4] । तरै वैंजलनू भाटिया मारि परो काढियो[5] ।

कवित्त भाटी सालवाहणरा

"सहस वीस हण मुवग सद्द[6] ढोला सम चलत,
तिण ऊपर भड-अभग[7] लीण मतवाळा लोडत ।
दस सहँस पायदळ[8] फरद पायक्क फरीधर,
वीस खट्ट वाजत्र रोळ ग्वळ हण रिण पाखर ।
खट तीस वस दरगह खडी दीपै जे दीवाण गहि,
जादव नरद जै जै जपत सकळ कमळ सालवाहण लहि ॥१
दुग्रति दुग्रति ताय दीपत नमत ग्रनमति[9] ताय नामत[10],
कहत कहत न न करत कमै जाय करत मु न करत ।
रचँ दुरगव रूप ग्राप पित नाम ग्रचचळ,
वारगना चद करत जगत धिन सभ्रम जेसळ[11] ।
सेहरो चद सूरह समं राहे न सकै तूझ रहि,
जादव नरद जै जै जपत सकळ कमळ सालवाहण लहि ॥२
सहँस एक श्रगार काम हामा कै करि ग्रति,
त्रिहु थानै त्रिय रभह सूसुर वाजित्र वाज जिति ।
ग्रद्धेसर मद लहै कोड ग्राखाडा कीजत,
लीला ग्रग सुलक[12] रग त्यँ रावळ रीझत ।
ग्रनभाख साख ग्रन ग्रन ग्रवर ग्रमल मलै दाझै ग्रसह,
जादवै नरद जै जै जपत सकळ कमळ सालवाहणह ॥३
ककण दामण सघण काछ पचाळ निरतर,

---

1 प्राप्त की । 2 मर गया । 3 तव शालिवाहनका वेटा वैंजल एक वार पाट वैठ गया । 3 वैंजलमे समझदारी कुछ भी नही । 4 किसी मातृ-समान पूज्यासे अनुचित सम्वन्ध हो गया । 5 तव भाटियोंने वैंजलको ठोक-पीट कर निकाल दिया । 6 शब्द । 7 अजीत सुभट । 8 पैदल । 9 नही झुकने वालोको, अनम्रोको । 10 झुका दिया । 11 जेसलका पुत्र । 12 सुन्दर कटि वाली ।

सेतवध रामेस लगो नव दीपा सायर[1] ।
झाडखड मेवाड खड गुज्जर वैरागर,
वागड महियड सहित खेड पावट पारक्कर ।
मुरधरा ग्वड आबू मडळ सहित पाल ईढहि सर्व,
सालवाहग जो एती मुपह भोम भेयटी[2] भोगवै ॥४
सासण कोड सवाय उभै हसती मो हैमर[3],
दस्स सहँस दारक्क[4] सहँस दस भैमा सद्धर ।
सहँस गाय सुवाय सहँस दस गाडर[5] छाळी[6],
माणो[7] एक मोतिया वसुह दै मौज[8] वडाळी ।
सालवाहण जेमळ-सभ्रम कविया दाळिद्र कप्पियौ,
करि वीर मूठ बूजो मुकव थिर वारहठ थप्पियौ ॥५

चारण रतनरा वेटा वूजानू रावळ सालवाहण गाव सासण सिरवो कर दियो[9] । आसणीकोटसू कोस २, पाणी आसणीकोट पीवै ।

रावळ कालण जेसळरो । वैजळ पछै पाट वैठो । वरस १८ राज कियो । कालणरो पेट जोर वधियो[10] । जोधपुर रिणमला माथै मड[11] त्यू जेसळमेर कालणरा परवार ऊपर सारी साहिवीरी मदार[12] । धणो सारव कालणसू मिळै[13] । आक २ । वेटा–

३ रावळ चाचगदे कालणरो ।
३ आसराव कालणरो ।
४ भूणकमळ आसरावरो ।
५ जाझण ।
६ भवणसी ।
६ थिरो
७ ऊगो ।
८ मेहाजळ ।
९ देवो ।
१० अमरो ।
११ तेजसी ।
१२ आसो ।
१३ अजु । इणारा गाव १२सू भाभेरो ऊमरकोटरै मारग[14] ।

---

1 सागर । 2 भाटी । 3 घोडे । 4 ऊँट । 5 भेड । 6 वकरी । 7 चारसौ भरीका एक माप । 8 दान । 9 सिरवा गाँव शासनमे दे दिया । 10 कालणका वश खूब बढा । 11 जिम प्रकार जोधपुरमे रिणमलके वशजोका फैलाव और आधार । 12 उसी प्रकार जैसलमेरमे सारी साहिवीका आधार कालणके परिवारके ऊपर है । 13 बहुत-सी शाखाये कालणसे मिलती है । 14 इनके १२ गाँवोके साथ भाभेरो गाव ऊमरकोटके मार्गमे ।

१ गाव भूरो जेसळमेरथा कोस १० उत्तरनू ।
गाव विकूपुररीमे भूणकमळारा नीख, चारण वाळो ।
वीकानेररै देस १ हदारो वास जभू कनै ।

१ उढळियावास खीदासर कनै ।
३ पालण कालणरो ।
४ जसहड ।
५ रावळ दूदो ।
५ तिलोकसी । भैंसडा, राकडवा, साजीत, लूणोई, नेडाण, जेवाध[1] ।
५ सागणद्रेग ।
वागण चाधण ।
३ लखमसी कालणरो ।

४ वीकमसी ।
५ साल्ह ।
६ सीहड । ग्रमसर, मदासर गाव ।
४ जैचद लखमसीरो । श्राक ३
३ रावळ चाचगदे कालणरो, कालण पछै पाट वैठो । वरस ३२ दिन २० जेसळमेर राज कियो । तिणरा वेटा–

४ रावळ करन चाचगदेरो ।
४ तेजराव चाचगदेरो ।

५ रावळ तेजसी वडो करनरो । श्राक ४ ।

४ रावळ करन चाचगदेरो । चाचगदे पछै टीकै वैठो । वरस २८ मास ५ जेसळमेर राज कियो । तिणरा वेटा–

५ रावळ जैतसी वडो करनरो । घणा वरस जीवियो ।

६ रावळ मूळराज । तिणरा उरजनोत । जोधपुर चाकर ।

६ राणा रतनसीरो हमीर । हमीर जेसळमेर चाकर ।

५ रावळ लखसेन करनरो ।

६ मूळपसाव भाटी । इणारै गाव कूछडी जेसळमेरसू कोस २० ।

६ लूणराव । इणारै गाव २– सोजेरो, अरजणी, चाधणथा[2] कोस ६ ।

५ रावळ लखणसेन करनरो । करन पछै पाट वैठो । भोळो-सो ठाकुर हुवो । वरस १८ जेसळमेर भोगवियो । तिण समै रावळ कानडदे सावतसीयोत[3] सोनगरो जाळोर धणी छै । तिण रावळ कानडदे

---

1 तिलोकसीके ६ गाँवोंके नाम है । 2 से । 3 सामन्तसिहका पुत्र कान्हडदेव ।

रावळ लखणसेननू आपरी बेटीरो नाळेर मेलियो छै[1] । सु आगै लखणसेनरै वैर[2] सोढी ऊमरकोटरी हुती[3], सु निपट जोरावर हुती[4] । रावळ इणरो कह्यो लिगार लोप सकै न छै[5] । सु नाळेर आयो तरै गाढो सचीतो हुवो[6], पछै सोढीनू पूछण लागो–"रावळ कानडदेरो वडो ठोडरो नाळेर आयो छै सु पाछो फेरस्या तो राईतना माहे बुरा दीसस्या[7] । थे कहो तो नाळेर झाला[8] । तरै[9] सोढी कह्यो–"इतरी वात कवूल करो, आकरा देवाचा करो तो नाळेर झालण दू[10] ।" तरै रावळ कह्यो–"किसी वात दिसा थे देवचो करावो छो[11] ।" तरै सोढी आ वात कही–"एक तो सामेळै कवर वीरमदे आवसी[12], तरै थे कहिजो–"सामेळो[13] चहुवाणारो भलो पण[14] सोढा सारीखो नही । एक गढ माहै पधारो तरै[15] कहिजो–"सहर ऊमरकोट सारीखो नही । एक सोनगरीसू हथळेवो[16] जोडो तरै कहिजो –"सोढी सारीखो सोनगरीरो हाथ नही ।" पछै परण नै सीख दै तरै सोनगरीनू वासै मेलनै इळगार कर आवजो[17] ।" सु इण भोळै ठाकुर सोह[18]वात कवूल की । उठै गयो तरै सारी वात यूहीज[19] कीवी । रावळ कानडदे, वीरमदे, राजलोग सको[20] दिलगीर हुवा । पछै रावळ लखणसेननू सीख दी[21] । कानडदे आपरी बेटीनू वळाई[22] । सूरमालण कितराहेक साथसू साथै दियो छै । नै रावळ लखणसेन तो इळगार कर सोनगरीनू वासै छोड

---

1 अपनी बेटीका सम्बन्ध करनेके लिये नारियल भेजा है । 2 पत्नी । 3 थी । 4 जो बडी जबरदस्त थी । 5 रावल इसके कहे हुएको किंचित् भी लोप नही सकता है । 6 जब नारियल आया तो खूब चिंतित हुआ । 7 रावल कान्हडदेके जैसे बडे राज्यका नारियल आया है सो इसको यदि वापिस लौटा देंगे तो अन्य राजाओमे हम बुरे दिखेंगे । 8 तुम कहो तो नारियल स्वीकार कर लें । 9 तब । 10 इतनी बात कवूल करे और दृढ प्रतिज्ञा करें तो नारियल ग्रहण करनेकी आज्ञा दू । वि०—देवाचा='दे' (क्रिया)+'वाचा' (सज्ञा) दोनो शब्दोका (सज्ञाके रूपमे) समास है । 'देवचो' एक वचन समास रूप है । 11 कौनसी बातके लिए तुम प्रतिज्ञा करा रही हो । 12 एक तो यह कि सामेलेमे कुमार वीरमदेव आवेगा । 13 सम्मिलनोत्सव, स्वागत-समारोह । 14 परन्तु । 15 तब । 16 हस्त-मिलाप, पाणिग्रहण । 17 फिर विवाह करनेके बाद जब विदाई दे तब सोनगरीको घृणा और तिरस्कारके साथ पीछे छोड आना । 18 सब । 19 इसी प्रकार । 20 सब । 21 फिर रावल लखणसेनको विदाई दी । 22 कान्हडदेने अपनी पुत्रीको विदाई दी ।

परो गयो छै। सोनगरी दिलगीर थकी आवै छै[1]। निसीगडी गावरै तळाव मडळप कनै आय नीसरियो। आगै मडळपरा तळाव माहै रा ॥ नीवो सीमाळोत कसतूरियो मिरघ जबादि जळहर भूलै छै[2]। अठै पाणी ऊपर सोनगरीरो पिग्गा सेझवाळो आण ऊभो राखियो छै[3]। सोनगरी आपरी छोकर्रानू[4] कह्यो– 'झारी तळावथी भर ल्याव।" तरै छोकरी झारी भर ल्याई। तरै सोनगरी पूछियो–"पाणी माहै इसडी सुवास, इसडो तिरवाळो किण भात पडै छै[5] ?" तरै छोकरी कह्यो–"अठै तळाव माहै नीवो सीमाळोत कँवर १४० सारीखा मलूक लिया भूलै छै, तिणरी सुवास छै[6]।" तरै सोनगरी बळती-जळती जाती थी[7] पछै छोकरी मेल नीवारी खबर कराई। वात वणाई[8]। पछै उठै सूरनू कहि डेरो करायो। पछै नीवै सूरमालणनू सगळा साथ सूधो मारनै सोनगरीनू आणी[9]। पछै रावळ लखणसेन तो नीवासू को दावो कियो नही[10]। नै तठा पछै कितराहेक दिनै रावळ कानडदेरै वळै व्याह माडियो[11], नीवारै कानडदेरी वेटी ऊधळ आई, तिणरी मा रावळ कानडदेरै मुहागण छै[12], मु आ वैर कानडदेसू हठै पडी, कहै[13]–"व्याह ऊपर म्हारी वेटी जमाई तेडावो।" तरै कानडदे तो घणूही कह्यो–"वे कुण ? म्हे कुण ?" पण वैर रढ माड रही[14]। तरै नीवासू कहाव कियो। तरै नीवै कह्यो–"म्है बोहत गैर[15] की छै सु पजूपायकरा वोल[16] हुवै तो हू आऊ।" पछै पजूरा वोल दिया। तरै

---

1 सोनगरी उदास होकर आ रही है। 2 आगे मडलप तालावमे सीमालका वेटा राठौड नीवा तालावके पानीको मृगमदसे सुगधित करके स्नान कर रहा है। 3 यहा पानीके किनारे सोनगरीकी सेजवाल लाकर ठहरा दी गई है। 4 दासीको। 5 पानीमे ऐसी सुगध और चिकनाई (तिरमरा) किस वातकी है ? 6 यहा तालावमे नीवा सीमालोत अपने १४० समवयस्क कुमार और मित्रोके साथ जल-क्रीडा करता हुआ नहा रहा है। यह सुगध उसकी है। 7 तब सोनगरी तो पहलेसे ही जली-भुनी जा रही थी। 8 वात निश्चित की। 9 फिर नीवा सूरमालण और दूसरे साथ वालोको मार करके सोनगरीको ले आया। 10 फिर रावल लखणसेनने तो (उसकी औरतको भगा कर ले जानेके विरुद्ध) नीवासे कुछ भी झगडा-टटा नहीं किया। 11 रचा। 12,13 जिसकी मा रावल कान्हडदेकी मानिनी पत्नी है सो यह स्त्री कान्हडदेसे हठ करके कहती है। 14 परन्तु स्त्री अपनी हठ पकडे रही। 15 अनुचित। 16 वचन।

नीबो माणस ४००सू जाळोर आयो । पछै कितरैहेक दिनै राजडियै सूरमालणरै बेटै घात घाली[1] । पछै नीबानू चूक कर मारियो[2] । नीबो मरतो राजडियानू ले मुवो[3] । नै पजूपायक छोड नै पातसाहरै गयो ।

## वात राठौड़ सीमालरी

सीमाळ पैहली कानडदेजी तीरै[4] रहतो । पछै कानडदेजी जाळोर ऊपर घर कराया, तिकै देखणनू सीमाळनू मेलियो नै सूरमालणनू साथै मेलियो, सु सीमाळ मेहलायत देख क्यू वँतमे खोड काढी[5] । तरै सूर कह्यो–"तू कानडदेजीसू ही घणो समझै ?" यू करता माहोमाही बोला-चाली हुई । तरै सीमाळ सूरनू लोह वाह्यो, सु चूको[6] । सूर लोह वाह्यो सु सीमाळ काम आयो ।

पछै रावळ लखणसेन कानडदेरी बेटी वासै मेल आप आगै जेस-ळमेर गयो हुतो, नै सूरमालण कानडदे बेटी साथै मेलियो थो सु नीबो मडळ परै तळाव भूलतो थो,[7] सु क्यू सवण[8] बोलियो । तरै नीबै सवणीनू[9] पूछियो, तरै सवणी कह्यो–"ओ सवण यू कहै छै–"जाम[10] ४ अठै रहसी तो बापरो मारणहार हाथ आवसी, नै एक पदमणी सारीखी बैर हाथ आवसी[11] ।" तरै नीबो उठै रह्यो । अतरै[12] सोनगरी सेझवाळो नै साथै सूरमालण आयो । तरै अठै नीबै सूरमालणनू साथ सूधो मारनै कानडदेरी बेटी ले गयो ।

६ रावळ पुनपाळ लखणसेनरो । एक बार, लखणसेन काळ कियो । इणरै माथै टीको नीसरियो[13] । वरस २मा दिन ५ हुवा तरै जैतसी तेजरावरो बेटो, चाचगदेरो पोतरै गढ लियो[14] । टीको कढायो । पुन-पाळनू पूगळ दे नै उठीनू परो मेलियो[15] ।

---

1 पीछे कितनेक दिनोके वाद सूरमालनका वेटा राजडिया उसे मारनेकी ताकमे रहता रहा । 2 फिर नीवेको धोखेसे मार दिया । 3 नीवा भी मरता हुआ राजडियाको ले मरा । 4 पास । 5 सीमालने महलोको देख कर मापमे कुछ कसर निकाल दी । 6 मो टल गया । 7 स्नान कर रहा था । 8 शकुन । 9 शकुनी । 10 प्रहर । 11 और एक पद्मिनीके समान स्त्री हाथ आयेगी । 12 इतनेमे । 13 लखनसेनकी मृत्यु हुई तव एक वार तो इमके सिर पर ही तिलक निकला । 14 दो वर्ष और पाच दिन हुए तव चाचगदेके पोते, तेजरावके वेटे जैतसीने गढ ले लिया । 15 पुण्यपालको पूगल प्रदेश दे कर उधर भेज दिया ।

मूळपसाव कहै छै, पुनपाळरा पोतरा छै। इणारै गाव १ जेसळ-मेररै देस गाव कुछडी, जेसळमेरथा कोस २० सोढा दिसी[1]।

लूणराव इणारै जेसळमेररै देस गाव २ सोजेवो नै आरजणी, चाअणथा कोस ६।

५ रावळ जेतसी तेजरावरो। तेजराव रावळ चाचगदेरो बेटो। तिण रावळ लखणसेनरा वेटा पुनपाळ कना जेसळमेर जोरावरी लियो[2]। निपट वडो ठाकुर हुवो। ओ रावळ घणा वरस जीवियो। इणारै वेटा मूळराज रतनसी लायक हुता। राजरी सारी मदार आप जीवता वेटा ऊपर छै। रावळ जैतसीरै परधान सीहड वीकमसी, तिको भली भात ठाकुराई चलावै छै। रावळ आप पुखतो[3] हुवो छै सु माहै वैठो रहै छै। राज भली भात वीकमसी चलावै छै। रावळरै इतवार सारो वीकमसीरै हाथ छै[4]। सु रावळरा सारा भाई-वध वीकमसी माथै लागे छै[5]। सु रावळ जेतसी तो पुखतो ठाकुर सो किणहीरो कह्यो मानै नही। यू करतां रावळ निपट वूढाणो[6], आखिया ऊपरलो मास छिटक डोळा ऊपर आयो। राजरी मदार सारी कवर ऊपर मडी। कवर मोटियार तिण आगै सको वीकमसीरी घात घातण लागी[7]। कवर पण सुणण लागा[8]। कवर मूळराजरै कनै जसहडरा वेटा रहै। तिणै दिने ग्रै निपट लायक छै। दूदो तिलोकसी, सागण, वागण ग्रै मनमे धरतीरो ग्रासवेध राखै छै[9]। पण मूळराज रतनसी कवर निपट जोरावर, परधान सीहड वीकमसी निपट जोरावर, तिण आगै कठैही क्यू धरती माहै खाय सकै नही[10]। सु एक दिन आसकरण जसहडोत मूळराज रतनसीनू कहण लागो–"रावळजी तो निपट बूढा हुवा, थे वेपरवाह। कोई राजरी खवर ल्यो नही। परधान वीकमसी तिको

---

1 जैसलमेरसे बीस कोस सोढोकी ओर। 2 जिसने रावल लखणसेनके वेटे पुण्यपालसे जैसलमेर जबरदस्तीसे ले लिया। 3 वृद्ध। 4,5 विश्वास करने योग्य सभी कामोकी जिम्मे-वारी रावलकी ओरसे वीकमसीके हाथमे है, इसलिये रावलके सभी भाई-वधु वीकमसीसे नाराज रहते है। 6 इस प्रकार चलाते रावल निपट वुड्ढा हो गया। 7 कुवर जवान हो गया, अब उसके आगे सभी वीकमसीके विरुद्ध दाव-घातकी वार्ते करने लगे। 8 कुवर भी उस ओर ध्यान देने लगे। 9 दूदा, तिलोकसी, सागण और वागण ये मनमे धरतीका ग्रासवेध रखते है। 10 उसके आगे देशमे ये कुछ भी खा नही सकते।

सूक-भाडा लै आपरो काम करै[1]। उपजै सु सोह खाय जाय, थानू क्यू दै नही[2]।" इण भात कवरानू भखावै छै[3]। एक दिन मूळराज रतनसी दरबारै बैठा छै। दूदो जसहडोत कनै बैठो छै, तरै साकारी वात चली। तरै दूदै जसहडोत मूळराज रतनसीनू कह्यो–"जेसळमेर इतरी वडी ठोड, नै पीढी ५ तथा ७ आपणो हुई, नै साको न हुवो[4]। साका विगर नाम न रहै, सु एक साको कीजै[5]।" तरै मूळराज, रतनसी नै दूदै साकैरी निसचै करी, नै पातसाहसू विरोध वधावणरो करै। पिण वीकमसी करण न दै[6]। वळै आसकरण वीकमसीरी घात कवरा कनै घातो[7] सु कहै–"आगलै दिन वोखारी सेखा कनै रु० १३०००) वीकमसी लिया[8], ज्यामे रु० ७००) रावळ दिया[9]।" अै वाता करै[10]। सु इणारी वातासू मूळराज रतनसी वीकमसीनू मारणरो विचार कियो।

दूहा–नृभै[11] दुरग दूवा नरा, सोह[12] आलोचै सीर।
कवरो सत्र[13] वीकम कहै, हीया पलट्टै हीर ॥१
मूळू मकड दोयण[14]मुख, कर लागौ कूटाळ।
वीकमसी वीसूत्रसौ, रतनो पूछ रढाळ[15] ॥२

## वारता

आसकरण नै मूळराज रतनसी वीकमसीनू मारणरो विचार कियो सु आ वात रावळ जैतसीरी राणी सुणी। तरै वीकमसीनू एकत तेड कह्यो–"तू परो जा। कवरामे लखण क्यू न छै[16]।" तरै वीकमसी कह्यो–"हू कठी जाऊ[17]?" पण रावळ सूस दे वीकमसीनू जाणो थपायौ[18]।

---

1 प्रधान वीकमसी रिश्वतें आदि लेकर अपना काम चलाता है। 2 जो उपज होती है सब वह खा जाता है, तुमको कुछ नही देता। 3 इस प्रकार कुवरोको वहकाते है। 4 और कोई साका (ख्यातिका काम या युद्ध) नही हुआ। 5 सो एक साका किया जाय। 6 लेकिन वीकमसी करने नही देता। 7 आसकरणने भी वीकमसीके विरुद्ध कुवरोके कान भरे। 8 सो यह कहता है कि अभी थोडे दिन हुए वुखारी शेखोसे रु १३०००) वीकमसीने लिये। 9 जिनमेसे रु ७००) ही आपको दिय। 10 ऐसी वातें करते है। 11 निर्भय। 12 सभी। 13 शत्रु। 14 शत्रु। 15 जिद्दी, हठी। 16 तू यहासे चला जा, कुवरोमे कुछ भी विवेक नही है। 17 मैं कहाँ जाऊ। 18 परतु रावलने शपथ देकर वीकमसीको जानेका निश्चय करवाया।

दूहा— केथ[1] रयण मूळ सु कुण, देखै नाही देख ।
ग्रै वीकम ऊवेळिया, वोखारी नै सेख ॥१
सोनो रूपो सावटू[2], लाखा लेखा लेह ।
लीण महाघण लाखउत, लोभ कवर लोपेह ॥२
सोनो जैत सभारियो, हय हय ग्राणै हत्थ ।
तू भाई परधान तू, वीकम छड कुवत्थ ॥३
उर करवत वहि ग्रापरै, साठ भडां सप्रमाण ।
वीकम सिव मारग वहै, ले दीना मोजांण[3] ॥४
साम पसावै सामध्रम, कीधा मै क्रम कोड ।
प्रगट रिजक दिन पाधरै, जपै वीक कर जोड ॥५
वीकमसी रावळ वदै[4], करदै जो करतार ।
हू जेसळगिर हेकठा, वळै प्रधानै वार ॥६
वीक विदेसज चालियौ, विजडहथो[5] वळ वाध ।
मूळै तोडी मुण मुगुर, साहि ग्रालमसू साध ॥७

## वात

वीकमसी ग्रागं काई[6] वुराई कर सकतो नही, पाल-पाल राखतो वीकमसो[7] । पछै मूळराज ग्राप-मुरादो हुवो[8] । तरै पातसाहसू तोडणरी कीवी । सु पातसाहरा गुर रूम-सूम गया था । सु रूम-सूमरै पातसाह इणां पीरजादानू तेरै कोड रुपियारो माल दियो नै विदा किया[9], सु पाछा वळता जेसळमेर ग्राय उतरिया[10] । ग्रसवार २०० पातसाहरा सेखरै साथै वोळाऊ[11], सु मूळराज रतनसी उणानू मारनै वित सोह लियो[12] । पातसाहरा गुर वेऊ मारिया[13] । तेरै कोड रुपिया नै घोडा लिया ।

---

1 कहा । 2 एक वस्त्र । 3 दान । 4 कहता है । 5 जिसके हाथमे तलवार है, खड्ग-धारी । 6 कोई । 7 वीकमसी उन्हे रोक-रोक रखता । 8 फिर मूलराज स्वेच्छाचारी हो गया । 9 सो रूम-सूमके वादशाहने इन पीरजादोको तेरह करोड रुपयोका माल दिया और फिर वहासे रवाना किया । 10 सो लौटते हुए ये जैसलमेर ग्राकर ठहरे । 11 यात्रा-रक्षक । 12 मूलराज और रतनसीने उनको मार करके उनका सब धन ले लिया । 13 वादशाहके दोनो गुरुग्रोको मार दिया ।

दूहो–हुओ हमल्लो हिंदवा, सिधारै सुजडेह[1] ।
तरै कोडी माल ले, पीट सईदा देह ॥१

उणा सेखजादानू मारिया । माल घणो दीठो, जु ओ माल पातसाहरै घररो सु इण वासै उपद्रव हुसी[2] । जिणै ठाकुरै कहि नै माराया था, तिणासू बुरो मानियो[3] । माल सगळो गढ नीचै भुहरा छै तिणा माहै घातियो[4] । पछै आ वात पातसाह साभळ नै गाढो कोपियो[5] । कह्यो–"मै इणानू घणा गुना माफ किया था, पिण ओ गुनो माफ करू नही ।"

दूहा–जेसळमेर दुरग गढ, वसै न काही वाक[6] ।
खून[7] वगस्सै खाफरा[8], ते सुरताण तलाक[9] ॥१
आलम[10] दाढी कढ्ढ कर, घातै वेवै[11] हाथ ।
साभू[12] गढ हू मूळ रयण, लेखू चद्रप्रसाथ ॥२

## वात

पातसाह जेसळमेर ऊपर फोज विदा कीवी, तिणमे सिरदार कमालदी, घोडा हजार तीससौ विदा कियो । कमालदी गढ आय घेरियो । घणा दिन हुवा पण गढ तूटो नही । वरस २ तथा ३ हुवा सु कमालदीनू सोगटा[13] रमण घणी चूप[14] हुती, सु एक दिन मूळराज सादो सो वागो पेहर सादा हथियार वाध नै कमालदी चोपड रमतो थो तठै[15] आय ऊभो रह्यो, दाण वतावण लागो[16] । सखरा दाण करै[17] । तरै आप कमालदी रमण लागा सु मूळराज दाण २ जीतो[18] । ऊठता दाण १ कमालदी जीतो[19] । तरै तो परा ऊठिया । दिन १० तथा १५

---

1 कटारियोसे मार दिया । 2 माल वहुत देखा, तव सोचा कि यह माल वादशाहके घरका सो इसके पीछे उपद्रव होगा । 3 जिन ठाकुरोने कह करके इनको मरवाया था उनसे नाराज हो गये । 4 सारा माल गढके नीचेके तलघरोमे डाल दिया । 5 पीछे वादशाहने जव यह वात सुनी तो वहुत क्रोधित हुआ । 6 प्रकार । 7 अपराध । 8 काफिरोको । 9 शपथ, प्रण । 10 वादशाह । 11 दोनो । 12 अधिकार करू, नाश करदू । 13 चौपडके पासे । 14 इच्छा, शौक । 15 वहा । 16 खेलकी चाल वताने लगा । 17 अच्छे दाँव करता है । 18 तव आप और कमालुद्दीन खेलने लगे उसमे मूलराज दो दाँव जीत गया । 19 उठनेके समय (वाजी समाप्त करते समय) एक दाँव कमालुद्दीन जीता ।

रमता हुवा । तरै कमालदी रावळ मूळराजनू ओळखियो[1] । तरै कमालदी रावळनू कह्यो–"थे अठै सासता[2] रमणनू आया करो । अठै आवता-जावता थानू बुरो चाहसी नही[3] । तिण वातमे खुदाय विचै छै[4] ।" तठासू[5] रावळ रमणनू सासतो आवै । मु कितराहेक दिन हुवा । तरै आ वात पातसाहजी साभळी[6], मु पातसाहरै कपूरो मरहठो पच-हजारी उमराव थो, तिण पातसाहनू मालम कियो–"मूळराज कमालदी सोगटै रमै छै । गोठिया हुवा रहै छै[7] । गढ ले कुण[8] ? म्हानू हजरत निवाजस कर विदा करै तो म्हे गढ ल्या[9] ।" तरै पातसाह इणानू वारै-हजारी[10] कर विदा करण लागा । तरै यो कह्यो–'हजरत ! एक कोई सिरदार कर मेलो, जिणारै मुहडा आगै म्हे दोडा[11] ।" तरै मिलक केसर पातसाहरो भाणेज अर जमाई पण हुतो[12] तिणनू[13] घणो साथ दे विदा कियो । मु फोज लेनै जेसळमेर नजीक आयो । कमालदी पण साम्हो आयो । उणानू कह्यो–"गढ घाए लिरीजसी नही[14] । गढ सामो तूटसी जद लिरीजसी[15] । थे गढ घेर वैसज्यो ।" मु औ मानै नही । तरै कमालदी कह्यो–"थे मोनू लिखद्यो । सु कमालदी कह्या घणोही, पिण इणा मानियो नही[16] ।" तरै कमालदीनू रुक्को कर दियो । कमालदी उतरियो । उणै गढनू चलाया । तरै कमालदी मूळराजनू कहाडियो[17] जु–"माहरी रोजी मनै व्है छै[18] । देखा थे किसडी[19] वेढ[20] करो छो ।" तरै मूळराज रतनसी साथनू कह्यो जु–"तुरकानू गढ लगाव दो, कागुरै हाथ घातता ताई कोई तीर गोळी मत चलावो । मु गढरोहो व्है छै[21], नीसरणिया लागै छै, गढरै ठठ-

---

1 पहिचाना । 2 निरन्तर । 3 यहा आते-जाते रहनेमे तुम्हारा कोई अहित नही चाहेगा । 4 इस वातके लिये खुदा वीचमे है । 5 उस दिनसे । 6 यह वात वादशाहने सुनी । 7 परस्पर मित्र हुए रहते है । 8 गढको कौन फतह करे ? 9 हजरत, हमे कृपा कर भेज दें तो हम गढ फतह करें । 10 वारह हजारी मनसव । 11 जिसके आगे हम सेवा वजावे । 12 था । 13 उसको । 14 उनको कहा—केवल लडाई करनेसे गढ नही लिया जा सकेगा । 15 सामनेसे गढ टूटेगा तव लिया जा सकेगा । 16 तव कमालुद्दीनने कहा—तुम मुझे लिख कर दो । कमालुद्दीनने वहुत कहा, परन्तु इन्होने नही माना । 17 कहलवाया । 18 मेरी रोजी मारी जा रही है । 19 कैसी । 20 लडाई । 21 सो गढका घेरा लग रहा है ।

रियारी ओट जूझार जाय लागा छै गढनू, नै मरहठो कपूरो साथरी मदत करै छै, नै मिलक केसर, रामसा, सराजदीन प्रोळरी अणी माहै छै[1]। हाथी १५ किवाड भाजणनू आगै किया छै। नै मूळराज प्रोळरी हाटा माहै जीनसाळ पैहर माणस हजार दोयसू रह्यो छै[2]। नै तुरक नीसरणिया चढिया छै। नै मूळराज साथसू ताकीद करै छै जु–"जरेही भेर व्है, तरै सको लोह करज्यो[3]। मु तुरकै कागुरानू हाथ घातियो नै नजीक आया तरै भेर हुई। तरै कागुरासू मतवाळा डागरजत्र[4] छोडिया, सु घणा आदमी मारिया। नै प्रोळरै मुहडै मूळराज हाटा माहिसू ऊठियो लोहै मिळियो। नै किवाड नाख नै रतनसी पण लोहै मिळियो। उठै मिलक केसर सराजदीन, रामसा वीजाही[5] घणा सिरदार मारिया, घणो साथ काम आयो। आदमी हजार सित्तर माराणा। हाथी १५ मारिया। कपूरो मरहठो भागो। वीजी ही[6] पातसाही फोज भागी।

दूहा–केसर मिलक सराजदी, वे[7] मूळू हत्थाह[8]।
जाण कदोई ऊथळै, खाजो मझ कडाह[9] ॥१
भाणेजो पतसाहरो, जामादो[10] पतसाह।
मुणसज खाधो मूळरज, सवळै ऊभी वाह ॥२
रामसाह हर रतनसी, खाचिय पाणो वाण।
सिर धड सहितो संग्रहै लीधो जोर विनाण ॥३
सित्तर सहँस निकंदिया[11], कोट भयकर काळ।
वधव सेन विछोडिया, के कूटत कपाळ ॥४
काही सेवग साभरै, के सभारै साम।
हूकळ भेरी मूळरज, जीतो गढरो काम ॥५
पनरै पट-हसती पडै, सतर हजार कमध।
कपूरौ नै मरहटो, वे भागा अनमध ॥६

---

1 और मलिक केसर, रामशाह और सराजुद्दीन ठीक पोलके सम्मुख आ गये है। 2 और मूलराज पोलकी शालोमे दो हजार सैनिकोके साथ कवच पहिन कर तैयार हो रहा है। 3 जिस समय भेरी बजे तब सभी एक साथ प्रहार कर देना। 4 एक प्रकारकी तोप। 5 और भी। 6 दूसरी भी। 7 दोनो। 8 हाथोसे। 9 हलवाई जिस प्रकार कडाहीमे खाजा उलट रहा हो। 10 दामाद। 11 नाश किया।

## वात

फोज भागी तरै कमालदी आय मूळराजसू अरज की–"जु मिलक केसर, सराजदी, रामस्या वीजा ही भला माणस काम आया छै, तिणारी लोथा दो जु मक्कै मेला[1] ।" तरै मूळराज कह्यो–"लोथा द्या नही, लोथा आगमे घात नै वाळसा[2] । वीजी लोथां स्याळ, जरख जिनावर खासी, पिण द्यां नही[3] ।" तरै कमालदी कह्यो–"थे लोथा नही दो तो पातसाह माहरी खाल पाडसी[4] । हू इतरी अरज करू छूं जु लोथा पाऊ[5] ।"

दूहा–कप्पूरो नै मरहटो, भडे उतारै भूत ।
मांगै साह कमालदी, केहररो तावूत[6] ॥१
मिलक कहै मूळा सरस, राय म[7] कर मन रोस[8] ।
साहि-आलम पडावसी[9], मूझ[10] सकानी[11] पोस[12] ॥२
जड-धड[13] जरखा[14] जवका[15], मिलक कमाल म-मग्ग[16] ।
पेस करै जे पातसा, केहर जाळिस अग्ग[17] ॥३
तेरी माई पुत्र हू, तू मेरा सुरताण ।
वाप ! तूझ मो वाप है[18], मूळू जोय प्रमाण ॥४
मूळू कहै कमालदी, सत्र[19] न कोई देह ।
केहररो तावूत लै, मैं तोनू दीनेह ॥५
मुसलमान काधे विहू,[20] ऊतारै तावूत ।
मूळू नै कम्मालदी, वधव हूवा जुगून[21] ॥६
ऊपाडै नरवाहणां, आसी[22] सौ तावूत ।
रारी[23] व्रन्ना[24] चोळ[25] मुख, साह धखै जमदूत ॥७

---

1 उनकी लाशें दो सो मक्के भेज दें । 2 लाशें नही दें, लाशोको आगमे डाल कर जलायेंगे । 3 दूसरी लाशें भेडिये जरख आदि जानवर खायेंगे, परन्तु देंगे नही । 4 तुम लाशें नहीं दोगे तो बादशाह मेरी चमडी उतार देगा । 5 मैं इतनी प्रार्थना करता हूँ कि इनकी लाशे मुझे मिलें । 6 लाश, जनाजा । 7 मत, नही । 8 क्रोध । 9 उतरवायेगा, खिचवायेगा । 10 मेरी । 11 सबकी । 12 पोश, चमडी । 13 सिर और शरीर । 14 भेडिये । 15 जबुक, गीदड । 16 मत माग । 17 आगमे जलाऊगा । 18 तू मेरा बाप है । 19 शत्रु । 20 दोनोको । 21 दोनो । 22 आयेंगे । 23 नेत्र । 24 वर्ण, रग । 25 लाल ।

ताबूता ऊतारिया, ग्रह ढोई मड[1] हाण ।
पडिया दिल्ली पीटणा[2], भाखिस[3] दुक्ख दिवाण ।।८
डसण-गयदा[4] नाखिया[5], भारवध भुज ठोर ।
कनछ[6] रजा पट्टाभ्भरण[7], जेहा पावस घोर ।।९
पेरोसा सुरताण धिख, वळ छळ देखै वेव[8] ।
कप्पूरौ नै मरहटो, सिर मूडै गद देव ।।१०
साभळ[9] मिलक कमालदी, सुज[10] भाखै पतसाह ।
केहर मार ग्रदावदै[11], से[12] भाटी चावाह[13] ।।११

## वात

पातसाह वळै कमालदीनू विदा करै छै । कमालदी उजर करै छै जु–"हजरत मरहटा कपूरारै कहै मोनू हळको पाडियो[14] । म्हारा भाई-भतीजा रजपूत मराया, खराब हुवो नै हजरत पण भलो न मानियो सु हू जेसळमेर ऊपर जाऊ नही ।" तरै पातसाह घणो हठ करनै कमालदीनू विदा कियो ।

दूहो–सुण फुरमाण न खाण ग्रन, एक न दूजी वार ।
हसा वचन सभाहियो, गढचै रद दुवार ।।१

## वात

कमालदी घोडा हजार ग्रस्सी ले ग्रायो। गढ घेरियो । दिहाडै ढोवा हुवा छै[15], सु परधान वीकमसी ईडर जाय चाकर हुवो थो, सु गढ विग्रहियो साभळ नै ग्रायौ[16] । ग्राया पछै कहण लागो जु–"राज मोनू कूडो[17] कळक दे चोरीरो काढियो थो सु हमै[18] साच कूडरो

---

1 युद्ध । 2 रोना-धोना । 3 कहेगा । 4 हाथियोके दात । 5 डाल दिये । 6 केवांच ? 7 हाथी । 8 दोनो । 9 सुन कर । 10 पुन । 11 शत्रुतासे । 12 सभी, समस्त । 13 प्रसिद्ध । 41 मरहट्टा कपूरेके कहनेसे हजरतने मुझे हल्का दिखाया । 15 दिनको ग्राक्रमण हो रहे हैं । 16 गढके घिर जानेकी बात सुन करके ग्राया । विग्रहियो=युद्ध होना । 17 झूठा । 18 ग्रव ।

आसकरणनै पूछै नै नवेडो[1] लीजै। तिण दिन राजनू म्है कह्यो नही, पिण हमे साच लीजै[2] ।" तरै आसकरण भूठो हुवो। तरै मूळराज रतनसी जाणियो–"ओ मांहरो[3] दुसमण थो सु म्हारो[4] भलो चाकर गमायो[5] । तिणथी[6] इणा[7] ठाकुरारै माहोमाहै[8] असुख[9] घणो वधियो[10] । तरै जसहडोता जाणियो[11]–"म्हासू वुरो मानै तो म्हे क्यू मरा[12] ? तरै दूदो नीकळण माहै नही[13] । तरै आसकरण सूतानू वाध माचा माहै घात नै ले नीसरियो[14] । ऐ ठाकुर परा गया[15] । दूदो पारकर परणियो हुतो, उठै गया छै[16] । पछै मूळराज जैतसी गढ विढिया[17] । पछै रावळ जैतसी राम कह्यो[18] । पछै मूळराज रावळ हुवो। रतनसीनू राणाईरो विरद[19] । मूळराज वरस १ नै मास ६ राज कियो। वरस १२ वारै गढ विग्रहियो रह्यो[20] । पछै गढ माहिलो सामान तूटो, वीजो[21] धान नही, काळवी ज्वार[22] मास ६ री हुती, सु मूळराज रतनसी कह्यो–"खावा नही, असत धान छै[23] ।" तरै मरणरो मतो कियो[24] ।

दूहो–पाच कले परवारसू, रावळ आलोचेह।
आपै[25] मर गढ आपस्या[26], विजडा[27] वार करेह ॥१

## वात

कमालदीनू कहाडियो जु–"थे म्हारा भाई हुवा था, सु आज भाईयारो वेळा छै, म्हारो वीज उवार राखो[1] ।"

---

1 निर्णय। 2 उस दिन आपको मैने कहा नही, परन्तु अव मच वात क्या है, इसका पता लगावे। 3 हमारा। 4 हमारा। 5 खो दिया, दूर कर दिया। 6 इमसे। 7 इन। 8 परस्पर, आपसमे। 9 शत्रुता। 10 वढ गया। 11 तव जसहडोतोने विचारा। 12 हमसे वे शत्रुता मानते हैं तो फिर हम क्यो मरें। 13 दूदाका विचार तव भी वहासे निकलनेका नही। 14 तव आसकरणने उसे सोते हुएको वाँध दिया और खाटमे लेकर निकल गया। 15 ये सरदार चले गये। 16 दूदा पारकर व्याहा था, इसलिये वहा चला गया। 17 फिर मूलराज और जैतसीने गढमे युद्ध किया। 18 जिसके वाद रावल जैतसी मर गया। 19 रतनसीको रानाकी पदवी और विरुद। 20 वारह वर्ष तक गढ घिरा रह कर युद्ध चलता रहा। 21 दूसरा। 22 काली ज्वार। 32 सत्वहीन धान्य है। 24 तव मरनेका निश्चय कर लिया। 25 अपन। 26 देंगे। 27 तलवारोंमे। तुम हमारे धर्म-भाई हुए थे सो आज भाइयोकी सहायता करनेका समय है, हमारा वीज (वंश) वचा कर रखो।

दूहा–"मूवा गाढै तै हुवै, दीनो वचन सतोल।
क्यू पाळीस[1] कमालदी, बधवतणरा बोल[2] ॥१
अखै[3] कमालहि मूळरज, सुण नरवै-नरनाह[4]।
साय अमान समधरै, सहिया सोह पतसाह ॥२
इक भाणेज असाहजो[5], कुवर वचाय चियार[6]।
मूळू कहै कमालदी, सा कीधा तो सार[7] ॥३

दूहा-सोरठा

असहाजी[8] अमान[9], मूळू कहै कमालदी।
म करै मूसलमान[10], मिलक म मारै म नव हथ ॥४
इमान मा[11] उतपत्ति जे, नोज[12] मजार निवेस।
कमाल पयपे[13] मूळरज, तास न कोई वेस[14] ॥५
कमाल पयपै मूळरज, सुण मेरा सुरताण।
जा धड ऊपर सीस छै[15], पाळिस वाच प्रमाण[16] ॥६

इतरा सिरदार कमालदीनू सापिया[17]–घडसी, लखमण, मैगळदे भाटी, कानडदे, ऊंनड। पछै किवाड प्रोळरा नाख माणस १२०सू काम आयो[18]।

साखरो गीत—

घड रयण-गळती[19] घडी-घडी घर,
पुड लोना खत्रमाळ[20] प्रज।
मेर-सिखर[21] उर ऊपर मडियो,
मन धू चळै न मूळरज[22]।

---

1 पालन करेगा। 2 भाईकी प्रतिज्ञाको। 3 कहता है। 4 नृपतियोका नृपति। 5 हमारा। 6 चारो। 7 अपनी प्रतिज्ञाको याद कर। 8 हमारी। 9 अमानत। 10 उन्हे मुसलमान मत बना लेना। 11 धर्ममे। 12 नही। 13 कहता है। 14 तेरे साथ कोई कपटकी बात नही है। 15 जब तक धडके ऊपर शीश है। 16 प्रामाणिक पुरुषकी तरह अपने वचनोका पालन करूगा। 17 कमालुद्दीनको इतने सरदार सुपुर्द कर दिये। 18 पीछे पोलके किंवाड खोल कर १२० मनुष्योके साथ काम आया। 19 पिछली रात। 20 नक्षत्रमाला। 21 सुमेरुगिरि पर्वतका शिखर। 22 मूलराजका मनरूपी ध्रुव चलायमान नही होता।

तरण[1] धाय निस[2] फोज तूटती ,
उडियण[3] नर जाते आवग्ग[4] ।
सुगिर सुरग[5] उर सुचित जैत-सुत ।
खित डोलियो[6] नवहतो[7] खग ॥२
निसा फोज घटी ती[8] नीमटती[9] ,
फिरतै नर नाखत्र[10] अणफेर[11] ।
उरधज कियौ न जैत-अगोभ्रम[12] ,
मन मूळरज ज्यूही ध्रू मेर[13] ॥३

रावळ मूळराजरा बेटा, आक ६–

७ देवराज मूळराजरो, तिको टीकै तो न वैठो[14] । मूळराज रतनसी मरिया पछै दूदो जसहडोत रावळ हुवो[15] । दूदो तिलोकसी साको कर मुवा पछै रावळ घडसी रतनसीयोत पातसाहनू ओळग नै धरती वाळी[16] । पछै घडसीनू जसहड तेजसी चूक कर मारियो[17] । घडसीरै वेटो को न थो[18] । पछै विमळादे रावळ मालदेरी बेटी केहर राणा रूपडारो दोहीतरो[19], तिणनू[20] वारूछाहिणसू तेडनै[21] जेसळमेर टीको दियो ।

८ केहर देवराजरो रावळ हुवो, रावळ घडसी पछै ।

८ हमीर देवराजरो । जिणरा वासला[22] उरजनोत भाटी सत्तारा पोतरा[23] । जोधपुर चाकर छै । हमीर देवराजोनरै मारोठ हुती । हमीररो धडो १ जेसळमेर चाकर । आगै पोकरणरा वाहळा[24] ऊपर रैहता । उरजनोत जोधपुर चाकर । जैतो साळोडी पीपळ-वडसायै

1 सूर्य । 2 रात । 3 तारे । 4 समस्त । 5 शृंग । 6 कंपायमान हुआ । 7 सिंह । 8 तीन । 9 वीतती हुई । 10 नक्षत्र । 11 नहीं फिरने वाला । 12 जैतेके वंशजने । 13 जिस प्रकार ध्रुव और मेरु अटल है उसी प्रकार मूलराजका मन अटल है । 14 मूलराजका वेटा देवराज गद्दी नहीं बैठा । 15 मूलराज और रतनसीके मरनेके बाद दूदा जसहडोत रावल हुआ । 16 दूदा और तिलोकसीके मर जानेके बाद रावल घडसी रतनसीयोत बादशाहकी खुशामद करके धरतीको लौट आया । 17 फिर घडसीको जसहडने धोखेसे मारा । 18 घडसीके वेटा कोई नहीं था । 19 दोहिता । 20 जिसको । 21 वुला कर । 22 जिसके पीछेके । 23 पोते । 24 नाला ।

परणीजण आयो हुतो सु किणही सूल व्याह तो न हुवो[1], नै मागण घणा भेळा हुवा । तिणानू विना परणिया त्याग दियो[2] ।

जसहडरा बेटा—

१ रावळ दूदो । १ तिलोकसी । १ वागण । १ सागण । १ आसकरण ।

रावळ दूदो जसहडोत नै तिलोकसी जसहडोत अै वेहू[3] भाई, जसहडरा वेटा । जसहड पाल्हणरो । पाल्हण काल्हणोत । सो अै क्युही टीकायत हुता नही । मूळराज, रसनसी काम आया तरै[4] गढ पातसाह लियो नै राणा रतनसीरा वेटा घडसी, कानड, ऊनड–मूळराजरा । भायेलो[5] कमालदी थो, तिणनू[6] बीज[7] उवारणनू सूपिया था, सु कमालदी जीव ज्या राखै छै । पछै पातसाहनू खवर हुई तरै कमालदी घोडा ४ चाढ नै काढिया सु अै[8] नागोर आया । पछै गढ सूनो पडियो, तद रावळ मालदेजीरी वडी ठकुराई थी सु राठोड जगमाल मालावत गढ सूनो देख नै लेणरो विचार कियो । गढमे वसणरी तयारी कीवी । गाडा ३०१ सीधारा[9] भर चलाया सु जाय गढ पोहता[10], सु वारहठ रतनू चद्रव मालारो विखायत थको महेवै रह्यो थो[11], तिण[12] जाणियो गढ माहरा ठाकुरासू जाय । तरै भाटी दूदो तिलोकसी जसहडरा वेटा पारकर रेहता उणानू[13] खवर कराई, जु–"गढ लीजै छै[14]।" तरै दूदो तिलोकसी आय गढ माहे पैठा[15] सु जगमाल वासाथी[16] आयो । तरै आगै घोडारो घस दीठो[17], तरै कह्यो–'अै कुण[18] ?" तरै वारहठ चद्रव राठोड जगमाल कनै[19] रहतो सु वारहठ कह्यो–"बीजो[20] तो कोई इसडो[21] भाटी जाणियो

---

1 जैता सालोडी पीपल-वड लग्नमे विवाह करनेको आया था परन्तु किसी कारण विवाह नही हो सका । 2 परन्तु वहा मागने वाले वहुत इकट्ठे हो गये उनको विना विवाह हुए ही त्याग (विवाहका दान) दिया । 3 दोनो । 4 तव । 5 मित्र । 6 जिसको । 7 वश । 8 ये । 9 भोजन सामग्रीके । 10 पहुँचे । 11 मालाका वेटा रतनू-वारहठ चद्रव सकट कालमे मेहवेमे रहा था । 12 उसने । 13 उनको । 14 गढ ले रहे हैं । 15 प्रवेश किया । 16 पीछेसे । 17 तव आगे घोडोका झुड देखा । 18 ये कौन ? 19 पास । 20 दूसरा । 21 ऐसा ।

नही नै भाटी दूदो तिलोकसी जसहड़रा वेटा पारकर रैहता, सु श्रै व्है तो खवर नही[1]।" तरै जगमाल उठै उतरियो[2], नै श्रागै खवर करणनू श्रादमी २ मेलिया[3] तिकै[4] जाय देखै तो दूदो तिलोकसी छै। सु इणे ठाकुरै जगमालजीनू जुहार कहाडियो[5] नै कह्यो–"माहरो गढ थो, म्हे लियो।" तरै श्रादमिया पछै जगमालनू कह्यो। तरै जगमाल वळै[6] कहाड़ियो–"जु गाडा ३०१ सीधारा म्हारा छै, सु उरा द्यो[7]।" तरै दूदै तिलोकसी कह्यो–"श्रै तो म्हे लिया[8]। थे म्हारा गाडा जाणो तठारा लेज्यो[9]। जगमाल पाछो श्रायो। नै रावळ दूदो पाट वैठो, सु दूदो पण वडो श्रौनाड़[10] हुवो नै रावळ मूळराज, राणो रतनसी जसळमेर नेम घातियो[11], तद दूदै पण नेम घातियो थो, तिका वात मूळराज रतनसीरी वात माहै लिखी छै। सु एक दिन रावळ दूदो श्रारीसो जोवतो थो[12] मु पळी[13] १ दाडी मांहै दोठी तरै मूळराज रतनसी भेळो नेम लियो थो मु दूदानू नेम चीत[14] श्रायो। तरै रावळ मन-माहै जांणियो जु–"जरा तो नेडी श्राई[15]; यूही मर जाईजसी[16], किणीक मूल नाम रहै तिका वात कीजै[17]।" तरै तिलोकसीनू कह्यो, तरै तिलोकसी कह्यो–"भली वात छै।" सु रावळ दूदै वरस १० मास ...दिन ७ राज कियो। दूदै तिलोकसी पातसाही धरतीरा विगाड करणा माडिया, मु रावळ दूदो तौ गढमे रहै नै तिलोकसी च्यारू ही तरफा पातसाही धरतीरो रोज विगाड करै, सु कागड़ो वलोच मारे नै घणी घोडिया श्राणी। वाहेली गूजरांरी थाट भेसियारी लाहोर कनैथा श्राणी[18]। सोनारो मथाण ले श्रायो[19]। पातसाहरै पांणीपथा घोडांरी सोवत श्रावती थी मु मार ली।[20] श्रै तो वडा विगाड किया नै

---

1 सो ये हो तो पता नही। 2 तब जगमाल वहा ठहरा। 3 भेजे। 4 वे। 5 सो इन ठाकुरोने जगमालजीको प्रणाम कहलवाया। 6 दूसरी वार। 7 सो दे दें। 8 ये तो हमने ले लिये। 9 तुम हमारी गाडिया चाहे जहांसे ले लेना। 10 अनम्र, जवरदस्त। 11 नियम धारण किया था। 12 देखता था। 13 सफेद वाल। 14 याद। 15 बुढापा तो निकट आया। 16 यों ही मरना हो जायेगा। 17 किसी भी प्रकार नाम रह जाय वैसी वात की जाय। 18 सो कागडा वलोचको मार करके वहुतसी घोडियें ले आया और वाहेली गूजरोकी भैसियोका समूह लाहोरके पाससे ले आया। 19 उनकी सोनेकी मथानी ले आया। 20 वादशाहके लिये (पानीपथा) पवनवेगी घोडोंकी सोहवत आ रही थी उसे भी मार कर छीन लिया।

बीजा[1] विगाड किया तिणारी[2] सख्या ही नही। सु पातसाह कनै ठोड-ठोडरी पुकारा गई। तिण ऊपर पातसाह घणो कोप कर फोज विदा की, सु गढ आय घेरियो, सु दूदै तिलोकसीरै साको करणरी मनमे हुती, जिणसू दूदै तिलोकसी गढ साझियो नै सासता ढोवा हुवै छै[3]। तिण साखरो रतनू आसरावरो कह्यो घणो गुण[4] छै, तिण माहिला—

दूहा—आवटियो[5] एकोहटा[6], दे दुरहटा[7] मेल्हाण।
साभर आपो आपरा, गा सोधे रिण ढाण ॥१
एक सु तत्तै सग्रहै, हूता सेन वहूत।
थेटा-लग[8] काढै परी, किय तुरकै तावूत ॥२
मद्ध हुवा आयो मुगल, नाया ढलपति ढाल।
पडियो दिल्ली पीटणो, गो रण तोडै गाल ॥३
दातूसळ[9] हसती तणा[10], साकळ केकाणेह[11]।
साखत[12] आई सोवनी[13], तणीज तुरकाणेह ॥३
ऊसस्सै[14] नै[15] सासियो[16], विखियौ[17] दाणव-राह[18]।
हिदू आध न आवही, नही मळेछै माह ॥५
परवाणो[19] पतसाहरौ, लिख मूकै[20] मेलाण।
इण गढ हिदू वाकडौ[21], कर ग्रहिया केवाण[22] ॥६
जेसळमेर दुरग[23] गढ, दूठ[24] ज दूदो राव।
मेघाडबर-छत्र सिर, दोध निसाणै[25] घाव[26] ॥७
नीसाणै घाव वाजिया, गाजै गहरै सद्द[27]।
आकपै[28] पतसाह दळ, पडहायौ[29] पर-मद्द[30] ॥८

---

1 दूसरे। 2 उनकी। 3 इसलिये दूदे और तिलोकसीने गढ सजाया और निरन्तर हमले हो रहे है। 4 वर्णन। 5 क्रोध किया, नाश किया। 6 एक वार। 7 दुवारा 8 अत तक। 9 दात (हाथीकी)। 10 का। 11 घोडोकी। 12 घोडेकी जीनका सामान, जीन। 13 होनेकी। 14 जोशमे आ कर। 15 करके। 16 सधान किया, सभला। 17 युद्ध किया, भिडा। 18 मुमलमान। 19 फरमान। 20 लिख कर भेजता है। 21 बका। 22 तलवार। 23 दुर्ग। 24 जबरदस्त। 25 नगाडे पर। 26 डकेकी चोट। 27 शब्द, आवाज। 28 भयभीत होता है, धूजता है। 29 मर्दन कर दिया। 30 शत्रुका गर्व।

जेतो[1] भुय[2] गोळा वहै, सर[3] पूजै[4] सर वाव ।
तेती ढूक न सक्कही[5], मारै दूदौ राव ॥९
ओ[6] मारै ऊ[7] मोकळै[8], रहिया दळ नेठाह[9] ।
हठ[10] हूवौ दूदै सरस, प्रारभ पेरोसाह ॥१०
हिंदू कोट न छाडही, ना तुरकै मेल्हांण ।
विग्रह[11] थौ वारै-वरस[12], दूदै नै[13] सुरताण ॥११
रावळ भुरज पधारियौ, ए ऊपाव करेह ।
जत्रमे चरू[14] नखाडियौ[15], घ्रत खड खीर भरेह ॥१२
ऊपडिया[16] पतसाह-दळ[17], वागी[18] भेर[19] निसाण[20] ।
भाटी दानो भीमदे, तव गाढम[21] प्रामाण ॥१३
सुधन भडारा निठियो[22], लिख मोकळिया[23] खत्त ।
जो असताई साभळै, रावळ भखण परत्त[24] ॥१४
ढोवै ढूक न सक्किया[25], तोखै जोया त्राण[26] ।
थाहर[27] आपो-आपरी[28] ग्रह रहिया मेलाण ॥१५
सूडाळा-घड[29] सामही, फेरी जेसळमेर ।
पाछो दळ पतसाहरो, घिरियो घातै घेर[30] ॥१६
दूदो कहै तिलोकसी, तो सिर छत्र धरेह ।
परत[31] न भजां आपणो, गढ छळ[32] घणो करेह ॥१७
आद अनादि उपाविया, लोचनहूत[33] जवार[34] ।
जीभा हू[35] गोहू[36] किया, कोरड़[37] उरह[38] मँझार ॥१८

---

1 जितनी । 2 भूमि, दूरी । 3 वाण । 4 पहुचता है । 5 उतनी दूरी तक शत्रु लक्ष्य नही कर सकता । 6 यह । 7 वह, उसके । 8 (१) वहुतसा, (२) भेजता है । 9 समाप्त, खत्म । 10 युद्ध । 11 युद्ध । 12 वारह वर्ष । 13 और । 14 भोजन-सामग्री रखनेका एक पात्र, चरू । 15 डलवाया । 16 चले, रवाना हुए । 17 वादशाही सेना । 18 वजी । 19 दुदुभी । 20 नगाडा, ढोल । 21 वल, शक्ति । 22 समाप्त हो गया । 23 भेजे । 24 प्रतिज्ञा । 25 हमलेके स्थान पर (रणागणमें) पहुँचनेका साहस नही कर सके । 26 घोडोने (अश्वारोही सेनाने) शरणकी तलाश की । 27 रक्षा-स्थान । 28 अपनी-अपनी । 29 हस्ती-सेना । 30 चक्कर लगा कर वापिस लौटा । 31 किसी भी प्रकार । 32 के लिए । 33 से । 34 ज्वार । 35 जीभसे । 36 गेहू । 37 (१) एक जगली धान्य, (२) मोठ । 38 हृदय, छाती ।

ह्राडा हू[1] चावळ हुवा, रू[2], राई, खड[3], धन्न[4] ।
तो असताई सभळी, ते क्यू ढूकै मन्न ॥१९
रावळ अन[5] परतावियो[6], मो क्यू अन्न भखेह ।
तो ओळी बोलाय कर, सिर क्यू छत्र धरेह ॥२०
तो बैठै मै सारिया[7], कज्जा लाख सवाय ।
मो बैठा वजियै[8] कवण[9], कसबा करसी घाय ॥२१
अतेवर[10] पूछाडियो, वा केहा[11] परियाण ।
सोढी आगै इम[12] कहै, सो चाढो निरवाण ॥२२
अतेवरै कहावियो[13], साहस पूर न गत्त ।
वासै[14] न रहो साकवा, साही अच्छ परत्त ॥२३
रावळ जमहर[15] राचियो, कुसळे पुत्र वोहळाय[16] ।
नीमणियाइत[17] के रह्या, रहचा जु अन परताय ॥२४
कोट तणै छळ वंस छळ[18], सरग तणी जगीस[19] ।
रावळसू अणनेमिया[20], रहिया सुभट पचीस ॥२५
कोट तणै छळ वस छळ, सरग समेळै साथ ।
माधू खडहड भाटियै, खग आव्रजियो[21] हाथ ॥२६
दूसळ अनियै देवरज, कहि भाणव[22] अणपाल ।
पतसाही दळ जूझवा, भडा[23] भेडू कमाल ॥२७
सातळ सोह हमीर दे, चक्रवत अै चहुवाण ।
भाला भवाडै[24] पून[25] रज, अधिक कळह[26] परमाण ॥२८
वैर सनेही वाळियो, फिटक सभ्रम[27] कुळ-मोड[28] ।
खेडेचो खग ऊभियो, रहै हरो राठोड ॥२९
साम ज सबाहै करै, कर सोळह स्रगार ।

---

1 हड्डियोसे । 2 रूई । 3 घास । 4 धान । 5 अन्न । 6 त्याग दिया । 7 बनाये, सम्पन्न किये । 8,9 भागा कैसे जाय । 10 जनानाने (पत्नी ने) । 11 कैसा । 12 इस प्रकार । 13 महिलाओंने कहलवाया । 14 पीछे । 15 जौहर । 16 वहुतसे । 17 चुने हुए लोग । 18 के लिये । 19 युद्ध । 20 नही चुने हुये । 21 धारण किया । 22 चारण । 23 वीरोको । 24 चक्र दिलाये । 25 पवन । 26 युद्ध । 27 पुत्र । 28 वश-शिरोमणि ।

आ[1] राणी रावळ अगै, गळ तुळछीदळ हार ।।३०
तेलोचन[2] तेही-वदन[3], तेवै[4] थन गज थन्न ।
दुय भाया तणा विसावणा, जाण अतेवर कन्न ।।३१
रावळ जमहर रच्चियौ, अतर सरग प्रमाण ।
सोढी कहियौ सामनू, मो आपो अहिनाण[5] ।।३२
जे सोढी सिर कापियो, चहरो[6] थियै ससार ।
कहसी रावळ ओ कियो, एहो[7] दोख विचार ।।३३
जे कर काटा दाहिणो, खाडो किह[8] झालाह[9] ।
प्रोळी हुयसी[10] प्रह[11] समै, मेळो मिलकाणाह ।।३४
रावळ अग निसग कर[12], आ[13] वाहै[14] केवाण[15] ।
चलणह[16] काटै आपियो[17], नाउ[18] पुरख सहनाण[19] ।।३५

## वात

रावळ दूदो तिलोकसी जसहडोत जेसळमेर गढ ऊपर छै । पातसाही फोज तळहटी[20] छै । वरस १२ विग्रहनै[21] हुवा छै । मामला घणाही हुवा[22], पण गढ हाथ आवै नही । तरै एक दिन रावळ दूदै भँडसूरिया[23] गढ ऊपर हुती[24], तिणारी[25] दूधरी खीर कराय पातळारै[26] खीर लगायनै वे पातळा तळहटी नाखी[27] । पछै वे पातळा लसकररै लोगै ले जाय माहै सिरदार थो तिणनू[28] दिखाई, तरै कटकरै सिरदार विचारियो-"वारै वरस तो हुवा, अजेस[29] गढ माहै सचो[30] अतरो[31] जु दूध दही हुवै छै[32], सु गढ हाथ आवणरो नही ।" तुरकै डेरो उपाडियो[33] । तरै[34] भाटी भीमदे आसकरणोत, आसकरण जसहडोतरै,

---

1 यह । 2 त्रिलोचन । 3 त्रिवदन । 4 तीनो । 5 चिन्ह । 6 अपकीर्ति । 7 ऐसा । 8 किस प्रकार । 9 पकडू । 10 होगा । 11 प्रभात । 12 काट कर । 13 यह । 14 प्रहार करे । 15 तलवार । 16 पाव । 17 दिया । 18 नाम । 19 चिन्ह । 20 पहाडके नीचेकी भूमि । 21 युद्ध को । 22 आक्रमण वहुत हुए । 23 मैलाखोर सूअरिये, ग्राम-शूकरिये । 24 थी । 25 जिनकी । 26 पत्तलोंके । 27 गिरादी । 28 जिसको । 29 अभी तक । 30 सचय । 31 इतना । 32 प्राप्त हो रहा है । 33 तुर्कोंने मोर्चा उठा दिया । 34 तव ।

भेद दियो। नै कोई कहै छै, सुरणाई वजाई[1], तिणमे काई वात जणाई[2]। केई कहै छै, भीमदे आदमी मेल कहाडियो[3],–"गढरो सचो तूटो छै[4], ओ दूध दीठो जिको भँडसूरियारो छै[5], थे पाछा आय उतरो[6]। दिन २ नै तथा ३ नै रावळ गढरा किंवाड नाखसी[7]।" तरै मुगल फिर पाछा उतरिया। तरै रावळ दूदै तिलोकसी मरणरो विचार कियो।

भीमदे भेद दियो तिणरो दूहो–

गेमी[8] नाव धरावियो, आसावत अणजाण[9]।
भाटी दीनो भीमदे, तव गढ भेद प्रमाण ॥१

## वात

रावळ दूदै पहलै दिन जमहर कियो, तरै सोढी राणी रावळसू अरज करी–"क्युही[10] रावळै[11] डीलरो[12] सहनाण पाऊ।" तरै अगूठो पगरो काटि दियो। दसमीरै दिन जमहर हुवो नै एकादसीरै दिन रावळरै मरणरो विचार छै, सु रावळरी वेटी १ वरस ९ नवरी छै[13] सु आग माहै पैसती डरै, वळी न छै[14], सु दसमरी रात आधी गई छै नै वा डावडी[15] रावळ दूदै कनै[16] छै। नै रावळ कनै रजपूत मरणीक[17] हुय रह्या छै। तिणा माहै[18] रजपूत १ धाऊ भेछळो वरस १५रो कवारो छै, सु मरणीक जूझारा माहै रह्यो छै, तिको रावळरी पगथळी खुजाळै छै। उण निसासो नाखियो[19], तरै रावळ कह्यो–"कुण वास्तै[20] ? आपै तो सरगरा हेडाऊ छा[21], तोनू दिलगीरी मनमे क्यू आई ?" तरै धाऊ भेछळै कह्यो–"दूजी तो दिलगीरी काई[22] नही

---

1 शहनाई वजाई। 2 जिसमे किसी साकेतिक वातकी सूचना दी। 3 कई कहते है कि भीमदेने आदमी भेज कर कहलवाया। 4 गढका सचय खत्म हो गया। 5 यह दूध जो देखा है वह ग्राम-शूकरियोका है। 6 तुम लोग वापिस लौट कर मुकाम कर दो। 7 गिरा देगा। 8 देशद्रोही। 9 मूर्ख। 10 कुछ भी। 11 आपके, श्रीमानके। 12 शरीरका। 13 रावलकी पुत्री एक नौ वर्षकी है। 14 जली नही है। जौहर नही किया है। 15 लडकी। 16 पास। 17 मरनेको तत्पर। 18 उनमे। 19 उसने नि श्वास छोडा। 20 किस लिये। 21 हम तो वीरगतिको प्राप्त कर स्वर्गमे एक साथ जाने वालोमे है। 22 कुछ भी।

पिण सास्त्र पुराण माहै सुणा छा[1], कँवारानू गत नही[2]। आभा माहै ओ कँवार-मग वतावै छै[3]। तरै राव दूदै विचार दीठो[4]–"जु आ डावडी पण कँवारी छै नै ओ पण रूडो रजपूत छै[5]।" तरै आपरी दीकरी धाऊ भेछळैनू परणाई[6], सु वा दीकरी पण सवारै इग्यारस थी, सु सत करनै बळी[7]। नै रावळ प्रोळरा किवाड नाख नै दूदो तिलोकसी गढसू लडणनू ऊतरिया, सु साथै २५ तो रजपूत नेमणीयायत[8] उतरिया, वीजो ही[9] घणो साथ ऊतरियो। वेढ हुई सु तिलोकसीरै मुहडै पाजू पायक आयो सु तिलोकसी पाजूनू झटको वाह्यो[10], सु पाजूनू सरू खेलणरी उरजस थी[11], हाथ-पग भेळा कर[12] कुळाचसू[13] झटको टाळतो थो सु सारै ही डीलमे तरवार वह गई, नव टुकडा हुय पडियो[14]।

साख–तील्हरै धाव सौ पाजुरो हेक[15] तण[16],
नवै कुटके हुवो वहि गयो नीझरण[17]।

## वात

तरै रावळ दूदै घणो[18] वखाणियो[19], तरै तिलोकसी कह्यो–"भली हुई, आज ही वखाणियो।" तरै रावळ कह्यो–"म्हारी द्रीठ लागै छै[20]।" सु तिलोकसीरो तिणही वेळा जोव नीसर गयो[21]। माणस १०० रावळ दूदो काम आयो[22]। नै रावळ दूदारी वैरा वीजी तो सगळी ही गढ ऊपर जँवर कर वळी[23]। एक लखा मागळिया राणीरी

---

1 परन्तु शास्त्र और पुराणोमे सुनते है। 2 क्वांरे मनुष्यकी मरने पर गति नही होती। 3 आकाशमे क्वार-मग नामक नक्षत्र-समूह (आकाश गगा) यही सूचित करता है। 4 तव राव दूदाने विचार कर देखा। 5 अच्छा राजपूत है। 6 तव अपनी कन्या धाऊ-भेछलेको व्याह दी। 7 सो वह पुत्री दूसरे दिन जव एकादशी थी सती हो गई (धाऊ-भेछलेके साथ जल गई)। 8 चुने हुए। 9 दूसरा भी। 10 प्रहार किया। 11 सो पाजूको सिमट कर तलवारसे खेलने का अभ्यास था। 12 इकट्ठे कर, समेट कर। 13 कुलांच, छलाग। 14 नौ टुकडे होकर गिर पडा। 15 एक। 16 शरीर। 17 नौ टुकडे हो गये और खून का झरना वह गया। 18 वहुत। 19 प्रशसा की। 20 मेरी नजर लगती है। 21 तिलोकसीका उसी समय प्राण निकल गया। 22 रावल दूदा सौ मनुष्योके साथ काम आया। 23 और रावल दूदाकी दूसरी तमाम स्त्रियें गढ पर जौहर कर के जल गई।

बेटी खीवसर थी । सु पातसाह खीवसर कनै आयो, तरै इण दूदारी बैर कह्यो[1]–"दूदारो माथो आण दै तो हू वळू[2]।" तरै हूफो सादू पातसाह कनै जाय माथो मागियो, तरै पातसाह कह्यो–"तीन मास हुवा, माथारी किसी खबर[3] ?' तरै हूफै कह्यो–"हू माथो ओळखू छू[4], दूदारो माथो हू मुहडै बोलाईस, मोनू दिखावो[5]।" तरै माथो दिखायो। तरै दूदारो माथो हसियो, बोलियो।

तिणरी साखरो गीत हूफा सादूरो कह्यो[6]—

गीत

क्रम केत स्वरग कज नह भारथ कज[7],
दूठ[8] दूदडै दळचा[9] दुजोण[10]।
पह[11] तिण[12] भवणै-त्रिणै[13] पेखियो[14],
धड पाखै[15] नाचंतो ध्रोण[16] ॥१

वाछता वरमाळ वेगडा,
वकता सुणै दूदै वसियो।
जेसळगिरा[17] तिको दिन जाणै,
हाथा ताळी दे हसियो ॥२

हू[18] हूफडा मरण किम हारू,
धर सामी लीजतो धर।
मेलू मूछ[19] मीर पण[20] मानै,
कमळ[21] कहै जो हुवै कर ॥३

कर विण मूछ भ्रू हसौ सुजकर,
अउब ओपियो अजसियो[22]।
गढा गिळेवा आदम गोरी,
हड हड हड दूदो हसियौ ॥४

---

1 तव इस दूदाकी स्त्रीने कहा। 2 दूदाका सिर मुझे लाकर दिया जाय तो मै उसके साथ जल कर सती हो जाऊ। 3 सिरका क्या पता ? 4 मै सिरको पहचानता हू। 5 दूदेके सिरको मैं मुहसे बुलवाऊगा, वह मुझे दिखाया जाय। 6 जिसकी साक्षीका चारण हूफा साँदूका कहा हुआ गीत (छद)। 7 लिए। 8 जवरदस्त। 9 नाश किया। 10 शत्रु। 11 स्वामी। 12 जिसने। 13 तीनो भुवनोमे। 14 देखा। 15 पार्श्वमे, पासमे। 16 सिर। 17 जेसलमेरका निवासी, जेसलमेरका स्वामी। 18 मै। 19 मूंछो पर हाथ रखू। 20 प्रतिज्ञा। 21 सिर। 22 अपूर्व भातिसे शोभित और गर्वित हुआ।

दूहो, रावळ दूदै आपरो कह्यो[1]—

मै जाणंतै[2] मेल्हियो[3], विसहर[4] माथै[5] पाव ।
मनखत[6] मांणी आपरी[7], अहिवा[8] खाव म[9] खाव ।।१

गीत वीठू वोहडरो कह्यो—

धर काज[10] धीरत मल धरै धीर तण[11],
आपांणो वळ आउठ गिर ।
पाव परठवै[12] दूद परगंजण[13] ।
सरप कसण सुरतांण सिर[14] ।।१
सु विख किलव[15] सिर केहर दुजणसल
पाव परठवै सभै फण ।
कंदळ[16] करण घणू कसमसियो[17],
फेर न सकियो किही[18] फण ।।२
मिणधर[19] मेछ[20] कमळ मह-मोहण[21],
चाच[22] वसोधर[23] दे चलण[24] ।
मूणस वट तो नण माडेचा[25],
मनखत माणी निूभै मण[26] ।।३
वडगिर[27] विखम वडो-वड[28] रावळ,
दुरग[29] पाण ते दईव डरै ।
पोह[30] पतसाह पाळ-कुळ[31] पैहडै[32] ।
कीधो[33] पग तळ राज करै ।।४

---

1 रावल दूदेके स्वयका कहा हुआ दोहा । 2 जानते हुए । 3 रखा । 4 सर्प । 5 सिर पर । 6,7 जैसा चाहा वैसा ही उसके साथ किया । 8 सर्प । 9 नही, मत । 10 लिये । 11 शरीर । 12 रखना, धारण करना । 13 शत्रुओका नाश करनेके लिये । 14 सर्परूपी सुल्तानके सिर पर कृष्णके समान । 15 मुसलमान । 16 युद्ध । 17 (व्यर्थ) प्रयत्न किया । 18 किसी भी प्रकार । 19 सर्प । 20 म्लेच्छ, मुसलमान । 21 महामोहन (श्रीकृष्ण) । 22 सिर । 23 वशको रखने वाला, वशको उज्ज्वल करने वाला । 24 पाँव । 25 माड धराका स्वामी, जैसलमेर प्रदेशका भाटी क्षत्री । 26 निर्भय होकर जैसा चाहा वैसा किया । 27 जैसलमेरका किला । 28 बडे-बडे । 29 दुर्ग, किला । 30 प्रभु, स्वामी । 31,32 कुलकी मर्यादा छोड देते हैं । किया ।

गीत दूजो—

जेसळमेर धणी राव जादव,
घण दळ सरस मचतै घोय ।
काल्हणहरो[1] पडै कम सीसै,
पडत न फिरियो मिलका पाय ॥१
असी लाख आलम-दळ[2] ईखै[3],
साहण[4] लख आये सुरताण ।
भुरज-भुरज फिरियो राव भाटी,
दूदो नह फिरियो दीवाण ॥२
सुत जसहड सामा सुरताणै,
नित-नित ढोवा[5] कटक नवीन ।
क्रम राखण दीन्हा नव-कोटा,
दूदै धरम-द्वार नह दीन[6] ॥३

गीत दूजो—

पटहथ[7] पतसाह मयंद[8] मोताहळ[9],
पै भाजता जु भुय[10] पडिया ।
दूद दीठा[11] मैं चक्रवत चुणता[12],
कळत[13] रैस आभरण किया ॥१
किलम[14] कुजर नर केहर जुवा[15] कर,
पग पग पेखीजै[16] पडिया ।
अविध सु अधपत[17] अधकठ अबळा,
जसहड सभ्रम[18] अछै जडिया ॥२

---

1 काल्हणका वशज । 2 बादशाही सेना । 3 देखता है । 4 घोडे, घुड-सवार, घुडसेना । 5 आक्रमण । 6 किन्तु दूदा शरणागत नही हुआ । 7 हाथी । 8 मृगेन्द्र, सिंह । 9 मुक्ताफल, मोती । 10 भूमि पर । 11 देखे । 12 चुनते हुए । 13 स्त्रियोके । 14 मुसलमान । 15 अलग करके । 16 दिखाई देते है । 17 अधिपति, राजा । 18 पुत्र ।

सादूळा तैं जसहड संभ्रम,
भिड़ भद्रजाती[1] असुर[2] भगा ।
दीसै[3] रायहरै[4] दुजणसल,
मोती महिळां[5] मवड़[6] लगा ॥३

गीत भाटी तिलोकसी जसहडोतरो—

तातलीया तुरगम खड़[7] खग[8] लीना,
जुडवा रथ जोगणपुर[9] जाय ।
असपत[10] राव तणा[11] दळ[12] आया,
तिलोकसी नह विसरै ताय ॥१
भणै[13] तील्ह रिणभोम भयावण,
डरियां मूम डरायो ।
नर नीसरै[14] जकै[15] सनियाई[16],
अनियाई[17] हू[18] आयो ॥२
अविहड़[19] मन जसहड अगोभ्रम[20],
वडफर[21] वजै न विहडै[22] वस ।
तील्हा तणो[23] कोट वकारण[24],
हामू करतो उडियो हस[25] ॥३

रावळ दूदैरा वेटा—

१ वीसळदे दूदावतरो कडूवो जेसळमेररै देस भैसड़ै वालो राव चूडारो मांमो, नागोर चूडा साथै कांम आयो[26] ।

१ राणो दूदावत ।

---

1 हाथी । 2 मुसलमान । 3 दिखाई देता है । 4 रायसिहका वंशज । 5 महिलाओंके । 6 मस्तकाभूषण । 7 चला करके । 8 खड्ग, तलवार । 9 दिल्ली । 10 राजा । 11 का । 12 सेना । 13 कहता है । 14 निकल जाते हैं । 15 वे । 16 न्यायी (निर्मुक्त) 17 अन्यायी (बन्धनसे नहीं डरने वाला, निर्भय) । 18 मैं । 19 अखड, निर्भय । 20 पुत्र, पौत्र, वंशज । 21 ढाल । 22 नाश करता है । 23 का । 24 ललकारनेको । 25 उत्साह पूर्वक प्राण-विसर्जन कर दिया, युद्ध करते-करते प्राण छोड दिया । 26 दूदाका पुत्र वीसलदेव और जैसलमेर राज्यके भैसडे गांव वाले उसके कुटुम्बियोंमेंसे वाला जो राव चूडाका मामा लगता है, उसके साथ नागोरकी लडाईमे राव चूडाके साथ वह भी मारा गया ।

२ पूनो, राव रिणमल चग वेढ हुई तठै काम आयो[1] ।

३ दुरजणसल । ३ जैतो । ३ खेतो । ३ चाचो ।

४ रायमल तिणरो करायो रायमलवाळो तळाव[2] ।

२ वणवीर राणारो चाकर थो । राव जोधै मडोवर लियो तद काम आयो[3] ।

३ भाटी जैतो पूनावत । तिणरो परवार जोधपुर चाकर[4], आक ३

४ भाडो ।

५ वनो ।

६ रायसल । ६ भैरव ।

६ नादण । ६ तेजो ।

६ जेसो ।

७ भारमल ।

८ हाथी ।

९ नरसिघ । ९ करमचद ।

८ तेजसी ।

९ रामो ।

१० मानो । १० करन ।

८ कलो ।

९ सूजो । ९ साईदास ।

९ पीथो ।

८ पिराग ।

९ पचाइण । ९ मोटो ।

## वात

रावळ घडसी राणा रतनसीरो बेटो । मूळराज, रतनसी साको कर मुवा[5] तद कमालदीनू आपरो बीज उबारणनू घडसी, ऊनड, कानड आपरा छोरू नै एक देवडो भाणेज कमालदीनू सूपिया था[6] । कमालदी नै मूळराज इण विखा माहै भाएला हुवा था, पाघडी पलटी हुती[7] । सु कमालदी नै[8] कमालदीरी बैर[9] इणानू[10] छाना[11] राखै ।

---

1 चग गावमे राव रिडमलके साथ हुई लडाईमे पूना मारा गया । 2 रायमल जिसका बनवाया हुआ रायमल वाला तालाब' है । 3 वनवीर, राणाजीका चाकर, राव जोधाने मडोर पर अधिकार किया तब काम आया । 4 पूनाका पुत्र भाटी जैता जिसका परिवार जोधपुरमे चाकर है । 5 मूलराज और रतनसी दोनो साका (क्षत्रियोचित कीर्ति-कार्य) करके मर गये । 6 उस समय रतनसीने अपनी वश-रक्षाके लिये घडसी, ऊनड और कानड, अपने तीन लडकोको और चौथा अपना एक देवडा भानजा, इन चारोको कमालुद्दीनके सुपुर्द कर दिया । 7 कमालुद्दीन और मूलराज दोनो इस सकटमे (युद्धमे) पघडी-बदल भाई (धर्म भाई) हो गये थे । 8 और । 9 स्त्री । 10 इनको । 11 गुप्त ।

आपरा छोरूवासू उपरत किया राखै छै[1]। इणारै[2] रसोईदार बाभण २ जुदा-जुदा राखिया छै। पछै कमालदी जेसळमेर ले पातसाहरी हजूर आयो[3], तरै कपूरै मरहटै पातसाहनू अरज गुदराई[4]–"कमालदी नै मूळराज रतनसी भाएला था[5], सु मूळराज रतनसी साको कर मुवा, तरै[6] आपरा[7] बेटा-भतीजा कमालदीनू सूपिया छै, सु कमालदी कनै छै[8]।" पछै कमालदी दरबार आयो तरै पातसाह पूछियो–"थारै घरै रतनसीरा बेटा घडसी, कानड, ऊनड तीनैई भाई नै देवडो १ मूळराज रतनसीरो भाणेज छै, सु आण हाजर कर[9]।" तरै कमालदी कह्यो–"हजरत! म्हारै कनै को न छै[10], हुसी तो वळै खबर करीस[11]।" तरै कमालदी घरै आयो। आयनै[12] घडसी, कानड, ऊनड, देवडो या च्यारा ही नै ४ च्यार वडा घोडा दे नै काढिया[13], सु अै अठारा नीसरिया नागोररै सकरसर आया[14]। सु पातसाह ठोड-ठोड जासूस मेलिया था[15], सु घडसी, कानड, ऊनड, देवडो या च्यारा हीरा अहिनाण[16] लिखिया जु–"इसडै अहिनाण छै[17], तिकारी खबर करज्यो[18], अठासू नीसरिया छै[19]।" सु अै अठै नागोररा हाकमरै पानै पडिया[20], सु ओ लेनै पातसाहरी हजूर जातो थो[21]। पछै निवाज करतानू घडसी उणरीहीज तरवारसू उणरो माथो काटनै उणहीजरै घोडै चढनै नीसरिया सु चामू आया[22]। आयनै[23] पछै कठैक[24] भायानू राखनै, देवडै मैगळदे भाणेजनू पोहचावणनू

---

1 अपने पुत्रोंसे भी विशेष समझ कर उनकी रक्षा करती है। 2 इनके लिये। 3 फिर कमालुद्दीन जैसलमेर पर अधिकार करके जब बादशाहके दरबारमे आया। 4 तब कपूर मरहट्टे ने बादशाहसे अर्ज की। 5 कमालुद्दीन और मूलराज तथा रतनसी परस्पर मित्र थे। 6 तब। 7 अपने। 8 वे कमालुद्दीनके पास है। 9 उनको लाकर हाजिर कर। 10 हजरत! वे मेरे पास नही हैं। 11 यदि होंगे तो मै पता लगाऊगा। 12 आकर के। 13 इन चारो हीको चार बडे घोडे दे करके रवाना कर दिया। 14 सो ये यहासे निकल कर नागोरके सकरसर गावमे आये। 15 बादशाहने जगह-जगह जासूस भेज दिये थे। 16 चिन्ह, हुलिया। 17 ऐसे हुलिया वाले है। 18 जिनका पता लगाना। 19 यहासे निकल गये हैं। 20 सो ये यहा नागोरके हाकिमके हाथ लग गये। 21 सो यह उन्हे लेकर के बादशाहकी हुजूर जा रहा था। 22 फिर घडसीने नमाज पढते हुए उस हाकिमका उसीकी तलवारसे सिर काट कर उसीके घोडे पर चढ करके रवाना हुआ सो चामू आया। 23 आकर के। 24 किसी स्थान पर।

घडसी आबू दिसा गयो तो[1], सु पाछो वळतो मेहवा माहै आयो[2]। माळीरैं घरे डेरो कियो[3], सु जगमाल सिकार चढियो, तरै घडसी ऊभो थो सु जुहार न कियो[4]। तरै रावळजीनू जगमाल आय कह्यो-"जु गाव माहै आज इसडो[5] रजपूत आयो छै, सु कैतो कोई गिवार छै[6], कै कोईक राजवीरै घररो छोरू छै[7]।" तरै रावळजी तेडियो[8], सु खबर को पडै नही[9]। तरै चाकरनू पूछियो, कह्यो-"तू जाणै छै, ओ कुण छै[10] ? "तरै चाकर कह्यो—हू तो क्यू जाणू नही[11], नै एक दिन म्हनै घडसी मारणो विचारियो थो, तरै मोनू कह्यो-"तू हथियार नाख दे, रावळ मूळराज राणा रतनसीरी आण, तोनू मारू नही[12]।" तरै रावळ मालदेजी अटकळियो जु मूळराज रतनसीरो बेटो-भतीजो छै[13]। घणो आदर-भाव कर राखियो[14]। पछै रावळ मालदेजी आपरा बेटा जगमालरी बेटी घडसीनू परणाई[15]। तठा पछै कतराईक दिन घडसी रावळ मालदेजी कनै रह्यो[16]। पछै मास ५ तथा ७ आडा घातनै घडसी रावळ मालदेजीसू अरज कराई[17]-"जु राज कहो तो हू पातसाहरी ओळग जाऊ[18]। माहरी धरती वळणरो काई सूल करा[19]।" तरै रावळ मालदेजी खुसी हुयनै सीख दीवी[20]। तरै रावळ घडसी आपरा माणस लेनै[21] फळोधीरै किनारै किरडारै

---

1 घडसी अपने भानजे मैगलदेवको आबूकी ओर पहुँचानेको गया था। 2 वह वहासे लौटता हुआ मेहवामे आया। 3 किसी मालीके घर पर डेरा लगाया। 4 उस समय घडसी खडा था परतु उसने जगमालको जुहार नही किया। 5 ऐसा। 6,7 सो या तो वह कोई गँवार है या किसी राजवशीके घरका पुत्र है। 8 तब रावलजीने उसे अपने पास बुलवाया। 9 परतु कोई पता नही लगा। 10 तू जानता है क्या, यह कौन है ? 11 मै तो इसके बाबत कुछ नही जानता। 12 किन्तु एक दिन जब कि इस घडसीने मुझे मार डालनेका इरादा कर लिया था, लेकिन फिर उसने मुझे कहा कि 'तू शस्त्र डाल दे तो तुझे नही मारूगा, मुझे रावल मूलराज और राणा रतनसीकी शपथ है।' 13 तब रावल मालदेवजीने अनुमान लगाया कि यह मूलराज और रतनसीके बेटे-भतीजोमेसे है। 14 फिर बहुत आदर-भावसे रखा। 15 पीछे रावल मालदेवजीने अपने पुत्र जगमालकी पुत्रीका घडसीके साथ ब्याह कर दिया। 16 जिसके बाद कितनेक दिन घडसी रावल मालदेवजीके पास रहा। 17 फिर ५-७ महीने बीत जानेके बाद रावल मालदेवजीसे अर्ज करवाई। 18 यदि श्रीमान आज्ञा करें तो मै बादशाहकी सेवामे जाऊ। 19 हमारी धरती (देश) प्राप्त करनेका कोई उपाय करू। 20 तब रावल मालदेवजीने प्रसन्न होकर जानेकी आज्ञा दी। 21 तब रावल घडसी अपने आदमियोको लेकर।

किनारै गाव वधाउडो छै, तठै माणसानू राखनै आप पातसाहरी ओळग गयो[1]। उठै वरस १२ चाकरी कीवी[2]। आदमी १० तथा १२ भाटी नै आदमी २ चारण कनै था[3], सु उठै वोहत परेसान हूवा। भूख गाढा दवाया[4]।

एक वात यु पण सुणी छै[5]। जु घड़सी आप चतुर थो, सु उठै किणाहेका सिरदारा-उमरावारा वागा डेरै वैठो सीवतो[6]। वागै एक रुपियो एक मसकतरो लेतो[7]। यू कर आपरै डेरारो खरच कर आघो काढतो[8], पण पातसाहरी चाकरी करतो[9]। तिसडै पूरवरो पातसाह समसदी, तिको दिल्लीरा पातसाह ऊपर आयो[10]। कोस २० रो दोनू फौजारै वीच रह्यो[11], तरै पूरवरै पातसाह कवाण १ दिल्लीरै पातसाहनू मेली[12],–"थाहरा कटक माहै कोई इसडो छै, जिको आ कवाण चाढै[13]।" तरै पातसाहरो वीडो सगळै ही कटक माहै फिरियो[14], "जिकोई आ कवाण चाढै तिकैनू म्हे वहोत निवाजस करा[15]।' सु लसकररा सिपाइया सगळा कवाण दीठी[16], पिण किणहीथा कवाण चढावणरी आसग पडै नही[17]। सकोई कवाणसू खस-खस परा गया[18]। तरै रावळ घडसीरै चाकर १ भाटी लूणग ऊदळरो वेटो, जैचदरो पोतरो, तिण घडसीनू कह्यो[19]–"थे कहो तो

---

1 अपने मनुष्योको वहा पर रख कर स्वय वादशाहकी सेवामे गया। 2 १२ वर्ष तक वहा रह कर चाकरी की। 3 १०-१२ भाटी राजपूत और २ चारण उसके पास थे। 4 भूखने (गरीवीने) वहुत कष्ट पहुँचाया। 5 एक वात यो भी सुनी जाती है। 6 वह वहा पर कईएक सरदारो-उमरावोके डेरोमे वैठ कर वागे सिया करता था। 7 प्रति वागा एक रुपया मजदूरीका लेता था। 8 ऐसा करके अपने डेरेका खर्च चलाता था। 9 फिर भी वादशाही चाकरी तो करता रहा। 10 इस वीच पूर्वका वादशाह समसुद्दीन दिल्लीके वादशाह पर चढ कर आ गया। 11 दोनोकी सेनाओमे २० कोस का अतर रहा। 12 तव पूर्वके वादशाहने दिल्लीके वादशाहके पास एक कमान (धनुष) भेजी। 13 तुम्हारी सेनामे कोई ऐसा वीर है जो इस कमानको चढा दे। 14 तव वादशाहका वीडा इस घोषणाके साथ सारी सेनामे फिरा। 15 जो कोई इस कमानको चढा दे उस पर हम वडी कृपा करेंगे। 16 सेनाके सभी सिपाहियोने कमानको देखा। 17 परतु किसीकी भी कमान चढानेकी हिम्मत नही होती। 18 सभी कोई उससे धत्र-पच कर चले गये। 19 घडसीका एक सेवक जिसका नाम भाटी लूणग, जो ऊदलका वेटा और जयचदका पोता था, उसने घडसीसे कहा।

हू बीडो लू, कवाण चढाऊ[1] ।" तरै घडसी कह्यो-"बीडो लै ।" तरै लूणगसी बीडो लियौ । तरै लूणगनू पातसाह कनै[2] ले गया । उठै पातसाह माहला माडै तेडनै लणग आगै कवाण नाखी[3], तरै उठै लूणग कवाण चढाई । चढायनै एक पातसाहरी सहेलीरै गळैमे घाती[4], नै कह्यो-"हमै राज जाणो तिण कना कढावज्यो[5] ।" इतरी कहिनै लूणग डेरै आयो[6] । वासै[7] पातसाह जोरावर[8] तिके[9] जाणतो त्यानू[10] तेडाया[11], पिण[12] किणहीसू[13] कबाण निकळी नही । तरै वळै[14] लूणगनू हीज तेड कवाण कढाई । पछै पातसाह लूणगसू खुसी हुवो, कह्यो-"थारै जोईजै सु माग[15] ।" तरै लूणग कह्यो-"म्हारै नै म्हारा ठाकुररै चढणनू घोडा निवळा[16] छै । दोय अैराकी घोडा म्हे पावा ।" तरै पातसाह आपरी असवारीरा दोय घोडा दिया । पछै दिन दोयनू वेढ[17] हुई, तरै घडसीनू लूणग कह्यो-"आपै वेढसू अलाहिदा रहिस्या, नै आपानू धरती वाळणी छै[18] । आपै आगला पातसाहनू निजरमे राख ठावो करा तो फाइदो छै[19], सु हमै वेढ तो आमो-सामी हुवै छै[20] ।" तिण वेळा घडसी नै लूणग दोनू असवार पाखतीवाणा ऊभा रह्या[21], नै आदमी १० आपरानू जासूस मेलिया था[22], जिका[23] आय कह्यो-"सुपेद हाथी, तिणरै[24] ऊपरै अबारी, तिणरै मोती लटकै, उण अवारी माहै पातसाह छै ।" तरै पातसाहरा हाथी नजीक[25] आया, तरै बेऊ असवारे घोडा उपाड नाखिया[26], सु लूणग तो पातसाहरै हाथीनू झटको वाह्यो, सु सूड

---

1 आप कहे तो मैं बीडा उठा लू और कमानको चढा दू । 2 पास । 3 वहा बादशाहने लूणगको भीतरी मडपमे बुला करके उसके आगे कमान डाल दी । 4 कमान चढा करके वहा खडी एक बादशाहकी दासीके गलेमे डाल दी । 5 और कहा 'अब श्रीमान् जिसको अच्छा शक्तिशाली जानें उससे निकलवा देना' । 6 इतना कह करके लूणग अपने डेरे आ गया । 7 जिसके जानेके पीछे । 8 शक्तिशाली । 9 जिनको । 10 उनको । 11 बुलवाया । 12 किन्तु । 13 किसीसे भी । 14 फिर । 15 तेरे चाहिये सो माग । 16 निर्बल । 17 लडाई । 18 अपन अलग रहेंगे, क्योकि अपनेको अपना देश पुन प्राप्त करना है । 19 अपन अगले (आक्रमणकारी) बादशाहको लक्ष्य बना कर आक्रमण करे तो अपनेको लाभ है । 20 सो अब युद्ध तो आमने-सामने हो रहा है । 21 उस समय घडसी और लूणग दोनो घुड सवार एक ओर खडे रहे । 22 और जिन अपने दस आदमियोको जासूस बना कर भेजा था । 23 उन्होने । 24 जिसके । 25 नजदीक । 26 तब दोनो सवारोने अपने घोडे उठाये ।

वाढी[1] । नै घडसी हाथीरा दांतूसळा माथै[2] पग देनै, अवाडी माहै पग देनै पातसाहनू हेठो नाखियो[3], नै पातसाहरै माथैरो टोप सवा लाखरो थो सु उरो लीनो[4] । लूणग हाथीरी सूड उरी लेनै घोडारी पाहोरी माहै घाती[5] । अतरै वोजोही साथ पातसाही आय पुहँतो[6], तिको पातसाहनू पकड ले गयो, सु पातसाह आगै सको वडा उमराव झूठा प्रवाडा कहण लागा[7] । पछै पातसाह समसदीनू पूछियो–"थासू मुकालवै (वलै) मांहरा वडा उमरावा माहै कुण-कुण हुवा[8] ?" तरै समसदी कह्यो–"नाव तो हूं जाणू नही[9], नै मोसू मामलो[10] कियो तठै थांहरा[11] वडा उमरावा मुसलमाना माहै घणा साथरो धणी को न हुतो[12]। वे तो असवार २ हिंदु हुता, तिणा म्हानू झालियो[13], नै उणं म्हारा माथारो टोप रुपिया सवा लाखरी कीमतरो लियो छै, हाथीरी सूड पाडी छै सु लीवो छै, नै हूं उणानै देखू तो वताय दू[14] ।" तरै पातसाहरा वडा उमराव प्रवाडावै हुता तिके आण दिखाया[15] । पूरवरै पातसाह उणां माहै कोई कवूल न कियो[16] । पछै सारा उमराव पचहजारी था लेनै (मु)सदी ताऊ सारो लोग दिखायो[17]। सिगळां पछै[18] रावळ घडसी नै लूणग आया, तरै समसदी पातसाह इणानू दीठा[19], तरै कह्यो-"अै हुवै[20] ।" तरै घडसी माथारो टोप सवा लाखरो हाजर कियो । लूणग हाथीरी सूड पाहोरी माहिसू काढ हाजर कीवी । पातसाह गाढो राजी हुवौ[21] । इणानू फुरमायो–"चाहै सु मागो, म्हे

---

1 सो लूणगने तो वादगाहके हाथी पर तलवारसे प्रहार किया और उसकी सूडको काट दिया। 2 दाँतोंके ऊपर। 3 अवारीके अन्दर पाँव रख कर वादगाहको नीचे गिरा दिया। 4 सो ले लिया। 5 लूणगने हाथीकी सूडको लेकर के अपने घोडेकी पाहोरीमे (थैलीमे) डाल दी। 6 इतनेमे दूसरे वादगाही सैनिक भी आ पहुँचे। 7 सो वे सभी वडे उमराव अपनी वीरताके झूठे वखान करने लगे। 8 हमारे वडे उमरावोंमेसे तुम्हारेसे मुकाविलेमे कौन-कौन हुआ था। 9 नाम तो मैं जानता नही। 10 युद्ध। 11 तुम्हारे। 12 कोई नही था। 13 जिन्होने मुझे पकडा। 14 और मैं उनको देख लूं तो वता दू। 15 तव वादगाहके उन वडे उमरावोंको जो अपनी वीरताकी शेखी हाकते थे, उनको ला कर दिखलाया। 16 पूर्वके वादशाहने उनमेसे किसीको स्वीकार नही किया। 17 पीछे सभी पच-हजारी उमरावोंमे लेकर सभी लोगोको दिखलाया। 18 सवके पीछे। 19 तव वादगाह समसुद्दीनने इनको देखा। 20 ये हो सकते है। 21 वादशाह वहुत प्रसन्न हुआ।

थानू इनाइत करा[1] ।" पछै इणै[2] अरज कीवी–"माहरो उतन जेसळ-मेर पावा[3] ।" तरै पातसाहजी अरज मानी । जेसळमेररी तसलीम कराई[4] । दीवाण, बगसियानू फुरमायो–"फुरमाण कर दो[5] ।" सु रावळ साथै महिपो जैतुग कोल्हारो बेटो साथै हुतो[6], तिणरै पईसा था[7], सु उणरा पईसा खरच-तालीको करायो[8] । और ही इणै पईसो-टको सारा नेगिया-लागदारानू दियो[9] । सारी सिरकाररो लोग राजी कियो, नै एक हलालखोर खासानू क्यु न दियो हुतो[10], तिण एक वार घात घाती थी[11], पछै उणनू ही राजी कियो[12] । पछै पातसाही दरगाहस विदा हुय चालिया[13] । जेसळमेरथा[14] कोस ३ वासणपीरै आगै जेसळ-मेरथा कोस ३ राजबाई कनै गया, राजवाईरी तळाई वासणपी नै जेसळमेर विचमे छै, सु तठै आया[15] । सु उठै कोई कसवण हुवो[16], तरै क्यु पग ठाभिया[17], उठै उतरिया[18], सवणी बुलायो[19], तरै सवणी कह्यो–"एक आदमी अठै वळ दियो जोईजै[20] ।" तरै रावळ साथै आदमी १२ साख-साखरा था[21], नै एक रतनू आसराव बेटै सूधो थो[22], तरै बारठ विचारियो, विचारनै कह्यो–"सिगळीहो साखरो एकूको छै[23], नै म्हे दोय जणा छा[24], सु म्हा मांहिलो एक जणो वळ चाडो[25] ।" इसडो विचार करै छै[26], तिसडै वासाथी मेवडो एक फुरमाण ले आयो[27] । तरै इणे जाणियो–"जु ओ वासाथी आयो सु भलो

---

1 हम तुमको इनायत करें। 2 इन्होने। 3 हमारा देश जैसलमेर हमे मिले। 4 जैसलमेरका (मान्यताका) मुजरा करवाया। 5 फरमान लिख दो। 6 कोल्हाका वेटा महिपा जैतुग रावलके साथमे था। 7 जिसके पास रुपये-पैसे थे। 8 उसके पैसोसे राज्य-तसलीम सवधी जो खर्चा किया जाता था सो करवाया। 9 सभी नेगियो और लगानदारोको भी नेग और लगान इसीने दिया। 10,11 वादशाहका एक खासा हलालखोर था उसे कुछ नही दिया था, क्योकि उसने एक वार विश्वासघात किया था। 12 लेकिन पीछे उसको भी दे-दिवा कर राजी कर दिया। 13 पीछे वादशाही दरवारसे आज्ञा प्राप्त कर रवाना हुआ। 14 जैसलमेरसे। 15 वहा आये। 16 सो वहा कोई अपशकुन हुआ। 17,18 तव वहा कुछ देर खडे रहे और फिर उतर गये। 19 शकुनीको वुलाया। 20 एक आदमीकी यहा वलि देनी चाहिये। 21 उस समय रावलके साथ भिन्न-भिन्न शाखाओके १२ आदमी थे। 22 केवल रतनू शाखाका एक चारण आसराव अपने पुत्रसहित था। 23 सभी शाखाओका एक-एक व्यक्ति है। 24 और हम एक शाखाके दो व्यक्ति है। 25 हमारेमे से एक व्यक्ति-की वलि दे दो। 26,27 ऐसा विचार कर रहे है इतने हीमे पीछेसे एक दूत फरमान ले करके आया।

नही[1] ।" तरै कागळ खोल वाच दीठो[2] । कागळ माहै लिखियो-"जु गढ मत द्यो ।" तरै मेवडो मार खेजडी हेटै वळ दियो[3] । पछै छाप दिखाय गढ लियो[4] । वळै आता कसवण बोलिगो[5] । तरै रावळ पूछियो, तरै सवणी कह्यो-"जु इण गढ सवो रावळरो नाम रह्यो चाहीजै नै पाछोपो नही रहै[6] ।" पछै रावळ घडसी घडसीसर तळाव करायो । पछै वरस ३ मास ६ राज कियो । पछै भीम जसहडोतरै वेटै तेजसी चूक करनै रावळ घडसीनू तळहटी वावडी छै तठै गोठ कीवी[7] । रावळजी पधारिया मु वे उतावळा हुआ घोडासू उतरता पैहला झटको वाह्यौ सु माथो तूट पडियो[8] । धड घोडो ल्येनै गढ ऊपर विडरियो थको ले आयो[9] । पछै प्रोळ राणी ढकाई[10] । पछै राहडवेळा ताई माहै तेजसी वासे हुवो आयो[11] । तरै ऊपरलै भाटा नाखिया[12] । तेजसीरो कितरोहेक साथ माराणो[13], तरै तेजसी परो नाठो[14] । तरै राणी विमळादे दीठो, 'रावळरै टीकानू भाई वेटो को नही[15] । गढ किणनू दीजै[16] ?" तरै विमळादे रजपूतानू कह्यो-"कोई इसडो रजपूत, जिको पाच-सात दिन गढ राखै[17], तितरै म्है मूळराजरो पोतरो[18], देवराजरो वेटो वारू-छाहिण केहर, राणा रूपडारो दोहीतो उरो आणा[19] ।" तरै

---

1 यह पीछेका पीछे आया सो ठीक नही है । 2 तव उसके पासका पत्र लेकर खोला और पढ देखा । 3 तव उस मेवडोको (दूतको) ही मार कर खेजडी (शमी) वृक्षके नीचे उनकी वलि दे दी । 4 फिर शाही मुद्रा वाला फरमान दिखा कर गढ पर अधिकार कर लिया । 5 आते हुए फिर अपशकुन हुआ । 6 इस गढके साथ रावलका नाम तो रहना चाहिये, परन्तु उसका वशज कोई नही रहेगा । 7 भीम जसहडोतके वेटे तेजसीने तलहटीकी वावडी पर रावल घडसीको दगेके साथ एक गोठ दी । 8 रावलजी वहा आये और फुर्तीके साथ ज्योही वे घोडेसे उतर रहे थे, उतरनेके पहिले ही (तेजसीने) तलवारका प्रहार किया जिससे (घडसीका) सिर टूट पडा । 9 घडसीके कटे हुए धडको घोडा हाफना और घवराया हुआ गढ पर ले आया । 10 रानीने गढकी पोले वद करवा दी । 11 पीछे सध्या समय(?) होते-होते तेजसी भी पीछे भागा हुआ आया । 12 तव उपर वालोने उस पर पत्थर वरसाये । 13 तेजसीके कितनेक साथी मारे गये । 14 तव तेजसी भाग गया । 15 तव राणी विमलादेने विचारा कि रावलके पीछे गद्दीधरोमे भाई-वेटा कोई नही है । 16 गढ किसके सुपुर्द किया जाय । 17 कोई ऐसा राजपूत है जो पाच-सात दिन तक गढकी रक्षा करे । 18 जितनेमे हम मूलराजके पौत्रको । 19 देवराजके वेटे केहरको जो राणा रूपडेका दोहिता है, वारू-छाहिणसे वुला ले ।

डेल्है जसहड आसकरणरै बेटै कह्यो–"गढ इणा आगै म्है राखसा, थे म्हासू पछै भली करजो, म्हे वीनती करा सु मानजो[1] ।" पछै विमळादे बॉह दीवो[2] । पछै डेल्हो आपरो साथ ले आदमी ५०० लेनै गढरी प्रोळ आडो बैठो[3] । विमळादे कागरासू आदमी उतारनै केहरनू तेडायो[4] । केहर आयो । केहरनू टीको हुवो । गढरी प्रोळ खोली । भाटिये सारै आय केहर देवराजोतनू जुहार कियो[5] । हरामखोर नास गयो[6] । पछै डेल्है आसकरणोतनू विमळादे केहरनू कहिनै चाधणो जेसळमेरसू कोस १२ पोकरणरै मारग दिसा पटै दिरायो[7] ।

रावळ घडसी रतनसीयोतरै साथै विखा माहे इतरा रजपूत था[8]–

१ जैतुग महिपो कोल्हावत[9] ।

१ जसहड डेल्हो आसकरणोत[10] ।

१ जैचद लूणग ऊदळोत[11] ।

२ बारहठ आसराव रतनू, आसराव तीहणरावरो । तीहणराव, जोगी, देदो, बूजो, रतनरा । चिराई आसरावरो, बाप बेटो २[12]।

गीत रावळ घडसीरो ।

घणा दीह[13] लग[14] ताहरो[15] नाम रहसी[16] घणो,
घणा जूझार जु वाहै घाह[17] ।
आप प्राण दिल्ली ऊवेळी[18],
पूरबरो भागो पतसाह ॥१

---

1 इसके आगे गढकी रक्षा हम करेंगे । आप हमारे साथ भला वर्ताव करना और हम विनती करें उसे स्वीकार करना । 2 विमलादेने वचन दिया । 3 तब डेल्हा अपने साथियो-के साथ ५०० आदमियोको लेकर गढकी पौलके आडा बैठ गया । 4 विमलादेने गढके कगूरोंसे आदमीको नीचे उतार कर केहरको बुलवा लिया । 5 देवराजके पुत्र केहरको सभी भाटियोने आ करके जुहार किया । 6 हरामखोर तेजसी भाग गया । 7 फिर विमलादेने केहरको कह करके चाधरणा गाँव, जो जैसलमेरसे १२ कोस पर पोकरणके मार्गकी ओर है, आसकरणके बेटे डेल्हेको जागीरमे दिलवाया । 8 रावल घडसी रतनसीओतके साथ, उसके सकटकालमे इतने राजपूत थे । 9 कोल्हाका बेटा जैतुग महिपा । 10 आसकरणका बेटा जसहड डेल्हा । 11 जयचद और लूणग ऊदलके बेटे । 12 तिहुणरावका बेटा बारहठ आसराव रतनू । तिहुणराव, जोगी, देदो और बूजो ये रतनके बेटे और चिराई आसरावका बेटा । बाप-बेटा ये दोनो साथ थे । 13 दिन । 14 तक । 15 तेरा । 16 रहेगा । 17 तैंने अनेक जूझारोके ऊपर प्रहार किया है । 18 अपने प्राणोको हथेलीमे लेकर तूने दिल्लीकी सहायता की ।

एकण घाव वरा वस आंणी[1],
पड़गाहै दिल्ली पतसाह[2] ।
पूरव-पोह[3] गमियो[4] पर-दीपै[5],
रतनावत घड़सी रिम-राह[6] ॥२

वेढक जेसळमेर वाळियो[7],
कव मीगळ[8] बोलै जस कठ ।
वड रावळ सरगापुर वसियो[9],
विमळादे सहितो वैकुंठ[10] ॥३

## वात

रावळ केहर देवराजरो। देवराज मूळराजरो। रावळ घडसी पछै टीकै बैठो। वडो ठाकुर हुवो। वरस ३४ मास १० दिन ६ राज कियो। पछै मीच मुवो[11]। तिण केहररा बेटा—

१ रावळ लखमण केहररो। जेसळमेर टीकै बैठो। लीलादे महेवचीर पेटरो[12]।

१ सोम केहररो। तिणरा अहिजनि, पोकरणरै मढलै प्रथम रावळ रूपसीयोतरा छै। नाथारा बेटा रामदास, लालो, हरी, खेतो बीकानेररै देस गाव नायूसर वसै छै। रूपसीरा पोतरा—गागो, करन, रामदास[13]।

१ रावळ केल्हण, रावळ केहररो वडो बेटो टीकाइत हुतो, लाछां देवडीरैं पेटरो[14]। रावळ केहरनू विगर पूछिया महेवचासू सगाई की,

---

1,2 दिल्लीके बादशाहका मान-मर्दन करके एक ही आक्रमणमे वरा पर अधिकार कर लिया। 3 पूर्वके बादशाहको। 4 भगा दिया, गर्व खडन कर दिया। 5 दूसरे द्वीपमे। 6 शत्रुओका नाश करने वाला। 7 इस वीरने अपने जैसलमेर राज्यको पुन प्राप्त किया। 8 कवि सिहल। 9,10 विमलादेके साथ बडा रावल घडसीने स्वर्गमे जाकर निवास किया। 11 अपनी मृत्युसे मरा। 12 रावल लखमण केहरका बेटा, लीलादे महेवचीकी कोखसे उत्पन्न, जैसलमेरकी गद्दी पर बैठा। 13 रूपसीके पोते गागा, करण और रामदास। 14 लाछा देवडीकी कोखमे उत्पन्न रावल केहरका बडा बेटा रावल केल्हण राज्याधिकारी था।

तरै रावळ केहररो वडो वेटो केल्हण थो, जिणनू परो काढियो, नै लखमणनू मुदायत कियो[1]।

१ सोम केहररो, देवडी लाछारै पेटरो। इणरै को दिन विकूपुर हुतो। तिण सोमरै वासला सोम-भाटी छै[2]।

पछै राव केल्हण सोमरै सगो-भाई[3] विकूपुर आयो। पछै सोम कतार आई हुती तिणरो दाण चुकावण गयो हुतो[4]। वासै केल्हण किवाड आडा दिया[5]। पछै सोम जायनै देरावर लियो[6]। वरस पाच-सात सोम जीवियो, पछै सोम मुवो[7]।

टीकै सहसमल वैठो। पछै सोमरै वेटै सहसमल ऊपर जेसळमेररो धणी आयो[8], तद सहसमल किवाड नाख वाज मुवो[9]। गढ देरावर, सोम नै सहसमलरी देवळिया छै[10]।

रूपसी सोमरो वेटो। तिको आपरा भतीज लेनै सिध गयो[11]। पछै राव वरसिंघ रूपसी सोमोतनू गाव ५ विकूपुररा दीना, पाछो विकूपुर आणियो[12]। १ ग्रावधी वसै[13]।

१ वजु। १ कूपासर। १ सिंध। १ पीथासर।

तिण सेवडा माहै औ गाव आगै राखसियारा हुता, पछै सोमनू दिया[14]।

१ कलिकरण केहरो, लाछा देवडीरै पेटरो। तिणरै वासला जेसा

---

1 तव रावल केहरका वडा वेटा जो केल्हण था, उसको निकाल दिया और छोटे वेटे लखमणको राज्याधिकारी वनाया। 2 कोई दिन इसके अधिकारमे विकपुर था। इस सोमके वशज सोम-भाटी हैं। 3 सहोदर भाई। 4 पीछे सोम एक कतार (मालसे भरा हुआ ऊटो आदिका काफिला) आई थी, उसका कर चुकानेको गया हुआ था। 5 पीछेसे केल्हणने द्वार वद कर दिये। 6 इस पर सोमने जाकर देरावर पर अधिकार कर लिया। 7 पाच-सात वर्ष जीवित रह कर सोम मर गया। 8 सोमके वेटे सहसमल पर जैसलमेरका स्वामी (रावल केल्हण चढ कर आया। 9 तव सहसमलने गढके द्वार खोल दिये और युद्ध करके मर गया। 10 देरावरके गढमे सोम और सहसमलकी देवलिया वनी हुई है। 11 सोमका वेटा रूपसी अपने भतीजोको लेकर सिंधमे चला गया। 12 पीछे राव वरसिंघने सोमके पुत्र रूपसीको विकू पुर बुला करके, विकू पुरके पाच गाव दिये। 13,14 वजू, कूपासर, सिंध, पीथासर और ग्रावधी इस प्रान्तमे पहले ये गाव राखसिये राजपूतोके थे, पीछे सोमको (रूपसीको) दिये। रूपसी ग्रावधीमे रहता है।

भाटी जोधपुर चाकर[1] ।

सोम-भाटी केहररा इतरी ठोड़ छै[2] । आक १ ।

२ सहसमल सोमरो । तिणरा फळोधीरी खीचवद[3] ।

३ कान्ह ।

४ भैरव ।

५ राम ।

६ हरदास ।

७ देवीदान । ७ अजो । ७ ठाकुरसी ।

६ खेतो ।

७ अजो । ७ पीथो ।

६ रायसिंघ ।

७ जैतो । ७ जगमाल ।

६ वरसिंघ ।

७ मानो ।

२ रूपसी सोमरो । विकूपुररै गाव आवधी, वजु[4] ।

३ सीहो ।

४ किसनो । ४ रामचद ।

४ भगवान । ४ कलो ।

४ सावळ । ४ जीवो ।

४ रिणमल । ४ दयाळ ।

४ अजो । ४ विजो ।

४ राम । ४ पिथुराव ।

१ सातळ केहररो, लाछा देवडीरै पेटरो[5] ।

१ सावतसी केहररो, तिणरै वासला सावतसी-भाटी कहावै छै[6] ।

इणारै जेसळमेररै देस गांव १ कोटडी, जेसळमेरसू कोस १० गोरहराथी कोस ३ । रावळ कलै मनोहररी वार माहै इणारो वडो कारण हुवो[7] ।

२ महिपो ।

३ मालो ।

४ भीव ।

५ गोयद ।

६ सीहो । ६ देवीदान ।

६ अखो । ६ नगो ।

---

1 केहरको बेटा कलिकरण, लाछा देवडीकी कोखमे उत्पन्न, जिसके वशज जैसा-भाटी जोधपुरमे चाकर हैं । 2 केहरके वशज सोम-भाटी इतने स्थानोंमे रहते है । 3 सोमका पुत्र सहसमल, जिसके वशज फलोवी प्रातके खीचवद गावमे रहते है । 4 सोमका पुत्र रूपसीके विकूपुरके आवधी, वजू आदि गाव । 5 केहरका बेटा सातल, लाछा देवडीकी कोखसे उत्पन्न । 6,7 केहरका बेटा सावतसी, इनके वशज सावतसी-भाटी कहलाते हैं । जैसलमेर राज्यमे इनका एक गाव कोटडी है जो जैसलमेरसे १० और गोरहरा से ३ कोस दूर है । रावल कलै और मनोहरके राज्य-कालमे इनकी (सावतसी-भाटियोकी) वडी प्रतिष्ठा थी ।

सावतसीरा जेसळमेर ।
१ गोयद । भीवो ।
मालो । महिपो[1] ।
२ सीहो[2] ।
३ जीवो ।
२ दान (देवीदान)
३ सादूळ । ३ वीरदास ।
३ सूरजमल ।
२ अखो गोयंदरो ।

३ गोपाळ ।
२ नगो ।
३ सामदास । सावतसी,
अहिजन[3] ।
१ ईसर, रायमल,
महिपो[4] ।
२ मनोहर । २ वीठळ ।
२ जसवत[5] ।

१ मेहाजळ केहररो, लीलादे महेवचीरै पेटरो । तिणारी जुदी साख छै—मेहाजळोत-भाटी । इणारो जेसळमेररै देस गाव मेहाजळहर कोहररो नाम छै[6]। जेसळमेरथा[7] कोस ३०, ऊमरकोटरै मारग, १ गाव बुज कनै तिणमे भाटी नाथो किसनावत वसै छै[8] ।

१ तेजसी केहररो, लाछा देवडीरै पेटरो[9] ।

१ परबत केहररो । १ तणु केहररो ।

आक १ लखमण केहररो । केहर पछै पाट वैठो । तिण वरस ३१ दिन १३ जेसळमेर राज कियो[10] ।

रावळ लखमणरा बेटासू लखमणरा पोतरा पाटवी नै वीजा पण छै, सु लखमणा कहावै छै[11] ।

---

1 गोयद भीमेका पुत्र, भीम मालाका और माला महिपेका पुत्र । 2 सीहा गोयदका वेटा । 3 सामदास, सावतसी (दूसरा) और अहिजन, ये तीनो नगाके पुत्र । 4 ईसर, रायमल और महिपा, ये तीनो केहरके वेटे । 5 ये तीनो महिपाके पुत्र । 6 मेहाजल केहरका वेटा, लीलादे महेवचीकी कोखसे उत्पन्न । 'मेहाजलोत-भाटी' इसके वशजोकी यह एक अलग शाखा है । मेहाजलके नामसे मेहाजलहर नामक एक कुआं है, जिसके नाम पर 'मेहाजलहर' नामका इनका एक गाव जैसलमेर राज्यमे है । 7 जैसलमेरसे । 8 गाव बुजके पास जिसमे किसनाका वेटा भाटी नाथा रहता है । 9 लाछा देवडीकी कोखसे उत्पन्न केहरका वेटा तेजसी । 10 केहरका वेटा लखमण, केहरके वाद गद्दी पर बैठा, जिसने ३१ वर्ष और १३ दिन जैसमेरमे राज्य किया । 11 रावल लखमणके वेटोके वशज लखमणके पोते गद्दीधरोमे भी है और उनसे अतिरिक्त भी है, जो 'लखमणा' या 'लखमण-भाटी' कहलाते है ।

२ रावळ लखमणरो बेटो बैरसी जेसळमेर टीकै बैठो[1] ।

२ रूपसी लखमणरो, तिणरी जुदी साख रूपसी कहाडै[2] । तिणारा इतरा धडा[3]—

एक तो मादळिया वाळा जोधपुर चाकर[4] ।

एक पोकरण वाळा[5] ।

नैं जैसळमेररै देस रूपसी घणा छै । इणांरो उतन काछो लुद्रवाथी कोस २ । आगै इणारै रावताई हुती[6] । विजो, नाथो, हरदास, रूपसी जेसळमेररै देस[7] ।

१ करमचद जसारो । २ वीको ।

२ भागचद । १ वीरदास नीसळोत[8] ।

१ रायसल देवावत[9] ।

१ अमरो भाखररो, चदरावरो पोतरो[10] ।

भाटी वीठळ गोयदोत, जोधपुर चाकर[11] ।

२ राजधर लखमणरो तिणरै वांसला राजधर-भाटी कहावैं । इणांरै जेसळमेररै देस कोहर २ गांव २[12]।

१ घणोली जेसळमेरथा कोस १ ।

१ सतोही जेसळमेरथा कोस १५ ।

१ पूठ वासै धाधणियो ऊमरकोटरै मारगमे ।

१ सूजेवो-वाभणीको । रावळ कल्याणदास भाटी जसवतनूं उतन कर दियो, लाठोसूं कोस ४[13] ।

---

1 रावल लखमणका बेटा बैरसी जो लखमणके बाद जैसलमेरकी गद्दी पर बैठा । 2 लखमणका बेटा रूपसी, जिसके नामसे एक अलग शाखा 'रूपसी' या 'रूपसी-भाटी' कहलाती है । 3,4 5 जिनके इतने (दो) दल हैं—(१) मादलिया वाले जो जोधपुरमें चाकर हैं, (२) और एक वह जो पोकरण वालोंके नामसे प्रसिद्ध है । 6 जैसलमेर राज्यमें रूपसी अधिक हैं । लुद्रवासे दो कोस पर काछा गाव इनका वतन है । पहिले रावताई इनकी थी । 7 विजा, नाथा, हरदास और रूपसी जैसलमेर राज्यमे रहते हैं । 8 नीसलका बेटा वीरदास । 9 देवाका बेटा रायसल । 10 अमरा भाखरका बेटा और चदरावका पोता । 11 गोयदका पुत्र भाटी वीठल जो जोधपुरमे चाकर । 12,13 लखमणका बेटा राजधर, जिसके वशधर 'राजधर-भाटी' कहलाते हैं । इनके जैसलमेर राज्यमे ये दो गाव और दो कुएँ हैं—(१) घणोली, जैसलमेरसे एक कोस, (२) सतोही जैसलमेरसे १५ कोस, (३) सतोहीकी पिछली बाजू ऊमरकोटके मार्गमे धाधणिया और (४) सूजेवो-वाभणीको, जो लाठी गावसे ४ कोस पर है, जिसे रावल कल्याणदासने भाटी जसवतको निवास-स्थानके लिये दिया था ।

२ जैतमाल राजधर[1]।

जसवत वैररालोत भलो रजपूत हुतो। रावळ मनोहररी वार माहै च्यार परधानामे[2]।

२ भोपत जसवतरो[3]। ३ भागचद।

सकतो वैरसलरो[4]।

२ किसनो। २ विसनो। २ धोधो। २ ग्रीरदास।

३ सूरजमल।

२ उदैसिंह। २ भोजो। २ सामो। २ जोगीदास।

रावळ वैरसो लखमणरो। रावळ लखमण पछै पाट बैठो। वरस १६ मास ६ दिन १७ जेसळमेर राज कियो[5]।

१२ रावळ चाचो। १२ मेळो।

१३ करमो, पोकरणरै केलावै वाळो[6]।

१४ अजो करमारो[7]। १५ हरदास अजारो[8]।

१५ सिवदास, उ॥ भोपत उरजन मारियो, समत १६५५[9]।

१६ गगादास। १७ रतनसी।

१६ नेतसी अजावत[10]। १७ ऊदो।

१४ सागो करमारो। पातसाह हमाऊंरो चाकर थटै माराणो[11]।

१५ भानीदास (भवानीदास)। १६ सुरताण।

१४ ठाकुरसी करमारो, जोधपुर विखै समत १६०० काम आयो[12]।

१४ महेस करमारो। १५ कूभो। १५ हमीर।

१५ जगो हमीरोत[13]। १७ गोयद। १७ रामदास।

---

1 जैतमाल राजधरका वेटा। 2 वैरसीका वेटा जसवत भला राजपूत हुआ। रावल मनोहरके राज्यकालमे चार प्रधानोमेसे एक था। 3 भोपत जसवतका वेटा। 4 सकता वैरसीका वेटा। 5 रावल वैरसी लखमणका वेटा, रावल लखमणके पीछे गद्दी बैठा। उसने १६ वर्ष ६ मास और १७ दिन जैसलमेरका राज्य किया। 6 करमा, पोकरण प्रदेशके केलावे गावका निवासी। 7 अजा करमाका वेटा। 8 हरदास अजाका वेटा। 9 सम्वत् १६५५मे शिवदास और भोपतको अर्जुनने मारा। 10 नेतसी अजाका वेटा। 11 करमाका पुत्र सागा, वादशाह हुमायूका चाकर, थट्टेमे मारा गया। 12 करमाका पुत्र ठाकुरसी सम्वत् १६००के जोधपुरके विखेमे मारा गया। 13 जगा हमीरका वेटा।

१४ जोधो करमारो[1] । १५ वीरदास । १५ रायमल ।

१२ ऊगो वैरसीरो, इणरो उतन सिधरो सावडो । जेसळमेर छाड़ि वारोटियो हुवो[2] ।

१३ पतो । १४ नारणदास ।

१५ हरो । १६ पात्रो । १६ कान्ह ।

१७ भाटी चद्रसेन पाचावतनू समत १६७६ राजा गजसिंघजी सूरजसिंघजीरै मोहनी पातररै पेटरी वेटी हुती सु जोधपुर भाटी गोयददासजीरै घरे परणाई । पटो देनै वास राखियो[3] ।

१७ हीगोळदास । १७ भीव । १७ थोधादास । १७ कल्याणदास ।

१७ उदैसिंह । १७ लूणकरण । १८ जीवो १८ जसवत[4] ।

१७ गोपाळदास । १८ जैतमाल ।

१६ सागो । १७ धनराज ।

१६ दूदो । १७ खगार ।

१५ नरो । १६ मेहाजळ ।

१३ सुरजन ऊगारो[5] । १४ भेटो ।

१५ खेतो । १२ वणवीर वैरसीरो[6] ।

१३ खीवो । १४ गागो ।

१५ परवत गागारो[7] । १६ खेतो परवतरो, रा ॥ जैतसिंघ राजावतरै वास [8] ।

१७ भोपत । १८ भगवान ।

१७ नारणदास, खीनावडी पटै[9] ।

१७ नरसिंह । १७ सुदरदास ।

---

1 करमाका पुत्र जोवा । 2 वैरसीका वेटा ऊगा, इसका निवास सिंधका सावडा गाव, यह जैसलमेर छोड कर लुटेरा हो गया । 3 पाचाका पुत्र भाटी चद्रसेनको, राजा गजसिंहजी सूरसिंहजीकी मोहिनी नामक वेश्यामे उत्पन्न लडकीको जोधपुरमे भाटी गोयददासजीके घर पर सम्वत् १६७६ व्याह दी और जागीर देकर अपने पास रखा । 4 जीवा और जसवत लूणकरणके वेटे । 5 सुरजन ऊगाका वेटा । 6 वणवीर वैरसीका वेटा । 7 गागाका वेटा पर्वत । 8 पर्वतका वेटा खेताराव जैतसिंहकी चाकरीमे । 9 नारायणदासको खीनावडी गाव जागीरमे ।

१६ नेतो परबतरो, रा ॥ मोहणदास राजावतरो चाकर । रा ॥ भोपत साथै काम आयो[1] ।

१२ रावळ चाचो वैरसीरो । रावळ वैरसी पछै टीकै वैठो । वरस १९ मास ११ जेसळमेर राज कियो[2] । सु एकरसू थटै किणी काम गयो थो[3] । पाछो वळतो ऊमरकोटरो धणी सोढो माडण, तिणरै परणियो[4] । सु ऊमरकोट नै जैसळमेर सदा अदावत थी, सु राणा माडणरा भतीज भोजदे, भीवदे तिणानू रावळ क्यु अेकर वोलियो थो, तरै भोजदे चूक कर रावळनू मारियो[5] । पछै भाटिए कोस २ डेरो करनै उठै देवीदासनू तेडियो[6] । तेडनै ऊमरकोट भेळियो[7] । राणो माडण नीसरियो[8] । वासै कोस ८ आपडनै मारियो[9] । भोजदे, भीवदे एकरसू तो नीसरिया, नै पछै सवारै सात-वीसी आदमियासू आय मुवा[10] । नै माडणरो माथो वड टागियो[11] । नै ऊमरकोट पाडनै ईंटा जेसळमेर ले गया, तिणरो करणारै मोहल करायो[12] ।

गीत साखरो[13]

छत्रपत सुरताण चाच स्राझेवा[14],
फूटी दह-दिस[15] वात फुडी ।

---

1 पर्वतका वेटा नेता राव मोहनदास राजावतका चाकर, राव भोपतके साथ मारा गया । 2 वैरसीका पुत्र रावल चाचा । रावल वैरसीके पीछे गद्दी पर बैठा । इसने १९ वर्ष ११ मास जैसलमेरमे राज्य किया । 3 वह एक वार किसी कामसे थट्ट गया था । 4 वहासे लौटते हुए उमरकोटके स्वामी माडणके यहा विवाह कर लिया । 5 परतु उमरकोट और जैसलमेरमे सदासे शत्रुता थी । रावल चाचाने राणा माडणके भतीज भोजदे और भीवदेको एक वार कुछ अपशब्द कहे थे, इसलिये तव भोजदेने धोखा कर के रावल चाचाको मार दिया । 6 फिर साथके भाटियोने उमरकोटसे दो कोस पर अपना डेरा डाल कर चाचाके वेटे देवीदासको वुला लिया । 7 वुला करके भाटियोने उमरकोटको घेर लिया । 8 राणा माडण भाग गया । 9 आठ कोस पीछे भाग करके उसको पकड लिया और मार दिया । 10 भोजदे और भीवदे भी एक वार तो भाग गये थे, परतु दूसरे दिन १४० आदमियोके साथ आये और लड कर मर गये । 11 भाटियोने माडणके सिरको एक वड वृक्षमे टाग दिया । 12 और उमरकोट (के कोट) को गिरा कर उसकी ईंटें जैसलमेर ले गये जिनसे करणका महल वनवाया । 13 साक्षीका गीत (छद) । 14 चाचाको मारनेके लिये । 15 दशो दिशाओमे वात फैल गई ।

मंडण गुडिया नही महारिण ,
ग्रहणै राजकुमार-गुडी[1] ।। १
त्यै पातरै[2] वडो छत्र पडियो,
वोटण गढां अथग जळवोळ[3] ।
नेवर रोळ किया अगनैणी,
राणै कियो न पाखर[4] रोळ ।। २
माडण चाचगदे मारेवा[5],
करै जिगन मन कूड कियो[6] ।
ऊतारियो सनाह आपरौ[7],
दळद करी सनाह दियो ।। ३

१३ रावळ देवीदास चाचारो[8], रावळ चाचो ऊमरकोट ऊपर गयो हुतो[9], पछै उणे वेटी देनै चूक कर मारियो[10] । पछै भाटियां पांच वडेरा[11] कोस ४ पाछो डेरो करनै[12] देवीदासनू जेसळमेरसू तेडियो[13], देवीदास आयो । भाटिये कह्यो–"टीको काढां[14] ।" तरै[15] देवीदास कह्यौ–"टीको हमार हू कोई कढाऊ नही[16] । कै तो मांडण म्हारा वापनू मारियो छै तिणनू मारू, कै हूई कांम आऊ[17] ।" तरै इण वात सारै साथरा सीग आकास लगा[18] । पछै गुढ पाखरनै ऊमरकोटसू ढोवो हुवो, गढ भेळियो[19] । तठै सोढारो घणो साथ मारियो[20] । माडण, भीमदे, भोजदे भातीजा सहित नीसरियो[21] सु कोसा ८ ऊपर जाता आपडिया[22], तठै वेढ हुई[23] । माडण, भोजदे, भीमदे, आदमी

---

1 कवचधारी राजकुमार । 2 उसके वोखेमे, उसके वदलेमे । 3 अत्यन्त क्रोधमे गढका नाश करनेके लिये । 4 घोडे या हाथीका कवच । 5,6 चाचगदेको (मारनेके लिये) विवाहके मिससे वोखा देकर मारा । 7 अपना । 8 चाचाका पुत्र । 9 गया था । 10 फिर उसने अपनी वेटीका उससे व्याह करके वोखेसे मार दिया । 11 पाच वडे भाटियोने । 12 करके । 13 बुलाया । 14 राज्य-तिलक करदे । 15 तव । 16 टीका अभी मैं नही कढवाऊगा । 17 या तो जिस माडणने मेरे वापको मारा है उसको मैं मारदू, या फिर मैं ही काम आ जाऊ । 18 तव इस वात पर सभी साथ वालोको वडा क्रोध उत्पन्न हुआ (वहुत उत्तेजित हो गये) । 19 फिर सभीने कवच धारण करके उमरकोट पर हमला किया और गढ पर अधिकार कर लिया (नाश कर दिया) । 20 वहा पर सोढोके वहुतसे सैनिकोको मार दिया । 21 निकल कर भाग गया । 22 पकड लिये । 32 वहा पर लडाई हुई ।

१४० मारिया नै ऊमरकोटरो कोट पाडनै[1] ईटा जेसळमेर ले गया तिणरो करणैरो मोहल करायो देवीदास रावळ[2]।

रावळ देवीदास चाचावत[3] सारीखो[4] कोई रावळ जेसळमेर प्रतापबळी हुवो नही। पाखतीरा सारा देसोतानू छरा लगाई[5]।

रावळ देवीदासरा बेटा–

१४ रावळ जैतसी। १४ कुभो।

१५ जगमाल। १६ सातळ।

१७ देवराज सातळोत। राव रिणमल राव चूडारा वैर माहै धणलै थका मारियो[6]।

१६ सीहो जगमालरो[7]।

पातळ तोगावत जेसळमेर चाकर छै, खीवलो गाव खावै छै[8]।

वीझोराई सागडनै[9]।

भाटी केसोदास भारमलोत ठरडै पोकरणरै रहै[10]।

राम रावळ देवीदासरो[11]। तिको रावळ हापारै परणियो हुतो[12], तिण परसग रामरो बेटो सकर महेवैहीज रह्यो[13]। जोधपुर पिण सकर चाकर रह्यो हुतो[14]। कहै छै सोझतरो ग्रावो राम, सकररै पटै हुतो[15]। ग्राक १४।

१५ सकर महेवचीरा पेटरो[16]।

१६ खीमो। १५ सावळ। १६ महेस। १६ ऊदो। १६ सूरो।

खीमा सकरोतरो परवार[17]–

---

1 गिरा करके। 2 रावल देवीदासने उन ईटोसे करणेका महल बनवाया। 3 चाचाका पुत्र। 4 समान। 5 पडौसके सभी राजाग्रो पर उसने ग्रपनी धाक जमाई। 6 देवराज सातलका वेटा, जिसको राव रिणमलने राव चूडाकी शत्रुतामे, जब वह धणले गावमे था, मार दिया। 7 जगमालका वेटा सीहा। 8 तोगाका वेटा पातल जैसलमेरमे चाकर है, खीवला गाव उसके पट्टेमे है। 9 सागडके पट्टेमे वीझोराई गाव। 10 भारमलका वेटा केशोदास पोकरणके ठरडेमे रहता है। 11 रावल देवीदासका पुत्र राम। 12 इसका विवाह रावल हापाके यहा हुग्रा था। 13 इस प्रसगसे रामका वेटा शकर मेहवे (ननिहाल) मे ही रह गया। 14 शकर जोधपुरमे भी चाकर रहा था। 15 कहा जाता है कि राम ग्रौर उसके वेटे शकरको सोजत परगनेका ग्रावा गाव पट्टेमे दिया हुग्रा था। 16 रामका वेटा शकर मेहवचीकी कोखसे उत्पन्न। 17 शकरके वेटे खीमाका परिवार।

१७ सुरताण ।

१८ राघो । १८ अचळो । १८ वीरो । १८ रामसिंघ ।

१७ खेतसी ।

१८ कलो । १८ मनोहर ।

केहेक रांमरा वीकानेर छै[1] ।

रावळ जैतसी देवीदासरो[2] । देवीदासरै पछै पाट वैठो[3] । वरस ३५ मास ४ दिन १० जेसळमेर राज कियो। सुसतो सो ठाकुर हुवो[4]। राव लूणकरण वीकावत वीकानेररो धणी, देवीदासरो दोख विचार जेळसमेर ऊपर आयो[5]। वडाणी राजवाई तळाई कोसै २ जेसळमेरसू, डेरो कियो, धरती मारी[6] । रातीवाहो भाटिये देणरो विचार कियो[7], सु भाटी नरसिंघदास देवीदासोत परो काढियो थो, राव वीकारो दोहीतरो, सु रावजीरै साथै हुतो[8] । पछै आगै इणांनू[9] खवर हुई सु आगै साथ तैयार हुय वैठो । तरैं कटक री पाखती भीटहरा ४ आंण राखिया था[10], भाटियारो साथ नैडो आयो तरै भीटहरा लगाय दिया[11] । रातरो चानणो हुवो[12] । तरै राठोड़ चढनै वासै घातिया[13], नै भाटी आगै नीसरिया[14], तठै घणो साथ भाटियारो मारियो[15] । वेढ राठोडा जीती[16] ।

एक वात यु सुणी[17] । रावळ जैतसी वूढो हुवो । पछै इणरै वेटै जैसिघदे, नारणदास, राम, पुनसी इणै मिळनै रावळनू को दिन अटक

---

1 रामके कई वंशज वीकानेरमे रहते है। 2 देवीदासका पुत्र रावल जैतसी। 3 जो देवीदासके वाद गद्दी पर वैठा। 4 यह कुछ सुस्तसा (अकर्मण्य) शासक हुआ। 5 वीकानेरका स्वामी लूणकरण वीकावत देवीदासके इस अवगुणका ख्याल करके जैसलमेर पर चढ कर आ गया। 6 जैसलमेरसे दो कोस पर वडाणी गावकी राजवाई नामक तलाई पर उसने डेरा डाला और देशमे लूट-मार मचा दी। 7 इस पर भाटियोने रात्र्याक्रमण करनेका विचार किया। 8 राव वीकाका दोहीता, देवीदासका वेटा भाटी नरसिंहदास जो जैसलमेरसे निकाल दिया गया था, वह राव लूणकरणके साथमे था। 9 इनको। 10 तव सेनाके पास चार काटोके वडे ढेर ला कर रख दिये थे (भीटहरो, वीठोडो=वेरी वृक्षकी पतली कँटीली शाखाओंका अमुक परिमाणमे वनाया हुआ एक ढेर)। 11 जला दिये। 12 रातको प्रकाश हुआ। 13 तव राठौडोने पीछा किया। 14 भाटी आगे भाग गये। 15 वहा भाटियोके वहुतसे मनुष्योको मार दिया। 16 राठौडोने लडाई जीती। 17 एक वात इस प्रकार भी सुनी गई है।

मे कियो[1]। नै बाहिडमेरी सीतारा बेटा रावळ लूणकरण नै रावत करमसीनू इणे परा काढिया[2]। श्रै रावत भीमा बाहडमेरारा भाणेज, सु श्रै सिंध गया[3]। पछै कितरेके दिने रावळ जैतसी इणासू घणो ललो-पतो कराय, पछै कह्यो[4]–"भाटी च्यार ४ बूढा म्हा कनै मेलो, राज थे भोगवो[5]। हू तो इण वात गाढो राजी छू[6]। म्हारै थे सपूत छो[7]। लूणकरण करमसी बे कपूत छै, सु परा गया। वलाय चूकी[8]।" वाप बेटारै ऊपरलो रस हुवो[9]। तिण दिन पायगा घोडा घणा वाधै[10]। तरै रावळ जैतसी बेटानू कहाडियो[11]–"इतरा घोडा बाधा चारीजै, इतरो हासल श्रापणै किसू छै[12]? घोडा असवारीरा पायगा बाधा राखो। बीजा[13] खारीग माहै छोड दो।" तरै छोड दिया। रावळ जैतसी वडेरा भाई सारा हाथ किया[14]। भाटिया सारा श्रागै कह्यो–"म्हारो जीव निपट दोहरो हुवो छै[15]।" तरै कह्यो[16]–"कुण वास्तै[17]?" तरै कह्यो–"इणे म्हारी वूढै वारै इजत पाडी, मोनू रोक माहै कियो[18]।" सारै राईतनै सुणियो[19]। तरै भाटिये सारा कह्यो–"हमै राज कहो सु करा[20]।" तरै रावळ पाच भाटिया कनै बाह मागी[21], दो तो दिलरी वात कहू[22]। तरै सारा बाह दीवी[23]। तरै रावळ जैतसी भाटिया श्रागै कह्यो–"लूणकरणनू तेडावो, नै इणांनू

---

1 इन्होने मिल करके रावलको कई दिन कैदमे रखा। 2 वाहडमेरी सीताके वेटे रावल लूणकरण श्रौर रावत करमसीको इन्होने निकाल दिया। 3 ये रावत भीमा बाहड-मेरेके भानजे सिंधको चले गये। 4 इनकी वहुत खुशामद करके फिर कहा। 5 मेरे पास चार वूढे भाटियोको रख दो श्रौर राज तुम करो। 6 मैं तो इस वातसे खूव खुश हू। 7 मेरे तो तुम ही सपूत हो। 8 लूणकरण श्रौर करमसी दोनो कपूत है, सो तो चले गये, श्रपने श्राप वला टल गई। 9 वाप वेटोमे ऊपरकी (कपटपूर्ण) प्रीति हुई। 10 उन दिनो घुडसालमे घोडे वहुत वधे रहते थे। 11 कहलवाया। 12 श्रपने इतनी कौनसी श्रामदनी है?। 13 दूसरे। 14 रावल जैतसीने श्रपने वडे-वूढे भाईयोको श्रपने वशमे कर लिया। 15 मेरा जीव वहुत दुख पा रहा है। 16 तव कहा। 17 किस लिये? 18 इन्होने वुढापेमे मेरी वेइज्जती की श्रौर मुझे कैदमे डाल दिया। 19 सव राजाश्रोने सुना (सभी रजवाडोमे वात प्रगट हो गई)। 20 तव सभी भाटियोने कहा—"श्रव श्राप श्राज्ञा दें सो करें।" 21 तव रावलने पाच प्रमुख भाटियोसे वचन मागा। 22 यदि वचन दें तो मै मेरे दिलकी वात कहू। 23 तव सभीने वचन दिया।

परा करो[1] ।" तरै भाटिया रावळ भेळा हुय लूणकरणनूं कागद मेलियो[2] । थे वेगा आवो[3], खारीगरा घोडा उरा ल्यो[4] । म्हे आदमी ऊपर छै तिणानूं कहि राखां छा, थांनूं घोडा देसी[5] ।" पछै लूणकरण, करमसी सिवसूं अजांणजकरा[6] अठीनूं आयनै[7] मांमा रावत भीमानूं सहेट माथै तेडिया, नु आया[8] । अठीसूं वां आय घोडा लिया । पछै असवारारो थंडो वासै राखियो[9] । सै[10] असवार २० तथा २५ आगै म्हैल नै[11] जेसळमेर सहररी खबर लिराई । कूकवो पडियो[12] । तरै जैसिंघदे नरसिंघदास रावळ जैतसीनूं वडेरा भाटियानूं पूछायो–"कासूं कियो चाहीजै[13]?" तरै कह्यो–"इणारा दांत पाडिया चाहीजे[14]।" तरै एकवर आपरो साथ लेनै बाहर चढिया[15] । वे आगै थंडो कर ऊभा रह्या था, देठाळो हुवो, तठै मामलो हुवो[16] । जैसिंघदेरै पातळो काळजो थो नु सोह कूट पाडियो[17] । इणा सिरदारारै लोह लागा[18] । अ नीसरिया[19] । लूणकरण तो पाधरो[20] सहरनूं चलायो, नै वे तो डावा-जीमणा नीसरिया[21]। उणारी मावा गढ माहै हुती, तिणा गढरी प्रोळा आडी दिराई[22] । पछै रावळ जैतसी जिण भुरजां दिसा धरती नीचेरो थी, तिणां दिसा राढूं नखाय नै लूणकरण करमसीनूं नै इणारो साथ गढ ऊपर चाढियो[23] । रावळ जैतसीरी दुहाई फेरी[24] । नै

---

1 लूणकरणको बुलाओ और इनको निकाल दो। 2 तब भाटियो और रावलने मिल कर लूणकरणको पत्र लिख भेजा। 3 तुम शीघ्र आ जाओ। 4 खारीगमे जो घोडे हैं उन्हें ले लो (खारीग=चरगाह)। 5 घोडोकी रखवालीके लिये जो आदमी वहा पर हैं, उन्हे हम कह रखते है, वे तुम्हें घोडे दे देंगे। 6 अचानक। 7,8 इधर आकर के अपने मामा रावत भीमाको सीमा (निश्चित स्थान) पर बुला लिया और वे वहा आये। 9 कुछ सवारोकी टुकडी पीछे रख दी। 10 सभी। 11 भेज कर। 12 हल्ला हुआ। 13 क्या करना चाहिये ? 14 इनके दात तोड देने चाहिये। 15 तब एकाएक चढाई कर दी। 16 आगे वे भी (लूणकरण और करमसी) अपना जत्था बना कर खडे ही थे, आमने-साम्हने हुए और वहीं लडाई हुई। 17 जयसिंहदे कमजोर दिलका था, उसे और उसके सभी साथियोको मार गिराया। 18 इधरके सरदारोके भी घाव लगे। 19,20,21 ये दाहिने-बाये (इधर-उधर) होकर निकल भागे और लूणकरण तो सीधा शहरकी ओर चला। 22 उनकी (जयसिंहदे नरसिंहदास आदिकी) माताए गढमे थी, उन्होंने गढके द्वार बद करवा दिये। 23 लेकिन जो बुर्जे निचाई वाली भूमिमे थी, जैतसीने उस ओर उन पर रस्सा डलवा कर लूणकरण और करमसीको तथा उनके साथियोको गढ पर चढा दिया। 24 रावल जैतसीकी आन-दुहाई प्रवर्त कर दी।

रावळ जैतसी आय सिंघासण बैठो। लूणकरण, करमसी आय पगे लागा[1]।

रावळ जैतसीरा बेटा—

१६ रावळ लूणकरण, वाहडमेरी सीताबाई री बेटो।

१६ रावत करमसी, बाहडमेरीरो बेटो।

१७ किसनदास।

१८ वीरदास।

१९ नाथो।

२० सूरो। २० जोधो।

१९ जसवत।

१८ कचरो।

१७ कान्ह।

१८ भैरवदास।

१९ जोगीदास।

२० मोहण। २० मुकददास।

१९ सुदरदास।

२० मानसिंघ। २० रामचद। २० गिरधर।

१९ सुदरसण।

१८ भानीदास (भवानीदास) कान्हरो[2]।

१९ गोयददास।

१६ महिरावण।

१७ सुरताण।

१८ प्रतापसी।

१९ सवळो। १९ अमरो।

१८ वीठळदास।

१९ राजसिंघ।

१८ केसोदास।

१९ रामसिंघ।

१६ राजो, वाहडमेरीरो बेटो[3]।

१७ जगो।

१८ वैरसल।

१९ दयाळ। १९ सकर। १९ सुदर।

१८ लिखमसी।

१९ सवळो।

१६ मडळीक, वाहडमेरीरो बेटो[4]।

१७ वीरमदे।

१८ पतो। १८ अमरो।

१९ सवळो।

१८ रामसिंघ।

१९ केसोदास।

१८ सागो।

१९ नरहर।

१८ गागो।

१९ अरजन। १९ मनोहर।

---

1 लूणकरण और करमसीने आकर जैतसीके चरण छुए। 2 कान्हका बेटा भानीदास (भवानीदास)। 3 राजा वाहडमेरीका बेटा। 4 मडलीक वाहडमेरीका बेटा

१८ रासो ।
१९ दुरगो ।
१६ नरसिंघदास, राव वीकाजीरो दोहीतो[1] ।
१७ पुनसी ।
१८ वरजांग ।
१९ तिलोकसी ।
२० कान्ह ।
१६ जैसिंघदे, ईडरचीरो वेटो । पछै इणानूं परो काढियो, तरै ईडरगयो । तिणरै वासला ईडर छै[2] ।
१७ मालो ।
१८ पूजो, राव कल्यांणमल सुरताण गढिया ऊपर गयो तद काम आयो[3] ।
१९ सुदर ।
१९ राघोदास ।
१९ प्रथीराज, गढिया ऊपर गयो तद काम आयो[4] ।
१९ भगवान । १९ राघोदास । १९ मोहण ।
१६ राम, राव वीकैजीरो दोहीतरो[5] ।
१६ तिलोकसी, राव वीकैजीरो दोहीतरो[6] ।

आक १६—रावळ लूणकरण जैतसीरो । जैतसी पछै टीकै वैठो । रस २२ मास १० दिन ३ राज जेसळमेर कियो[7] ।

वेटा[8]—

१७ रावळ मालदे ।
१७ दुजणसल ।
१८ वाघ, वडो ठाकुर पातसाही चाकर हुवो । समत १६५५ जोधपुर वसियो, गाव १०सूं साभतरो आउवो दियो थो । पछै छाडनै पातसाहरै वसियो[9] ।

---

1 रावल जैतसीका वेटा नरसिंहदास, राव वीकाजी का दोहिता था । 2 ईडरची ...र्नी)का वेटा जयसिंहदे, जिसको ( जैसलमेरसे ) निकाल दिया था, तव वह ईडर ...ला गया था । इसके वंशज ईडरमे हैं । 3 राव कल्याणमल और सुरताण गढिया पर ...ढ कर के गये, वहा पूजा काम आया । 4 पृथ्वीराज गढिया पर चढ कर गया तव काम ...या । 5 राम राव वीकाजीका दोहिता । 6 तिलोकसी राव वीकाजी का दोहिता । ... रावल लूणकरण जैतसीका वेटा, जैतसीके वाद गद्दी वैठा । इसने २२ वर्ष, १० मास और ... दिन जैसलमेरका राज्य किया । 8 रावल लूणकरणके वेटोका (वंशका) विवरण । 9 दुर्जन-...लका वेटा वाघ, यह वादशाही चाकर वडा ठाकुर हुआ । सम्वत् १६५५मे जोधपुर आकर ...ा जहा उसे सोजत परगनेके १० गावोंके साथ आउवा जागीरमे दिया गया था और फिर ...ड कर वादशाहके पास जाकर रहा ।

१९ केसोदास वाघावत, जोधपुर चाकर, गाव भेटनडो पटै। समत १६९६ सावण सुदि ३ काळ कियो[1]।

२० देवीदास।

२१ करन। २२ सूरजमल।

२० दुरगदास। उजीण काम आयो[2]।

२१ हरनाथ।

१९ दळपत।

२० रतन। २० दयाळदास तुरक हुवो[3]।

१९ रुघनाथ, वीराणी पटै समत १६९१ रै वरस हुती। समत १६९५ राव महेसदास सूरजमलोतरै वास वसियो[4]।

१८ सादूळ दुजणसलरो[5]।

१९ मनोहर। १९ सुदरदास।

१८ सिंघ।

१९ सुदरदास, मोहबतखानरै काम आयो[6]।

१८ किसनदास दुजणसलरो, महेवै रैहतो। महेवचारो भाणेज। रतनादे वेटी[7]।

१७ सूरजमल लूणकरणोत, मोटा राजारो सुसरो। सजन भटियाणीरो वाप[8]।

१८ जीवो।

१९ माधोदास, राव विक्रमादीत मालदेओत थोभ, खरडी पटै दी हुती[9]।

१९ वाको।

१७ महेसदास लूणकरणोत[10]।

१८ नाथो।

१९ सामदास। १९ नरहर। १९ पीथो।

१७ हरदास लूणकरणोत[11]।

१८ वळभद्र।

---

1 वाघाका वेटा केशोदास, जोधपुरका चाकर, जहा भेटनडो गाव उसके पट्टेमे। सम्वत् १६९६की सावन शु ३ को मरा। 2 दुर्गदास उज्जैनमे काम आया। 3 दयालदास मुसलमान हो गया। 4 रघुनाथ, जिसको सम्वत् १६९१के वर्षमे वीराणी गाव पट्टेमे था। सम्वत् १६९५मे राव महेशदास सूरजमलोतके यहा जा रहा। 5 सादूल दुर्जनसालका वेटा। 6 सुन्दरदास मोहवतखाके साथ लडाईमे काम आया। 7 दुर्जनसालका वेटा किशनदास, मेहवेमे रहता था। मेहवचोका भानजा था। रतनादे उसकी लडकी थी। 8 लूणकरणका वेटा सूरजमल, यह मोटे-राजाका ससुर और सजन भटियानीका वाप था। 9 माधोदासको राव विक्रमादित्य मालदेओतने थोभ और खरडी गाव पट्टेमे दिये थे। 10 लूणकरणका वेटा महेशदास। 11 लूणकरणका वेटा हरदास।

१६ कीरतसिघ, रावळै वास। समत १६७४ ननेउ दी थी। समत १६७७ जाळोररो ओडवाड़ो, जोगाउ दी थी। संमत १६८० लीनी[1]।

१६ गोपाळदास।

२० जगनाथ। संमत १६७६ भाणल गाव ४ दिया। समत १६६६ छाडियो[2]।

१७ विजैराव लूणकरणरो[3]।

१८ जसवत।

१६ वीरदास।

२० तेजमाल।

१६ मोहणदास।

२० भारमल।

१६ वाघ।

२० दुरगो।

१६ करमचद।

आक १७–रावळ मालदे लूणकरणरो। लूणकरण पछै जेसळमेर पाट बैठो। वरस १० मास ७ दिन २० राज कियो। रावळ मालदे राडधड़ै रावतरै परणियो थो, नाव राणीबाई। तठा पछै रावळ मालदे वेगो हीज मुवो[4]।

---

1 कीरतसिंह, जोधपुर महाराजका चाकर। सम्वत् १६७४मे नेनेऊ गाव दिया था और सम्वत् १६७७मे जालोर परगनेके ओडवाडा और जोगाऊ गांव दिये गये थे, लेकिन सम्वत् १६८०मे वापिस ले लिये। 2 जगन्नाथने सम्वत् १६६६मे (जैसलमेर) छोडा और सम्वत् १६७६मे भाणलने इसे चार गाव दिये (वि० एक प्रतिमे भाणलके स्थान भोपाल लिखा है।) 3 विजयराव लूणकरणका बेटा। 4 रावल मालदेव लूणकरणका बेटा। लूणकरणके बाद जैसलमेरकी गद्दी पर बैठा। इसने १० वर्ष, ७ मास और २० दिन राज्य किया। रावल मालदेवने राडधरेके रावतके यहा विवाह किया था, जिसका नाम राणीबाई था। इस विवाहके बाद रावल मालदे जल्दी ही मर गया था।

## पीढी[1]

१ जेसळ ।
२ काल्हण ।
३ चाचगदे ।
४ तेजराव ।
५ जैतसी वडो ।
६ मूळराज ।
७ देवराज ।
८ केहर ।
९ लखमण ।
१० वैरसी ।
११ चाचो ।
१२ देवीदास ।
१३ जैतसी ।
१४ लूणकरण ।
१५ मालदे ।
१६ रावळ हरराज रा ।। सिवराजोतारो दोहोतो। पदमारै पेटरो । राव मालदेरी बेटी सजना परणाई थी[2] ।
१६ भानीदास पदमारै पेटरो। हरराजरो सगो भाई[3] ।
१७ गोपाळदास । समत १६-६३ चामू लिखमेली थी।
१८ रुघनाथ, थळ मे रहै[4] ।
१८ प्रथीराज, बीकानेर रहै ।
१६ नारणदास मालदेग्रोत[5] ।
१७ रामसिघ । समत १६७० नवसर गावा ५ सू पटै[6] ।
१८ किसनचद ।
१९ लालचद ।
१८ स्यामदास ।
१९ कुभो । १९ पीथो ।
१८ ग्रमरो । १८ वेणीदास । १८ सुजाण ।
१७ हरिसिघ नारणदासोत ।
१८ रामचद ।
१९ गरीबदास । १९ कान्ह ।
१६ पूरणमल मालदेग्रोत । गाव १२सू रिणमलसर पटै[7] ।
१७ माधोदास ।
१६ उदैसिघ मालदेग्रोत ।
१६ डूगरसी मालदेग्रोत । महियड मानै ईडर थकैनू मारियो । पछै सहसमल उण दावै महियड मानानू मारियो[8] ।

---

1 वशावली । 2 रावल हरराज शिवराजोतोका दोहिता, पद्माकी कोखसे उत्पन्न । राव मालदेवकी बेटी इसे ब्याही थी । 3 भानीदास पद्माकी कोखसे उत्पन्न, हरराजका सहोदर भाई । 4 रघुनाथ थल प्रदेशमे रहता है । 5 मालवदेका पुत्र नारायणदास । 6 रामसिंहको सम्वत् १६७०मे पाच गावोके साथ नवसर पट्टेमे । 7 मालदेवका बेटा पूर्णमल, जिसे १२ गावोके साथ रिणमलसर पट्टेमे । 8 मालदेवका बेटा डूगरसी, जिसे महियड्ड मानाने जब वह ईडर रहता था तब मार दिया । बादमे इस शत्रुताके बदलेमे सहसमलने मानाको मार दिया ।

१७ गोपाळदास ।

१८ · · · ।

१९ देवराज जेसळमेर ।

१७ सिंघ भानीदासरो[1] ।

१८ रावळ रामचंद । एक वार मनोहरदास पछै टीकै वैठो[2] ।

१९ सुदरदास देरावर[3] ।

१९ दळपत ।

१८ आसो । १८ उदैकरण ।

१९ खेतसी मालदेओत, निपट वडो रजपूत हुवो । राव जैतसीरो दोहीतरो । मोटा राजाजीरी वेटी रभावती परणाई हुती[4] ।

१७ ईसरदास । १७ पचाइण ।

१७ दयाळदास ।

१७ सिंघ । १७ वाघ ।

१७ स्यामदास ।

१७ सकतसिंघ ।

१७ वनराज ।

खेतसीरा वेटांरो परवार–

१७ दयाळदासनूं रावळ कलै मारियो, दूणपुररी राड[5] ।

१८ रावळ सवळसिंघ दयाळदासोत । समत १७०७ रावळ मनोहरदास मुवो, तरै पातसाह जेसळमेर दियो । समत १७१७ श्रावण वदि ९ काळ प्राप्त हुवो[6] ।

१७ रावळ अमरसिंघ, वीका कल्याणदासरो दोहीतरो[7] ।

१९ जसवत । १९ पदमसिंघ । १९ स्यामसिंघ ।

१९ रतनसी, करमसीयोतारो दोहीतरो[8] ।

१९ भावसिंघ, वीकारो दोहीतरो । मेवाड गयो थो उठै मुवो[9] ।

१९ महासिंघ, वीकारो दोहीतरो[10] ।

१९ राजसिंघ, कछवाहारो दोहीतरो[11] ।

---

1 भानीदासका पुत्र सिंह । 2 रावल रामचद्र मनोहरदासके वाद एक वार (थोडे समयके लिये) गद्दी पर वैठा । 3 सुन्दरदास देरावर गावमे । 4 मालदेका वेटा खेतसी, राव जैतसीका दोहिता वहुत वडा राजपूत हुआ । मोटा राजाजीकी वेटी रभावतीसे इसका विवाह हुआ था । 5 दयालदासको रावल कल्लाने दूणपुर (द्रोणपुर) की लडाईमे मारा । 6 रावल मनोहरदासके सम्वत् १७०७मे मरनेके वाद वादशाहने दयालदासके पुत्र रावल सवलसिंहको जैसलमेरका राज्य दिया । सवलसिंह सम्वत् १७१७की श्रावण कृष्ण ९को मरा । 7 रावल अमरसिंह वीका कल्याणदासका दोहिता । 8 रतनसी करमसीओतोका दोहिता । 9 भावसिंह वीकोका दोहिता । मेवाड चला गया था और वहो मर गया । 10 महासिंघ वीकोका दोहिता । 11 राजसिंह कछवाहोका दोहिता ।

## वात

रावळ भीम वरस १० टीको नीसरियो, तरै सारी मदार खेतसी ऊपर थी। पछै रावळ भीम मोटो हुवो, तरै खेतसीनूं धरती बारै काढियो[1]। तरै एक वार तो भाटी घणा साथै काढिया था[2], पछै फळोधी आया। पछै भीम जोर पतियो, पछै भाटी सारा उरा आया[3]। पछै भाटी खेतसी, सीहड, वीरमदे, राणो, भैरवदास औ राजा राय-सिघजीरै चाकर रह्या[4]। पछै महाराज रायसिघजी सोरठनूं मेलिया था, उठै वरस ४ रह्या[5]। पछै खेतसी सोरठमे हीज मुवो[6]।

१८ प्रागदास दयाळदासरो, रा॥ जगमाल साथै काम आयो[7]।

१८ विहारीदास दयाळदासोत।

१९ आसकरण। १९ कुसळसिघ। १९ जसकरण।

१८ वलू, वीकानेररी साढ लीवी थी, तद राव वीकैजी मारियो[8]।

१७ ईसरदास खेतसीयोत। समत १६५५ जोधपुर वास। गुढो पटै[9]।

१७ द्वारकादास।

१९ सूरजमल। १९ भागचद। १९ वलू।

१८ गोयददास।

१८ मोहणदास ईसरदासोत जेसळमेर[10]।

१८ नरहर ईसरदासोत।

१८ जगनाथ ईसरदासोत।

१८ उदैभाण ईसरदासोत। करमसोतै मारियो[11]।

१८ रुघनाथ ईसरदासोत।

१८ मुकद ईसरदासोत।

---

1 रावल भीम जब १० वर्षका था राज्यतिलक हो गया, तब राज्यका सभी दारोमदार खेतसी पर था। परन्तु जब रावल भीम बडा हुआ, तब खेतसीको उसने देशनिकाला दे दिया। 2 उस समय (एक बार तो) कई भाटियोको भी उसके साथ निकाल दिया था। 3 बादमे जब भीमका प्रताप बढ गया, तब सभी भाटी लौट आये। 4 लेकिन उनमेसे भाटी खेतसीके साथके सीहड, वीरमदे, राणा और भैरवदास ये महाराजा रायसिहजीके यहा चाकर रह गये। 5 महाराजा रायसिहजीने इन्हे सोरठमे भेज दिया, जहा वे ४ वर्ष रहे। 6 खेतसी सोरठमे ही मरा। 7 दयालदासका बेटा प्रयागदास राव जगमालके साथ काम आया। 8 वलूने बीकानेरकी एक साढ (ऊटनी) ले ली थी इस पर राव बीकाजीने उसे मार दिया। 9 खेतसीका बेटा ईशरदास, सम्वत् १६५५मे जोधपुर रहा और गुढा गाव जागीरमे पाया। 10 ईशरदासका बेटा मोहनदास जैसलमेरमे। 11 ईशरदासके बेटे उदयभान को करमसोतोने मारा।

१८ महासिंघ ईसरदासोत ।

१७ पंचाइण खेतसीरो[1] ।

१८ रामसिंघ ।

१९ दुरजो । १९ तेजमाल ।
१९ कान्ह ।

१८ सुजाणसिंघ ।

१८ अमरसिंघ । जेसळमेर पीपळै गाव छै[2] ।

१९ प्रथीराज ।

१७ सिंघ खेतसीयोत ।

१७ वाघ खेतसीयोत, रा ।। किसनसिंघजीरो साळो[3] । किसनसिंघजीरै वास । किसनसिंघजी साथै काम आयो ।

१८ गोवरधन, राव करमसेन मारियो[4] ।

१९ गिरधर जेसळमेर छै ।

१७ सामदास खेतसीयोत, मोटा राजारो दोहीतो । पाचाडी-भाहरो गाव ७ पटै[5] ।

१८ मानसिंघ, दीवाणरै चाकर[6] ।

१८ हरिसिंह, चादा महेवचारो चाकर ।

१८ गोपाळदास । लोलियांणै माराणो[7] ।

१७ सकतसिंघ खेतसीयोत । समत १६८५ खोखरो पटै हुतो । समत १६८६ चैराई पटै । समत १६८९ भेड गाव ५ सू पटै । समत १६९० भाटी अचळदास साथै काम आयो[8] ।

१८ केसरीसिंघ । समत १६९० गांव ५ सू भेड़ पटै[9] ।

१८ रतन । १८ महेसदास ।

१८ हरिसिंघ । समत १६९४ गाव ५ सू भेड पटै ।

१९ पीथो । १९ अखो ।
१९ नाहर ।
१९ फतैसिंघ ।
१९ आणंद । १९ चादो ।
१९ हिमतो । १९ सुदर ।

१८ देवीदास । संमत १६९९ मोखेरी पटै[10] ।

---

1 खेतसीका वेटा पचायन । 2 अमरसिंह जैसलमेरके पीपले गावमे रहता है । 3 खेतसीका वेटा वाघ, राठोड किशनसिंहका साला और किशनसिंहके यहा उसका रहवास । किशनसिंहके साथ काम आया । 4 गोवर्धन जिसे राव कर्मसेनने मारा । 5 खेतसीका वेटा श्यामदास जो मोटा राजाका दोहिता और जिसे पाचाडी-भाहरो आदि ७ गाव जागीरमे मिले हुए हैं । 6 मानसिंह महाराणा उदयपुरका चाकर । 7 गोपालदास लोलियाणा गावमे मारा गया । 8 खेतसीके वेटे सकतसिंहको सवत् १६८५मे खोखरा गाव, सम्वत् १६८६मे चैराई और सम्वत् १६८९मे पाच गावोंके साथ भेड गाव, पट्टेमे थे । सम्वत् १६९०मे भाटी अचलदासके साथ काम आ गया । 9 केसरीसिंहको सम्वत् १६९० पाच गावोंके साथ भेड जागीरमे । 10 देवीदासको सम्वत् १६९९मे मोखेरी गाव जागीरमे ।

१६ हरनाथ। १६ आईदान।
  १६ भींव।
१८ रुघनाथ।
१६ भोजो। १६ मुकुद।
  १६ सत्रसिघ।
१८ अजबो। १८ ऊहो।
  १८ सुजाणसिघ।
  १८ करमचद।
१७ धनराज खेतसीयोत।
  रावळ कलै मारियो[1]।
१८ वीरमदे। १८ जसवत।
१६ नेतसी मालदेओत।
  वीकानेरीरो वेटो, आक
  १६ खेतसीरो सागै भाई[2]।
१७ दुरगदास, रावळै वास।
  समत १६७५ जुट पटै[3]।
१८ जसवत, पूनासर पटै।
१६ हरिसिघ। १६ अजव-
  सिघ।
१८ करन।
१६ रामसिघ।
१६ सहसमल मालदेवोत,
  वीकानेरीरो वेटो। मोटा
  राजा इणनू   । राजा
  श्रीसूरजसिघजी पाखती
  भटियाणी इणरी वेटी
  परणिया हुता। रावळे
  वास थो। गाव १४ सू
  ओयसा पटै। समत १६-
  ५७ पछै देरावर ढीक-
  लीसू चढियो, तठै
  मारियो[4]। आक १६

सहसमलरा वेटा—
१७ वीठळदास। समत १६-
  ८० गाव ५ सू ओयसा
  पटै[5]।
१७ गोयंददास। १७ अचळ-
  दास।
१७ चादो। समत १६६२
  रिणमलसर पटै[6]।
१८ मनोहर।
१६ किसोरदास।
  १६ कल्याणदास।
  १६ कुभकरण।
१७ माधोदास। सहसमल
  साथै काम आयो।
१७ रामदास। समत १६७७
  खटोडो पटै[7]।

---

1 खेतसीके पुत्र धनराजको रावल कल्लेने मारा। 2 मालदेका वेटा नेतसी, वीकानेरीकी कोखसे उत्पन्न। ऊपर स १६ वाले खेतसीका सहोदर भाई। 3 दुर्गदास महाराजाके यहा चाकर। सम्वत् १६७५मे जुट गाव जागीरमे। 4 मालदेका पुत्र सहसमल, वीकानेरीकी कोखसे उत्पन्न। इसको मोटा राजाने । इसकी लडकी पार्वती भटियानीका राजा सूरजसिंहजीके साथ विवाह हुआ था। राजाजीकी चाकरीमे था और १४ गावोके साथ ओयसा पट्टेमे था। फिर सम्वत् १६५७मे ढीकलीसे देरावर पर चढ कर गया और वहा मारा गया। 5 विट्ठलदासको सम्वत् १६८०मे ५ गांवके साथ ओयसा पट्टे। 6 चादाको सम्वत् १६६२मे रिणमलसर गाव पट्टे। 7 रामदासको सम्वत् १६७७मे खटोडा गाव पट्टेमे।

१८ गोकुळदास ।

१९ सवळसिंघ । १९ रतन ।

१७ केसोदास सहसमलरो । समत १६५९ ओयसा पटै[1] ।

१८ रुघनाथ ओयसा पटै ।

१७ किसनसिंघ सळीवैं काम आयो । वीकानेररो चाकर[2] ।

१८ कल्याणदास, सीळवैं काम आयो ।

१८ प्रथीराज सीळवैं कांम आयो । केसरीसिंघरो चाकर[3] ।

१८ गिरधर ।

१६ रावळ हरराज मालदेवरो । रावळ मालदे पछै टीकै वैठो । वरस १६ दिन १८ राज जेसळमेर कियो[4] । राडधरै रावळ मालदे रावत पातारी वेटी परणी थी । पछै मालदे वेगोहीज मुओ । नै वा पीहर थी । पछै वा गजनीखान विहारीनूं दीवी थी जाळोररा धणीनूं[5] । तिण दावैं रावळ हरराज भाटी खेतसीनूं मेल राड़धरो मारायो[6], कोट पाडायो, नैं ईंटा जेसळमेर ले गया[7] । कोटड़ो जोधपुर वासै थो सु रावळ हरराज जेसळमेर वासै घातियो[8] । पोकरण अडाणी ली, राव चन्द्रसेण कन्हा[9] । कोटडा पगा रावळ मेघराजसूं वेढ हुई । मास ६ आमां-सामा अरवरिया, पछै वेटी परणाई[10] । गाव ७ कोटडारा लिया, कोटडो दियो[11] ।

१ ओलो । १ वणाडो ।
१ डोगरी । १ वीझोराई ।

---

1 केसोदास सहसमलका वेटा । सम्वत् १६५९मे ओयसा गाव पट्टेमे । 2 किसनसिंह वीकानेर राजाका चाकर, सोलवेकी लडाईमे काम आया । 3 केसरीसिंहका चाकर पृथ्वीराज सीलवेकी लडाईमे काम आया । 4 मालदेवका पुत्र रावल हरराज, मालदेवके वाद गद्दी पर वैठा और १६ वर्ष और १८ दिन जैसलमेरका राज्य किया । 5 रावल मालदेवने राडधरेके रावत पाताकी वेटीसे विवाह किया था । विवाहके वाद मालदेव जल्दी ही मर गया था और तव उसकी पत्नी पीहरमे ही थी । पीहर वालोने उसे जालोरके स्वामी विहारी गजनीखा पठानको देदी थी । 6 इस कुकृत्यके वदलेमे रावल हरराजने भाटी खेतसीको भेज कर राडधरेका विध्वंस कराया । 7 वहाका कोट गिरवा दिया और उनकी ईंटें जैसलमेर ले गया । 8 कोटडा गाव जोधपुर राज्यका था जिसे रावल हरराजने जैसलमेर राज्यमे मिलाया । 9 राव चद्रसेनके पाससे पोकरणको अपने यहा रेहन रखा । 10 कोटडाके लिये रावल मेघराजसे लडाई हुई । ६ मास तक परस्पर भिडते रहे । फिर अपनी लडकीका विवाह कर पीछा छुडाया । 11 कोटडा तो दिया ही, पर कोटडाके ये ७ गाव उसने और ले लिये ।

१ कोडियासर। १ भीवासर। १ खोडावळ।

रावळ हरराजरा बेटा—

१७ रावळ भीम। राव मालारो दोहीतरो[1]। समत १६१८ मिगसर वदि ११ रो जनम। समत १६७० जेसळरमेर काळ कियो। बाई सजनारै पेटरो[2]।

१७ रावळ कल्याणदास हरराजरो। रावळ भीम पछै टीकै वैठो। समत १६६८ रावळ कलारी बेटी राजा गजसिंघजीनू भीम परणाई[3]।

१७ भाखरसी हरराजरो। पातसाही चाकर फळोधी पटै

१७ सुरताण हरराजरो, पातासाही चाकर। बीडमाहै रा॥ गोपाळ सुरतांणोत काम आयो तिण वेढ काम आयो[4]।

१८ भगवानदास।

१७ अरजन, राव मालदेरो दोहीतरो।

आक १७ रावळ भीम रावळ हरराजरो। रावळ हरराज पछै टीकै बैठो। वरस ३५ मास ११ दिन १२ जेसळमेर राज कियो[5]। वडो ठाकुर हुवो। वडो दातार, वडो जूझार, वडो माणग, जवादि-जळहर[6]। पातसाह अकवर कनै घणा दिन चाकरी कीवी। उठै वडी-वडी अचडां कीवी[7]। रा॥ जगमाल प्रथीराजरानू कोटडारै टीकै रावळ भीम बैसाणियो थो[8]। पछै राणै भैंरवदास रतनसीरै जगमालनू मारनै कोटडो लियो[9]। पछै जगमालरा उदैसिंघ, चादौ रावळनू पुकारिया[10]

---

1,2 रावल भीम, राव मालाका दोहिता, सजनाबाईकी कोखसे उत्पन्न। इसका जन्म सम्वत् १६१८की मिगसर कृ० ११ को हुआ और सम्वत् १६७०मे मरा। 3 हरराजका बेटा रावल कल्याणदास जो रावल भीमके वाद गद्दी बैठा। सम्वत् १६६८मे रावल कल्ले (कल्याणदास)की बेटी भीमने राजा गजसिंहको व्याही थी। 4 हरराजका बेटा सुरताण, वादशाही चाकर। सुरताणका बेटा बीडकी लडाईमे काम आया, उसी लडाईमे यह भी काम आया। 5 रावल हरराजका बेटा रावल भीम, रावल हरराजके वाद गद्दी बैठा। इसने ३५ वर्ष, ११ मास और १२ दिन जैसलमेरका राज्य किया। 6 यह बडा नामी ठाकुर हुआ। बडा दानी, बडा जूझार, बडा रसिक और सुरभित जल-क्रीडाओ का शौकीन हुआ। 7 इसने वादशाह अकबरके पास बहुत दिन तक चाकरी की और वहा इसने बडे-बडे महत्वके काम (युद्ध) किये। 8 पृथ्वीराजके बेटे जगमालको भीमने ही कोटडेकी गद्दी बिठाया था। 9 रतनसीके बेटे राणा भैंरवदासने जगमालको मार करके कोटडा ले लिया। 10 पीछे जगमालके बेटे उदयसिंह और चादाने सहायताके लिये रावलसे पुकार की।

पछै रावळ सिव आयो, नै भैरवदास पण आय मिळियो[1]। तरै गाव मागिया। भैरवदास गाव दै नही। तरै रावळ भैरवदासनू मारियो। गांव लूणोईगी तळाई सिवथा कोस ४, हडवैसू कोस १॥ माणस ७सू काम आयो[2]। भैरवदासनू मारनै टीको राणै किसनै भैरवदासरा वेटानू दियो[3]। नै जेसो भैरवदासोत, भाण नारणोत हडवारो धणी, भगवान हरराजोत भालाही वाळो वाहिर नीसरिया[4]। इणे घणा विगाड किया[5]। रावळरै महेवै जाय रह्या[6]। वडो विगाड कियो। पछै वरसे ७ जेसानू कोटडारो आधो दे पाछो आणियो[7]।

## वात

रावळ भीम जेसळमेर पाट छै। ऊहड गोपाळदासरै वेटै उरजन, भोपत, मांडण, पोकरणरा गाव घणा मारनै वित ले नीसरिया[8]। पोकरणरा थाणादार भा॥ कलो जैतमलोत, भा॥ पतो सुरताणोत, भा॥ नादो रायचदरो, ग्रै चढिया[9]। वाळसीसर आया। वासै रातीवाहैरै मिस ऊहडै जायनै साथ कोढणाथी तेडायो[10], सु राते आयनै भेळो हुवो[11]। इणा सवारै वित टोळनै खडिया[12]। नै पोकरणरो साथ आडो आयो। वेढ हुई[13]। तठै इतरो साथ भाटियारो काम आयो[14]—

एको कलो जैमलरो। एक नेतो जैमलरो।

---

1 रावल तब शिव गावको गया और वही भैरवदास भी आ मिला। 2 लूणोई गावकी तलाई, जो शिव गावमे ४ कोस और हडवे गावसे १॥ कोस पर है, सात आदमियोके साथ (भैरवदास) काम आया। 3 पर भैरवदासको मारनेके वाद टीका भैरवदासके वेटे राणा किसनाको ही दिया गया। 4 विद्रोही होकर निकल गये। 5 इन्होने लूट-खसोट आदिसे वहुत नुकसान किया। 6 मेहवे जाकर वहाके रावलके यहा रह गये। 7 सात वर्षोके वाद जैसाको कोटडेका आधा भाग देकर वापिस वुला लिया। 8 पोकरणके कई गावोमे लूट-खसोट करके वहाकी मवेशी लेकर निकल गये। 9 ये लोग पीछे चढे। 10 पीछेसे रात्र्याक्रमणके मिस ऊहडोंने कोढणा जाकर आदमियोको वुला लाये। 11 रातमे सव साथ इकट्ठा हो गया। 12 ये दूसरे दिन प्रात मवेशी हाक कर रवाना हो गये। 13 तव पोकरण वालोने आडे आकर मार्ग रोक लिया और लडाई हुई। 14 वहा पर भाटियोका इतना साथ काम आया।

एक सिवो कैलवेचो अजारो। मेघो गागावत ।
भा० नादो रायचदरो । केल्हण घावै ऊवरियो[1] ।
केल्हण । भाटी प्रतापसिघ सुरताणोत
पेथड । घावै ऊगरियो[2] ।
मोकल सोभ्रमरो ।

पछै रावळ भीम भा।। गोयददासनू कह्यो–"गोपाळदास क्यु माहरा कह्या माहे न छै। थे गोपाळदास ऊहडसू समझ ल्यो[3] ।" पछै रावळ भीम सारो जेसळमेररो साथ देनै लोहडा-भाई[4] कल्याणमलनू कोढणा ऊपर मेलियो[5], नै कोढणो मारियो[6] । तद ऊहड गोपाळदासरै हवालै गढ जोधपुररी कूची छै, राते वाहाऊ आयो[7] । गोपाळदास गढरी प्रोळ जडी उघडायनै[8], गागाहे कटक ऊतरियो थो सु दिन-ऊगतै सामो आपरो साथ ले धोळै-दिन आय वाजियो[9] । ऊहड गोपाळ-दास काम आयो । भाटियारो साथ काम आयो[10]—

१ कोटडियो सुरताण ।
१ भा ।। गागो वीरमदेओत, रावळ जैतसीरो पोतरो, जैराडतरो धणी[11] ।

ऊहड गोपाळदास साथै इतरो[12] साथ काम आयो—
१५ ऊहड– १ करमसी। १ कवरसी। १ महेस। १ गोयद[13]।
७ चहुवाण– १ सकर सिघावत । १ वीसो[14] ।
६ देवडा– १ गोपो । १ गोयद[15] ।

---

1 आहत केल्हण वच गया। 2 सुरताणका वेटा भाटी प्रतापसिंह भी आहत हो करके वच गया। 3 गोपालदास हमारी आज्ञामे नही है। तुम गोपालदास ऊहडसे निपट लो। 4 छोटा भाई। 5 आक्रमण करनेको भेजा। 6 और कोढणा पर अधिकार कर लिया। 7 उन दिनो जोधपुर दुर्गकी चावी ऊहड गोपालदासके सुपुर्द थी, (अत वह जोधपुरमे था) रातको दूत आया (और उसको इस आक्रमणकी सूचना दी)। 8 गोपालदासने दुर्गका वद द्वार खुलवा कर। 9 गागाहे गावमे (जहा भाटियोका) कटक ठहरा हुआ था, सवेरा होते ही अपने आदमियोके साथ वहा आया और धौले दिन (दिन भर) लडा। 10 भाटि-योका इतना साथ काम आया। 11 जैराइत गावका स्वामी भाटी गागा जो वीरमदेका वेटा और रावल जैतसीका पोता था। 12 इतना। 13 करमसी, कुवरसी, महेश और गोयद आदि पद्रह ऊहड। 14 सिंहका वेटा शकर और वीसा आदि ७ चौहान। 15 गोपा और गोयद आदि ६ देवडे।

| | |
|---|---|
| २ रादा । | २ बाभण[1] । |
| २ ईदा । | १ मागळियो |

भाखडी रावळ भीमरी आसियो पीर कहै[2]—

भीम भला भलो रावळ रायहरा दन खाग[3] दीपियो[4] ।
ऊपर अवरावा[5] नव धारणो परिया आपरा ॥
सेने साखती साजत सीधरा[6] नित गहमह नरा ।
हूकळ-हैमरा[7] धूसण-परधरा[8] गाहण-गिरवरा ॥ १
गिरवरा गाह सगाह गढपत वाह दे खग-वाह[9] ।
खत्र-राह-जाणग[10] राह खळ-दळ[11] दाह-दुवाह[12] ॥
पडिगाह[13] थाट-अथाग[14] पोरस ग्राह जस गुण ग्राह ।
वह माह निय वप वडा विरदा वीरवै वेराह ॥ २
कळ[15] चाळ[16] नित छात्राळ[17] कदळ[18] भीच[19] काळ भुजाळ[20] ।
सुडाळ[21] दरगह सावता वेगाळ[22] खेंग[23] वडाळ ।
किरमाळ[24] वळ रिण ताळ केता जीपणा-जमजाळ[25] ।
॥ ३
खग-झाटमु वह थाट-खेसण[26] वाट-दह[27] अवियाट[28] ।
भिड घाट[29] घय रिम-घडा-भाजण[30] दुयण वाळण दाट[31]॥
रिपनाट[32]परमळ हाट रावळ धरण परघर घाट ।
पित-पाट-राखण[33] पाटपत[34] नृप काट[35] हूत निराट ॥ ४

---

1 दो ब्राह्मण। 2 आसिया पीराका कहा हुआ रावल भीमके सबधका भाखडी-छंद। 3 खड्ग। 4 शोभित हुआ। 5 अन्य राजाओंके। 6 हाथियोंको। 7 घोडोंकी हिनहिनाहट। 8 शत्रुओं की धराका नाश करने वाला। 9 खड्ग चलाने वाला। 10 क्षत्रियोचित मार्ग (कर्त्तव्य)को जानने वाला। 11 शत्रु दलके लिये राहु रूप। 12 वीरोंका सहार करने वाला (दुवाह=घोडा)। 13,14 अपार सेनाका विध्वस करने वाला। 15 युद्ध (असुर, शत्रु)। 16 युद्ध। 17 राजा। 18 युद्ध। 19 शूर-वीर 20 योद्धा। 21 हाथी। 22 घोडा। 23 घोडा। 24 कृपाण, तलवार। 25 यम-राजको जीतने वाला। 26 सेनाओंको भगाने वाला। 27 नाश, नाश करने वाला। 28 वीर। 29 सेना। 30 शत्रुओंकी सेनाओंका नाश करने वाला। 31 शत्रुओंका सहार करने वाला। 32 शत्रुके आगे नही झुकने वाला। 33 पिताके राज्य को रक्षा करने वाला। 34 राजा। 35 क्रोध।

सुरताणसू दीवाण सचित ताण सर[1] तुडताण[2] ।
दे पाण जमदढ[3] पाण दाखव राण जिम रढराण[4] ॥
आराण[5] कज सझ डाण ऊभो मछर[6] अवळीमाण[7] ।
वाखाण प्रथी प्रमाण वाधै[8] भाण जिम कुळ-भाण ॥ ५
कधार-साह जियार[9] कोपिय कीध मुख हलकार ।
तिण वार धर अहिकार[10] निय तन सझै भूपत सार[11] ॥
भुज भार भर जणियार[12] भाटी खार-खँध[13] वध खार[14] ।
हर हार हुव दरबार हूता वळै थाट विडार ॥ ६
दळपत्त छत्रपत मालदे, गढपत्त गोत्र-गवाळ[15] ।
सतदत्त लूणकरन्न समवड[16] वडै विरद विसाळ ।
जैतसी देवीदास जग-पुड[17] सत्रा-चापण-सीव[18] ।
उज्जळै सोही कीध उज्जळ भूप परिया[19] भीव ॥ ७

आक १७ रावळ कल्याणदास हरराजरो[20], रावळ भीव मुवा पछै[21] पाट बैठो । वरस १४ मास ६ दिन १५ जेसळमेर राज कियो । सुसतो सो ठाकुर हुवो । रजपूता, परज-लोगसू भली पर पाळी[22] । डील निपट जबरो हुतो[23] । पाट बैठा पछै एक बार अजमेर पातसाहरी हजूर गयो हुतो, बीजो गढ ऊपर बैठो रह्यो[24] । नै आप जीवता दोडण-धावणरी सारी मदार कवर मनोहरदास ऊपर हुई[25] । एक वार रावळ भीम जीवता कोढणा ऊपर कल्याणमलनू मेलियो हुतो[26] सु ऊहड गोपाळदासनू मारियो ।

---

1 बाण । 2 शीघ्र । 3 कटार । 4 हठी, प्रतिज्ञा-पालनके लिये मरने वाला वीर । 5 युद्ध । 6 चौहान क्षत्री (मत्सर, अभिमान) । 7 अभिमानी । 8 बढता है । 9 जिस समय । 10 अधिकार (अभिमान) । 11 तलवार । 12 जिस समय । 13 क्रोधी । 14 क्रोध । 15 अपने वशकी रक्षा करने वाला । 16 समान । 17 पृथ्वी-तल पर । 18 शत्रुओ (के देशो)की सीमाओ पर अधिकार करने वाला । 19 (१) श्रेष्ठ, (२) पूर्वज । 20 रावल कल्याणदास हरराजका पुत्र । 21 मरनेके बाद । 22 ढीला ठाकुर हुआ किन्तु राजपूतो और प्रजाजनो से अच्छी प्रीति पाली । 23 बहुत मोटे शरीरका था । 24 इसके सिवाय गढमे ही बैठा रहा । 25 अपने जीवन-कालमे ( युद्धादिमे ) दौडने-भागनेका सारा आधार कुवर मनोहरदास पर रहा । 26 भेजा था ।

आंक १८ रावळ मनोहरदास कल्यांणदासोत। रावळ कल्याण काळ किया पछै टीकै वैठो[1]। वरस २२ जेसळमेर राज कियो। वडो आखाडसिध, अभगनाथ[2]। कामरो माणस[3]। रावळ मनोहरदास घणी वेढ जीती। समत १७०६ रा मिगसरमे काळ कियो[4]। वेटो को न हुनो[5]। पछै भाटिया, वीजे, राजलोग, भाटी रामचद सिघोतनू टीको दियो[6]।

मनोहरदासरा प्रवाडा[7]—

एक वेढ कवरपदे वलोचांसू की, तठै वलोच अलीखा मारियो[8]। खाडाळरा गांव १० मारनै वित लीनो[9]। अलीखा मारियो, तठै रावळरो साथ काम आयो, घायल हुवा[10]—

१ भाटी रायसिंघ भीमावत, सावतसी[11]।
१ सीहड धनराज उधरणोत[12]।
१ भा॥ वाकीदास जमावत रूपसीयोत[13]।
१ सोढो जसो।
१ मागो खडेर। डणरो गाव देवो, टेहिया कनै। जसोल ऊपर आयो, तद जसोलिया घणा मारिया[14]।

पोकरण राठोड जगमाल मालावतरा धरती वारै नीसरिया था[15], सु मेहवै जाय रह्या, पोकरणरो काळमुखो मारियो। तरै रावळ मनोहरदास जेसळमेरसू चढियो। सु जेसळमेररो चढियो जेसळमेरसू कोस

---

1 रावल कल्याणके मरने पर गद्दी वैठा। 2 वडा रण-विशारद और निर्भय व्यक्ति था। 3 उपकारी मनुष्य। 4 सम्वत् १७०६के मिगसरमे मरा। 5 वेटा कोई नहीं था। 6 फिर भाटियो और दूसरे लोगो तथा रानियो आदिने मिल कर सिंहके पुत्र भाटी रामचद्रको टीका दिया। 7 मनोहरदासके महत्वपूर्ण युद्धोका वर्णन। 8 कुवर-पदमे इसने एक लडाई वलोचोंसे की, जिसमे वलोच अलीखाको मारा। 9 खाडाल प्रदेशके १० गावोको लूट कर उनकी मवेशी लेली। 10 अलीखाको मारा उस लडाईमे रावलका इतना साथ मारा गया या घायल हुआ। 11 भाटी भीमाका वेटा रायसिंह और सावतसी। 12 उधरणका वेटा सीहड धनराज। 13 भाटी जसाका पुत्र वाकीदास रूपसीओत। 14 मागा खडेर, इसका गाव टेहियाके पासका देवा। यह जसोल पर चढ कर आया, तव कई जसोलियोंको इसने मार दिया। 15 जगमाल मालावतके वशज पोकरणके राठोड अपनी भूमिको छोड कर वाहिर निकल गये थे।

४० सोग्राऊ जेसळमेर मेहवारी गडासिध ग्रापडिया[1]। फळसूडसू कोस ६, कुसमळाथी कोस २॥, तठै वेढ हुई[2]। पोकरणरा भागा[3]। ग्रादमी १४० मारिया। इतरा सिरदार पोकरणारा माराणा[4]—

१ रा॥ सुदरदास देवराजरो।

१ रा॥ मुथरो राणारो।

१ रा॥ जगनाथ विजारो।

मालो देवराजरो, मेघो राणारो, मेघो महेसरो, भा॥ ग्रचळो सुरताणरो, ग्रै ग्राय पगै लागा[5], पछै पाछा ग्राणिया[6]। समत १६६४रा पोस सुद ८ वलोच मुगलखान इसमायलखारो वेटो विकूपुररै गाव भारमलसरमे मारियो[7]। तद रावळरा इतरा चाकर काम ग्राया[8]—

१ सीहड देदो धनराजरो। धनराज, उधरण, हीगोळ।

१ रा॥ देईदास भानीदासोत। राखारै वसतौ[9]।

रावळ रामचद सिघरो। रावळ मनोहरदास कलावत समत १७०६ काळ कियो[10]। वेटो मनोहरदासरै न थो। तरै राजलोगसू साजस करनै[11], के भाटी पण भीर करनै एक वार टीको लियो[12]। सु सीहड रुघनाथ भाणोत तिण वेळा हाजर न हुतो[13]। सु जेसळमेर सीहडा माथै वडी मदार[14], सु इण मनमे खुणस राखी[15]। तिण समै भाटी सवळसिघ दयाळदासोत, दयाळदास खेतसीरो, रा॥ रूपसिघ भारमलोतरो चाकर थो, रु० ६०००) तथा १००००) रो चाकर हुतो[16]।

---

1 जैसलमेर और मेहवेकी सीमाके निकट, जैसलमेरसे ४० कोस सोग्राऊमे उनको पकड लिया। 2 फलसूडसे ६ कोस और कुसमलासे २॥ कोस पर लडाई हुई। 3 पोकरण वाले भाग गये। 4 पोकरण वालोके इतने सरदार मारे गये। 5,6 ये ग्राकर पांवो पड गये, तब इनको पीछा बुला लिया। 7 सम्वत् १६६४की पौष शुक्ल ८को इसमायलखाके वेटे मुगलखानको विकूपुरके गाव भारमलसरमे मार दिया। 8 उस समय रावलके इतने चाकर काम ग्राये। 9 जो राखाके यहाँ रहता था। 10 कल्लाका पुत्र रावल मनोहरदास सवत् १७०६मे मर गया। 11 तब रानियोसे मिल करके (षड्यन्त्र करके)। 12 और कई भाटियोको अपनी ओर करके एक वार तो गद्दी बैठ ही गया। 13 उस समय भाणाका वेटा सीहड रघुनाथ वहा हाजिर नही था। 14 क्योकि जैसलमेरकी सारी दारमदार सीहडो पर है। 15 इसलिये इसने अपने मनमे इस वातकी खुनस रखी। 16 खेतसीका वेटा दयालदास और दयालदासका वेटा सवलसिह, राव रूपसिह भारमलोतके यहा नौ-दस हजारके पट्टेकी एवजीमे चाकर था।

तिण दिन राव रूपसिघनू पातसाह साहजिहां जोर मया करता[1]। पछै रूपसिघ पातसाहजीसू अरज सबळसिघरी कीवी[2]। सबळसिघनू पातसाहरै पावै लगायो[3]। पछै पातसाहजी वात कबूल कीवी[4]। भाटी रामसिंघ पचाइणोत और ही भाटी खेतसीरा पोतरा[5] कितराहेक[6] सबळसिघ कनै[7] आया। पछै तिण समै[8] महाराजा श्री जसवतसिघजी पातसाहसू अरज कराई–"पोकरण इतरा दिन किणही सबब भाटिया हेठै रही, नै छै माहरी[9]। सु हजरत हुकम करो तो म्हे उरी ल्या[10]।" तरै पातसाहजी फुरमान कर दियो। श्री महाराजाजी समत् १७०६रा वैसाख सुद ३ नै जहानाबादसू देसमे पधारिया[11] नै जेठमे जोधपुर पधारिया। जोधपुरसू रा॥ सादूळ गोपाळदासोत, प॥ हरीदासनू फुरमान देनै जेसळमेर मेलिया[12]। तरै रामचद पाच भाटी भेळा करनै इणानू जबाब दियो[13]–"पोकरण पाच भाटी मुवा आवसी[14]।" तरै जोधपुर कटकरी तयारी हुई, नै उठै पातसाहजीनू ही खबर हुई–"जु रामचद हुकम मानियो नही[15]।" तिण समै सबळसिघ रामसिघ माथै, पेसकसीरा पईसा ठैराय चाकरी कबूल कीवी नै जेसळमेररो फुरमान करायो[16]। भाटी रुघनाथ, और ही भाटी कितराहेक सारा रामचदसू फिरिया[17]। सगळारा कागळ छाना सबळसिघनू आया।

---

1 खूब कृपा करते थे। 2 इसलिये सबलसिंहके लिये रूपसिंहने बादशाहसे अर्ज की। 3 सबलसिंहको बादशाहके पांवो लगवाया। 4 तब सबलसिंहको जैसलमेर दे देनेकी बात बादशाहने कबूल की। 5 भाटी खेतसीके पोते। 6 कितनेक। 7 पास। 8 उस समय। 9 पोकरण किसी कारणवश इतने दिन तक भाटियोंके अधिकारमें रहा, परन्तु यह है हमारा। 10 सो अब यदि हजरत आज्ञा करदें तो हम उस पर अधिकार करलें। 11 महाराजा जसवतसिंहजी जहानाबादसे संवत् १७०६ की वैसाख सुदि ३ को मारवाड़में आये। 12 जोधपुरसे महाराजाने राव सादूल गोपालदासोत और पंचोली हरिदासको बादशाही फरमान देकर जैसलमेर भेजा। 13/14 तब रामचन्द्रने पांच भाटियोंको इकट्ठा करके इनको उत्तर दिया कि पोकरण पांच भाटियोंके मरनेके बाद हाथ आयगा। 15 तब जोधपुरसे सेनाकी तैयारी हुई और उधर बादशाहको भी यह खबर मिल गई कि रामचन्द्रने हुक्म नहीं माना है। 16 उस समय सबलसिंहने जैसलमेरकी आमद पेशकशी देनेकी रकम निश्चित कर और चाकरी देना मंजूर कर जैसलमेर पर अपने अधिकारका फरमान रामसिंहके (रामचन्द्रके) ऊपर लिखवा लिया। 17 बदल गये।

कह्यो–"वेगा आवो, म्हे थाहरा चाकर छा[1] ।" पछै पातसाहजी जेसळमेररो टीको देनै सबळसिघनू विदा कियो[2] । साथ खरचरी मदत रा।। रूपसिघ करी[3] । पछै सबळसिघ जोधपुर आयो । महाराजाजी घोडा-सिरपाव, खरच दियो[4] । सबळसिघ पछै फळोदी आयो । अठै साथ चाकर राखिया[5] । फळोधीरी कुडळ माहै भोजासर तळाव ऊपर डेरो छै[6] । आदमी ७०० तथा ८०० चढिया-पाळा सबळसिघ साथै छै[7] । नै जेसळमेररो साथ सेखासर परै जवणारी तळाई, धारारी तळाई छै, तठै डेरो छै[8] । माणस १५०० तथा १७०० छै । माहै सिरदार भाटी सीहो गोयदोत छै । और पोकरणरो साथ केल्हण सारा साथै छै । तिणा ऊपरा[9] रावळ सबळसिघ चलायनै गयो, तरै इतरा सिरदार सबळसिघ कनै छै[10]–

१ भा।। केसरीसिघ सकतसिघोत ।
१ भा।। द्वारकादास ईसरदासोत ।
१ भा।। हरिसिघ सकतसिघोत ।
३ भा।। मोहणदास, जगनाथ, उदैभाण ईसरदासोत ।
१ भा।। विहारीदास दयाळदासोत ।
१ भा।। अचळदास गोयददासोत ।
१ भा।। गोयददास ईसरदासोत ।
१ भा।। गिरधर गोवरधनोत ।
१ भा।। मोहणदास किसनदासोत ।
१ भा।। राजसिघ भगवानदासोत ।
१ भा।। रामचद गोपाळदासोत ।

---

1 सबके गुप्त पत्र सबलसिहको मिले कि 'जल्दी आ जाओ, हम तुम्हारे चाकर हैं । 2 बादशाहने जैसलमेरका टीका देकर सबलसिहको रवाना किया । 3 राव रूपसिहने साथके आदमियोके खर्चेकी मदद दी । 4 महाराजा जसवतसिहजीने घोडा, सिरोपाव और खर्चा दिया । 5 यहा इसने अपने आदमी और चाकरोका सगठन किया । 6 फलोदीके कु डल गावमे भोजासर तालाव पर डेरा लगा रखा है । 7 सातसौ आठसौ सवार और पैदल आदमी सबलसिहके साथमे है । 8 और जैसलमेरकी सेना सेखासर गावके परे जवरणा और धाराकी तलाइयो पर डेरा डाले हुए है । 9 उनके ऊपर । 10 उस समय सबलसिहके पास इतने सरदार हैं ।

१ रा॥ हरिसिंघ भीमसिंघोत ।

जेसळमेररा साथमे इतराहेक नावजाद सिरदार छै[1] ।

१ राव जैसिंघ मोहणदासोत ।

१ भा॥ सीहो गोयदोत ।

२ भा॥ सामदास सावळदास गोपाळदासोत सिरडिया।

१ भा॥ रुघनाथ ईसरदासोत ।

१ भा॥ दळपत सूरसिंघोत ।

१ भा॥ किसन वळुग्रोत ।

पछै धोळै-दिन वेढ हुई । रावळ सबळसिंघ वेढ जीती[2] । जेसळमेररो साथ भागो, तठै साथ कांम आयो[3] ।

विकूपुररो साथ इतरो काम आयो[4] –

२ भाटी नेतावत–

१ जैमल रासावत ।

१ रा॥ जैतसी भाणोत।

४ सोळकी–

१ जगो।

१ देदो ।

१ कमो।

१ ऊदो।

२ सिंघराव–

१ मनोहर।

१ देदो।

२ जैतुग[5]–

१ हरदास। १ जगमाल ।

१ भुणकमळ–

हाथी अजुरो[6] ।

१ खालत वीदो।

१ भा॥ खगार नरसिंघरो सेखासरियो[7] ।

१ पाहु मेहाजळ ।

पोकरणरा साथ माहै इतरा काम आया[8] –

१ एक धनराज नेतावत ।

१ भाटी भोपत रायसिंघोत ।

१ रा॥ सिरग डूगरसियोत ।

१ राहड वीदो।

---

1 जैसलमेरकी सेनामे इतने प्रसिद्ध सरदार हैं। 2 फिर दिन-धौले लडाई हुई। रावल सबलसिंहकी युद्धमे जीत हुई। 3 जैसलमेरकी सेना भाग गई और उसके ये आदमी काम आये। 4 विकूंपुरका इतना साथ काम आया। 5 जयतुग शाखाका भाटी। 6 भुणकमल शाखाका अजूका बेटा हाथी। 7 सेखासर वाला नरसिंहका बेटा भाटी खगार। 8 पोकरण वालोंके इतने काम आये।

१ रावळ मालदे।
२ खेतसी।
३ दयाळदास।
४ सबळसिह जेसळमेर घेरियो[1]।
५ अमरसिंघ।
६ जसवतसिंघ
७ जगतसिंघ कवरपदै मुवो। वुधसिंघ राज कियो[2]।
८ अखैसिंघ।
९ मूळराज, जेसळमेर पाट[3]।

रावळ जसवतसिंघ अमरसिघोत। कवर जगतसिंघ जसवतसिघोत कवरपदे थकाहीज आपरै हाथ कटारी पेट मार मुवो[4]।

रावळ वुधसिघ जगतसिघरो पाट वैठो। पछै वुधसिंघनै कहै छै सीतळा नोसरी थी, तिणमे विस हुवो[5]। तठा पछै रावळ तेजसिंघ जसवतसिंघरो पाट वैठो। तिण ऊपर भाटी हरीसिंघ अमरसिंघोत सिंधसू आयनै रावळ अखैराजरै कहै तेजसिंघनू चूक कर मारियो[6]। रावळ अखैसिंघ उण वगत नीसर गयो[7]। नै तेजसिंघ घडी ४ जीवतै थकै आपरै वेटै सवाईसिघनू टीकै वैसाणियो[8]। ताहराँ अखैराज फोज करनै आयो[9]। उमराव, कामदार, अखैसिंघसू राजी था[10], नै हिसावमे अखैसिघनै ठोड आवै[11]। जो ओ[12] जगतसिंघरो वेटो नै वुधसिंघरो छोटो भाई, तिणसू जेसळमेर अखैसिघ पायो[13]। वडो परतापीक रावळ हुवो[14]। वरस ४० राज कियो।

रावळ अखैसिंघ जगतसिंघोतरा इतरा वेटा नै वेटी हुई[15]–

---

1 सवलसिंहने जैसलमेरका घेरा डाला। 2 जगतसिंह कुमारपदमे मर गया तव उसके वेटे वुधसिंहने राज्य किया। 3 मूलराज जैसलमेरकी गद्दी पर। 4 जसवतसिंहका वेटा कुवर जगतसिंह अपने कुमारपदमें ही अपने ही हाथसे पेटमे कटारी मार कर मर गया। 5 कहा जाता है कि वुधसिंहको शीतला निकल गई थी और उसी वीमारीमे उसको (उसकी दादी द्वारा) विष दे दिया गया। 6 जिस पर भाटी हरिसिंहजी अमरसिंहोतने सिंधसे आकर, रावल अखैराजके कहनेसे तेजसिंहको धोखेसे मार दिया। 7 रावल अखैसिह उस समय निकल कर भाग गया था। 8 लेकिन तेजसिंहने अपनी मृत्युमे चार घडी पूर्व अपने जीते जी अपने वेटे सवाईसिंहको गद्दी पर वैठा दिया। 9 तव अखैराज सेना लेकर आया। 10 उमराव और कामदार आदि अखैसिहमे प्रसन्न थे। 11 और हिसावमे भी यह पदाधिकार अखैसिंहको ही प्राप्त होना चाहिये। 12 यह। 13 इसलिये जैसलमेर अखैसिंहको मिला। 14 वडा प्रतापी रावल हुआ। 15 रावल अखैसिंह जगतसिंहोतके इतने वेटे और इतनी वेटिया हुई।

रावळ मूळराज, जेसळमेर पाट ।

१ भाटी रतनसिंघ मूळराजरो सगो भाई, सोढारो दोहीतरो[1] ।

१ भाटी पदमसिंघ, करमसोतारो दोहीतरो[2] ।

बेटी ३ तीन हुई, तिणारा नाम[3]–

१ चद्रकुवर, महाराजाधिराज महाराजा श्री गजसिंघजी नै परणाया[4] ।

१ विनैकुवर महाराजकवार श्री राजसिंघजी नै परणाया[5] । श्रै दोय बेटी चहुवाणारी दोहीती, सगी वैहना । बीकानेर परणाई[6] ।

१ विजैकुवर, महाराजा कवार श्री फतैसिघजी विजैसिंघजीरै कवरनै परणाया । सु दखणिया नै रामसिंघ श्रभैसिंघोत मारवाड फोज ले श्राया । नागोर जोधपुर घेरो हुवो । तिण समै माहाराज श्री विजैसिंघजीरो मोहल सेखावत नै कवर जेसळमेररै गढमे रह्या[7] ।

पछै फोज ऊठी, ताहरा फतैसिंघजीनै परणाया । विजैकवर करमसोतारी दोहीती । पदमसिंघजीरी सगी वैहन[8] ।

राव केल्हण पूगळ, विकूपुर, बरसलपुर, मोटासर, हापासर, सिगळी[9] श्रा धरती भोगवतो । पछै राव सेखो हुवो, तिणरै पेट धरती इण भात वटाणी[10]–

---

1 भाटी रतनसिंह, यह मूलराजका सहोदर भाई श्रौर सोढोका दोहिता । 2 भाटी पद्मसिंह, करमसोतोका दोहिता । 3 बेटियें ३ हुई, उनके नाम ये है । 4 चन्द्रकुँवरि, जो बीकानेरके महाराजा गजसिंहजीको व्याही गई । 5 विनयकुवरि, जो बीकानेरके महाराजकुवर राजसिंहको व्याही । 6 बीकानेरको व्याही गई दोनो ये सगी वहिनें श्रौर चौहानोकी दोहितियें है । 7 विजयकुवरि, महाराजा विजयसिंहजीके कुवर महाराजकुमार फतहसिंहजी को व्याही गई । उस समय श्रभयसिंहका बेटा रामसिंह श्रौर दक्षिण वाले सेना लेकर मारवाडमे श्रा गये श्रौर नागोर श्रौर जोधपुरका घेरा डाल दिया । तब महाराजा विजयसिंहजीकी शेखावत राणी श्रौर कुवर जैसलमेरके गढमे रहे । 8 जब फोज उठी तब फतहसिंहजीका विवाह हुश्रा । विजयकुवरि, पद्मसिंहजीकी सगी वहिन श्रौर करमसोतोकी दोहिती । 9 सब । 10 पीछे राव शेखा हुश्रा, उसके वशजोंमे इस प्रकार देश वँट गया ।

गाव ३६० पूगळ वासै लागता[1] ।

१ हैसो पूगळ वांसै, गांव १५०[2] ।

१ हैसो विकूपुर, गाव ७५ ।

१ हैसो वरसलपुर, गाव ८४ ।

१ हैसो किसनावत भाटियांनू, गाव १४० हापासर वासै[3] ।

आ ठोड पाहुवेरो कहावै[4] । कदीम तो जेसळमेर वासै आ ठोड हुती[5] । पछै वीकानेररा धणियां जोरीदावै महाराजाजी श्री सूरसिघजी दवायनै हापासर वीकानेर वांसै घातियो[6] । हापासर वीकानेरसू कोस १२ । भाटी किसनावत वीकानेररा चाकर हुवा[7] । पैहली जेसळमेररी सीव डीवजाळ ताई हुती[8] । तिका डीवजाळ राणैहरथा कोस १२ महाजन नजीक[9] ।

किसनावतारै गावारी विगत[10]—

| | | |
|---|---|---|
| १ हापासर । | १ सूरासर । | १ चूहड़सर । |
| १ मोटासर । | १ वडेरण । | १ मोरियावाळो । |
| १ खारवारो । | १ लालावर । | १ लाकडवाळो । |
| १ राणैहर । | १ पीठवाळो । | १ वंध । |
| १ रायमलवाळो । | १ मोटेळाई । | १ जगदेवाळो । |
| १ वीभळवाळी । | १ नगराजसर । | १ भडण । |
| १ धवळासर । | १ लाखासर । | १ खोखराणो । |
| १ आकेवळो । | १ अखासर । | १ भाचाहर । |
| १ राजासर । | १ देदाहर । | १ कळसकी । |

1 पहिले पूगलके पीछे ३६० गाव थे, (जिनके चार भाग किये गये) । 2 एक भाग पूगलका जिसके पीछे १५० गाव । 3 हापासरके १४० गावोंका एक हिस्सा किसनावत भाटियोका । (गावोकी सख्यायें ठीक नहीं प्रतीत होती । ३६० गावोको १५०, ७५, ८४ और १४०—इन चार भागोमे वांटनेसे योग ४४९ आता है) । 4 (हापासरका) यह प्रदेश पाहुवेरो कहलाता है । 5 शुरूमे तो यह जगह जैसलमेरके अधिकारमे थी । 6 परन्तु पीछे वीकानेरके स्वामी महाराजा सूरसिंहजीने जवरदस्ती दवा कर हापासरको वीकानेरके अधिकारमे ले लिया । 7 किसनावत भाटी वीकानेरके चाकर हो गये । 8 पहले जैसलमेरकी सीमा डीवजाल गाव तक थी । 9 वह डीवजाल महाजन गावके समीप राणेहर गावसे १२ कोस पर है । 10 किसनावतोके गावोकी सूची ।

## वात

भाटिया माहै केल्हणारी साख[1]–

राव केल्हण केहररो, केहर रावळ मूळराजरो पोतरो[2]। पैहली तो रावळ केहररै टीकानू मुदायत बेटो केल्हण थो[3]। पछै रावळ केहरनू विगर पूछिया कठैक सगाई कीवी। तरै रावळ केहर रीसायनै केल्हण वडा बेटानू जेसळमेर थी परो काढियो[4]। टीकानू लखमण लोहडा बेटानू कियो[5]। सु केल्हण एक वार तो को[6] दिन आसणी-कोट रह्यो। पछै मन माहै विचारियो "आसणीकोट मोनू पछैही जेसळमेररो धणी रहण नही दै।" तिण समै रावळ केहर राम सरण हुवो[7]। तरै केल्हण विचारियो–"कोहेक ठोड खाटणी[8]।" तिण दिन विकूपुर सूनो पडियो। तठै राव केल्हण आण गाडा छोडिया[9]। आगै कोट माहै घणा झाड[10] ऊगा था, तिणारी घणी झगी हुय रही थी[11], सु सारा झाड-फूस बाळ दिया[12]। आप कोट माहै वास कियो[13]। तठा पैहली[14] रावळ घडसी धरती वाळण वास्तै[15] विखा माहै चाकरी की, तद जैतुग केल्हारो बेटो महिपो विखा[16] माहै साथै हुतो। इण विखा माहै घणी चाकरी करी हुती[17]। इणै खरच घणो पूजवियो हुतो[18]। सु पछै रावळ घडसी धरती वाळी[19], तरै सारा विखायतानू वधारिया[20]। तरै महिपानू कह्यो–"थे माहरी वडी चाकरी पोहता छो[21], सु थे मागो तितरी धरती म्हे थानू दा[22]।" तरै इणै राणारी तळाई

---

1 भाटियोमे केल्हण-भाटियोकी शाखा। 2 पौत्र। 3 पहिले तो रावल केहरका वडा वेटा केल्हण राज्याधिकारी था। 4 तव रावल केहरने क्रोधित हो करके वडे वेटे केल्हणको जैसलमेरसे निकाल दिया। 5 छोटे वेटे लखमणको राज्याधिकारी वनाया। 6 कई। 7 उस समय रावल केहर मर गया। 8 कोई एक जगह प्राप्त करनी चाहिये। 9 वहा राव केल्हणने अपने गाडोको लाकर छोड दिया। (गाडा छोडिया=मुकाम किया)। 10 वृक्ष। 11 उनकी घनी झाडी हो रही थी। 12 वृक्ष और घास जला दिया। 13 निवास किया। 14 उससे पहले। 15 रावल घडसीने अपना राज्य वापिस लौटानेके लिये। 16 सकट काल। 17 इसने विखेमे वहुत सेवा की थी। 18 इसने अपना खर्च करके भी वहुत सहायता पहुँचाई। 19 जव रावल घडसीने अपना राज्य लौटा लिया। 20 तव सभी सकटग्रस्तोको उन्नत किया। 21 तुमने मेरी अन्त तक वडी सेवा की है। 22 सो तुम जितनी धरती मागो उतनी हम तुम्हे दें।

खरडरी पोकरण थी[1] कोस १६, फळोधोसू कोस ८, उठाथी लेनै[2] वीठणोक सूधी[3] इण धरती मांगी। रावळ घडसी इतरी[5] धरती जैतुगनै दीवी हुती। वीठणोक वीकानेरसू कोस सतरै १७ छै। जोगीरा तळाव, देवाइतरा तळावसू कोस ४ तथा ५ वीठणोक छै, तठा सूधी धरती जैतुगरै रावळ घडसीरी दीवी हुती[5], सो विकूपुर को दिन[6] जैतुगरैही रह्यो। तठा पछै पूगळ ऊपर मुलतानरी फोज आई, तिण पूगळ लियो। पछै वा फोज विकूपुर आई, तरै जैतुग कल्हैरै मरनै विकूपुररो कोट दियो। गढ तुरके लियो। के दिन गढ तुरकाणै रह्यो[7]। तुरकै गढ माहे मसीत[8] १ कराई छै। नै साह वीदा मुलताणरा वासीरो करायो कोट माहै देहरो १ ज्यानरो छै[9]। पछै तुरकानू खाण-पाणनू जुडै क्यु नही[10], तरै तुरक कोट विकूपुर छोड परा गया, सु विकूपुर सूनो पडियो थो। माहै घणा झाड ऊगा था[11], तिण समै रावळ केल्हण खाली ठोड देखनै आसणीकोटसू विकूपुर आयो, नै अठै रह्यो। कोट माहिला झाड-झगी[12] वाळ दिया, तिके अजेस वळिया ठूठ दीसै छै[13]। गढ रावळ केल्हण सझियो[14]। विकूपुर ऊचो थावमाथैरो छै[15]। प्रोळ सखरी[16] छै। घर १ माहै सखरो छै। देहरो १ एक साह वीदारो करायो सखरो छै। भीत तो गढरी पाखती इसी सी ही छै[17]। कोहर १ किडाणो प्रोळरी भीत हेठै छै,पाणी खारो छै, पुरसे ४०[18]। दोळो पाणी कोस ५ तथा ७ छै, नेडो कठै ही न छै[19]।

---

1 से। 2 वहासे लेकर। 3 तक। 4 इतनी। 5 वहा तक रावल घडसीकी दी हुई भूमि जयतुगके पास थी। 6 कई दिन। 7 कई दिन गढ मुसलमानोके अधिकारमे रहा। 8 मस्जिद। 9 मुलतान-निवासी शाह वीदाका बनवाया हुआ एक जैन मदिर भी कोटमे है। 10 वहा जब तुर्कोको खाने-पीनेको कुछ नही मिला। 11 भीतर बहुत वृक्ष उगे हुए थे। 12 वृक्षोकी झाडी। 13 अभी तक जले हुए ठूठ दिखाई देते है। 14 रावल केल्हणने गढको तैयार करवाया। 15 विकूपुरका गढ स्तम्भकी भाति ऊचा उठा हुआ है। 16 अच्छी। 17 गढके पार्श्वकी भीत तो ऐसी ऐसी (साधारण) ही है। 18 किडाणो नामक एक कूआँ पौलकी भीतके नीचे है, जिसका पानी खारा है और वह ४० पुरुष गहरा है। (पुरुष वा पुरसा=खडे होकर हाथ ऊचे उठाने या दायें-बायें हाथ फैलानेके बराबरकी, अथवा १२० अगुलकी गहराई नापनेकी एक माप)। 19 आजू-बाजू ५ या ७ कोस पर पानी हाथ आता है, निकट कही नही है।

लोक रहै छै सु सोह कोट माहि रहै छै[1]। फळोधीसू कोस २५ छै, जेसळमेरसू कोस ७० छै। बीकानेरसू कोस ४५ छै। देरावरसू कोस ६० छै। पूगळसू कोस ४४। वाप, विकूपुरसू कोस १६, फळोधीसू कोस ८, किरडा निजीक, तिकोस वडो गाव छै[2]। ठाकुराईरी मड वाप माथै छै[3]। वाभण-पलीवाळ घणा वसं छै[4]। वाणियारा घर ५० तथा ६० वसै छै। वाप घणा सेंवज गोहू सारी सीव काठा नीपजै छै[5]। मण १ गोहू वाया मण ६० गोहू हुवै छै[6]। घणी ज्वार हुवै। सखरी साख हुवै छै, ताहरा कण-नेपत गोहूं मण २००००० तथा ३००००० जाभेरा हुवै छे[7]। बीजाही सिरहड सारीखा रूडा गाव छै[8]। माणस हजार २००० री जोड राव विकूपुररै भले समा ऐ ठोड छै[9]। मारग देरावर मुलतानरो वहै छै[10], तिणरी रूडी ग्रोपत छै[11]। तिका ठोड रावळ केल्हण खाटी[12]। भली ठाकुराई जमी छै।

तिण समै राव राणगदे भाटी, रावळ लखणसेनरो वेटो पुनपाळ जेसळमेरसू काढियो, तिणरो पोत्रो हुतो[13], सु कहै छै "राव चूडैजी मारियो। तिणरै वेटो न थो, तरै राव राणगदेरी वैर राव केल्हणनू कहाडियो[14]—"मोनू थे घर ग्राणो तो हू थानू गढ दू[15]।" तरै केल्हण परपच कियो, नै कहाडियो—"भली वात[16]।" पछै ग्राप चढनै पूगळ

---

1 जो लोग वहा वसते है वे सब कोटमे रहते हैं। 2 वही एक वडा गाव है। 3 ठकुराईका सव ग्राधार वाप गाव पर है। 4 वहा पर पल्लीवाल ब्राह्मण अधिक रहते हैं। 5 वापकी सारी सीमा (भूमिमे) सेंवजके काठे-गेहूँ वहुत होते है। (सेंवज=वे गेहूँ, चने ग्रादि जो ग्राश्विनकी वर्षाको ग्राद्रंता भूमिमे वने रहनेके कारण उत्पन्न होते है। इन्हे सिंचाईकी ग्रावश्यकता नही रहती।) 6 एक मन वोनेसे ६० मन पैदा होते हैं। 7 जव फसल ग्रच्छी होती है तो नाजकी पैदावारमे गेहूँ दो-तीन लाख मनसे भी ग्रधिक पैदा हो जाते हैं। 8 सिरहडके समान दूसरे भी ग्रच्छे गाव हैं। 9 इन जगहोंमे यदि मुकाल हो तो विकूपुर रावकी मददके लिये दो हजार मनुष्योकी जोड उसके पास हो सकती है। 10 देरावर ग्रौर मुलतानका मार्ग इधर ही करके चलता है। 11 जिसकी ग्रामदनी ग्रच्छी है। 12 ऐसी जगहको रावल केल्हणने प्राप्त की। 13 रावल लखणसेनके वेटे पुण्यपालको जेसलमेरसे निकाल दिया था, उसके एक पोता था। 14,15 जव राव राणगदेकी विधवा पत्नीने राव केल्हणको कहलवाया कि मुझको घरमे डालदो तो मै तुमको यह गढ देदू। 16 तव केल्हणने छल किया ग्रौर कहलवाया कि ग्रच्छी वात है।

गयो, तरै रांणगदेरी वैर कह्यो–"धारेचारो सासतर करो[1] ।" तरै राव केल्हण कह्यो–"आज तो रावाईरा सासतररो मोहरत छै[2], सवारै वीजो सासतर करस्यां[3] ।" सु पैहलै दिन वाजोट[4] माडनै रावाईरो टीको कढायो, सासतर कियो[5] । सको राजी हाथरै, जीभरैं पाण किया[6] । पछै दिन २ आडा घातनै[7] राव केल्हण वागो पैहरनै राव राणगदेरी दोढी ऊभै रहनै माहै जुहार राणगदेरी वहूनू कहाडियो[8] । तरै राणगदेरी राणी कहाडियो–"थाहरो म्हासू कोल कासू छै ? नै हमै थे कोल पाळो न छो[9] ?" तरै केल्हण कहाडियो–"इसडी वात कदे न हुई, सु क्यु कीजै[10] ? सवारै ससार माहै सगा-सोई सको हसै[11] । पछै कोई आपासू सनमध करै नही, नै रावरै वेटो को न छै। राव राणगदेरो वैर हू लेईस[12] ।" तरै राणी पण दीठो, वात माहै सवाद को नही[13] । तरै राणी कह्यो–"भली वात, म्हारे वैर वाळणसू हीज काम हुतो[14] ।" इण विध राव केल्हण पूगळ धणी हुवो । पछै रावळ केल्हण मुलतान जायनै सलेमखाननू नागोर ऊपर ले आयो । राव चूडानू मारियो । राव केल्हण घणू तपियो[15] । इतरा कोट खाटिया[16]–

साखरो दूहो[17]

पूगळ वीकूपुर पुणवि, मूमणवाह मरोट ।
देरावर नै केहरोर, केल्हण इतरा कोट[18] ॥ १

---

1 तब राणगदेकी स्त्रीने कहा कि पुनर्विवाहकी रीति करो। 2 आज तो रावाईकी (रावकी पदवीकी) रस्म कर लेनेका मुहूर्त्त है। 3 कल दूसरी रस्म भी कर लेंगे। 4 पाटा, पट्टा। 5 रस्म अदा की। 6 धन और मिष्ट-भाषण (मिष्ठान्न)से सबको राजी किया। 7 फिर दो दिनका बीच देकर। 8 राव केल्हण वागा पहिन करके राव राणगदेकी ड्योढी पर खडे रह कर राणगदेकी स्त्रीको भीतर जुहार कहलवाया। 9 तुम्हारा मेरेसे क्या कौल है ? और अब तुम उस कौलका पालन नही कर रहे हो। 10 ऐसी बात कभी हुई नही, उसे क्यो करना चाहिये ? 11 कल ससारमे अपने सगे-सबधी सभी हँसेंगे। 12 राव राणगदेके वैरका बदला मैं लूगा। 13 तब राणीने भी देखा कि अब इस बातमे कोई मजा नही। 14 मेरे तो वैरका बदला लेनेसे ही काम था। 15 राव केल्हणने बहुत वर्षों तक राज्य किया। 16 इतने गढ प्राप्त किये। 17 जिसकी साक्षीका दोहा। 18 केल्हणके पास इतने कोट थे—१ पूगल, २ विकूपुर, ३ मूमणवाह, ४ मारोठ, ५ देरावर और ६ केहरोर।

राव केल्हण देरावर लियारी वात एक इण भात सुणी–

सोम केहररो सगो भाई, तिको देरावरमे मुवो। तरै केल्हण गोडो वळावणनू माणस ४००सू आयो[1]। तरै सोमरो वेटो सहसमल माहै आवण दे नही। तरै घणा सूस-सपत देवाचा करनै कोट माहै आयो[2]। दिन ५ तथा ७ रह्यो। इणे[3] केल्हणनू कह्यो–"थे परा जावो[4]।" पण केल्हण जाय नही। तरै सहसमल रूपसी रीसायनै आपरा गाडा ले कोट छाड नीसरिया[5], सु सिध गया। कोट देरावररो केल्हण लियो। तठा पछै राव केल्हण वेगो हीज मुवो[6]।

राव केल्हणरा वेटा–

२ राव चाचो केल्हणरो पूगळ पाट।

२ रिणमल विकूपुर पाट हुतो। तिणरा वासला खरडवाळा भाटी[7]।

२ विक्रमादीत केल्हणरो। तिणरै वासला खीरवारा धणी[8]।

२ अको केल्हणरो। तिणरा वासला सेखासरिया-भाटी[9]। अकानू रा॥ नाथू रिडमलोत मारियो[10]।

२ कलिकरण केल्हणरो। तिणरै वासला तणणै गाव[11]।

२ हरभम केल्हणरो। तिणरै वासला हरभम-भाटी कहीजै। इणारा गाव २– १ नाचणो। १ सरउपर।

आक २ राव चाचो केल्हणरो पूगळ पाट बैठो। राव केल्हणरा कोट खाटिया माहै कोट १ विकूपुररो रिणमल केल्हणोतनू दियो[12]।

---

1 तव केल्हण ४०० आदमियोके साथ मातमपुर्सीके लिये आया। 2 तव सौगध-शपथ और वोल-वचन दे करके कोटमे आ पाया। 3 इसने। 4 तुम अव चले जाओ। 5 तव सहसमल और रूपसीने नाराज हो कर कोट छोड दिया और अपने गाडे ले करके निकल गये। 6 जिसके वाद राव केल्हण जल्दी ही मर गया। 7 रिणमल विकूपुरकी गद्दी पर था। उसके वशज खरडवाले-भाटी कहलाते है। 8 केल्हणका वेटा विक्रमादित्य। उसके वशज खीरवाके जागीरदार। 9 अवका केल्हणका वेटा, इसके वशज सेखासरिया-भाटी कहलाते है। 10 अवकाको राव नाथू रिडमलोतने मारा। 11 कलिकर्ण केल्हणका वेटा। इसके वशज तणणा गावमे है। 12 राव केल्हणने जिन कोटोको प्राप्त कर अधिकार किया था, उनमेसे एक कोट विकूपुरका चाचाने रिणमल केल्हणके वेटेको दे दिया।

इतरा कोट चाचै भोगविया[1]–

१ पूगळ, १ केहरोर, १ मरोट, १ मुमणवाहण, १ देरावर।

चाचारी वडी ठाकुराई हुई। चाचो कटक करनै पोकरण राव वरजाग ऊपर आयो। पोकरण भूवियो[2]। भूतडा महाजन महेसरियारा कितराहेक गाडा सै उचाळै ले आयो[3]। सु वे भूतडा आज सूधा पूगळमे रहता[4]–

राव चाचारा वेटा—

३ राव वैरसल, पूगळ पाट हूवो। जिण नवो कोट वैरसलपुर करायो।

३ रावत रिणधीर चाचारो, तिणनू देरावर। भाई वटै वैरसल लियो थो। तिणरै वासला नेतावत-भाटी[5]। विकूपुररै देस, नोख-सेवडै[6]।

रावत रिणधीर रा वेटा–

४ वीरमदे। ४ लखमण। ४ मूळो। ४ अजो।

वीरमदेरा वेटा–

५ विजो वीरमदेरो।

६ नेतो, तिणरा नेतावत[7]।

३ कूभो चाचारो। इणरै वासै को नही[8]।

३ महिरावण चाचारो[9]।

देरावर एकण भात री ठोड[10]। रिणधीर मची मुवो[11]।

वेटा–

४ वीरमदे, ४ लखमण, ४ मूळो, ४ अजो हुता।

पण ठोड एकण भातरी, इणासू अठै रह्यो न जाइ[12], सारै सिंधरै

---

1 चाचाने इतने कोटोका उपभोग किया। 2 चाचा सेना तैयार करके वरजाग ऊपर पोकरण चढ आया और पोकरणको लूटा। 3 वहाके भूतडा जातिके माहेश्वरी वनियोको उचाला करा कर ले आया। (उचाळा=वहृत से परिवारो का एक साथ सामूहिक रूपमे अपने निवास स्थानका सदाके लिये त्याग करके अन्य गावको किया जाने वाला प्रस्थान।) 4 वे भूतडे आज तक पूगलमे रहते है। 5 जिसके वशज नेतावत-भाटी कहलाते हैं। 6 विकूपुर प्रदेशमे इनका गाव नोख-सेवडा। 7 नेता, जिसके वशज नेतावत-भाटी। 8 चाचाका वेटा कुभा, इसके वशमे कोई नही। 9 महिरावण चाचाका वेटा। 10 देरावर एक ऐसी (खतरेकी) जगह। 11 रणधीर अपनी मौत मरा। 12 इनसे यहा रहा नही जाता।

मुहडै देरावर छै[1] । तरै इणां गढ ऊभो मेलनै विकूपुर उरा आया, नोख-सेवडै वसिया[2] । देरावररो गढ खाली पडियो थो, तरै रावळ लूणकरण वसियो । तठा पछै गढ जेसळमेर वासै पडियो[3] । गाडण पसायत विखा माहै सिंधनू जावतो थो दुकाळ माहै[4] । वारहट खीदै कहिनै रखायो । इतरो देनै राखियो[5] ।

साखरो कवित[6]

दुय गिरि चदण अढार, वरै जळबब मोताहळ[7] ।<br>
सेर एक सोव्रन्न[8], पच रूपक भ्भाळाहळ[9] ॥<br>
बारह जूथ नर-महिष[10], चादर खट चीरह[11] ।<br>
च्यार तुरी[12] चत्र ऊठ[13], एकसो गाय सखीरह[14] ॥<br>
भाटिया राय हुवसी भुवण, लाभ ध्रम्म सोभाग तुव ।<br>
वैरसल हाथ माडावियौ, चायइ एतै चाचगा सुव[15] ॥ १

दूहो

खीदै समो न बारहट, वेरड समो न राय ।<br>
जातै जुग जासी नही, दूहो चवै पसाय[16] ॥ १

बेटारी साखरो दूहो

सेखो राव तिलोकसी, जोगाइत जगमल्ल ।<br>
वैरागररा दीकरा, एक-एक हू भल्ल[17] ॥ १

---

1 सारे सिंघके द्वार पर देरावर बसा हुआ है । 2 तब ये गढ़ छोड कर के विकूपुर आ गये और नोख-सेवड़ेमे वस गये । 3 जिसके बाद गढ जैसलमेरके अधिकारमे आया । 4 दुष्कालजन्य सकटके कारण गाडण पसायत सिंघको जा रहा था । 5 इतना देकर के रखा । 6 साक्षीका कवित्त । 7 मोती । 8 सुवर्ण । 9 पाच सेर चमकती हुई चादी । 10 बारह जोडी भैसे । 11 छहो प्रकारके चादर आदि वस्त्र । 12 चार घोडे । 13 चार ऊंट । 14 एक सौ दूध देती हुई गायें । 15 भाटी राव वैरसलने चारण पुत्रको (बारहट खीदेको) उसकी इच्छानुमार दान दिया । कवि कहता है कि हे भाटी राव ! तेरा ससारमे सौभाग्य वढेगा और तुझे धर्मका लाभ होगा । 16 गाडण पसायत कहता है कि खींदेके समान कोई बारहठ नही है और वैरसलके समान कोई राजा नही है । उसकी कीर्ति युगो तक नही मिटेगी । 17 वैरसलके वेटे एक-एकसे भले हैं ।

४ राव सेखो, धणी पूगळ ।

४ जगमाल वैरसलरो । मुमणवाहण धणी हुवो । क्यु वैरसलपुर माहै पिण सीर हुतो[1] । पछै जगमाल मुवो तरै तुरके मुमणवाहण लियो[2] ।

५ जैतसी ।

६ पचायण, राव वाघारी वेटी परणियो हुतो[3] ।

७ गोयददास पचाइणोत । इणरी वेटी राजा मूरजसिंघ परणिया हुता, सुजाणदे[4] ।

८ जोगीदास गोयददासोत, वडो रजपूत, जोधपुर वास । गाव ४सू वीझवाडियो पटै[5] । समत १६६८ हाथी मारियो दिखणनू[6] ।

९ रुघनाथ। गाव ४सू वीझवाडियो पटै। समत १६९१ मोहवतखारै काम आयो[7] ।

१० अचळदास ।

९ जगनाथ, चादरख पटै । मोहवतखारै दौलतावाद काम आयो[8] ।

१० हरनाथ चादरख पटै । मोहवतखारै दौलतावाद काम आयो ।

१० उरजन ।

९ कल्याणदास ।

१० करन । १० भीव ।

९ केसोदास जोगीदासरो ।

१० हरिसिंघ ।

९ पतो जोगीदासरो ।

१० जसवत ।

७ राम पचाइणरो । राव चद्रसेणरो सुसरो । सोहद्रा भाटियाणी राणीरो बाप[9] ।

८ मुरताण, रावळै वास । मेडतारो राजोद पटै[10] ।

---

1 कुछ वैरसलपुरमे भी उसका भाग था । 2 जव जगमाल मर गया तव तुर्कोने मुमणवाहण पर अधिकार कर लिया । 3 पचायण राव वाघाकी वेटी व्याहा था । 5 इसकी वेटी सुजानदेमे राजा सूरसिंहका विवाह हुआ था । 5 चार गावोके साथ वीझवाडिया गाव जागीरमे । 6 सम्वत् १६६८मे इसने दक्षिणमे हाथीको मारा । 7 सम्वत् १६९१मे मोहवतखाके लिये काम आया । 8 जगन्नाथको चादरख गाव पट्टेमे, दौलतावादमे मोहवतखाके लिये काम आया । 9 पचायणका वेटा राम । यह गव चद्रसेनका ससुर और सोहद्रा (सुभद्रा) भटियानीका वाप है । 10 सुरतान, महाराजाका चाकर । मेडते परगनेका राजोद गाव पट्टेमे ।

९ कुंभो ।

८ नेतसी रामोत[1] ।

९ नरसिंघ ।

८ सकरदास रामोत[2] ।

९ वेणीदास । ९ गोकळदास ।

९ कन्हीदास । ९ सवळ-सिंघ ।

८ नरहरदास रामरो ।

९ मेघराज ।

८ तेजसी रामावत ।

९ उदैसिंघ पंचाइणरो ।

८ मनोहरदास । ८ मोहण-दास ।

९ द्वारकादास मनोहर-दासोत ।

८ ईसरदास । ८ प्रागदास

जगमाल वैरसलोतरो पेट अठा वासै[3]–

४ जोगायत वैरसलरो । तिणनू भाईवटै केहरोर आयो, नै वरसलपुर माहै हैसो हुतो[4] । जोगायत वडो प्रळै-दातार हुवो । वडा-वडा दान दिया[5] । पछै साथरैरी मौत मुवो[6] । पछै केहरोर तुरके लियो । इणरै वासै इसडो को न हुवो[7] ।

दूहो–जोगायत जीआर, पाना ऊथळसी परम ।
　　तोनै वीजी त्यार, वेहरो होसी वैरउत ।। १

४ तिलोकसी वैरसलरो ।　५ सहसो ।　६ अखैराज ।

५ भैरवदास, मरोट धणी हुतो । पछै भैरवदास मुवो, अउत गयो[8] । तरै राव जैसै मरोट लीवी ।

४ राव सेखो वैरसलरो । पूगळ धणी । एक वार इणनू मुगले मुलताण दिस ले भालियो, तद रावजी श्री वीकैजी छोडायो[9] ।

५ राव हरो सेखारो, पूगळ धणी[10] । पूगळनू गाव ३५० लागता, तिण माहै हैसो ३ भाई[11] । वाघै सेखावत गाव हापासरसू वटाय गाव

---

1 रामका बेटा नेतसी । 2 रामका बेटा शकरदास । 3 इसके बाद जगमाल वैरसलोतका वश । 4 वैरसलका बेटा जोगायत, इसे भाईवटमे केहरोर मिला और वरसलपुरमे भी भाग था । 5 जोगायत बडा जबरदस्त दानी हुआ । इसने बडे-बडे दान दिये । 6 अपनी मौत मरा । 7 इसके पीछेके वशजोमे ऐसा कोई नही हुआ । 8 फिर भैरवदास अपुत्र मर गया । 9 एक वार इसको मुलतानकी ओर मुगलोंने पकड लिया था तब राव बीकाजीने छुडवाया था । 10 राव हरा शेखाका पुत्र, पूगलका स्वामी । 11 पूगलके पीछे ३५० गाव थे, जिनमे तीन भाईयोका हिस्सा । (पृ० १११मे शेखाके वशजोके बँटवाडेमे पूगलके गाव ३६० और उनके चार हिस्से किये गये, बताया गया है ।)

१४० लिया[1], तद गोपो रिणमलोत विकूपुर धणी हुतो, कपूत सो ठाकुर हुतो। सु हरारा हेरू लागा हुता। ओ कटैके निवाळा खाण गयो हुतो, पछै हरै गोपा कना विकूपुर लियो[2]।

राव हरा रा बेटा—

६ राव वरसिघ। ६ वीदो रावत। ६ हमीर। ६ उधरण।

५ रावत खीवो सेखावत। वैरसलपुर धणी, तिणनू तुरकै मारियो[3]।

६ रावळ जैतसी। ६ सागो। ६ करन। ६ धनराज।
६ गागो।

खीवा-भाटी—

६ जैतसीराव। वैरसलपुर धणी।

७ राव मालदे, वैरसलपुर धणी।

८ राव मडळीक, वैरसलपुर धणी। मोटा राजासू कुडळ समत १६२७ वेढ हुई तठै काम आयो[4]।

६ राव नेतसी, वैरसलपुर धणी। समियाणै बळोचै मारियो[5]।

१० राव प्रथीराज, वैरसलपुर धणी।

११ राव दयाळदास।

१२ राव करन। १२ राव रुघनाथ।

११ रामचद। ११ सबळो। ११ वीरमदे। ११ दळपत। ११ वाघ।

१० खेतसी मडळीकरो।

६ सागो खीवारो।

७ जगमाल।

८ अचळदास।

६ ।

१० केसोदास।

---

1 वाघा शेखावतने हापासर सहित १४० गाव वँटवा कर लिये। 2 हराके दूत पीछे लगे हुए थे, जब यह कही भोजन करनेको गया हुआ था तब हराने गोपासे विकूपुर छीन लिया। 3 जिसको तुर्कोने मार दिया। 4 वरसलपुरका स्वामी राव मडलीक, कुडल गावमे मोटा राजा उदयसिहसे सम्वत् १६२७मे लडाई हुई उसमे काम आ गया। 5 वरसलपुरका स्वामी राव नेतसी, जिसे बलोचोने समियाणामे (सिवानामे) मारा।

११ दुरगादास। जोधपुर मेहा-
कोर फळोधीरो पटै[1] ।
८ जीवो जगमालरो ।
९ करन खीवारो । खीवा
साथै काम आयो ।
७ अमरो ।
८ रामसिघ ।
९ रामचद । ७ तिलोकसी।
१० वाघ ।
८ स्यामदास अमरारो ।
करण, खीवो[2] ।

९ गोपाळदास ।
१० रावत चादो ।
११ जगतसिंघ ।
८ लखो अमरारो ।
९ दौलतखान ।
१० गिरधर, खजवाणो पटै ।
९ गागो खीवारो ।
७ तेजसी ।
८ रामसिघ । ८ मानसिघ।
९ जसवत ।
१० भाण । १० भगवान ।

६ भाटी धनराज खीवारो। राव मालदेरै वास। विकूकोहर घणा गावासू पटै[3] । फळोधीरै थाणै रहतो। पछै राव जेसै पूगळरै धणी चाडी मारी[4], तठै आड-वाहर पीहलाप कनै आपडिया[5]। जेसै रा ।। प्रथीराज भोजराजोतनू चाडी मारियो[6] । अठै वेढ हुई[7] । वेढ जेसै जीती ।

७ गोपाळदास । ७ खेतसी । ७ ठाकरसी । ७ रायमल ।
७ सीहो ।

राव धनराजरो परवार—

७ गोपाळदास, भटनेर
काम आयो ।
८ नरहर, भटनेर काम आयो।
९ उगरो । ९ राजसिंघ ।
७ रामसिघ । ७ खेतसी
धनराजोत ।

८ सिरग ।
९ राघोदास ।
१० गोवरधन। १० हरराम,
जोधपुर वास ।
१० माधोदास । १० जग-
माल । १० गोयददास ।
९ वाघ सिरगरो[8] ।

---

1 दुर्गादासको जोधपुर राज्यके फलोधी परगनेका महाकोर गाव पट्टे मे । 2 श्याम-दास, करण और खीवा अमरके वेटे । 3 कई गावोके साथ विकूकोहर पट्टे मे । 4 पीछे पूगलके स्वामी राव जैसेने चाडी गाव लूटा । 5/6 वहा जैसेने आडी चढाई करके पीहलाप गावके पास चाडीके पृथ्वीराज भोजराजोतको पकड करके मार दिया । 7 यहा लडाई हुई । 8 वाघ सिरगका (श्रीरगका) वेटा ।

१० विहारी। १० देवीदास।
८ आसकरण खेतसीरो। सिरग[1]।
९ कल्याणदास, वीकानेर वास। नाथूसर चाखू पटै[2]।
१० कान्ह।
९ हरदास। ९ मनोहर।
८ दुरगदास खेतसीरो।
९ नाथो। राव सत्रसाल साथै काम आयो।
८ महेसदास खेतसीरो।
७ ठाकुरसी धनराजरो।
८ जोगाइत।
९ भोपत।
१० गोवरधन, खीदासर पटै
१० दयाळदास, नाभासर।
१० गिरधर, सीहाणो पटै।
१० करमसेन। १० सुजाण।
९ रुघनाथ। गोयददास।
८ किसनदास। ठाकुरसीयोत।
९ सूरजमल।
१० रायकरन।
८ राम ठाकुरसीयोत।
९ प्रथीराज।
१० मुकद। १० कुभो। १० तेजमाल। १० जैसिघ। १० माधोदास। १० गिरधर। १० अखैराज।
९ जगनाथ।
७ रायमल धनराजरो।
८ कान्ह, रावळै वास। मेहाकोर पटै[3]।
९ नरहर।
१० रामसिघ।
८ नारायण रायमलरो।
९ मुकद। ९ मोटो। ९ रामदास।
८ सावळदास रायमलरो।
९ सुदर, जाभेळाव पटै।
९ खगार, रावळै वास। वीमणवो पटै[4]।
९ ईसरदास।
९ जोगीदास।
८ उदयसिघ रायमलरो।
८ चादो रायमलोत।
८ वेणो रायमलोत।
७ सीहो धनराजरो। हडफै काम आयो।
८ हेमराज। भटनेर काम आयो।

---

1 आसकरण और श्रीरग खेतसीके वेटे। 2 कल्याणदास वीकानेरमे चाकर, जिसको नाथूसर और चाखू गाव पट्टे मे। 3 कान्ह, जोधपुर राजाजीका चाकर और महाकोर गाव पट्टे मे। 4 खगार, जोधपुर राजाजीका चाकर और वीमणवो गाव पट्टे मे।

९ भागचद । ९ रामचद ।

८ भगवानदास सीहावत ।

९ जसवत ।

१० रामसिंघ ।

९ जगदे ।

१० हरिसिंघ ।

८ भाण सीहावत ।

८ सुरताण ।

९ बलू । ९ देदो । ९ प्राग-दास ।

१० अखैराज ।

७ लिखमीदास धनराजरो । भटनेर काम आयो ।

८ कल्याणदास ।

९ लाडखान, वीकानेर वास । सोवाणियो पटै[1] ।

८ दूदो ।

७ डूगरसी धनराजरो ।

८ करमसी । ८ भैरवदास । ८ खीवो । (८ करमचद ।)

५ वाघो सेखारो । इण राव हरा सेखावत कनै हैसे ३ पूगळमे हापासर लारै गाव १४० वटाय लिया[2] ।

६ भाटी किसनो वाघावत । इणरा वासला किसनावत-भाटी कहावै छे[3] । वीका-नेर वासै घोडो खडे[4] । फळोधी मोटा राजानू थी तद मोटा राजारा वास[5] । कहावतनू आधी फळोधी दीवी थी[6] ।

७ तेजमाल । ७ रायसिघ । ७ मालो । ७ रायमल । तेजमाल किसनावत वडो घाट, वडो रजपूत हुवो[7] ।

८ ठाकुरसी तेजमालरो ।

९ अखैराज । ९ लाखणसी ।

८ भाण तेजमालोत ।

९ रतनसी ।

१० करमचद टीकै[8] ।

९ प्रथीराज । ९ ययल (?) (दयाळदास)

८ राणो तेजमालोत ।

८ खगार तेजमालोत ।

९ सूरजमल । ९ भीवराज । ९ दयाळ ।

---

1 लाडखान, बीकानेरमे चाकर और सोवणिया गाव पट्टेमे । 2 इसने हरा शेखावतके पाससे पूगल प्रदेशके १४० गाव हापासरके पीछे बँटवा कर ले लिये । 3 इसके वशज किसनावत-भाटी कहलाते हैं । 4 बीकानेरके (महाराजाके) पीछे घोडा चलाता है । 5/6 जब फलोधी पर मोटा राजाका अधिकार था तब यह मोटा राजाका चाकर था और कहने मात्रको आधी फलोधी इसे दी गई थी । 7 तेजमाल किसनावत, सुदर और बडे कदका और बडा वीर राजपूत हुआ । 8 करमचद गद्दी बैठा ।

९ नाथो, भलो रजपूत। खारवारै चूहड़सर वसै[1]।

१० कुंभो, खारवारै।

८ खगार तेजमालोत, जोधपुर वसियो हुतो। समत १६५९ गावा ५सू वीठणोक पटै दी हुती। राजा सूर(सिंघ) तेजमालनू मारियो तद साथै मारियो[2]।

किसनावतारो वडो धडो छै। मांणस १००० तथा १५०० जमीयत छै[3]।

८ कान्ह तेजमालोत, रावळै वास थो। समत १६८५ मेड़तारो मीठडियो पटै हुतो[4]।

रायसिंघ किसनावत, आक ७—

८ भगवानदास रायसिंघोत, समत १६७२ रावळै वास। चामू, सावरीज पटै[5]।

९ माधोदास, रावळै वास। समत १६७७ चामू पटै।

१० अचळदास।

८ सहसमल रायसिंघोत।

७ गोयददास, किसनावतामे मुदै। रायमलवाळी राणेर वसै[6]।

८ वीरमदे रायसिंघोत, रावळै वास। समत १६५९ कालाणो पटै गाव १४सू[7]।

९ करन।

८ पूरणमल।

मालो किसनावत, आक ७—

८ सावळदास हापासर वसै[8]।

रायमल किसनावत, आक ७—

---

1 नाथा, अच्छा राजपूत, खारवाके चूहड़सर गावमे रहता है। 2 खगार तेजमालोत जोधपुरमे बस गया था। सम्वत् १६५९मे पाच गावोके साथ वीठणोक पट्टेमे दिया था। राजा सूरसिंहने इसके बाप तेजमालको मारा तब इसे भी साथमे मार दिया। 3 किसनावत-भाटियोका बडा समूह है। इनकी १०००/१५०० आदमियोकी जमीयत है। 4 कान्ह तेजमालोत जोधपुर राजाजीका चाकर था। सम्वत् १६८५मे मेड़ता परगनेका मीठडिया गाव उसके पट्टेमे था। 5 भगवानदास रायसिंहोत सम्वत् १६७२ जोधपुर राजाका चाकर और चामू और सावरीज उसके पट्टेमे। 6 किसनावत-भाटियोमे गोयददास मुख्य व्यक्ति रायमलवाली राणेर गावमे रहता है। 7 वीरमदे रायसिंहोत जोधपुरका चाकर, सम्वत् १६५९मे १४ गावोके साथ कालाणा पट्टेमे। 8 सावलदास हापासरमे रहता है।

८ जगमाल, देहेरै-भाचाहर वसै[1] ।

राव केल्हण केहररो । पूगळ, विकूपुर, वैरमलपुर इणारी[2] ठाकुराई ।

पीढी–

१ राव केल्हण केहररो ।
२ राव चाचो केल्हणरो ।
३ राव वैरसल चाचारो ।
४ राव सेखो वैरसलरो ।
५ राव हरो सेखारो ।

हरारा वेटा–

६ राव वरसिंघ । ६ वीदो हरावत । ६ हमीर । ६ उद्धरण ।

राव वरसिंघ हरावत आंक ६ पूगळ, विकूपुर दोनू टोडे धणी हुवो[3] । वरसिंघ वडा वडा प्रवाडा खाटिया[4] ।

साखरो कवित

पच सहस मोगर[5] सहस पचह धमधारै[6] ।
पच सहस पैसरै कीयै वकडै-करारै[7] ।
रैवारी रत्तडी फिरै आगै पडदारै ।
खडै[8] वाग[9] मोकळी[10] चीत भाटिया करारै ।
वाहडगिर[11] खावड[12] कोटडै[13] छाहोटण[14] सवाईयो ।
गोरहर[15] लगो जु मेहणो[16] त्यै[17] ऊतारण आवियो[18] ॥ १
ऋहऋहिया-कणछिया[19] कच्छ लग्गी किरमाळा[20],
कम्माळा भारिया पूठ जिरहा[21] कम्माळा[22] ।

---

1 जगमाल देहेरे-भाचाहरमे रहता है । 2 इनकी । 3 पूगल और विकूपर दोनो जागीरोका स्वामी हुआ । 4 वरसिंहने वडे वडे युद्धोमे विजय और यश प्राप्त किया । 5 (१) गदाधारियोको (२) गदाओंसे, मुद्गरोसे । 6 नाश किया । 7 वाके और शक्तिशालियोको । 8 चलाते है । 9 वाग, लगाम । 10 अधिक । 11/14 वाहडमेर (वाडमेर) खावड, कोटडा और चौहटन—ये नगरोके नाम है । 15 (१) जैसलमेरका किला । (२) जैसलमेर शहर । 16 कलक । 17 उसको । 18 आया । 19 दीन होकर पुकारे, रोये । 20 तलवारें । 21 जिरहवख्तरोसे । 22 ऊटोको ।

खेडीता[1] खूदता[2] धसै घर पायं हैमर[3],
घूघर रोळ रवद्द[4] रुघा वाजै रिण[5] पाखर[6] ।
मरणाय-साद[7] नीसाण सर कूपिये ढोलारव किया,
त्रूटती-रात[8] हरभम-तणै[9] जग्गमाल जगाविया ॥ २

राव वरसिंघरा वेटा, ग्राक ६–

७ राव दुजणमल, विकूपुर धणी। सोनगरा खीवारो दोहीत्रो[10] ।

७ राव जैसो, पूगळ धणी । सोनगरा खीवारो दोहीतरो । जैसारी वेटी राव चन्द्रसेण परणियो हुतो, नाव प्रेमलदे। तिका विकूपुर मुई[11] ।

७ कलो वरसिंघरो, जको किरडा वाप वीच वसियो थो, तिका ठोड 'कलारी-कोटडी' कहीजै[12] । एकरसू[13] राव जैसो कठीक[14] गयो हुतो, वासै कलै पूगळ ली थी[15] । पछै कलो वेगोहीज मुवो[16] । पछै टीको कलारा भाई पातळनू हुवो ।

७ जाझण वरसिंघरो। इणरै वासै को नही[17] ।

७ पातळ वरसिंघरो। तिणरै वासला नोख सेवडै छै[18]। पातळ मास ६ पूगळ धणी हुवो । पछै जैसै पूगळ लीवी ।

७ सातळ वरसिघरो । वासै को नही[19] ।

७ करमचद वरसिंघरो ।

८ कल्याणदास किसन-दासरो। किसनदास करम चदरो ।

---

1 चलाते हुए, भगाते हुए । 2 रौंदते हुए । 3 घोडे । 4 मुसलमान । 5 रण । 6 घोडे और हाथियोके कवच । 7 (१) शरणार्थियोकी पुकार । (२) महनाईका शब्द । 8 पिछली रातमे । 9 हरके पुत्रने । 10 खीवा सोनगरेका दोहिता । 11 सोनगरा खीवाका दोहिता । जैसेकी वेटी प्रेमलदे राव चन्द्रसेनको व्याही थी, वह विकूपुरमे मर गई । 12 कल्ला वरसिहका वेटा । यह किरडा और वापके वीचमे रहता था । वह जगह 'कलारी कोटडी' कही जाती है । 13 एक वार । 14 कही । 15 पीछेसे कल्लेने पूगल पर अधिकार कर लिया था । 16 फिर कल्ला जल्दी ही मर गया । 17 वरसिहका वेटा जाझण । इसके वशमे कोई नहीं । 18 इसके वशके नोख और सेवडेमे रहते हैं । 19 वरसिहके वेटे सातलके वशमे कोई नही ।

९ रुघनाथ। ९ कल्याणदास।

८ राणो।

९ भगवान। ९ अखैराज।

८ जगमाल।

९ राघवदास। ९ गोपाळदास। ९ भीवराज। ९ पीथो।

९ रुघनाथ किसनदासरो।

८ जोगाइत।

९ धनराज। ९ लिखमीदास।

७ राव दुजणसल वरसिघरो, विकूपुर धणी। मोटा राजारो सुसरो। पोहपावती दुजणसलरी बेटी परणिया हुता, सु जोधपुर (प)हुता पैहलीहीज मुई[1]।

८ राव डूगरसी दुजणसलरो।

८ सूरजमल रावळै चाकर। विकूकोहर पटै।

सूरजमलरा बेटा—

गोयददास, दयाळदास, कल्याणदास, तेजमाल, रामचद।

९ जसवत, रावळै वास। ननेऊ पटै। समत १६९३ काम आयो[2]।

९ लिखमीदास। ९ बलु। ९ किसनदास।

८ रायमल।

८ सुरताण, मोटा राजारो चाकर। फळोधीरी गाया ली तठै काम आयो[3]।

८ भानीदास दुजणसलरो, सिरहड वसियो। पछै सोबतरै मामलै मोटै राजा फळोधी थका समत १६२५ रै टाणै मारियो[4]।

९ सादूळ भानीदासरो। राजा रायसिंघजीरै कांम आयो।

९ गोपाळदास, सिरहड वसियो। पातावते नाळ कनै मारियो[5]।

---

1 वरसिहका वेटा दुर्जनसाल, विकूपुरका ठाकुर, मोटा राजाका ससुर। मोटा राजाने दुर्जनसालकी वेटी पोहपावतीसे (पुष्पावतीसे) विवाह किया था, परतु जोधपुर पहुँचनेके पहले ही वह मर गई। 2 जसवत जोधपुर महाराजाका चाकर। नैनेऊ गाव पट्टेमे। सम्वत् १६-९३मे काम आया। 3 सुरतान मोटे राजा उदयसिहका चाकर। फलोधीकी गाये घेरी थी वहा काम आया। 4 भानीदास दुर्जनसालका वेटा, सिरहड गावमे रहा। सम्वत् १६२५मे मोटे राजाने फलोधी रहते समय घोडोके काफिलेके (महसूलके) निमित्त हुई लडाईमे मारा। 5 गोपालदास सिरहडमे वसा। इसको पातावतोने नाल गावके पास मारा।

१० मनोहरदास।
१० सुदरदास। १० जस-
वंत। १० सामीदास।
१० सावळदास। ९ मान-
सिंघ। १० भगवान-
दास। १० वलु।
१० पूरो। १० रांमो।
९ रतनसी।

८ डूगरसी दुजणसलरो, विकूपुर धणी हुवो। वडो ठाकुर हुवो। तद मोटो राजा फळोधी वसै छै। तद दाण घणो धरती माहै लागतो[1]। तद सोवत सोदागरारी फळोधीनू आवती हुती[2]। सु राव डूगरसी आपरा भाई भानीदासनू सोवत साम्हो मेल[3], सोवत तेडाय[4], दाण लेनै सोवत आघी चलाई[5]। नै मोटै राजा साथ सामहो मेलियो हुतो[6], तिण(सू) भाटी भानीदास सोवत पोहचायनै पाछो माडणसर उतरियो थो[7], तठै रावरै जैसावत और साथ जिणा भाटी भानीदासनू मारियो[8], तोही राव डूगरसी गई करतो हुतो[9], पण मोटो राजा भाटियासू पगे-पडियो आवै[10], ऊपरा-ऊपर बुराई करै, वाळैसर मारियो[11]। तरै राव डूगरसी सारा केल्हण भेळा करनै माणस २५०० सू कुडळ माहै रावरै तळाव आय उतरियो[12]। मोटो राजा चढनै आदमी ५०० तथा ७०० सू भाटिया ऊपर गयो, तठै समत १६२७ रा आसोज उतरतै, काती लागता वेढ हुई[13]। वेढ भाटिया जीती। मोटै राजा वेढ हारी। राव मडळीक वैरसलपुररो धणी इण वेढ काम आयो,

---

1 उस समय देशमे महसूल (राहदारी) वहुत लगता था। 2 उन्ही दिनो सौदागरोकी एक घोडोकी सोहवत फलोवीको आ रही थी। 3,4,5 इसलिये राव डूगरसीने अपने भाई भानीदासको सोहवतके सामने भेज कर सोहवतके सौदागरोको वुलवाया और राहदारीकी चुगी लेकर उस काफिलेको आगे जाने दिया। 6 इधर मोटे राजाने भी काफिलेके सामने अपने आदिमियोको भेजा था। 7 8 भाटी भानीदास सोहवतको अपने मार्ग पर डाल और वहासे रवाना होकर माडणसर गावमे ठहरा था, वहा रावके जैसावतो और दूसरे आदमियोंने भानीदासको मार दिया। 9,10 राव डूगरसी तो तोभी गई कर रहा था, परन्तु मोटा राजा तो पाव पछाडता हुआ भाटियोंके पीछे लगा हुआ था, (छेडखानिया करता ही रहता था।) 11 बुराई पर बुराई (छेड-छाड) करता ही रहे, उन्ही दिनो वालेसर गावको भी लूट लिया। 12 तव राव डूगरसीने सभी केल्हण-भाटियोको इकट्ठा करके २५०० आदमियोंके साथ कुडल गावमे रावके तालाव पर आकर डेरा डाल दिया। 13 मोटा राजा भी अपने ५००/७०० आदमियोंके साथ भाटियो पर चढ कर आ गया। वहा सम्वत् १६२७के उतरते आसोज और कार्तिक मासके लगते लडाई हुई।

भाटियारी तरफ[1] । मोटा राजारो साथ काम आयो । मोटो राजा आप नीसरियो फळोधी आयो, भाटी फळोधी सेंहर ऊपर नही आया[2] ।

डूगरसीरा बेटा—

९ राव उदैसिघ विकूपुर धणी । बळोच समै राव आसकरण पूगळरो धणी मारियो हुतो, सु उदैसिघ समानू घणा साथसू मारियो, वडो दावो वाळियो[3] । नै मेहेवै तलवाडा ऊपर कँवरपदै उदैसिघ गयो हुतो, तठै वेढ उदैसिह कँवरपदै हारी थी, तठै घणा साथ मारियो हुतो[4] ।

९ देवोदास डूगरसीरो ।

राव उदैसिघरा बेटा, आक ९—

१० राव सूरसिंघ ।

१० ईसरदास, सिरड वसियो थो । समत १६८५ भा।। वस्तै फळोधी थकै हाकम थकै मारियो[5] ।

११ रुघनाथ । ११ हाथी । ११ नाहरखान । ११ लिखमीदास । ११ पूरो । ११ सहसो ।

१० करननू राव अचळदास विक्रमादीयोत मारियो ।

१० रासौ उदैसिंघरो, वीकानेर चाकर । वीठणोक कनै जाय

---

1 भाटियोकी तरफमे वरमलपुरका ठाकुर राव मडलीक इस लडाईमे काम आया । 2 मोटाराजा भाग कर फलोधी आ गया, लेकिन भाटी उसका पीछा करके फलोधी शहर पर नही आये । 3 समा वलोचने पूगलके स्वामी राव आसकरणको मार दिया था इसलिये उदयसिहने समाको उसके कई आदमियोके साथ मार दिया, शत्रुता का बडा वदला चुकाया । 4 उदयसिह कुँवरपदेमे मेहवेके तिलवाडा गाव पर चढ कर गया था, जहा बहुतसे आदमियोको उसने मार दिया था, लेकिन इस लडाईमे वह हार गया था । (वि०—तिलवाडामे लूनी नदीके पाटमे भक्त रावल मल्लीनाथ और उनकी पत्नी रानी रूपादेके नामसे प्रति वर्ष चैत्र कृ ११ से चैत्र शु ११ तक मारवाड का प्रसिद्ध व्यापारी मेला (चैत्री का मेला) लगता है । तिलवाडासे लूनी नदीके उस पार थान गावके पास रावल मल्लीनाथजी का ऊचा और बडा मदिर बना हुआ है । वहासे कुछ ही दूर मालाजाळ गावमे रानी रूपादे का मदिर भी बना हुआ है । राठौडो की मारवाडमे सर्व प्रथम राजधानी खेडपट्टन (क्षीरपुर) से तिलवाडा चार मील है और खेड प्रसिद्ध व्यापारिक-केन्द्र बालोतरासे पाच मील पश्चिममे है ।) 5 ईशरदास सिरहडमे वस गया था । सम्वत् १६८५मे जब वह फलोधीमे हाकिम था, वस्ताने उसे मार दिया था ।

रयो, तिका ठोड रासारो-गुढो हमैही कहीजै छै। वस्ती घर ५०० तथा ७०० सदा रहता[1]।

११ वाघ। ११ सवळसिंघ।

१० अरजन।

१० कचरो, वीकानेररो चाकर। माडाळ वसियो[2]।

१० राव सूरजसिंघ उदैसिंघोत। विकूपुर धणी हुवो। वडो ठाकुर अभगनाथ हुवो[3]। वडा-वडा प्रवाडा खाटिया[4]। एक वार मोहवत-खांननू नागोर[5], तद घणो साथ वीकानेर, नागोर फळोधीरो ले ऊपर आयो[6], तद राव आदमी २००० तथा २५०० केल्हण सारा भेळा कर पाधरो वाप जाय उतरियो[7]। पछै मुहतो जगनाथ फळोधीरै हाकम वीच फिरनै वात की[8]।

समत १६६२ प्रथीराज, अखैराज दलपतोत राव उदैसिंघ वाघोतरै दावै हमीरा-भाटिया ऊपर दोडिया हुता[9]। तिण दिन[10] राव सूरज-सिंघ नै कँवर वलू विरस[11] हुवो थो, सु वलू विकूपुरसू छाडनै कैर-डूगररी पाखती आयो थो[12]। तठै पोकरणरा थाणारो साथ भा॥ दुरगदास, मेघराजोत, भा॥ द्वारकादास, एका हमीर वलूनू मनावण सारा भाटी नै राव सूरसिंघ आया था। उठै वाहाऊ[13] आयो तठै राव सूरसिंघ, वलू, भा॥ दुरगदास मेघराजोत, भा॥ द्वारकादास ईसरदा-सोत, भा॥ रुघनाथ ईसरदासोत, एको हमीर, सिगळो राहावणो

---

1 रामा उदयसिंह का वेटा, वीकानेर महाराजा का चाकर। वीठणोक गावके पास जाकर रहा (नई वस्ती वसाई) वह स्थान अभी तक 'रासा-रो-गुढो' कहा जाता है। वहा ५००/७०० घरो की वस्ती सदा रहती है। 2 कचरा वीकानेर महाराजा का चाकर। माडाळ गावमे रहा। 3 वडा निर्भय और वीर ठाकुर हुआ। 4 वडे-वडे युद्ध जीत कर कीर्ति प्राप्त की। 5 एक वार नागोर जव मोहवतखाके अधिकारमे था। 6 चढ कर आया। 7 तव रावने दो-ढाई हजार मारे केल्हण-भाटियोको इकट्ठा करके सीधा वाप जाकर डेरा डाला। 8 पीछे फलोधीके हाकिम मुहता जगन्नाथने बीचमे पड कर के सुलह करवा ली। 9 सम्वत् १६६२मे राव उदयसिंह वाघोतकी शत्रुताका वदला लेनेके लिये पृथ्वीराज और अखैराज दलपतोत हमीर-भाटियोके ऊपर चढ कर आये थे। 10 उस दिन। 11 वैमनस्य। 12 इसलिये वलू विकूपुर छोड कर के कैर-डूगरीके पास आकर रह गया था। 13 दूत।

जेसळमेर विकूपुररो सारो वासै दोडियो[1]। फळोधी परै कोसे १५ मुडेळाई मागळियारो गाव[2], तठै राव खेतसी दुजणसलोत रहतो थो, तठै जाय अै डेरो कियो[3], सु राव खेतसी साथ आवतो दीठो तरै ढोल दिरायो[4]। तरै राव प्रथीराज अखैराज ही सभिया[5], तितरै साथ उणारो आगै-पाछै आवतो गयो, त्यू अै वेढ करता गया[6]। राव सूरसिघ, वलू कँवर काम आया[7]। नै भाटी द्वारकादास, भाटी दुरगदास, भा॥ रुघनाथ सारो पोकरणरो साथ नीसरियो[8]। राव सूरसिघ, कवर बलू आदमी २ हमीर, मुथरो, पतो आदमियासू काम आया[9]।

विकूपुररै धणिया नै राठोडै सगाई, तथा बीजा[10]–

१ रा॥ चद्रसेन राव डूगरसीरी बेटी परणियो।

१ मोटो राजा राव दुजणसलरी बेटी हरखा परणियो[11]।

१ मोटो राजा भाटी जैमल कलावतरै परणियो[12]।

१ मोटो राजा भाटी जगमाल खीवावतरै परणियो[13]।

केल्हणा नै वीकानेररा धणिया सगाई[14]–

१ राजा रायसिघजी भाटी भानीदासरी बेटी जसोदा परणियो[15]।

१ राव सूरजसिंघ राव आसकरणरी बेटी परणियो।

१ राव सूर(सिंघ) भाटी तेजमाल किसनावतरी बेटी परणियो।

१ राव करन भाटी सुदरसण मानसिघोत सिरहडियारी बेटी परणियो[16]।

---

1 जैसलमेर और विकूपुरके सभी लोग एव उनके सभी चाकर (गोले) पीछे चढ कर आये। 2 फलोधीसे परे कोस १५ पर मागलियोका मूडेलाई गाव। 3 वहा जाकर उन्होंने डेरा डाला। 4 तब राव खेतसीने साथको आते देखा तो ढोल बजवा दिया। 5 तब राव पृथ्वीराज और अखैराज भी तैयार हो गये। 6 आगे पीछे ज्यो-ज्यो इनका साथ आता गया त्यो त्यो ये लडाई करते गये। 7 राव सूरसिंह और कुँवर वलू काम आये। 8 निकल भागा। 9 हमीर, मथुरा और पता इन आदमियोके साथ राव सूरसिंह और कुँवर वलू ये दोनो काम आये। 10 विकूपुरके स्वामियोका राठौडो और दूसरोके सबधोका विवरण। 11 मोटा राजाका राव दुर्जनसालकी बेटी हरखासे विवाह हुआ था। 12 मोटा राजा भाटी जयमल कलावतके यहा व्याहा। 13 मोटा राजा भाटी जगमाल खीवावतके यहा व्याहा। 14 केल्हण-भाटियो और बीकानेरके स्वामियोके सबधो का विवरण। 15 राजा रायसिहजी भाटी भानीदासकी बेटी यशोदासे व्याहे। 16 राव करन सिरहडिया भाटी सुदर्शन मानसिहोतकी बेटीसे व्याहा।

भाटिया-केल्हणा नै कछवाहा सगाई[1]–

१ कछवाहो महासिंघ मानसिंघोत राव आसकरण पूगळियारी वेटी परणियो[2]।

१ कछवाहो माधोसिंघ राव डूंगरसी विकूपुरियारी वेटी परणियो[3]।

राव सूरसिंघरा वेटा–

११ वलू राव साथै कांम आयो समत १६९२[4]।

१२ किसनसिंघ, समत १७२१रा पोह वद २ ननेउरै चढियां राव विहारी मारियो। पछै जैतसी किसनानू मारियो[5]।

१३ कुसळो।

११ पिरागदास।

१२ पतो।

११ मोहणदासनू, सूरसिंघ वलू मारिया पछै विकूपुर टीको हुवो[6]।

१२ राव जैतसिंघनू मोहणदास मुआ[7] एक वार टीको हुवो। पछै समत १७११ विहारी कोट लियो[8]।

१३ मालदे।

११ राव विहारीदास सूरसिंघरो। के दिन तो वीकानेर चाकर हुतो[9]। पछै रावळरा हुकमसू जैसिंघ कना[10] कोट लियो। विकूपुर धणी हुवो। भलो सुसतो सो ठाकुर हुवो[11]। पछै समत १७२१रा पोह वद २ वेटो विहारीरो परणण गयो थो[12], वासै साथ थोडासू कोट

---

1 केल्हण-भाटियो और कछवाहोंके सबंध। 2 कछवाहा महासिंह मानसिंहोत पूगलिया-भाटी राव आसकरणकी वेटीमे व्याहा। 3 कछवाहा माधोसिंह विकूपुरिया-भाटी राव डूंगरसीकी वेटीमे व्याहा। 4 वलू अपने वाप राव सूरसिंहके साथ सम्वत् १६९२मे काम आया। 5 किशनसिंहने सम्वत् १७२१की पोष वदी २ को नैनेऊसे चढ कर राव विहारीको मारा परन्तु जैतसीने पीछे किसनाको मार दिया। 6 सूरसिंह और वलूके मारे जानेके वाद विकूपुरका टीका मोहनदासको हुआ। 7 मर जानेके वाद। 8 पीछे सम्वत् १७११मे विहारीने कोट पर अधिकार किया। 9 कई दिन तो वीकानेरमे चाकर रहा था। 10 पास से। 11 भला परन्तु सुस्त सा ठाकुर हुआ। 12 विवाह करनेको गया था।

थो[1] ननेऊरं चढिया आदमी १०सू भा।। किसनै बलुवोत मारियो ।

१२ राव जैतसी । १२ गजसिंघ । १२ चद्रसेन । १२ जगरूप ।

११ दळपत साहिबदेरो बेटो, जैतावतारो भाणेज[2] ।

११ खेतसी ।

७ साहबखान ।

तळाई विकूपुररै नजीक[3]–

१ तिलाणी–कोस १, मास १ पाणी रहै ।

१ राणीवाळो–नोख सेवडा विचै, पाणी मास ४[4] ।

१ चद्राव–भाटीरो, सेवडा थी कोस , पाणी मास ४ ।

१ बह–सेवडा कनै, पाणी मास[5] २ ।

१ वरजाग–जैतुग सेवडा वीच कोस ३, पाणी मास ४ ।

१ गोपाळी–नीबली कनै, पाणी मास ४ ।

१ हरख–जैसिंघरी सिरहड, पाणी मास १०[6] ।

१ गोधणली–सिरहड नजीक, पाणी मास ६, जूनी छै[7] ।

१ हरराजरी लोहडी–सिरहड कनै, पाणी मास ४ ।

सिरहड तळाई (१००) कुवा ३ मीठा, पुरसै २०[8] ।

सिरहड-लोहडी–कूवा १८ पाणी मीठो, तळाई घणी[9] ।

जैतारी, पाणी मास ५ ।

भथरी, पाणी मास ४ ।

वावडी दळपतरी ।

तळाव राणाहळ, मास ८ पाणी । वेरा घणा[10] ।

---

1 पीछे कोटमे थोडे ही मनुष्य थे । 2 दलपत साहिबदेवीका बेटा और जैतावतोका भानजा । 3 विकूपुरके पासकी तलाइयोका विवरण । 4 नोख और सेवडा गावोके बीच 'राणीवालो' नामक तालाव जिसमे चार मास पानी रहता है । 5 सेवडाके पास 'बह' नामक तलाई, जिसमे पानी दो माम रहता है । 6 जयसिंहके सिरहड गावके पाम 'हरख' नामक तालाब, जिसमे १० मास पानी रहता है । 7 सिरहडके नजदीक गोधणली नामक तलाई, जिसमे पानी ६ मास रहता है । गोधणली पुरानी तलाई है । 8 सिरहडमे (आसपास तलाईया १०० हैं और) २० पुरुष गहरे मीठे पानी के तीन कुएँ हैं । 9 सिरहड-लोहडीके (छोटी सिरहडके) प्रदेशमे वहुतसी तलाईया और मीठे पानीके १८ कुएँ हैं । 10 कुएँ वहुत ।

पूनादेरी, विकूपुर वरसलपुर विचै, कोस १२ ।
वीका सोळकीरो (तळाव) कोस ३ उत्तरनू, पाणी मास ४ ।
खेतपाळरो टोभो, कोस २, पाणी मास २ ।
वाखळवाळी, कोस २, पाणी मास ४ ।

तळाई विकूपुररै देस–

१ अचनाणी–कोस १० राणेरी कनै[1], पाणी मास ६ ।
१ नीवली–नीवा मुहतारी, कोस १२[2], पांणी मास ४ ।
१ माडाळ–माडा मुहतारी, कोस[3] ६ पाणी मास ४ ।
१ कांनडियारी–काना सोढारी, कोस १०[4], राणेरी कनै, पाणी मास २ ।
१ लूडी रामसर–विकूपुर था[5] कोस , पाणी मास २ रहै ।

विकूपुररै देसरी हकीकत ।

कोहर इण भात[6]–

रजपूतां और लोगारै वट गाव[7]–

जसहडारै–गाव नोख । कोहर २० ।
मिघरावारै–१ नारणसर, १ भारमलसर ।
वोडाणारै–१ भीदासर ।
टावरिया मकवांणांरै भेळो–टावरियावाळो[8] ।
गोगलियांरै–१ गोगलीसर ।
भुण-कमळारै–१ गाव नोख, १ चारण वाळो ।
नेतावत-भाटियारै–१ सेवडो । कोहर २० ।
गैहलोतारै–गैहलोता वाळो ।
प्रोहितारै–१ प्रोहित वाळो ।

---

1 पास । 2 नीवली नामक तलाई मुहता नीवाकी बनवाई हुई है जो विकूपुरसे १२ कोस पर है । 3 माडाल तलाई मुहता माडाकी बनवाई हुई, विकूपुरसे ६ कोस पर । 4 कानडियारी नामकी तलाई काना सोढाकी बनवाई हुई, विकूपुरसे १० कोस । 5 से । 6 कूएँ इस प्रकार है । 7 राजपूत और दूसरे लोगोंके बँटवारेमे आये हुए गावोकी सूची । 8 टावरियोवाला नामक गाव, टावरियो और मकवानोका सम्मिलित ।

प्रोहितारा धडा २–एक वडो, एक नोहटो[1] ।

सोळकियारै–सोळकियावाळो ।

सोमारै–१ ग्रावधी, १ वजू, १ कूपासर, १ पीथासर ।

मूळावत रिणधीररा पोतरारै–१ जमूवेगो ।

डाहळिया–रजपूतारो गाव नगररै कोहर किडाणै पीवै[2] ।

नायारै–१ नायारो-कोहर ।

सिरहड-वडी–पैहली पाहुवारै हुती[3], पछै राव सूरसिंघ आपरा[4] भाई ईसरदासनू दी ।

जैतुगारै–१ कोळियासर ।

१ गिरराजसर ।

१ नगराजसर ।

१ चिहु ।

१ वहदडो ।

१ जुढियो सेवडो ।

चारणारै गाव ३[5]–

२ गाडणारै–१ खडोखळी, १ मेघारो, १ देपारो । (३)[6]

१ कन्हियारै–वरजागरो ।

१ रतनुग्रारै–वुढारो गाव ।

सिरहड-वडी–पैहली पाहुवारै हुती[7], पछै जसहडानू दी थी । हमैं भानीदासरा वेटा वसै[8] । कोहर १८, तळाई घणी । वावडी[9] भा।। दळपतवाळी । वेरा[10] पुरसे ४ ।

पारमे पाणी घणो मीठो । वाय[11] २, पाणी पाररै वेरै पुरस ४, पाणी मीठो । तळावमे घडासर भरै तो पाणी वरस १ रहै[12] ।

---

1 छोटा । 2 डाहलियो राजपूतोका गाव नगरके लोग किडाणा गावके कुएंका पानी पीते हैं । 3 वडी सिरहड गाव पहले पाहुवा-राजपूतोका था । 4 अपने । 5 चारणोके तीन समूहोके गाव । 6 गाढण-चारणोके अधिकारमे सिरेमे दो गाव वताये हैं किन्तु पेटमे उक्त तीन गाव दिये हुए हैं । 7 थी । 8 अव भानीदास के वेटे रहते है । 9 वापी, वावडी 10 कुएँ । 11 वापी । 12 तालावमे घडोसे ही (केवल पीनेके लिये) पानी भरा जाय तो १ वर्ष तक पानी रहे ।

नीवली–तिण कोहर ६[1], सर बाभणावाळो तळाव वडो[2], वेरा पार मे।

भरोसर–केई कहै विकूपुररो, के कहै जुदो[3]। पारमे वेरा पाणी घणो। विकूपुर था कोस १६, फळोधी था कोस २२, वीकानेर था कोस २५।

पूगळरा धणी–

१ राव केल्हण केहररो।

२ राव चाच केल्हणरो।

३ राव वैरसल चाचारो।

४ राव सेखो वैरसलरो।

५ राव हरो सेखारो।

६ राव वरसिंघ हरारो।

७ राव जेसो वरसिंघरो।

राव जेसो वरसिंघरो पूगळ धणी हुवो। मरोट पिण ली हुती[4]। वडो अखाडसिध-अभंगनाथ हुवो[5]। कहै छै राव जेसे वावीस वेढ जीती[6]। वडा-वडा वोल वाळिया[7]। आप मरोट पिण केहेक दिन रहतो[8]। पछै मुलताणरी फोज ऊपर आई तठै राव जेसो काम आयो[9]।

वात एक–

राव मालदेव गागावत घणू तपियो[10], तरै सारा गढा, पाडो-सियानू धकाया[11]। मु पूगळ ऊपर राव मालदेवरी फोज घणो साथ आयो हुतो[12], पण तिणारा गाव इण काठै नही[13], नै राव भांण

---

1 जिसमे कूँएँ ६। 2 ब्राह्मणोवाला-सर नामक तालाव वडा है। 3 भरोसर गावको कई तो विकूपुरका कहते हैं और कई कहते हैं कि वह जुदा है। 4 मारोठ भी इसने ले लिया था। 5 वडा रण-कुशल और अजेय वीर हुआ। 6 कहते हैं कि राव जैसेने २२ लडाईया जीती थी। 7 वडी-वडी प्रतिज्ञाओका पालन किया। (शत्रुओका प्रतिशोध किया) 8 कई एक दिन (कभी-कभी) मारोठमे भी रहा करता था। 9 फिर जव मुलतानकी सेना चढ कर आई उसमे राव जैसा काम आ गया। 10 राव मालदेव गागावतने वहुत समय तक और जवरदस्त शासन किया। 11 उस समय सभी गढ (गढपतियो) और पाडोसियोको परास्त किया। 12 राव मालदेवकी वहुत वडी सेना पूगल पर चढ कर आई थी। 13 लेकिन इस ओरकी सीमा पर इनका कोई गाव नही।

भोजराजोत चाडीरो धणी कटक साथै हुतो[1], तिणसू असखेधो करनै चाडी ऊपर आयो[2]। तठै तीन वेढ जीती[3]। एकतो रा।। प्रथीराज भोजराजोत चाडी गावरै खेडै काम आयो[4]। कलो रतनावत गाव करणूरो धणी, पातावत कितराइ साथसू वाहर रिणमलसर कनै आपडियौ[5], तठै वेढ हुई। कलानू कूट लोहडै पडियो[6], कलारी आख गई। वेढ जेसै जीती। आघा खडिया[7] तठै[8] पोकरणरो साथ रावरै थाणैरो रा।। भोजराजरो बेटो राणगदे हुतो, सु साथ लेनै आपडियो[9], नै[10] फळोधी थाणै रावरै भाटो धनराज खीवावत कलेण हुतो, तिके बेऊ[11] साथ गाव लाखासर वीकानेररै आपडियो, तठै वेढ हुई, राव राणगदे भोजराजोतरा आदमी १७ काम आया। आप पूरे घावै पडियो, ऊवरियो[12]। भाटी धनराजनू भाटीए राख लियो[13]। वेढ आही जेसै जीती[14]। यू तीने ही वेढ जीती[15]।

केहीक यू पण कहै छै[16]—राव जेसो केईक दिन जोधपुर राव मालदेरै वास हुतो[17]। परगनै मेडतैरो गाव रायण पटै थो। पातावतारो भाणेज हुतो[18]। केईक दिन चोटीलै रह्यो थो, तद पातावते घणा हीडा किया[19]।

गीतरो द्वाळो राव जेसारो[20]—

अणभागो कळह सील सत इधकै,
असुर घडा चोरग चढ एम।

---

1 और चाडीका स्वामी गाव भाण भोजराजोत सेनाके साथमे था। 2 जिससे झगडा करके चाडीके ऊपर चढ आया। 3 वहा पर तीन लडाईयोमे विजय प्राप्त की। 4 चाडी गावमे (के बाहरी प्रदेशमे) काम आया। 5 बाहर (पीछे) चढ कर के रिणमलसरके पास पकडा। 6 कलाको मार कर घायल कर दिया। 7 आगे चलाये। 8 वहा। 9 पकडा। 10 और। 11 दोनो। 12 स्वय पूर्ण आहत होकर गिर पडा, किन्तु बच गया। 13 भाटी धनराजको भाटियोने बचा लिया। 14 यह लडाई भी जैसेने जीत ली। 15 इस प्रकार इसने तीनो ही लडाईयोको जीत लिया। 16 कई लोग इस प्रकार भी कहते हैं। 17 चाकरीमे था। 18 पातावतोका भानजा था। 19 तब पातावतोंने इसकी बहुत सेवा की। 20 राव जैसाके सबधमे कहे हुए गीत (छद)का एक पद्याश।

जो जीवीजै तो जेसा जिम,<br>
जे मरजै तो जैसा जेम[1] ॥ १

आक ८, राव कांन्ह जेसारो। पूगळ धणी हुवो। जेसानू मुगले मरोटमे मारियो, तद कान्ह बद पड़ियो हुतो[2]। पछै महाराजाजी रायसिंघजी, महाराजा मानसिंघजी पातसाजीसू अरज कर छोडायो।

राव कांन्हरा बेटा—

९ राव आसकरण कान्हरो, पूगळ धणी हुवो। समो बलोच पूगळ ऊपर आयो, राव कोट छोड पाधर मे वेढ की, तठै घणा साथसू काम आयो[3]।

९ रामसिंघ कान्हरो।

९ मानसिंघ कान्हरो। नागोर राजा रायसिंघजी नै दलपत वेढ हुई तरै कांम आयो[4]।

१० सूरजमल।

आक ९, राव आसकरण कान्हरो, पूगळ धणी हुवो।

बेटा आसकरणरा—

१० जगदेव आसकरणरो। १० नारणदास। १० सुरताण।
१० किसनसिंघ। १० गोयंददास। १० किसनदास।

आक १०, राव जगदेव आसकरणरो पूगळ धणी हुवो।

राव जगदेवरा बेटा—

११ राव सुदरसण जगदेवरो। रा॥ मांन खीवावतरो दोहीत्रो[5]। जगदेव मुवो, एक वार टीकै वैठो पूगळ। पछै समत १७२२ राजा करण पूगळ मारनै इणानू परा काढिया[6]।

---

1 अधिक शील और सत्यका पालन करने वाला राव जैसा शत्रुओकी चतुरंगिनी सेनाके सम्मुख चढ कर गया और युद्धमे पीछे पाव नही दिया। (ससारमे) यदि जिया जाय तो जैसाके समान और मर जाय तो जैसाके समान। (जीने और मरनेका जैसेने आदर्श उपस्थित किया)। 2 तब कान्ह कैदमे पडा था। 3 रावने कोट (का आश्रय) छोड कर मैदानमे लडाई की, जहा कई मनुष्योके साथ काम आ गया। 4 कान्ह मानसिहका बेटा, नागोरमे राजा रायसिहजी और दलपतके परस्पर लडाई हुई तब मानसिह काम आया। 5 खींवाके पुत्र राव मानका दोहिता। 6 फिर सम्वत् १७२२मे राजा करणने पूगलको लूट कर के इनको निकाल दिया।

११ महेसदास जगदेवरो। वीकानेररै साथ मारियो, संमत १७२२[1]।

११ जसवत। ११ गोकळ। ११ खगार। राजसिंघ।

वात गाडाळा-केलणारी–

आगै आ खरड, इणनू कहवत माहे गाव १४० लागै[2]। आ ठोड पैहली तो भाटिया-वुधा, राणै राजपाळरा पोतरारै हुती[3]। पछै वुधा कनै पडिहार राणै रूपडै ली[4]। तठा पछै विकूपुरथा रिणमल केलणोत तीसरियो सु पडिहारारो भाणेज थो, पछै एक वार भाणेज थको आय रह्यो हुतो[5]। पछै पडिहार दिन दिन गळता गया[6]। भाटी धरती दबावता गया। मुदै गाव वारू, तठै कोहर १२, वडो कोहर हेमराज-सर पडिहार हेमराजरो करायो[7]।

वुध राणा राजपाळरो।

राजपाळ, सागो, मझमराव, मगळराव, विजैराव–रावळ वछूरा[8]।

तिण राणा राजपाळरा वुधरो वेटो कमो, तिणरा धाराधार कहाणा[9]। वापसू कोस १ वावडी तठै उणरी वडी ठाकुराई हुई।

राणा राजपाळरी तो ठाकुराई मुथरा हुती। उठै मुगले राणा राजपाळनू मारियो, तरै राजपाळरो वेटो वुध मुथरा छोडनै इण खरड आय वसियो[10]। सु खरडरो नाम वुधरो अजेस कहीजै छै[11]। वुधरा वेटा कमानू राणै रूपडै पडिहार वेटी परणाय[12], चूक कर मारनै[13] आ[14] धरती ली थी, तठा पछै[15] राव केल्हण विकूपुर वसियो[16]। पछै राव केल्हण मुवो[17]। टीको रिणमल केल्हणोतनू हुवो। पछै रिणमल ही मुवो।

---

1 सम्वत् १७२२ मे वीकानेर वालोने मार दिया। 2 पहले ऐसा कहा जाता है कि इस खरड प्रदेशमे १४० गाव माने जाते थे। 3 यह प्रदेश पहले राणा राजपाल के पोते बुध-भाटियोके अधिकारमें था। 4 फिर वादमे वुध-भाटियोसे पडिहार राणा रूपडा ने (खरड) ले ली। 5 फिर एक वार भानजेकी स्थिति मे ही आकर रहा था। 6 फिर पडिहार तो दिन-दिन कमजोर होते गये। 7 वडा कुआं हेमराजसर जो पडिहार हेमराज का वनवाया हुआ है। 8 ये रावल वछूके वेटे। 9 उस राणा राजपाल का वेटा वुघ और जिसका वेटा कमा, जिसके वशज धाराधार कहलाये। 13 तव राजपाल का वेटा वुघ मथुरा छोड कर इस खरड प्रदेशमें आकर रह गया। 11 उस खरड प्रदेश का नाम अभी तक 'वुधेरो' कहा जाता है। 12 व्याह कर के। 13 कपटसे मार कर के। 14 यह। 15 जिसके वाद। 16 निवास किया। 17 मर गया।

विगत–

१ राव केल्हण केहररो ।

२ राव रिणमल केल्हणोत ।

३ गोपो रिणमलोत, विकूपुर पाट हुतो[1] । गोपा कनो[2] राव हरै विकूपुर लियो । गोपो एक वार फळोधीरी लोहडी आयो हुतो[3], पछै मोत मुओ[4] ।

३ जगमाल रिणमलरो । कहै छै एक वार रिणमल मुवै टीको हुवो थो[5] । पछै अचळो रिणमलोत मुलताण जाय तुरकारो कटक आण[6] जगमालनू मरायनै वडा भाई गोपानू विकूपुर रै पाट वैसांणियो[7], नै जगमालरा वेटानू परो काढियो[8] ।

४ जैतो पडिहारारो भाणेज थो, सु वाहिण मामा कनै जाय वसियो[9] । पछै पडिहार दिन दिन गळता गया[10], धरती सारी केल्हणे क्यु दे-लेनै दबाई[11] । खरडरी धरती सारीरा धणी केल्हण हुवा । पण पडिहार अजेस इणा गावा माही छै[12] । आ खरड विकूपुरसू जुदी जेसळमेर वासै[13], जुदी चाकरी करै[14] ।

जैतो जगमालरो । जगमाल रिणमलरो ।

५ ऊदो जैतारो ।

६ अभो ऊदारो ।

७ हाथी अभारो ।

८ रांम महेवै कांम आयो, राव उदैसिंघ वेढ हारी तद[15] ।

९ खेतसी रामरो ।

---

1 विकूपुरकी गद्दी पर था । 2 से । 3 था । 4 जिसके बाद अपनी मौत मरा । 5 कहा जाता है कि रिणमल मरनेके बाद एक बार इसे टीका हुआ था । 6 लाकर । 7 बिठाया । 8 और जगमालके बेटेको निकाल दिया । 9 वह वाहिणमें अपने मामाके पास जाकर बस गया । 10 जिसके बाद पडिहार दिन-दिन निर्बल होते गये । 11 कुछ दे-लेकर सारी धरती केल्हणोंने अपने अधिकारमें कर ली । 12 लेकिन पडिहार अभी तक इन गावोंमें रहते है । 13 यह खरड-प्रदेश जैसलमेर राज्यमें है, विकूपुरका खरड-प्रदेश इससे अतिरिक्त है । 14 ये चाकरी भी जुदी करते हैं । 15 महेवेकी जिस लडाईमें राव उदयसिंह हारा उसमें राम काम आ गया ।

१० जैसो। १० भागचद।

६ पचाइण। ६ मालो। ६ चादो। ६ मुथरो।

केल्हणारी खरडरा इतरा कोहर[1] (१२)

बारू–१ वडो कोहर हेमराजसर, हेमराज पडिहाररो। पुरसै २५, पाणी मीठो[2]।

१ आकळी।
१ गीधळो।
१ चाडी।
१ नरसिघवाळो।
१ खीचियावाळो।
१ तोळाऊ बीजो[3]।

१ अवाह, पुरसै १७ पाणी मीठो।
१ नादडो।
१ मीठड़ियो।
१ नाचणो।
१ लीकणो।
१ भडळो।

गाव–

१ बारू।
१ सेखासर, कोहर नही।
१ खीरवो, कोहर नही।
१ नाचणो, हरभम-केल्हणोतरानू[4]।
१ अवाह।

१ अतरगढो। १ लीकणो।
१ घटियाळी। १ सतिआहो। १ झाडहर।
१ बालाणो। १ कैरू।
१ ताणाणो।

तळाई खरड वासै[5]—

१ राणारी, मास ८ पाणी, राणा रूपडारी खणाई[6]।

१ रावरो तळाव, मास ८ पाणी रहै।

१ खेतूरी। १ मेलूरो। १ जग मालरी। १ देवीदासरी।

१ जवणीरी, सोहड रजपूताणीरी खणाई[7]।

१ अचलाणी, पाणी मास ६ रहै।

१ सेखासर, सेखारो करायो वडो तळाव[8]।

---

1 केल्हण-भाटियोके खरड-प्रदेशमे इतने कुएँ हैं। 2 बारू गाव मे हेमराज पडिहार का बनवाया हुआ वडा कुआँ हेमराजसर है, जो २५ पुरस गहरा है और पानी मीठा है। 3 दूसरा। 4 नाचणा गाव हरभम-केल्हणोतोको। 5 खरड-प्रदेशको लगने वाली तलाइयाँ। 6 राणा रूपडाकी खुदवाई हुई 'राणारी तलाई,' जिसमे ८ महीने पानी रहता है। 7 'जवणीरी तलाई,' जिसे सोहड नामकी राजपूतानीने खुदवाया। 8 सेखाका खुदवाया हुआ 'सेखासर' नामक वडा तालाव।

सेज्जा दढा पाउरणंमि अत्थि, उप्पज्जई भोत्तु तहेव पाउं।
जाणामि जं वट्टइ आउसु त्ति, किं नाम काहामि सुएण भंते ॥

वे गुरु से कहते हैं कि—भगवन्! मुझे दृढ़ आवास मिल गया, वस्त्र भी मेरे पास हैं, और भोजन पानी भी मिल जाता है तथा जो हो रहा है उसे मैं जानता हूँ, तो फिर हे आयुष्यमान्! मैं श्रुत पढ़कर क्या करूँ? ॥२॥

जे केई उ पव्वइए, निद्दासीले पगामसो।
भोच्चा पेच्चा सुहं सुवइ, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥३॥

जो दीक्षित होकर बहुत निद्रालु हो जाता है, और खा पीकर सुख से सो जाता है, वह पाप श्रमण कहलाता है।

आयरियउवज्झाएहिं, सुयं विणयं च गाहिए।
ते चेव खिंसई बाले, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥४॥

जिन आचार्य, उपाध्याय से श्रुत और विनय प्राप्त किया है; उन्हीं की निन्दा करने वाला अज्ञानी, पाप श्रमण कहलाता है ॥४॥

आयरियउवज्झायाणं, सम्मं न पडितप्पई।
अप्पडिपूयए थद्धे, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥५॥

जो घमण्डी होकर आचार्य, उपाध्याय की सुसेवा नही करता, और गुणीजनों की पूजा नही करता, वह पाप श्रमण कहाता है ॥५॥

३ देवो विक्रमादीतरो, तिणरा भरोसरिया-भाटी[1] ।

२ कलकरन केल्हणरो, इणारै गाव ताणाणौ[2] ।

३ चापो ।

४ सागो ।

५ ईसर, तणाणै वसै[3] ।

भाटियारी साख माहै साख हमीरारी कहीजै[4]—

हमीर रावळ देवराजरो । देवराज मूळराजरो, चाकर जेसळमेररा ।

नरो अजावत । अजो किसनावत । किसन चूडावत । आगली खबर नही[5] ।

जैसळमेर च्यार परधान भाटी साख-साखरा[6] । तिणा माहै एक परधानगी हमीरारी भाटियारै पोकरण हुती[7] । तद घणा हमीर कैरडूगर-वोहळा ऊपर रैहता । जेसळमेररै देस गाव १ मछवाळो इणारै, जेसळमेर था कोस ४ जैसुराणा कनै[8] ।

मुथरो रायमलोत, मुथरो हरावत, मानो सिवदासोतरो गूढो कैरडूगर कनै हुतो[9], तठै रा॥ प्रथीराज अखैराज दलपतोत रा॥ उदैसिंघ वाघावतरै वैर इणारा गूढा मारनै समत १६६२ गाया १००० लीवी[10] । वासै पोकरणारो साथ, राव सूरसिंघ बलू नै हमीर, मुथरो, पतो, मानो, वाहरू हुवा[11] । मुडेळाई मागळियारै डेरो कियो[12], ऊपर आया, वेढ हुई[13] । राव सूरसिघ, बलू काम आया । तठै मुथरो, पतो काम आया । पतो पूरे घावै उपाडियो[14] ।

---

1 जिसके वशज भरोसरिया-भाटी । 2 इनके पास ताणाणा गाव । 3 ईशर ताणाणामे रहता है । 4 भाटियोकी शाखाओमे एक शाखा हमीराकी कहलाती है । 5 इसके आगेका पता नही । 6 जैसलमेरमे अलग-अलग शाखाओके चार भाटी प्रधान हैं । 7 उनमे एक प्रधान पद हमीर-भाटियोका पोकरनका था । 8 जैसलमेरसे चार कोस पर जैसुराना गावके पास । 9 गुढा (रक्षा-स्थान) कैरडूगर नामक पहाडीके पास था । 10 उदयसिंह वाघावतकी शत्रुताका बदला लेनेके लिये सम्वत् १६६२ में इनके गुढोको मार कर के इनकी १००० गायें लेली । 11 वाहर चढने को तत्पर हुए । 12 मूडेलाई गावमे मागलियोके यहा डेरा दिया । 13 चढ कर आये और लडाई हुई । 14 पूर्ण आहत पताको उठा कर ले जाया गया ।

संमद्दमाणो पाणाणि, बीयाणि हरियाणि य ।
असंजए संजयमन्नमाणो, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥६॥

प्राणियों, बीज और हरी का मर्दन करने वाला और स्वयं असंयती होकर भी अपने को संयती मानने वाला, पाप श्रमण कहाता है ॥६॥

संथारं फलगं पीढं, निसिज्जं पायकंबलं ।
अप्पमज्जियमारुहई, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥७॥

जो तृणादि का बिछोना, पाट, आसन, स्वाध्याय भूमि, पाँव पोंछने का वस्त्र, इन्हें विना पूंजे बैठता है–काम में लेता है, वह पाप श्रमण कहलाता है ॥७॥

दवदवस्स चरई, पमत्ते य अभिक्खणं ।
उल्लंघणे य चंडे य, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥८॥

जो शीघ्रता पूर्वक–अयतना से चलता है, प्रमादी होकर बालक आदि को उलंघता है और क्रोधी है, वह पाप श्रमण कहलाता है ॥८॥

पडिलेहेइ पमत्ते, अवउज्झइ पायकंबलं ।
पडिलेहा अणाउत्ते, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥९॥

जो प्रतिलेखन में प्रमाद करता है, पात्र और कम्बलादि को इधर उधर बिखेर रखता है और प्रतिलेखना में उपयोग नहीं रखता वह पाप श्रमण कहलाता है ॥९॥

१६६६ राजाजी दिखण थी गुजरात माहै हुय देस पधारिया, तद साथै हुवौ आयौ[1]। पिण पातसाहजी बुरो मानियो[2]। पछै संमत १६७१ रावळै वसियो। दूधवडरो पटो वळै दियो[3]।

१० दयाळदास गोपाळदासोत। समत १६६७ रावळै वसियो। ओळवी पटै[4]। पछै समत १६७८ भाद्राजणरो पटो गाव २४सूं दियौ। पछै समत १६८२ भाद्राजणरो पटो छाडनै ओळवीरो हीज पटो राखियो[5]। भाद्राजण छीतरदास रै हतो[6]। गोपाळदासजी चाकरी न करै। पछै वळै समत १६९० जाळोररो फोजदार कियो[7], उठै राव रायमल उदैसिघोत महेवचानू पकडियो, रोकियो, पछै छोडियो। पछै समत १६९१ जाळोररी हाकमी उतरी[8]। पटो उतरियो[9]। पछै दूधवड था वसी छाडनै बारै गूढो कियो थो[10]। समत १६९१ जेठ सुदि ११ रै दिन राव चाद वाघोत महेवचो मेवाड राणाजीरै वास थो, सु साथ कर ऊपर आयो, दयाळदासनू मारियो[11]।

११ छीतरदास दयाळदासोत। पैहली गोपाळदासजीरी विजाई चाकरी करतो[12]। पछै समत १६९० दूधवडरो पटो दयाळदासनू दियो, तद ओळवीरो पटो दियो थो। पछै समत १६९२ छाडनै अमरसिंघजी साथै गयो थो। पछै वळै पाछो आयो, तरै समत १६९५ भाद्राजणरो पटो राजसिघ था भेळो दियो[13]। राजसिह जसवतोत नू भाद्राजण पटै थो, सु मोहा-माही छीतर नै राजसिघ जसवतोत उपाव हुवो[14], तठै रा॥ राजसिघ जसवतोत छीतरदासनू भाद्राजणरै कोट माहै मारियो।

---

1 तब यह भी साथमे होकर आ गया। 2 लेकिन बादशाहने बुरा माना। 3 फिर सम्वत् १६७१ जोधपुरमे चाकर हो गया। तब दूधवड गावका और पट्टा कर दिया। 4 ओलवी गाव पट्टेमे। 5 लेकिन बादमे सम्वत् १६८२मे भाद्राजुनका पट्टा छोड कर केवल ओलवीका पट्टा ही रखा। 6 भाद्राजुन छीतरदासको मिला हुआ था। 7 बादमे फिर सम्वत् १६९०मे जालोरका फौजदार नियुक्त किया। 8 तब सम्वत् १६९१मे जालोरकी हाकमी उतर गई। 9 गावोका पट्टा भी उतर गया (जागीरी भी खोस ली गई)। 10 फिर दूधवडकी वसीको छोड कर बाहिर गुढा करके रहा था। 11 मेहवचा राव चाद वाघोत मेवाड राणाजीका चाकर था, वह सम्वत् १६९१ जेठ सुदी १ को अपने आदमियोके साथ चढ कर आया और दयालदासको मार दिया। 12 पहले गोपालदासजीकी विजाईमे चाकरी करता था। 13 तब सम्वत् १६९५ राजसिहके साथमे भाद्राजुनका पट्टा कर दिया था। 14 सो छीतर और राजसिह जसवतोतके परस्पर झगडा हो गया।

पडिलेहेइ पमत्ते, से किंचि हु णिसामिया ।
गुरुं परिभावए निच्चं, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥१०॥

जो प्रतिलेखना में प्रमाद करता है और विकथादि सुनने में मन लगाता है। और हमेशा शिक्षादाता के सामने बोलता है, वह पाप श्रमण कहाता है ॥१०॥

बहुमाई पमुहरी, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे ।
असंविभागी अवियत्ते, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥११॥

अति कपटी, वाचाल, अभिमानी, लुब्ध, इन्द्रियों को खुली छोड़ने वाला, असंविभागी और अप्रीतिकारी, पाप श्रमण०

विवायं च उदीरेइ, अधम्मे अत्तपन्नहा ।
वुग्गहे कलहे रत्ते, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥१२॥

शान्त हुए विवाद को पुनः जगाने वाला, सदाचार रहित, आत्मप्रज्ञा को नष्ट करने वाला, लड़ाई और क्लेश करने वाला पाप० ॥१२॥

अथिरासणे कुक्कुइए, जत्थ तत्थ निसीयई ।
आसणम्मि अणाउत्ते, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥१३॥

अस्थिर आसन वाला, कुचेष्ठा वाला, जहाँ कहीं भी बैठजाने वाला और आसनादि के विषय मे अनुपयोगी, पाप०

ससरक्खपाए सुवई, सेज्जं न पडिलेहइ ।
संथारए अणाउत्ते, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥१४॥

१० पचाइण रूपसीयात। समत १६७२ वेरावस खीवसररो पटै। समत १६८४ धारणवाय चौकडी पटै[1]।

१० मोहणदास रूपसीयोत, राव दळपतसिंघजीरै वास थो। सु दळपतजी नै पातसाह वेढ हुई, दळपतजी काम आया, तद हाथी गोपाळदासोत साथै काम आयो[2]।

१० जसवत रूपसीयोत।

११ बलू जसवतोत। समत १६७४ जाळोर रा खारो नरसाणो था[3]। समत १६७७ तुवरा पटै थी। चोखावसणी मेडतारी थी[4]।

१० महेसदास रूपसीयोत। समत १६७४ जाळोररो सेराणो थो, समत १६७७ नीलावो जैतारण रो। समत १६८० चौकडी मेडतारी[5]।

९ डूगरसी आसावत।

१० राघोदास डूगरसीयोत। समत १६७७ जाळोर रो साहेलो गावा ५ सू थो। 'स० १६७८ तिमरणीरी मुहम काम आयो[6]।

११ जगनाथ राघोदासोत। समत १६७८ मेडतारो घोडाहड नै गाव ३ जाळोररा था[7]।

९ ठाकुरसी आसावत।

१० वेणीदास ठाकुरसीयोत। सवत १६६७ चोपडो गाव ५ सू थो पटै। संमत १६७६ पटो तागीर कियो। पछै साहिजादा खुरमरै वसियो। पूरबमे राम कह्यो[8]।

---

1 सम्वत् १६७२मे खीवसरका वेरावस गाव और सम्वत् १६८४में धारणवाय और चौकडी गाव पट्टेमे। 2 तव हाथी गोपालदासोतके साथ यह भी काम आ गया। 3 सम्वत् १६७४मे जालोर परगनेके खारो और नरसाणो गाव पट्टेमे थे। 4 सम्वत् १६७७मे तुवरा गाव और मेडता परगनेका चोखावासणी गाव पट्टे मे थे। 5 सम्वत् १६७४ मे जालोर परगनेका सिराणा, सम्वत् १६७७मे जैतारनका नीलावा और सम्वत् १६८०मे मेडताका चौकडी गाव पट्टेमे थे। 6 सम्वत् १६७७ में जालोर परगनेका साहेला गाव पाच गावोंके साथ पट्टेमे था। सम्वत् १६७८मे तिमरणी के युद्धमे काम आया। 7 सम्वत् १६७८मे मेडते परगनेका घोडाहड गाव और तीन गाव जालोर परगने के पट्टेमे थे। 8 सम्वत् १६६७मे पाच गावोके साथ चोपडा गाव पट्टेमें था। सम्वत् १६७६में पट्टा तागीर हुआ। फिर शाहजादा खुर्रमके यहा बस गया और पूर्वमे मरा।

जो सचित्त रज से भरे हुए पैरों को बिना पूंजे ही सो जाता है, जो शय्या की प्रतिलेखना भी नहीं करता और संथारे के विषय में अनुपयोगी रहता है, वह पाप० ॥१४॥

दुद्धदहीविगईओ, आहारेइ अभिक्खणं।
अरए य तवोकम्मे, पावसमणे त्ति वुच्चइ ॥१५॥

जो दूध, दही और विगयों का बार बार आहार करता है और जिसकी तप कर्म में प्रीति नहीं है, वह पाप०।

अत्थंतम्मि य सूरम्मि, आहारेइ अभिक्खणं।
चोइओ पडिचोएइ, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥१६॥

जो सूर्य के अस्त होने तक बार बार खाता रहता है और ऐसा नहीं करने की शिक्षा देने वाले गुरु के सामने बोलता है, वह पाप० ॥१६।

आयरियपरिच्चाई, परपासंडसेवए।
गाणंगणिए दुब्भूए, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥१७॥

आचार्य को छोड़कर पर पाखण्ड में जाने वाला और छः छः मास में गच्छ बदलने वाला, निन्दनीय साधु, पाप०

सयं गेहं परिच्चज्ज, परगेहंसि वावरे।
निमित्तेण य ववहरई, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥१८॥

जो अपना घर छोड़कर साधु हुआ, फिर भी अन्य गृहस्थों के यहाँ रसलोलुप होकर फिरता है, और निमित्त बताकर, द्रव्योपार्जन करता है, वह पाप श्रमण है ॥१८॥

१२ वीठळदास गोपाळदासोत। सवत १६६७ कूपडावस वीलाडा-रो पटै। समत १६७४ रेवत जाळोररो[1]। समत १६७७ नादियो लवेरारो[2]। पछै छाडियो। भावसिघ कान्होतरै वसियो[3]।

९ रायसिघ जेसावत। संमत १६६० वाडो पीपाडरो पटै। समत १६६२ माडवै काम आयो[4]।

१० सुरताण रायसिघोत। समत १६६६ सूरजवासणी पटै। समत १६८० सिणली धवारी पटै[5]।

११ राघोदास सुरताणोत।

११ बल् सुरताणोत। समत १६८९ जुडली पटै।

९ गोयददास जेसावत। स० १६५२ जैतीवास वीलाडारो पटै। समत १६७१ भाटी गोयददासजी साथै काम आयो।

१० नरहरदास गोयददासोत। समत १६७१ गोयददासजी काम आयो तद लोहडै पडियो थो। समत १६७२ जैतीवास (व)रकरार। स० १६९२ राम कह्यो[6]।

११ रतनसी नरहरदासोत।

१० सुदरदास गोयददासोत। स० १६८० भाभेळाई पटै। समत १६९२ जैतीवास पटै दियो[7]।

१० महेसदास गोयददासोत। सबळसिंघ राजावतरै वास थो। पछै राम कह्यो।

११ कल्याणदास।

९ भाण जेसावत। समत १६५० राजलो-तेजारो पटै थो[8]। पछै समत १६५६ विजियावासणी[9]। स० १६६१ छाडियो। मेडतै

---

1 सम्वत् १६७४ जालोरका रेवत गाव पट्टे मे। 2 सम्वत् १६७७मे लवेराका नादिया गाव पट्टे मे। 3 पीछे छोड कर भावसिह कान्होतके यहा वस गया। 4 सम्वत् १६६०मे पीपाड-का वाडा गाव पट्टे मे। सम्वत् १६६२ माडवेमे काम आया। 5 सम्वत् १६८०मे धवाका सिणली गाव पट्टे मे। 6 सम्वत् १६७१मे गायददासजी काम आये तब यह आहत हुआ था। सम्वत् १६७२मे जैतीवास गाव वरकरार रहा। सम्वत् १६९२मे मरा। 7 सम्वत् १६८०मे भाभेलाई गाव पट्टे मे था और सम्वत् १६९२मे जैतीवास भी पट्टे मे दिया। 8 सम्वत् १६५०मे तेजाका-राजला नामक गाव पट्टे मे था। 9 फिर सम्वत् १६५६मे विजियावासणी गाव पट्टे मे।

सन्नाइपिंडं जेमेइ, नेच्छई सामुदाणियं।
गिहिनिसेज्जं च वाहेइ, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥१९॥

जो अपनी जातिवालों के आहार को ही भोगता है, किन्तु सामुदानिकी भिक्षा नहीं लेता और गृहस्थ की शय्या पर बैठता है वह पाप० ॥१९॥

एयारिसे पंचकुसीलऽसंवुडे, रूवंधरे मुणिपवराण हेट्ठिमे।
अयंसि लोए विसमेव गरहिए, न से इहं नेव परत्थ लोए॥

जो ऐसे पाँच प्रकार के कुशीलों (पार्श्वस्थ, उसन्न, कुशील, संसक्त और स्वच्छन्द) से युक्त, सँवर से रहित और वेशधारी है, वह श्रेष्ठ मुनियों की अपेक्षा नीच है। वह इस लोक में विष की तरह निन्दनीय है। उसका न तो यह लोक सुधरता है न परलोक ही ॥२०॥

जे वज्जए एते सया उ दोसे, से सुव्वए होइ मुणीण मज्झे।
अयंसि लोए अमयं व पूइए, आराहए लोगमिणं तहा परं॥

जो मुनि, इन दोषों को सदा के लिए छोड़ देता है, वह मुनियों में सुव्रती होता है। वह इस लोक में अमृत के समान पूजनीय होकर इस लोक और परलोक की आराधना कर लेता है।

—सतरहवाँ अध्ययन समाप्त—

९ सादूळ राणावत। ९ नाथो राणावत। ९ वैरसल राणावत।

८ अखैराज रायपाळोत।

९ भगवानदास अखैराजोत।

१० सुदरदास भगवानदासोत।

११ गोपाळदास सुदरदासोत। खुरमरी वेढ काम आयो[1]।

१० स्यामदास भगवानदासोत। करमसेनरै वास। पवार भूविया तठै काम आयो[2]।

१० पचाइण भगवानदासोत। करमसेनरै वास।

९ केसोदास अखैराजोत।

९ मनोहरदास अखैराजोत। कछवाहा प्रतापसिंघजीरै वास। पूरव-मे काम आयो।

९ राघोदास अखैराजोत। कछवाहा प्रतापसिंघरै वास थो। पूरबरी मुहम काम आयो[3]।

८ भाखरसी रायपाळोत।

९ मुरताण भाखरसीयोत।

१० सलैदी सुरताणोत।

९ रामदास भाखरसीयोत।

९ नरसिंघदास भाखरसीयोत।

८ किसनदास रायपाळोत।

९ जेतमल सीहावत। राठोड जसवत डूगरसीयोतरै वास थो। जसवत साथै काम आयो।

वात—

भाटी जेसो कलिकरनरो। कलिकरन केहररो। तिण जेसाथी जेसारी-साख कहाणी[4]। जेसै जेसळमेर छाडनै एक वार फळोधीरै गाव किणही रह्या नही[5]। किरडारै जोड माहि आय रह्या[6], तठै

---

1 खुरंमसे लडाई हुई उसमे काम आया। 2 करमसेनके यहा चाकर। पवारोंने लडाई की उसमे काम आया। 3 पूवमे लडाई हुई उसमे काम आया। 4 उस जैसासे भाटियोमे एक शाखा जैसा-शाखा कही जाने लगी। 5 जैसा-शाखाके भाटी जैसलमेर छोड कर फलोधी प्रदेशके किसी भी गावमे एक वार भी नही रहे। 6 किरडा गावकी जोडमें आकर रहे जहा मूला नक्षत्रमे गर्णी लिखमी (लक्ष्मी) का जन्म हुआ।

# संजइज्जं अट्ठारहमं अज्झयणं

कंपिल्ले नयरे राया, उदिण्णबलवाहणे ।
नामेणं संजए नामं, मिगव्वं उवणिग्गए ॥१॥

कंपिलपुर का संजय नामवाला राजा, बहुतसी सेना और वाहनों से सज्जित होकर मृगया के लिये नगर के बाहर निकला ॥१॥

हयाणीए गयाणीए, रहाणीए तहेव य ।
पायत्ताणीए महया, सव्वओ परिवारिए ॥२॥

मिए छुभित्ता हयगओ, कंपिल्लुज्जाण केसरे ।
भीए संते मिए तत्थ, वहेइ रसमुच्छिए ॥३॥

वह घोड़े पर सवार होकर, घोड़े, हाथी तथा रथों के समूह और पायदल—इन चार प्रकार की बड़ी सेना से घिरा हुआ, कम्पिलपुर के केसर उद्यान में पहुँचा और रस मूर्च्छित होकर हिरणों को क्षुभित करता हुआ, भयभीत और थके हुए मृगों को मारने लगा ॥२–३॥

अह केसरम्मि उज्जाणे, अणगारे तवोधणे ।
सज्झायज्झाण संजुत्ते, धम्मज्झाणं झियायइ ॥४॥

उस केसर उद्यान में एक तपोधनी अनगार, स्वाध्याय और ध्यान से युक्त होकर धर्मध्यान ध्याते थे ॥४॥

भाटी अणद जेसावतरो परवार, आक २–

३ नीबो आणदोत । ३ दूदो आणदोत । ३ परबत आणदोत । ३ पीथो आणदोत ।

नीबो आणदोत, आक ३ । राव मालदेरै वास । लवेरो पटै । लवेरै राजथान कियो[1] । लवेरै कढाई, दीवडी, भूजाई, वडो पळो[2] । पछै सूर पातसाहरी वडी वेढ घावै पडियो[3], तरै चाकर उपाड ल्याया, घरै आया पछै काम आयो[4] ।

नीबैरा बेटा–

४ मानो नीबावत । ४ पतो नीबावत । ४ रिणमल नीबावत । ४ गागो नीबावत । ४ किसनो । ४ मूळो । ४ भोजराज ।

माना नीबावतरो परवार, आक ४ । मोटो राजा फळोधी, तद मानो चाकर हुतो, कुडळरी वेढ माही हुतो[5] ।

५ गोयददास मानावत । ५ सुरताण मानावत ।

भाटी गोयददास मानावत वडो रजपूत हुवो । समत १६४० मोटै राजारै वास थो । लवेरैरी वासणी पावता[6] । पछै एक वार मोटै राजा दरगाह मेलियो सु काम कर आयो, तरै मोटै राजा रीझनै मागळो सिवाणारो वधारै दियो[7] । पछै स० १६४३ वास ४ लवेरो

---

1 लवेरेमे अपना राजस्थान (राजधानी) बनाया । 2 इसके समयमे कडाही, दीवडी, भुजाई और वडे पळे के लिये लवेरा प्रसिद्ध था (भोजन बनानेके वडे परिमाणके इन साधनोसे अपरिमित भोजन सामग्री बनती ही रहती थी) । दीवडी=(१) पाथेय, (२) अजाचर्म या कपडेका बना एक जलपात्र । भुजाई=अधिक परिमाणमे बनाई जाने वाली मिष्टान्नादि भोजन-सामग्री । पळो=(१) तैल घी आदि लेने-निकालने एव नापनेका एक उपस्कर, (२) शरण । 3 फिर बादशाह शेरशाह सूरके साथ (राव मालदेवकी) वडी लडाईमे घायल होकर गिर गया । 4 तव चाकर उठा कर ले आये और घर आनेके बाद मर गया । 5 मोटा राजा जब फलोधीमे था तब माना मोटे राजाका चाकर था और कुडलमे जो लडाई हुई उसमे वह मौजूद था । 6 भाटी गोयददास मानावत बडा वीर राजपूत हुआ । सम्वत् १६४०मे यह मोटा राजाके यहा चाकर था । लवेरेके वासणी गावका हासल पाता था (उपभोग करता था) । 7 फिर एक बार मोटे राजाने गोयददासको बादशाही दरगाहमे जिस कामके लिये भेजा था वह करके आ गया, तब मोटे राजाने प्रसन्न हो कर सिवाने परगनेका मागला गाव और दे दिया ।

अप्फोवमंडवम्मि, झायइ खवियासवे ।
तस्सागए मिगे पासं, वहेई से नराहिवे ॥५॥

वे महात्मा आश्रवों का क्षय करते हुए, वृक्ष लताओं के मण्डप में ध्यान कर रहे थे । राजा ने उनके पास आये हुए मृगों को मारा ॥५॥

अह आसगओ राया, खिप्पमागम्म सो तहिं ।
हए मिए उ पासित्ता, अणगारं तत्थ पासई ॥६॥

घोड़े पर चढ़ा हुआ राजा, शीघ्र ही वहाँ आया और अपने मृगों को देखा, साथ ही अनगार को भी देखा ॥६॥

अह राया तत्थ संभंतो, अणगारो मणाहओ ।
मए उ मंदपुण्णेणं, रसगिद्धेण घत्तुणा ॥७॥

मुनि को देखकर राजा भयभीत हुआ । वह सोचने लगा कि मैं रसलोलुप, हतभागी हूँ । मैंने निरपराध जीवों को मारा और अनगार को भी दुखित किया ॥७॥

आसं विसज्जइत्ताणं, अणगारस्स सो निवो ।
विणएण वंदए पाए, भगवं एत्थ मे खमे ॥८॥

राजा घोड़े से नीचे उतरा और मुनिराज के चरणों में विनय पूर्वक नमस्कार करता हुआ कहने लगा–"हे भगवन् ! मेरा अपराध क्षमा करें,, ॥८॥

अह मोणेण सो भगवं, अणगारे झाणमस्सिए ।
रायाणं न पडिमंतेइ, तओ राया भयद्दुओ ॥९॥

साहजादा खुरमरै विखा माहै चाकर रह्यो हुतो[1]। पछै उठाथी छाडियो[2]। को दिन सीघलै जाय कवळै रह्यो[3]। सानरो भोलो हुवो[4]। पछै वळै राजा गजसिघ पगे लगायो[5]। मेवरो पटै दियो[6]। समत १६९५ मुवो[7]।

७ अखैराज।

८ जीवो।

७ सूरजमल, श्रीजीरै वास। तिलाणेस खेतासर पटै।

७ दूदो। समत १६९६ नरहरदास ऊपर भाटी······मालदेओत, गोयददास सहसमलोत नागोर था आया। नरहरदास अठासू नीसरियो[8]। दूदो काम आयो।

७ नाहरखान, श्रीजीरै चाकर। धवो जोधपुररो पटै हुतो, समत १७२१[9]।

६ रामसिघ गोयददासोत, महेवची पूरारो बेटो[10]। समत १६७२ भाटी गोयददासजी काम आया लवेरो रामसिंघ प्रथीराजनू भेळो दियो[11]। समत १६७७ ब्रहानपुर रामसिघसू छाडायो। लवेरो प्रथीराजनू दियो। पछै रांमसिंघ साहिजादै सहरियालरै चाकर रह्यो[12]। पछै कासमीर जाता रा॥ ईसरदास कल्याणदासोतरै चाकर रामसिंघ जगमालरै पैसार पैसनै रातै मारियो[13]। समत १६७२ एक वार आसोप लोवी। राजा गजसिंघ आसोप १६७६ रा॥ राजसिघनू दियो, तिणरै वदळै भेटनडैरो पटो दियो[14]।

---

1 फिर शाहजादा खुर्रमके विखेमे उसका चाकर रहा था। 2 फिर वहासे छोड कर आ गया। 3 कई दिनो तक सिघलोंके यहाँ कवले गावमे जाकर रहा। 4 वहा उसे लकवा मार गया। 5 वादमे फिर राजा गजसिहने पाँवो लगाया (अपने पास बुला लिया)। 6 मेवरा गाव पट्टेमे दिया। 7 सम्वत् १६९५मे मर गया। 8 सम्वत् १६९६मे नरहरदास पर भाटी ··· मालदेओत और गोयददास सहसमलोत नागोरसे चढ आये। नरहरदास वहासे निकल गया और उसका वेटा दूदा वहा काम आ गया। 9 नाहरखान श्रीमहाराजाका चाकर, सम्वत् १७२१मे जोधपुर परगनेका धवा गाव पट्टेमे था। 10 पूरावाई महेवचीका वेटा। 11 सम्वत् १६७२मे भाटी गोयददासके काम आ जाने पर रामसिंह और पृथ्वीराज दोनोको लवेरा शामिल दिया। 12 फिर रामसिह शाहजादे शहरयारके पास चाकर रहा। 13 फिर काश्मीर जाते हुए मार्गमे जगमालके डेरेमे घुस कर ईशरदास कल्याणदासोतके चाकरने रामसिहको मार दिया। 14 उसके वदलेमे भेटनडा गावका पट्टा कर दिया।

मुनिराज, ध्यान में मग्न थे, इससे मौन रहे और राजा को कुछ भी उत्तर नहीं दिया। इससे राजा अधिक भयभीत हुआ ॥९॥

संजओ अहमम्मीति, भगवं वाहराहि मे।
कुद्धे तेएण अणगारे, डहेज्ज नरकोडिओ ॥१०॥

हे भगवन्! मैं संजय राजा हूँ। आप मुझसे बोलिये, क्योंकि क्रुद्ध हुआ अनगार, अपने तप तेज से करोड़ों मनुष्यों को भस्म कर सकता है। मुनिराज ध्यान पालकर बोले– ॥१०॥

अभओ पत्थिवा! तुब्भं, अभयदाया भवाहि य।
अणिच्चे जीवलोगम्मि, किं हिंसाए पसज्जसि ॥११॥

हे पार्थिव! तुझे अभय है। अब तू भी अभय दाता बन। इस नाशवान् संसार में, जीवों की हत्या में क्यों आसक्त हो रहा है ॥११॥

जया सव्वं परिच्चज्ज, गंतव्वमवसस्स ते।
अणिच्चे जीवलोगम्मि, किं रज्जम्मि पसज्जसि ॥१२॥

जब सब कुछ यहीं छोड़कर, कर्मों के वश होकर पर-लोक में जाना है, तो इस अनित्य संसार और राज्य में क्यों लुब्ध हो रहा है ॥१२॥

जीवियं चेव रूवं च, विज्जुसंपाय चंचलं।
जत्थ तं मुज्झसि रायं, पेच्चत्थं नावबुज्झसे ॥१३॥

पछै समत १६६२ गुजरातसू सीख दी तद गाव २५सू भाद्राजण पटै दियो थो[1]। पछै समत १६६४ भाद्राजणरो पटो तागीर कर आगलो हीज पटो राखियो[2]। पछै समत १६६८ श्री हजूर गयो[3]। पछै मुहतो केसो सुरताणजीरो थो सु गोयददासजी रावळै राखियो तरै दिखण था छाडि आयो[4]। पछै केसानू मार आयो[5]। तद गोयददासजी धरती माहिथी परो काढियो, तरै नागोर जाय राणा सागररै वसियो[6]। गाव भाउडा वसीनू दियो थो[7]। राणै सागररै उठै जाय वसियो। पछै रा॥ नरसिघदास कल्याणदासोत नै रा॥ सूरजसिंघ नै सुदरदास, रामदास चादावतरासू माहो-माहि उपाव हुवो[8]। अै[9] ठाकुर चढ ऊपर आया। समत १६६९ जेठ सुदि ८ भाउडा वेढ हुई[10]। सुरताणरै हाथ नरसिघदास, सूरसिंघ, सुदरदास रह्या[11]। सुरताण ही खेत रह्यो[12]। वडो मामलो हुवो[13]।

६ रामचद सुरताणोत। समत १६५७रा मिगसर सुदि १२ जन्म। स० १६७० केलावैरो पटो दे, साथ सामो जाय घणा आदर कर आणियो[14]। चीतोड राणा सागररै वास थो। स० १६७८ ब्रहानपुरथा छाडनै राव रतनरै वास वसियो[15]। स० १६८० वळै मनाय नै पाछो आणनै केलावैरो पटो दियो[16]। स० १६८१ वळै छाड बैठो[17]।

---

1 जव सम्वत् १६६२मे गुजरातसे (मारवाडको) आनेकी आज्ञा मिली तव २५ गावोके साथ भाद्राजुन पट्टेमे दिया था। 2 फिर सम्वत् १६६४मे भाद्राजुनका पट्टा जब्त करके पहलेका पट्टा ही वहाल रखा। 3 पीछे सम्वत् १६६८मे श्री हजूर (महाराजा)की चाकरीमे गय।। 4 सुरताणजीके मुहते केसेको गोयददासजीने अपने रावलेमे रख लिया तव (सुरताण) दक्षिणको छोड कर आ गया। 5 तव (सुरताण) केसाको मार कर आ गया। 6 तव गोयददासजीने (सुरताणको) धरती (जागीरी)मे से निकाल दिया, तव नागोरमे राना सागरके यहा जा वसा (यहा नागोर भूलसे लिखा है, चित्तौड होना चाहिये)। 7 भाउडा गाव वसीमे दिया था। 8 परस्पर झगडा हुआ। 9 ये। 10 सम्वत् १६६९ जेठ शु० ८ को भाउडा गावमे लडाई हुई। 11 सुरताणके हाथसे नरसिंहदास, सूरसिंह और सुदरदास काम आये। 12 सुरताण भी काम आया। 13 वडी लडाई हुई। 14 सम्वत १६७० कैलावेका पट्टा देकर और कई आदमियोके साथ सामने जाकर वडे आदरसे उसको लिवा लाये। 15 सम्वत् १६७८ बुरहानपुरसे (को) छोड कर राव रतनकी सेवामे रहा। 16 सम्वत् १६८०मे फिर मना करके वापिस लाये और कैलावेका पट्टा कर दिया। 17 सम्वत् १६८१ पुन छोड कर बैठ गया।

राजन्! तुझे परलोक का बोध नहीं है। अरे तू जिस पर मोहित हो रहा है, वह भोगमय जीवन और रूप बिजली के चमत्कार की तरह चञ्चल है, नाशवान् है ॥१३॥

**दाराणि य सुया चेव, मित्ता य तह बंधवा।**
**जीवंतमणुजीवंति, मयं नाणुव्वयंति य ॥१४॥**

राजन्! स्त्री, पुत्र, मित्र और बान्धव, जीते जागते हुए के ही साथी हैं। मरने पर ये कोई साथ नहीं चलते ।१४।

**नीहरंति मयं पुत्ता, पितरं परमदुक्खिया।**
**पितरो वि तहा पुत्ते, बंधू रायं तवं चरे ॥१५॥**

राजन्! मरे हुए पिता को पुत्र अत्यन्त दुःखी होकर निकाल देता है, इसी प्रकार पुत्र के मरने पर पिता, बन्धु के मरने पर भाई, मुर्दे को निकाल देता है। इसलिए तुझे तप का ही आचरण करना चाहिये ॥१५॥

**तओ तेणज्जिए दव्वे, दारे य परिरक्खिए।**
**कीलंतिऽन्ने नरा रायं, हट्ठतुट्ठमलंकिया ॥१६॥**

मरने के बाद उसके उपार्जन किये हुए धन का और रक्षा की हुई स्त्रियों का, दूसरे हृष्ट पुष्ट और विभूषित जन उपभोग करते हैं ॥१६॥

**तेणावि जं कयं कम्मं, सुहं वा जइ वा दुहं।**
**कम्मुणा तेण संजुत्तो, गच्छइ उ परं भवं ॥१७॥**

७ हरीदास सुरताणोत। समत १६७५ मैहकर रामरी मुहम राम कह्यो[1]।

६ रुघनाथ सुरताणोत। समत १६८० मेवरो पटै। पछै समत १६६१ चामू पटै थी। पछै अमरसिंघजी साथै गया था, समत १६६५ पाछा आणिया[2]। चामू नै साथाणो मेडतारो, जेसला फळोधीरी दिया था[3]। समत १६६६ डावर पटै दी थी। पछै समत १७०४ देसरी खिजमत दी। समत १७१४ उजेणरी वेढ पूरै लोहै पडियो, पैले उपाडियो[4]। पछै श्रीजी घणो आदर कर वडो पटो रु० ८०००) रेख लवेरो घणा गावासू। भोवाळ वधारै दी[5]।

७ भीव रुघनाथोत। श्रीजीरै वास।

६ मुकददास सुरताणोत। समत १६७१ गोपीसरियो, वारणाऊ पटै। समत १६८८ नागडी खीवसररी। समत १६६३ वीझवाडियो पटै[6]।

७ उदैभाण।

५ सादूळ मानावत। समत १६४० लवेरारी वासणी थी। समत १६४० राजाजी साथै गुजरात, सोरसू बळ मुवो[7]।

४ पतो नीबारो। नीबाजी पछै पतो ठाकुर हुवो[8]।

५ भोपत पतावत। वसी नीवाजीरी सगळी भोपतजीरै हीज रही। पछै विखा माहै गूढा ऊपर राणाजीरो साथ आयो तठै काम आयो[9]।

६ ईसरदास भोपतोत। समत १६४० लवेरारी वासणी गगा-

---

1 सम्वत १६७५मे महकरमे रामकी मुहिम (युद्ध)मे काम आया। 2 सम्वत १६६५मे पीछा बुलवाया। 3 मेडते परगनेके चामू और साथाणा और फलोधी परगनेका जेसला गाव पट्टे मे दिये थे। 4 सम्वत् १७१४मे उज्जैनकी लडाईमे पूर्ण आहत हुआ शत्रु उसे उठा ले गये। 5 पीछे महाराजाने बडे सम्मानके साथ रु ८०००) की रेखका कई गावोके साथ लवेराका बडा पट्टा कर दिया और अतिरिक्तमे भोवाल गाव दिया। 6 सम्वत् १६७१मे गोपीसरिया और वारणाऊ गाव, सम्वत् १६८८मे खीवसरका नागडी गाव और सम्वत् १६६३मे वीझवाडिया पट्टे मे दिये गये। 7 सम्वत १६४०मे राजाजीके साथमे गुजरात गया था और वहा बारूदसे जल कर मर गया। 8 नीबाके मरनेके बाद पता ठाकुर (जागीरदार) हुआ। 9 नीबाजीकी सब वसी भोपतजीके ही अधिकारमे रही। विखेमे जब राणाजीका साथ उसके गुढे पर चढ कर आया उसमे भोपत काम आ गया।

मृतात्मा, उन शुभ फल दाता या दुःखप्रद कर्मों को साथ लेकर परभव में जाता है, जिनका उपार्जन उसने अपने जीवन में किया है ॥१७॥

सोऊण तस्स सो धम्मं, अणगारस्स अंतिए ।
महया संवेगनिव्वेदं, समावन्नो नराहिवो ॥१८॥

उन मुनिराज से धर्म सुनकर वह नराधिपति, महान् संवेग और निर्वेद को प्राप्त हुआ ॥१८॥

संजओ चइउं रज्जं, निक्खंतो जिणसासणे ।
गद्दभालिस्स भगवओ, अणगारस्स अंतिए ॥१६॥

संयति राजा, राज्य को छोड़कर, भगवान् गर्दभाली अनगार के पास जिन शासन में दीक्षित हो गया ॥१६॥

चिच्चा रट्ठं पव्वइए, खत्तिए परिभासइ ।
जहा ते दीसई रूवं, पसन्नं ते तहा मणो ॥२०॥

राष्ट्र का त्याग कर प्रव्रजित हुए क्षत्रिय-राजर्षि ने संजय राजर्षि से कहा कि जैसा आपका रूप सुन्दर है, वैसा ही आपका मन भी प्रसन्न है। उन्होंने पूछा– ॥२०॥

किं नामे किं गोत्ते, कस्सट्ठाए व माहणे ।
कहं पडियरसि बुद्धे, कहं विणीए त्ति वुच्चसि ॥२१॥

प्रश्न–आपका नाम क्या है ? गोत्र क्या है ? आप किस लिये माहन हुए ? आप गुरुजनों की सेवा

अचळदास सुरताणोतरै वसियौ । पछै अचळदास साथै काम आयो ।

७ जसवत हरीदासोत ।

६ माधोदास कलावत । ६ जगनाथ कलावत ।

६ सावळदास कलावत ।

६ प्रागदास कलावत । गोयददासजी साथै काम आयो, अजमेररै[1] ।

४ मूळो नीबारो । राव मालदेजीरै काम आयो, जेसळमेररो साथ आयो तद[2] ।

४ भोजराज नीबारो । छाकियो थको पेट मार मुवो[3] ।

३ परबत आणदोत ।

४ तिलोकसी परबतोत । मेडतै रा।। देईदास जैतावत साथै काम आयो । राव मालदेवजीरो चाकर ।

५ वाघ तिलोकसीयोत ।

६ रामचद वाघावत । समत १६६७ रामावट पटै थो । पछै छाडनै[4] भाटी अचळदासरै वास रह्यो थो, अचळदास साथै काम आयो ।

६ नरसिंघ वाघावत ।

६ लाडखान वाघावत ।

६ लिखमीदास वाघावत ।

५ महरावण तिलोकसीरो ।

६ नेतसी, अचळदास साथै काम आयो ।

७ दयाळदास ।

५ जैमल तिलोकसीरो । मोटै राजाजी रै चाकर थो । लोहावटरी वेढ काम आयो ।

५ राघोदास तिलोकसीरो । ५ साईदास तिलोकसीरो ।

३ दूदो आणदरो ।

४ मेघराज दूदारो ।

५ नारणदास । समत १६५२ सरनावडो पटै[5] ।

---

1 अजमेरकी लडाईमे गोयददासके साथ काम आया । 2 जैसलमेरकी सेना आई तब मालदेवजीके लिये काम आया । 3 नशेमे पेटमे कटारी मार कर मर गया । 4 छोड कर । 5 सम्वत् १६५२में सरनावडा गाव पट्टेमें था ।

किस प्रकार करते हैं ? और किस प्रकार विनयवान् कहलाते हैं ? ॥२१॥

**संजओ नाम नामेणं, तहा गोत्तेण गोयमो ।**
**गद्दभाली ममायरिया, विज्जाचरणपारगा ॥२२॥**

उत्तर–संजय मेरा नाम और गोतम गोत्र है । गर्दभाली मेरे आचार्य हैं–जो विद्या और चारित्र के पारगामी हैं ॥२२॥

**किरियं अकिरियं विणयं, अन्नाणं च महामुणी ।**
**एएहिं चउहिं ठाणेहिं, मेयन्ने किं पभासइ ॥२३॥**

हे महामुनि ! क्रियावाद, अक्रियाद, विनयवाद और अज्ञानवाद, इन चारवादों में रहकर वे वादी क्या बोलते हैं ? अर्थात् वे एकान्त प्ररूपणा करते हैं ॥२३॥

**इइ पाउकरे बुद्धे, नायए परिणिव्वुए ।**
**विज्जाचरणसंपन्ने, सच्चे सच्चपरक्कमे ॥२४॥**

विद्या और चारित्र सम्पन्न, सत्यवादी, सत्य पराक्रम वाले और परिनिवृत्त सर्वज्ञ ऐसे भ० महावीर ने इन वादों का कथन किया है ॥२४॥

**पडंति नरए घोरे, जे नरा पावकारिणो ।**
**दिव्वं च गइं गच्छंति, चरित्ता धम्ममारियं ॥२५॥**

पाप कर्म करने वाले घोर नरक में पड़ते हैं और आर्य धर्म का आचरण करने वाले दिव्य गति में जाते हैं ॥२५॥

५ सुदरदास । ५ सूरदास ।

४ जैतसी पीथावत । समत १६५६ सोझत राव सकतसिघनू हुई तद विसनदासजीरा डेरा ऊपर सकतसिघरै साथ रातीवाहो दियो तरै काम आयो[1] ।

५ मोहणदास जैतसीरो । समत १६८३ वाधडो पटै ।

२ जोधो जेसावत ।

३ रामो । ३ नारण । ३ दुजण । ३ आसो । ३ भोजो । ३ पचाइण ।

रामो जोधावत, आक ३ । राव मालदे गाव १५ सू वालरवो पटै दियो हुतो[2] । पूछणै माहै हुतो, पछै रा।। जैसा भैरवदासोतनू भागेसररा थाणा ऊपर मेलियो तरै साथै विदा कियो हुतो[3], तठै रामो पूरै लोहडै पडियो, उपाडियो हुतो, पछै डेरै आया काळ कियो[4] ।

४ किसनो रामावत । ४ राणो रामावत । ४ ऊदो रामावत । ४ वीरमदे रामावत ।

किसनो रामावत । मोटा राजारो चाकर थो । आक ४ । रामो काम आयो तरै राव वालरवो वीरमदे रामावतनू दियो, तरै किसनो छाड वीकानेर गयो[5] । पछै मोटै राजानू फळोधी हुई तरै मोटा राजा कनै आयो[6] । पछै मोटो राजा समावळी गयो, तरै साथै हुतो[7] । पछै मोटा राजानू जोधपुर हुवो तद धरती माहे आयो[8] ।

५ कान किसनावत । मोटै राजा कुडळ माहै भाटियासू वेढ की तद पूरै लोहडै पडियो[9] । पछै समावळी साथै हुतो । पछै समत १६४०

---

1 सम्वत् १६५६ मे राव सकतसिहको सोजतका पट्टा दिया गया तब विसनदासके डेरो पर सकतसिहके साथने रात्रि-आक्रमण किया तब काम आया । 2 राव मालदेवने १५ गावोके साथ वालरवाका पट्टा दिया था । 3 जब वह पूछणे गावमें था उस समय जब राव जैसा भैरवदासोतको भागेसरके थाने पर भेजा था तब इसको भी उसके साथ भेज दिया था । 4 वहा रामा पूर्ण आहत होकर गिर गया, उठा कर ले जाया गया और डेरे पर आते ही मर गया । 5 तब किसना छोड कर वीकानेर चला गया । 6 फिर जब मोटा राजाको फलोधी मिली तब वह उनके पास आ गया । 7 फिर जब मोटा राजा समावलीको गये तब भी साथ था । 8 फिर जब मोटा राजाको जोधपुर मिल गया तब वह देशमें (मारवाडमे) आया । 9 मोटे राजाने कुडलमें भाटियोसे लडाई की तब खूब घायल हो कर गिर गया ।

मायावुइयमेयं तु मुसा भासा निरत्थिया ।
संजममाणो वि अहं, वसामि इरियामि य ॥२६॥

वे वादी माया पूर्वक बोलते हैं । इसलिए उनकी वाणी मिथ्या एवं निरर्थक है । उनके मिथ्या कथन को सुनकर भी में संयम में स्थिर हूँ और यतनापूर्वक चलता हूँ ॥२६॥

सव्वे ते विइया मज्झं, मिच्छादिट्ठी अणारिया ।
विज्जमाणे परे लोए, सम्मं जाणामि अप्पगं ॥२७॥

मैंने उन सब वादों को जान लिया है । वे सब मिथ्या दृष्टि और अनार्य हैं। में परलोक और आत्मा की विद्यमानता सम्यक् प्रकार से जानता हूँ ॥२७॥

अहमासि, महापाणे, जुइमं वरिससओवमे ।
जा सा पाली महापाली, दिव्वा वरिससओवमे ॥२८॥

में महाप्राण विमान में द्युतिमान् देव था । यहाँ की सौ वर्ष की पूर्णायु के समान, वहाँ देवों की पल्योपम, सागरोपम, जैसी मेरी वर्षशतोपम आयु थी ॥२८॥

से चुए बंभलोगाओ, माणुसं भवमागए ।
अप्पणो य परेसिं च, आउं जाणे जहा तहा ॥२९॥

ब्रह्मलोक से च्यवकर में मनुष्य भव में आया । अब में अपनी और दूसरों की आयु को यथातथ्य जानता हूँ ॥२९॥

जाणियो किसनसिंघ पाली छै[1] । नै किसनसिंघजीरै साहणी लालो वास थो[2] । सु लालैरै वैर रा।। भाखरसी सादूळोतसू थो, तिण ऊपर वाली-सारी धरतीमे रहतो[3] । तठै गाव जाय भूबियो, तठै वेढ हुई[4] । सु भाटी देईदासनै साहणी लालो मेहावत काम आया । नै उरजन, ऊहड, नै भीवो साहणी किसनसिंघजीनू ले नीसरिया[5] ।

७ करन देईदासोत । समत १६७२ हीरादेसर, रामावट पटै, लिखमीदास भेळो[6] ।

७ लिखमीदास देईदासोत । समत १६७२ हीरादेसर, रामावट पटै, करन भेळो । पछै समत १६८३ ताबडियो पटै[7] । पछै छाडनै भीव कल्याणदासोतरै वसियो[8] ।

८ नाथो लिखमीदासोत । समत १६९० नादियो पटै । समत १६९१ अमरसिंघजी साथै गयो । पछै समत १६९६ वळै वसियो । काठसी पटै[9] ।

९ विहारीदास नाथावत ।

८ भोपत लिखमीदासोत । ८ अखैराज लिखमीदासोत ।

७ दयाळदास देईदासोत । समत १६८० वरजागसर फळोधीरो पटै[10] ।

८ सहसो दयाळदासोत ।

५ सूरजमल किसनावत । मोटै राजाजीरै लोहावटरी वेढ काम आयो[11] ।

---

1 सुरताणने जाना था कि किशनसिंह पालीमे है । 2 और किशनसिंहके यहा साहनी लाला रहता था । 3 लालाकी राव भाखरसी सादूलोतसे शत्रुता थी, इसलिये वह इसकी ताकमे बालीसोकी भूमिमे रहता था । 4 उसने उसके गावमे जाकर उत्पात मचाया और वहा लडाई हुई । 5 भाटी देवीदास और साहनी लाला मेहावत इस लडाईमे काम आये । और अर्जुन, ऊहड और भीमा साहणी किशनसिंहको लेकर निकल गये । 6 सम्वत् १६७२मे हीरादेसर और रामावट दोनो गाव लिखमीदासके शामिल पट्टेमे । 7 सम्वत् १६७२मे हीरादेसर और रामावट करणके साथ पट्टेमे । लिखमीदासको सम्वत् १६८३मे तावडिया गाव अलग पट्टेमे मिला । 8 फिर छोड कर भीम कल्याणदासोतके यहा जाकर रह गया । 9 सम्वत् १६९६मे पुन आकर वसा तब काठसी गाव पट्टेमे मिला । 10 सम्वत् १६८०मे फलोधीका वरजागसर गाव पट्टेमे । 11 मोटे राजाजीके लिये लोहावटकी लडाईमे काम आया ।

नाणारुइं च छंदं च, परिवज्जेज्ज संजए ।
अणट्ठा जे य सव्वत्था, इइ विज्जामणुसंचरे ॥३०॥

क्षत्रिय राजर्षि ने कहा—साधु, विविध प्रकार की रुचि और अभिप्राय तथा समस्त अनर्थों का सर्वथा त्याग कर दे । और सम्यग्ज्ञान पूर्वक संयम पाले ॥३०॥

पडिक्कमामि पसिणाणं, परमंतेहि वा पुणो ।
अहो उट्ठिए अहोरायं, इइ विज्जा तवं चरे ॥३१॥

मैं सावद्य प्रश्नों और गृहकार्यों से निवृत्त हो गया हूँ । विद्वानों को इस प्रकार तपाचरण करना चाहिए ॥३१॥

जं च मे पुच्छसि काले, सम्मं सुद्धेण चेयसा ।
ताइं पाउकरे बुद्धे, तं नाणं जिणसासणे ॥३२॥

हे मुनि ! आप मुझ से शुद्ध चित्त से सम्यक् प्रश्न पूछो । ऐसा ज्ञान जिन शासन में विद्यमान है, जो सर्वज्ञों का कहा हुआ है ॥३२॥

किरियं च रोयए धीरे, अकिरियं परिवज्जए ।
दिट्ठिए दिट्ठिसंपन्ने, धम्मं चरसु दुच्चरं ॥३३॥

वीर पुरुष को चाहिए कि क्रिया में विश्वास करे और अक्रिया को त्याग दे और दृष्टि से सम्यग्दृष्टि सम्पन्न होकर दुष्कर धर्म का आचरण करे ॥३३॥

एवं पुण्णपयं सोच्चा, अत्थधम्मोवसोहियं ।
भरहो वि भारहं वासं, चिच्चा कामाइ पव्वए ॥३४॥

दी थी[1]। समत १६८० धाधोळाव पटै मेडतारो[2]। समत १६८३ राम कह्यो[3]।

७ वेणीदास केसोदासोत। समत १६९१ छाड अमरसिंघजी साथे गयो। उठै कावलसू आवता अटकमे डूब मुवो[4]।

८ राजसिघ वेणीदासोत।

८ वीजो वेणीदासोत। ८ भैरवदास। ८ उगरो।

७ कलो केसोदासोत।

८ रुघनाथ।

७ अमरो केसोदासोत। समत १६८३ मेडतारो सीहार पटै[5]।

८ भूधर।

६ लूणो रायसिंघोत। समत १६५६ किसनसिंघजीरै काम आयो। भाटी देईदास भेळो साहणी लालारै दावै खेतसी सादूळोत ऊपर गयो, तठै सेपटावास गोढवाडरै गाव मांमलो हुवो[6]।

६ रूपसी रायसिघोत।

७ अचळो। ७ मोहणदास।

५ भानीदास वीरमदेओत। राव चद्रसेणरै वालरवै थो। थोरियासू मामलो हुवो तठै काम आयो[7]।

६ भाखरसी भानीदासरो। चैराई पटै। समत १६७७ वैरू पटै। समत १६९३ अमरसिंघजीरै गयो, उठै हीज मुवो[8]।

७ जगनाथ भाखरसीयोत। समत १६९५ गोलाहसनी (गोलावासणी) थाहरी पटै[9]।

---

1 फिर बादमे सम्वत् १६७५मे ४ गावोके साथ भवराणी पट्टेमे दिया गया था। 2 सम्वत् १६८०मे मेडते परगनेका धाधोलाव पट्टेमे दिया गया। 3 सम्वत् १६८३मे मर गया। 4 सम्वत् १६९१मे छोड कर अमरसिंहजीके साथ काबुल चला गया और वहासे लौटते हुए अटक नदीमे डूब कर मर गया। 5 सम्वत् १६८३मे मेडते परगनेका सीहार गाव पट्टेमे था। 6 भाटी देवीदासके साथ साहनी लालाकी शत्रुताका बदला लेनेके लिये खेतसी सादूलोतके ऊपर चढ कर गया, तब गोढवाड परगनेके सेपटावास गावमे लडाई हुई, (उसमे लूणा काम आया।) 7 राव चन्द्रसेनके साथ वालरवेमे था तब थोरी लोगोंसे लडाई हुई उसमे काम आया। 8 सम्वत् १६९३मे अमरसिंहजीके साथ गया और वही मर गया। 9 सम्वत् १६९५ गोलावासणी और थाहरी (?) गाव पट्टेमे।

इन मोक्ष रूप अर्थ के देने वाले धर्म से शोभित पुण्य पदों को सुनकर 'भरत चक्रवर्ती' ने भारतवर्ष और काम भोगों को छोड़कर दीक्षा ली ॥३४॥

सगरो वि सागरंतं, भरहवासं नराहिवो ।
इस्सरियं केवलं हिच्चा, दयाइ परिनिव्वुडे ॥३५॥

'सगर चक्रवर्ती' ने सागर पर्यन्त, भारतवर्ष और ऐश्वर्य को छोड़कर दया से (संयम पालकर) मुक्त हुए ॥३५॥

चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महड्ढिओ ।
पव्वज्जमब्भुवगओ, मघवं नाम महाजसो ॥३६॥

महान् यशस्वी और महान् ऋद्धिशाली 'मघवा' नाम के चक्रवर्ती ने भारतवर्ष को त्याग कर दीक्षा अंगीकार की ।

सणंकुमारो मणुस्सिंदो, चक्कवट्टी महड्ढिओ ।
पुत्तं रज्जे ठवेऊणं, सो वि राया तवं चरे ॥३७॥

महा ऋद्धिशाली 'सनत्कुमार' चक्रवर्ती नरेन्द्र ने अपने पुत्र को राज्य पर स्थापित कर, प्रव्रजा लेकर तपाचरण किया।

चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महड्ढिओ ।
संती संतिकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं ॥३८॥

महा ऋद्धिमान् लोक में शान्ति के करने वाले 'शान्तिनाथ' चक्रवर्ती ने भारतवर्ष को त्याग कर मोक्ष प्राप्त किया ॥३८॥

५ जसवत वीरमदेग्रोत । समत १६४० चैराई दीनी । वीरमरो टीकाई, पण जसूत भलो रजपूत । समत १६८६ राम कह्यो तद उतरी[1] ।

६ पीथो जसूतोतनू चैराईमे हैसो १ जसूत भेळो । समत १६७७ ब्रहानपुरथा निबाव दिखण गयो तठै राहमे दिखणियासू मामलो हुवो, तठै काम ग्रायो, बाण लागो[2] ।

६ मनोहरदास जसूतोत । समत १६८३ चैराईमे हैसो १ जसूत भेळो । समत १६९० राम कह्यो[3] ।

७ देईदास मनोहरदासोत । समत १६९५ भाखरी, उदीवस पटै[4] ।

७ ऊरजन मनोहरदासोत ।

६ भोपत जसूतोत ।

७ लिखमीदास । ७ वीको ।

६ सूजो जसूतोत । स० १६७० धीगाणो पटै । स० १६८८ वैराई पटै थी[5]

७ रामसिघ । ७ स्यामसिघ ।

६ भोजराज जसूतोत । समत १६७२ सवळसिघ राजावतरै रह्यो[6] ।

७ मुकददास ।

५ सकतो वीरमदेग्रोत । समत १६४१ पाचलो गावा २सू पटै[7] ।

६ माधोदास ।

७ सहसो ।

६ माडण । ६ दयाळदास ।

७ मानसिघ ।

६ मेघराज ।

---

1 सम्वत् १६४०मे चैराई गावका पट्टा दिया । जसवत ग्रच्छा राजपूत ग्रौर वीरमका उत्तराधिकारी (टीकायत) । सम्वत् १६८६मे मरा तब चैराई जब्त हुई । 2 पीथा जसवतोतको चैराईका एक भाग जसवतके साथ । सम्वत् १६७७मे बुरहानपुरसे नवाव दक्षिणमे गया, वहा मार्गमे दक्षिणियोसे लडाई हुई, उसमे पीथाके बाण लगा ग्रौर वह मर गया । 3 सम्वत् १६८३मे जसवतके साथ एक हिस्सा चैराई गावका । सवत् १६९०मे मरा । 4 सम्वत् १६९५ भाखरी ग्रौर उदीवस गाव पट्टेमें । 5 सवत् १६७० धीगाणा गाव ग्रौर सम्वत् १६८८मे वैराई गाव पट्टेमे थे । 6 सम्वत १६७२ सवळसिह राजावतके यहा रहा । 7 सम्वत् १६४१मे दो गावोके साथ पाचला गाव पट्टेमे ।

इक्खागरायवसभो, कुंथू नाम नरीसरो ।
विक्खायकित्ती भगवं, पत्तो गइमणुत्तरं ॥३९॥

इक्ष्वाकु वंश के राजाओं में श्रेष्ठ और विख्यात कीर्ति वाले भगवान् 'कुन्थुनाथ' नरेश्वर ने मोक्ष गति प्राप्त की ।

सागरंतं चइत्ताणं, भरहं नरवरीसरो ।
अरो य अरयं पत्तो, पत्तो गइमणुत्तरं ॥४०॥

समुद्र पर्यन्त भारतवर्ष को त्याग कर 'अर' नाम के नरेन्द्र ने, कर्मरज को उड़ाकर मोक्ष प्राप्त की ॥४०॥

चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महिड्ढिओ ।
चइत्ता उत्तमे भोए, महापउमे तवं चरे ॥४१॥

महा समृद्धिमान् 'महापद्म' नाम के चक्रवर्ती ने भारत वर्ष और उत्तम भोगों का त्याग कर तप अंगीकार किया ४१।

एगच्छत्तं पसाहित्ता, महिं माणनिसूदणो ।
हरिसेणो मणुस्सिंदो, पत्तो गइमणुत्तरं ॥४२॥

शत्रुओं के मान का मर्दन करके पृथ्वी पर एक छत्र राज्य करने वाले नरेन्द्र 'हरिषेण' चक्रवर्ती ने दीक्षा लेकर मोक्ष प्राप्त किया ॥४२॥

अन्निओ रायसहस्सेहिं, सुपरिच्चाई दमं चरे ।
जयनामो जिणक्खायं, पत्तो गइमणुत्तरं ॥४३॥

७ सुदरदास भीवोत । ७ रामसिघ भीवोत ।

६ हीगोळदास सुरताणोत। समत १६५१ गाघडवास पटै । ईडरथा आणियो । स० १६५८ वडलो, आचीणो दियो थो । पछै राम कह्यो[1] ।

६ माधोदास सुरताणोत ।

७ हरीदास माधोदासोत, किसनगढ रैहतो ।

५ पूरो राणावत । माडणजीरै वास थो । समत १६४३ माडण-जीनू आसोप पातसाहजी दीवी । देसमे आया, तद कमरसोतासू वेढ हुई, तठै काम आयो[2] ।

६ बळिकरन पूरावत । समत १६६४ चिनडी आसोपरी पटै । पछै उदैसिंघ भगवानदासोत मेडतियारै वसियो[3] ।

५ ठाकुरसी राणावत । स० १६— रोहणवो ओईसारो पटै[4] । पछै चगावडो पटै दियो । पछै दिखणनू राम कह्यो[5] ।

५ मेदो राणावत । समत १६४० वैराही माहै वरजागरो पानो थो, सु दियो । स० १६४२ बुखटो ओईसारो दियो । समत १६५१ चडाळियो दियो[6] ।

६ जोगीदास मेदावत । समत १६७४ चांगावडो पटै । पछै समत १६७७ इछापुररी दोड व्रहानपुरथा निबाब दोडियो तठै काम आयो, बाण लागो[7] ।

---

1 इसे ईडरसे वुला लिया । सवत् १६५१मे गाघडवास गाव पट्टेमे दिया । सवत १६५८मे वडला और आचीणा गाव दिये गये । पीछे मर गया । 2 यह माडणजीके यहा नौकर था । सम्वत् १६४३मे वादशाहने माडणजीको आसोपका पट्टा इनायत किया । माडणजी देश मे (मारवाड) आया तव करमसोतोंसे लडाई हुई, पूरा उसमे काम आया । 3 सवत् १६६४मे आसोपका चिनडी गाँव पट्टेमे । पीछे मेडतिया उदयसिह भगवानदासोतके यहा वस गया । 4 सवत् १६ मे ओइसोका रोहणवा गाव पट्टेमे । 5 फिर चगावडा गाव पट्टेमे दिया । पीछे दक्षिणमे मर गया । 6 सवत् १६४०मे वैराही गावका जो भाग वर-जागके पास था, वह इसे दिया । सवत् १६४२मे ओइसोका वुरवटा गाव और सवत् १६५१मे चडालिया गाव दे दिया था । 7 सम्वत् १६७४ चगावडा गाव पट्टेमे । सम्वत् १६७७मे जव इच्छापुरीकी लडाईमे वुरहानपुरसे नवाव चढ कर के गया जिसमे जोगीदास वाण लगनेसे काम आया ।

हजारों राजाओं के साथ 'जय' नाम के नरेन्द्र ने भोगों का त्याग किया और जिन प्रणीत तप संयम का सेवन कर मोक्ष पाये ॥४३॥

दसण्णरज्जं मुदियं, चइत्ताणं मुणी चरे।
दसण्णभद्दो निक्खंतो, सक्खं सक्केण चोइओ ॥४४॥

साक्षात् इन्द्र से प्रेरित हुआ 'दशार्णभद्र' राजा, समृद्ध दशार्ण देश का त्याग कर, मुनि होकर तपाचरण किया ।४४।

नमी नमेइ अप्पाणं, सक्खं सक्केण चोइओ।
चइऊण गेहं वइदेही, सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥४५॥

साक्षात् इन्द्र से प्रेरित हुए 'नमिराज' ने अपनी आत्मा को विनम्र बनाया और विदेह देश तथा घर को छोड़कर संयम अंगीकार किया ॥४५॥

करकंडू कलिंगेसु, पंचालेसु य दुम्मुहो।
नमी राया विदेहेसु, गंधारेसु य नग्गई ॥४६॥

कलिग देश में 'करकंडू', पाञ्चाल देश में 'दुर्मुख,' विदेह देश में 'नमिराज' और गान्धार देश में 'निग्गई' राजा हुआ । ४६॥

एए नरिंदवसभा, निक्खंता जिणसासणे।
पुत्ते रज्जे ठवेऊणं, सामण्णे पज्जुवट्ठिया ॥४७॥

राजाओं में वृषभ के समान श्रेष्ठ, ये सब राजा अपने

५ सावळदास कलावत । कीभरी ओईसारी पटै । सं० १६७१ अजमेर गोयददासजी काम आया तद पूरै लोहडै पडियो । पछै समत १६८३ पूरवसू आवता राम कह्यो[1] ।

६ मानसिंघ सावळदासोत ।

७ जसवत । ७ लाडखान । ७ वीको ।

६ भोजराज सावळदासोत । ६ नरसिंघदास सावळदासोत ।

६ भोपत सावळदासोत । ६ मुकददास सावळदासोत ।

४ मेहाजळ नारणोत, वीराणी पटै[2] ।

५ किसनो मेहाजळोत । वीराणी पटै । समत १६६२ माडवारी वेढ काम आयो[3] ।

७ नरहरदास । ७ वलू ।

५ कचरो मेहाजळोत । सवत १६५२ सूरजवासणी पटै । पछै किसनसिंघजीरै वसियो । पछै समत १६७२ वळै पाछो आयो, तद काभडो पटै दियो । पछै विकूकोहर पाणीरी तोण वेई माहोमाह बोलाचाली हुई तद भाटी अचळदास मारियो[4] ।

६ प्रथीराज कचरावत । ६ मोहणदास । ६ मुकददास कचरावत ।

६ जोगीदास कचरावत । ६ आसो कचरावत ।

५ रामसिंघ मेहाजळोत । समत १६६२ खारी लवेरारी पटै[5] ।

४ सारग नारणोत ।

५ नेतसी । ५ गोपो । ५ सकतो । ५ रिडमल ।

६ गोकळ । ६ किसनो ।

३ दुजण जोधावत । राव मालदेजी नागोर लीवी तद काम आयो[6] ।

---

1 ओईसाका कीभरी गाव पट्टेमे । सवत् १६७१मे अजमेरमे जब गोयददासजी काम आये तब यह पूर्ण घायल होकर गिर गया था । पीछे सवत् १६८३मे पूवसे आते हुए मर गया । 2 मेहाजलको वीराणी गाव पट्टेमे । 3 सवत् १६६२में माडवोकी लडाईमें काम आया । 4 सवत् १६५२मे सूरजवासणी गाव पट्टेमें । पीछे किशनसिंहजीके यहा रहा । फिर सवत् १६७२में जब वापिस आगया तो काभडा गाव पट्टेमें दिया । पीछे विकूकोहरमे पानी और कुआ-चरसके लिये परस्पर विवाद हो गया तब भाटी अचलदासने कचराको मार दिया । 5 सवत १६६२में लवेराका खारी गाव पट्टेमें । 6 राव मालदेवजीने नागोर पर अधिकार किया उस समय दुर्जन काम आया ।

पुत्रों को राज्य पर स्थापित कर, जिन शासन में दीक्षित हुए और श्रमण वृत्ति का पालन किया ॥४७॥

**सोवीररायवसभो, चइत्ताणं मुणी चरे।**
**उदायणो पव्वइओ, पत्तो गइमणुत्तरं ॥४८॥**

सौवीर देश के राजाओं में श्रेष्ठ 'उदायन' राजा ने राज्य छोड़ कर दीक्षा ली, और संयम पाल कर मोक्ष पाया।

**तहेव कासिराया वि, सेओ सच्चपरक्कमे।**
**कामभोगे परिच्चज्ज, पहणे कम्ममहावणं ॥४९॥**

इसी प्रकार काशीराज ने काम भोगों को छोड़ कर, श्रेष्ठ सत्य एवं संयम में पराक्रम करके कर्म रूप महावन को जला दिया ॥४९॥

**तहेव विजओ राया, अणट्ठाकित्ति पव्वए।**
**रज्जं तु गुणसमिद्धं, पयहित्तु महाजसो ॥५०॥**

इसी प्रकार निर्मल कीर्तिवाले महायशस्वी 'विजय' राजा ने गुण समृद्ध राज्य को छोड़ कर दीक्षा ली ॥५०॥

**तहेवुग्गं तवं किच्चा, अव्वक्खित्तेण चेयसा।**
**महब्बलो रायरिसी, आदाय सिरसा सिरिं ॥५१॥**

'महाबल' नाम के राजर्षि ने, एकाग्र मन से उग्र तप करके मोक्ष रूप लक्ष्मी को प्राप्त किया ॥५१॥

६ सांगो गोयंदोत ।

४ हमीर आसावत । मोटा राजाजीरै फळोधीरी वेढ भाटियारै मामलै काम आयो[1] ।

५ मेघराज हमीरोत । संमत १६४६ खेतासर पटै दियो । संमत १६५२ गुजरात पधारता कोळियासूं वेढ हुई तठै काम आयो[2] ।

५ केसोदास हमीरोत । मेघराज पछै खेतासर पटै । संमत १६५४ उतरियो[3] ।

६ नरहरदास केसोदासोत ।

४ रतनसी आसावत ।

५ ठाकुरसी रतनसीयोत । मेडतियांरै काम आयो[4] ।

५ वाघ रतनसीयोत ।

३ भोजराज वाघोत । ६ हरीदास वाघोत ।

५ सिघ रतनसीयोत । रा॥ दासा पातलोतरो दोहीतो । राडधडै दासाजीरै काम आयो[5] ।

६ सादूळ सिघोत । ६ कान्हो । ६ मनोहर । रूपसी ।

५ साईदास रतनसीयोत ।

६ नारणदास साईदासरो । चामू पटै ।

६ मैहरावण साईदासोत । हरदास भाटीरै काम आयो ।

६ भाण साईदासोत । ६ मानो साईदासोत ।

६ महेस साईदासोत ।

४ जैमल आसावत । जोधपुर गढ आसा साथै काम आयो[6] ।

४ जोगो आसावत । जोधपुर गढ आसा साथै काम आयो ।

५ वेणीदास जोगावत ।

---

1 मोटे राजाजीकी फलोधीमे भाटियोसे जो लडाई हुई उसमे काम आया । 2 संवत् १६४६मे खेतासर गांव पट्टे दिया । संवत १६५२मे (महाराजाकी) गुजरातको पधारते हुए कोली लोगोसे लडाई हुई उसमे मेघराज काम आया । 3 मेघराजके मरनेके बाद केशोदासको खेतासर गांव पट्टेमे मिला जो संवत् १६५४मे जब्त हो गया । 4 मेडतिया राठौडोके लिये काम आया । 5 रतनसीका बेटा सिंह, राव दासा पातलोतका दोहिता । दासाजीके लिये राडधरामे काम आया । 6 जोधपुरके गढ़ पर आसाके साथ काम आया ।

कहं धीरो अहेऊहिं, उम्मत्तो व्व महिं चरे।
एए विसेसमादाय, सूरा दढपरक्कमा ॥५२॥

जो धीर पुरुष हैं, वे कुहेतुओं में पड़कर उन्मत्त की तरह पृथ्वी पर कैसे विचर सकते हैं? अर्थात्—नहीं विचर सकते। पूर्वोक्त भरतादि महापुरुष, इसी विशेषता को ग्रहण करके शूरवीर और दृढ़ पराक्रमी हुए ॥५२॥

अच्चंतनियाणखमा, सच्चा मे भासिया वई।
अतरिंसु तरंतेगे, तरिस्संति अणागया ॥५३॥

मुनिजी! मैंने वह वाणी कही है—जो कर्म मल शोधने में अत्यन्त समर्थ है, इस वाणी को सुनकर भूतकाल में अनेक तिर गये, वर्त्तमान में तिर रहे हैं, और भविष्य में तिरेंगे।

कहं धीरे अहेऊहिं, अत्ताणं परियावसे।
सव्वसंगविनिम्मुक्के, सिद्धे भवइ नीरए ॥५४॥

ऐसा कौन धीर पुरुष है जो कुहेतुओं को ग्रहण करके अपनी आत्मा का अहित करेगा? अर्थात् नहीं करेगा। बुद्धिमान् वही है जो सब प्रकार के संगों से मुक्त होकर सिद्ध हो जाता है ॥५४॥

()—अठारहवाँ अध्ययन समाप्त—()
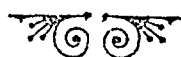
४ बछो मालारो ।

५ भाखरसी

४ नाथू मालारो । झझूरी वेढ काम आयो ।

५ हरराज ।  ५ वीको ।

४ रतनसी मालारो ।

५ ईसर ।  ५ भीवराज ।

६ पूरो ।  ६ हदो ।

२ भैरवदास जेसावत । राव सूजाजी धवळैरो सोझतरो भैरवदासनू दियो थो, सु धवळै वसता[1] । नै सूरमालण रावजीरो चाकर थो, तिणनू चोपडो पटै थो । सु सीव ऊपर उपाव हुवो, वेढ हुई तठै सूरमालण भैरवदासनू मारियो[2] । पछै सूरमालण नासनै राणाजीरी धरतीमे गयो[3] । पछै भैरवदासरै वैर आणद जेसावत जेसळमेर था साथ लेनै आयनै ओहलाणी इद्रवडै सूरनू मारियो[4] ।

भैरवदासरा बेटा–

३ सूरो ।  ३ अचळो ।  ३ देदो ।  ३ वरजाग ।

करमेतीबाई भैरवदासरी रा॥ मेहराज अखैराजोतनू परणाई तिणरै पेटरो कूपोजी मेहराजोत[5] ।

३ सूरो भैरवदासोत ।

४ डूगरसी सूरावत ।

५ हरदास डूगरसीयोत । वडो रजपूत । राठोड भोजराज मालदेओतरै वास । पछै भोजराजजी नै तुरके वेढ हुई, तठै हरदास काम आयो[6] ।

---

1 राव सूजाजीने सोजत परगनेका धवलेरा गाव भैरवदासको पट्टेमे दिया था, अत भैरवदास धवलेरेमे रहता था । 2 और रावजीका चाकर सूरमालण जिसको चौपडा गाव पट्टेमे था । सीमा ऊपर झगडा हुआ और लडाई हो गई जिसमे सूरमालणने भैरवदासको मार दिया । 3 सूरमालण भाग कर के राणाजीकी धरती मे (मेवाडमे) चला गया । 4 पीछे भैरवदासकी इस शत्रुताका बदला लेनेके लिये जैसलमेरसे आनद जैसावतने अपने साथियोके साथ आ कर ओहलाणी और इन्द्रवडा गावोके पास सूरमालणको मार दिया । 5 करमेतीबाई भैरवदासकी बेटी, राव मेहराज अखैराजोतको व्याही, जिसकी कोखसे कूपाजी मेहराजोत पैदा हुआ । 6 फिर भोजराजजी और तुर्कोंके आपसमे लडाई हुई उसमे हरदास काम आया ।

# मियापुत्तीयं एगूणवीसइमं अज्झयणं

सुग्गीवे नयरे रम्मे, काणणुज्जाणसोहिए।
राया बलभद्दित्ति, मिया तस्सग्गमाहिसी ॥१॥

अनेक प्रकार के उपवनों से सुशोभित और रमणीय ऐसे सुग्रीव नगर में बलभद्र नामक राजा था। उसके मृगा नाम की पटरानी थी ॥१॥

तेसिं पुत्ते बलसिरी, मियापुत्ते त्ति विस्सुए।
अम्मापिऊण दइए, जुवराया दमीसरे ॥२॥

उनके 'बलश्री' नाम का पुत्र था जो 'मृगापुत्र' के नाम से विख्यात था। वह युवराज, माता पिता का प्रिय और दुष्टों का दमन करने वाला—दमीश्वर था ॥२॥

नंदणे सो उ पासाए, कीलए सह इत्थिहिं।
देवे दोगुंदगो चेव, निच्चं मुइयमाणसो ॥३॥

वह युवराज, नंदन वन के समान भवन में, स्त्रियों के साथ दोगुन्दक देव की तरह, सदैव प्रसन्न चित्त रहने वाला था।

मणिरयणकोट्टिमतले, पासायालोयणट्ठिओ।
आलोएइ नगरस्स, चउक्कत्तियचच्चरे ॥४॥

जिसके आँगन में मणि और रत्न जड़े हैं, ऐसे महल में

४ साकर सूरावत। वडो रजपूत राव मालदेवरो[1]। साकररै हवालै अजमेररो गढ थो[2]। पछै सूर पातसाह आयो तद काम आयो[3]। जोधपुरमे गढ ऊपर छत्री छै[4]

पाज ऊपर छत्री तीन छै[5]–

१ भाटी साकर सूरावतरी।

१ तिलोकसी वरजागोतरी।

१ अचळै सिवराजोतरी।

५ हमीर साकरोत। फळोधी मोटै राजाजीरै भाटियारी वेढ काम आयो।

६ गोयंददास हमीरोत। वूटेची पटै[6]।

७ धनराज गोयददासोत। वूटेची, भालेसरियो पटै। सं० १६४० रामडावास पटै[7]।

८ रासो धनराजोत। समत १६६२ वोडानडो पटै[8]।

७ कचरो गोयददासोत।

८ मुकद।

७ नरसिंघ गोयददासोत। घीघाळियो पटै[9]।

७ लिखमीदास गोयददासोत।

८ दयाळदास लिखमीदासोत। उजेण काम आयो।

९ सगतो।

८ दलपत लिखमीदासोत।

६ कान्हो हमीरोत। समत १६४१ सूराणी पटै। समत १६४२ आकडावस पालीरो पटै। पछै वोडवी थी। कान्हो नाथा धाय भाईरो जमाई[10]।

---

1 राव मालदेवका वडा राजपूत। 2 अजमेरका गढ शकरको सुपुर्द किया हुआ था। 3 पीछे सूर बादशाह चढ कर आया तव काम आ गया। 4 जोधपुरके गढमे इसकी छतरी (स्मारक) वनी हुई है। 5 पाजके ऊपर तीन छतरियें बनी हुई हैं। 6 वूटेची गाव पट्टे मे। 7 वूटेची और भालेसरिया गाव पट्टे मे। सवत् १६४०मे रामडावास पट्टे मे। 8 सम्वत् १६६२मे वोडानडा (वोडानाडा) पट्टे मे। 9 घीघालिया गाव पट्टेमे। 10 सम्वत् १६४१मे सूराणी गाव और सवत् १६४२मे पाली परगनेका आकडावास गाव पट्टे मे। फिर वोडवी गाव भी पट्टे मे था। कान्हा, नाथा धाभाईका दामाद।

से वह युवराज नगर के तीन, चार और बहुत मार्गो वाले बाजार देख रहा था ॥४॥

अह तत्थ अइच्छंतं, पासई समणसंजयं ।
तवनियमसंजमधरं, सीलड्ढं गुणआगरं ॥५॥

युवराज ने एक श्रमण को–जो तप नियम और संयम को धारण करनेवाला, शीलवान् और गुणों के भण्डार को वहाँ जाते हुए देखा ॥५॥

तं पेहई मियापुत्ते, दिट्ठीए अणिमिसाए उ ।
कहिमन्नेरिसं रूवं, दिट्ठपुव्वं मए पुरा ॥६॥

मृगापुत्र उन मुनि को एक दृष्टि से देखने लगा । उसे विचार हुआ कि मैंने इस प्रकार का रूप पहले कहीं देखा है ।

साहुस्स दरिसणे तस्स, अज्झवसाणम्मि सोहणे ।
मोहंगयस्स संतस्स, जाईसरणं समुप्पन्नं ॥७॥

साधु के दर्शन निमित्त एवं मोहनीय कर्म का क्षयोपशम होने से तथा आन्तरिक भावों की शुद्धि से, मृगापुत्र को जाति–स्मरण ज्ञान हुआ ॥७॥

देवलोगचुओ संतो, माणुसं भवमागओ ।
सण्णिणाण समुप्पण्णे, जाइं सरइ पुराणयं ॥८॥

संज्ञीज्ञान उत्पन्न होने से, अपने पूर्व जन्म का स्मरण किया । उसे ज्ञात हुआ कि मैं देवलोक से च्यवकर मनुष्य भव में आया हूँ ॥८॥

बेटो धनराज। समत १६४० छडाणी पटै। पछै समत १६४६ सावरला दियो[1]। समत १६६२ गुजरात दातीवाडारा कोळियासू वेढ हुई तठै काम आयो[2]।

६ धनराज सावळदासोत। समत १६५८ कूपावस सिवाणारो मनोहरदास कलावत भेळो। स० १६६३ सावरला दियो। पछै कीटणोद दीवी। समत १६६२ भावर दीवी। समत १६६५ कीटणोद दियो[3]।

७ रूपसी। ७ करन। ७ प्रथीराज।

-पीढी तीन दीवाणरै वास रह्या[4]–

१ जैसो। २ भैरवदास। ३ अचळो। ४ ससारचद माडणजीरै वास।

भाटी सावळदास ससारचदोत, वैरसी रायमलोत, ईसरदास रायमलोत, कलो रायमलोत ऐ च्यारै ही मोटा राजारै वास आया, तरै नोळ उवेडो दरबार आवता आयो[5]। तरै राव नीवो महेसोत सवणी थो, तिण कह्यो– "थे जोधपुर घणा दिन चाकरी रहसो। थासू प्रोळ कदे छूटै नही। नै वैरसी नै सावळदास दूजा पण ठाकुर, मोटा राजारै बेटारै काम आवस्यो[6]।"

६ नरसिंघदास सावळदासोत। समत १६६२ कूपावस मनोहरदास भेळो। स० १६६७ भुडहड सिवाणारी पटै। समत १६८४ दहीपडो पटै[7]। पछै राजसिघ खीवावतरै वसियो। स० १६७७ बाला-

---

1 उस सावलीका बेटा धनराज, जिसे सम्वत् १६४०मे छडाणी गाव और सम्वत् १६४६मे सावरला गाव पट्टेमे दिये थे। 2 सवत् १६६२मे गुजरातमे दातीवाडाके कोलियोसे लडाई हुई वहा काम आया। 3 सवत् १६५८मे मनोहरदास कलावतके साथ सिवाना परगनेका कूपावस गाव पट्टेमे। सवत् १६६३मे सावरला गाव दिया और फिर कीटणोद दिया। सवत् १६६२मे भावर गाव और सम्वत् १६६५मे कीटणोद गाव पुन पट्टेमे दिये। 4 तीन पीढी तक दीवान (राणा) की चाकरीमे रहे। 5 तब दरबार मे आते हुएको नेवला आडा आया। 6 तब राव नीवा महेशोत जो शकुनी था, उसने कहा– "तुम जोधपुर बहुत दिन तक चाकरीमे रहोगे। तुमसे पौल पर पहरा देनेकी चाकरी कभी छूटेगी नही। और वैरसी और सावलदास तथा दूसरे ठाकुर भी मोटा राजाके बेटोकी सेवामे काम आवोगे।" 7 सवत् १६६२मे कूपावसका पट्टा मनोहरदासके सम्मिलित। सम्वत् १६६७मे सिवाना परगनेका भुडहड गाव और सम्वत् १६८४ दहीपडा गाव पट्टेमे।

**जाईसरणे समुप्पन्ने, मियापुत्ते महिड्ढिए।**
**सरई पोराणियं जाइं, सामण्णं च पुरा कयं ॥९॥**

जातिस्मरण ज्ञान प्राप्त होने पर, महाऋद्धिवाले मृगापुत्र, अपने पूर्व जन्म और उसमें पाले हुये संयम को याद करने लगे ॥९॥

**विसएसु अरज्जंतो, रज्जंतो संजमम्मिय।**
**अम्मापियरमुवागम्म, इमं वयणमब्बवी ॥१०॥**

विषय भोगों में रंजित न होकर और संयम में प्रीति रखते हुए मृगापुत्र, माता पिता के पास आकर इस प्रकार कहने लगे ॥१०॥

**सुयाणि मे पंच महव्वयाणि, नरएसु दुक्खं च तिरिक्खजोणिसु। निव्विण्णकामो मि महण्णवाओ, अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो ॥११॥**

हे माता ! मैंने पाँच महाव्रतों को जान लिया है, और नरक तिर्यञ्च में भोगे हुए दुःखों को भी जान लिया है। मैं संसार समुद्र से निवृत्त होने का अभिलाषी हूँ। मैं दीक्षा लेना चाहता हूँ। मुझे आज्ञा दो ॥११॥

**अम्म ताय मए भोगा, भुत्ता विसफलोवमा।**
**पच्छा कडुयविवागा, अणुबंध दुहावहा ॥१२॥**

हे माता पिता ! मैंने काम भोगों को भोग लिया।

७ आसो प्रागदासोत । ७ विहारी प्रागदासोत ।

६ वीठळदास सावळदासोत आधो थो[1] ।

७ नाथो ।

५ कलो ससारचदरो । माडणजीरै वास थो, पछै रावळै वसियो । संमत १६४३ कूपावस सिवाणारो गावा २सू दियो । पछै समत १६५७ दिखणमे अहमदनगरमे मुवो[2] ।

६ मनोहरदास कलावत । स० १६५७ कूपावस धनराज भेळो दियो । पछै स० १६६३ नरसिंघदास भेळो । समत १६६७ माधोदास भेळो[3] ।

६ माधोदास कलावत । समत १६६७ कूपावस मनोहरदास भेळो । पछै रामदास भेळो[4] ।

७ उदैसिंघ ।

८ महेसदास ।

६ महेसदास कलावत ।

७ नाथो ।

५ कचरो ससारचदरो । वडो रजपूत । माडणजीरै वास । पूरवमे काम आयो[5] ।

६ सादूळ कचरावत । रा॥ खीवाजीरै वास थो । पछै राजसिंघजीरै वास[6] ।

७ मोहणदास ।

६ सुरजन कचरावत । राजसिंघजीरैसू छाडनै भावसिंघ काना-

---

1 विट्ठलदास सावलदासोत अधा था । 2 पहिले माडणजीके यहा रहा था फिर जोधपुर महाराजाके यहा रहा । सम्वत १६४३मे सिवाना परगनेका कूपावस गाव अन्य दो गावोके साथ पट्टेमे दिया था । फिर सवत् १६५७मे अहमदनगर, दक्षिणमे मरगया । 3 सवत् १६५७मे कूपावस गावको धनराजके शामिल, सम्वत १६६३मे नरसिंहदासके शामिल और सवत् १६६७मे माधोदासके शामिल पट्टेमे दिया था । 4 सवत् १६६७मे कूपावस गाव मनोहरदासके शामिल और फिर रामदासके शामिल । 5 बडा वीर राजपूत । माडणजीके यहा नौकर । पूर्वमे काम आया । 6 राव खीवाजीके पास पहले रहा था, फिर राजसिंहजीके यहा रहा ।

ये विषफल के समान हैं। इनका परिणाम अत्यन्त कटु और दुःख दायक है ॥१२॥

इमं सरीरं अणिच्चं, असुई असुइसंभवं।
असासयावासमिणं, दुक्खकेसाण भायणं ॥१३॥

यह शरीर अनित्य है, अपवित्र है, अशुचि से ही इसकी उत्पत्ति हुई है। इसमें जीव का निवास भी अशाश्वत है और यह दुःखों तथा क्लेशों का भाजन है ॥१३॥

असासए सरीरम्मि, रइं नोवलभामहं।
पच्छा पुरा व चइयव्वे, फेणबुब्बुयसन्निभे ॥१४॥

पानी के बुलबुले के समान अशाश्वत ऐसे शरीर में मुझे प्रीति नहीं है, क्योंकि यह तो पहले या पीछे छोड़ना ही पड़ेगा ॥१४॥

माणुसत्ते असारम्मि, वाहीरोगाण आलए।
जरामरणघत्थम्मि, खणं पि न रमामहं ॥१५॥

व्याधि और रोगों के घर, तथा जन्म मरण से घिरे हुए, इस असार मनुष्य जन्म में मैं एक क्षण भर भी आनंद नहीं मानता ॥१५॥

जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं, रोगाणि मरणाणि यं।
अहो दुक्खो हु संसारो; जत्थ कीसंति जंतवो ॥१६॥

जन्म दुःख रूप है, बुढ़ापा, रोग और मृत्यु, ये सभी

५ ईसरदास रायमलोत । वडो रजपूत । कामरो माणस । राव रायसिघ चद्रसेणोत साथै सीरोही पूरै लोहडे पडियो[1] । पछै करम-सेनजीरै वसियो । चादो खीची करमसेन मारियो, तद राणारै वास थको माहैसू ईसरदास वरछीरी दीवी[2] । पछै स० १७६१ गोयददासजी माराणा, तद छाडियो[3] । रावळै वसियो । गाव ४सू वीठू दीवी[4] । पछै वळै छाडियो[5] ।

६ सवळसिघ ईसरदासोत । ६ ग्रासकरण ईसरदासोत ।

६ नारणदास ईसरदासोत ।

७ मनोहरदास ।

५ भाण रायमलोत । पूरणमल माडणोतरै वास । समत १६४० पूरणमलजी साथै सीरोही काम ग्रायो[6] ।

६ ग्रमरो भाणोत । रामडावास जोधपुररो पटै । दिखणमे राम कह्यो[7] ।

७ तेजमाल ग्रमरावत । समत १६७८ सावतकूवो पटै । समत १६८६ भाहरो पटै । स० १६६० खारी लवेरारी पटै[8] ।

५ घडसी रायमलोत । राव चद्रसेणजीरै गूढो फुलाज थो, तठै तुरक ग्राया, तठै काम ग्रायो[9] ।

६ महेस घडसीरो । समत १६ वीनावास पीपाडरो पटै । स० १६७२ पाचपदरो भाद्राजणरो दियो थो । पछै करमसेनजीरै गयो, उठै राम कह्यो[10] ।

---

1 वडा वीर राजपूत ग्रौर उपकारी मनुष्य । राव रायसिह चद्रसेणोतके साथमें सिरोहीकी लडाईमे पूरा घायल हो कर गिरा । 2 फिर करमसेनजीके यहा जाकर रहा । करमसेनने जव चादा खीचीको मार दिया, तव राणाके यहा रहते थके ईशरदासने भीतरसे फेंक कर बरछीकी मार दी । 3 पीछे सवत् १६७१मे जव गोयददासजी मारा गया तव छोड दिया । 4 फिर जोधपुर महाराजाके यहा रहा । महाराजाने ४ गावोके साथ वीठू गाव पट्टेमे दिया । 5 परन्तु फिर छोड दिया । 6 पूर्णमल माडणोतके यहा नौकर । सवत् १६४०मे पूर्णमलजीके साथ सिरोहीमे काम ग्राया । 7 जोधपुर परगनेका रामडावास गाव पट्टेमे । दक्षिणमे मरा । 8 सवत् १६७८मे सावतकुग्रा गाव, सवत् १६८६ भाहरा गाव ग्रौर सवत् १६६०मे लवेराका खारी गाव पट्टेमे दिये गये । 9 राव चद्रसेनजीका गुढा फुलाजमे था, वहा तुर्क चढ कर ग्राये जव घडसी वहा काम ग्राया । 10 वहा रामशरण हुग्रा ।

दुःख दायक है, आश्चर्य है कि यह सारा संसार दुःख रूप है। इसमें जीव क्लेश पा रहे हैं ॥१६॥

**खेत्तं वत्थुं हिरण्णं च, पुत्तदारं च बंधवा।**
**चइत्ताणं इमं देहं, गंतव्वमवसस्स मे ॥१७॥**

क्षेत्र, घर, सोना-चाँदी, पुत्र, स्त्री और बान्धव तथा इस शरीर को भी छोड़कर मुझे अवश्य जाना पड़ेगा ॥१७॥

**जहा किंपागफलाणं, परिणामो न सुंदरो।**
**एवं भुत्ताण भोगाणं, परिणामो न सुंदरो ॥१८॥**

जिस प्रकार किंपाक फल खाने का परिणाम सुन्दर नहीं होता, उसी प्रकार भोगे हुए भोगों का परिणाम भी सुन्दर नहीं होता है ॥१८॥

**अद्धाणं जो महंतं तु, अपाहेज्जो पवज्जई।**
**गच्छंतो सो दुही होइ, छुहातण्हाए पीडिओ ॥१६॥**

जो मनुष्य, बिना पाथेय-भाता साथ लिये, लंबा सफर करता है, वह आगे जाकर भूख प्यास से पीड़ित होकर दुःखी होता है ॥१६॥

**एवं धम्मं अकाऊणं, जो गच्छइ परं भवं।**
**गच्छंतो सो दुही होइ, वाहीरोगेहिं पिडिओ ॥२०॥**

इसी प्रकार धर्म नहीं करने वाला जीव, परभव में जाते हुए व्याधि और रोग से पीड़ित होकर दुःखी होता है।

६ केसोदास अखैराजोत । स० १६५० राय-कोहरियो लवेरारो पटै[1] ।

७ रामदास केसोदासोत । स० १६६४ हीगोळारी-वासणी सोझ-तरी पटै । पछै सिंघावासणी[2] ।

८ रुघनाथ । ८ लमखण । ८ राघोदास ।

७ मानो केसोदासोत । स० १६७३ उमरळाई सिवाणारी । स० १६७९ लालाणो सिवाणारो पटै[3] ।

८ जोध मानसिंघोत । ८ द्वारकादास । ८ स्यामदास ।

७ बलू केसोत । अमरसिंघजी साथै काम आयो ।

नारणदास अखैराजोत । काफरी ओयसारी पटै । पछै महेव सोझतरी पटै[4] ।

७ भादो नारणदासोत । सूराणी पटै । पछै महेव दीवी । समत १६७१ अजमेर गोयददास साथै काम आयो[5] ।

८ उदैसिघ भादावत । स० १६७१ महेव पटै ।

९ मनोहरदास उदैसिंघोत ।

८ आसकरण भादावत ।

७ माधोदास नारणदासोत । स० १६७३ महेव आधी उदैसिंघ भेळी[6] ।

८ मेघराज । ८ देईदास । ८ रतनसी ।

७ वीठळदास नारणदासोत ।

८ नाहरखान ।

५ गोपाळदास मेरावत । स० १६४१ वाघावास सोझतरो पटै ।

---

1 सम्वत् १६५०मे लवेराका राय-कोहरियो गाव पट्टेमे था । 2 सवत् १६६४मे सोजत परगनेका हीगोलांरी-वासणी नामक गाव पट्टेमे, फिर सिंहावासणी गाव दिया गया । 3 सम्वत् १६७३मे सिवाना परगनेका ऊमरलाई गाव और सवत् १६७९मे सिवाना परगनेका लालाणा गाव पट्टेमे थे । 4 ओयसाकी जागीरीका काफरी गाव और फिर सोजत परगनेका महेव पट्टेमे । 5 भादोको सूराणी गाव पट्टेमे और फिर महेव गाव दिया । सम्वत् १६७१मे अजमेरमे गोयददासके साथ काम आया । 6 सम्वत् १६७३मे उदयसिंहके साथ महेव गाव आधा ।

अद्धाणं जो महंतं तु, सपाहेज्जो पवज्जई ।
गच्छंतो सो सुही होइ, छुहातण्हाविवज्जिओ॥२१॥

जो मनुष्य, पाथेय साथ लेकर लम्बा सफर करता है, वह मार्ग में भूख प्यास से रहित होकर सुखी होता है ॥२१॥

एवं धम्मं पि काऊणं, जो गच्छइ परं भवं ।
गच्छंतो सो सुही होइ, अप्पकम्मे अवेयणे ॥२२॥

इसी प्रकार जो धर्म पालन कर परभव में जाता है, वह अल्प कर्म और वेदना रहित होकर सुखी होता है ॥२२॥

जहा गेहे पलित्तम्मि, तस्स गेहस्स जो पहू ।
सारभंडाणि नीणेइ, असारं अवउज्झइ ॥२३॥
एवं लोए पलित्तम्मि, जराए मरणेण य ।
अप्पाणं तारइस्सामि, तुब्भेहिं अणुमन्निओ ॥

जिस प्रकार घर में आग लगजाने पर गृहस्वामी, मूल्यवान् वस्तु को बाहर निकालता है और असार वस्तुओं को छोड़ देता है, उसी प्रकार जरा और मृत्यु से जलते हुए इस लोक में से आपकी आज्ञा पाकर मैं अपनी आत्मा को तारूंगा ।।२३-२४।।

तं बेंति अम्मापियरो, सामण्णं पुत्त दुच्चरं ।
गुणाणं तु सहस्साइं, धारेयव्वाइं भिक्खुणो ॥२५॥

माता पिता कहने लगे—हे पुत्र ! साधु को हजारों गुण

५ हरराज करमसीरो ।

६ साईदास हरराजोत ।

७ राघो । ७ रायसिंघ ।

३ देदो भैरवदासोत ।

४ वैणो देदावत ।

५ सूजो वैणावत । आसरानडो पटै[1] ।

६ नारणदास सूजावत । आसरानडो आधो, पछै सारो पटै[2] ।

६ रामदास सूजावत ।

५ मूळो वैणावत ।

६ पतो मूळावत । आसरानडो आधो पटै ।

७ स्यामदास । ७ नरसिंघ । ७ मुकददास ।

६ पचाइण मूळावत । आसरानडो आधो पटै ।

४ पीथो देदावत ।

५ कचरो पीथावत । वैणीदास पूरणमलोतरै वास[3] ।

५ सागो पीथावत । रा।। लखमण नारणोतरै साथै काम आयो[4] ।

३ वरजाग भैरूदासोत । राव मालदेजी सूर पातसाह कनै एक प्रोहत नै एक वरजाग दोनू ही नू परधानै मेलिया था, सु पातसाह पकड़ बदीखानै दिया । पछै सूर पातसाह मुवो जदी छूट आया[5] । भा।। वरजाग भैरवदासोतनू जोधपुररै वास वैराई, महेव पटै दी[6] । वरजागरो करायो बैराईमे तळाव वरजागसर छै । कोहर १ वरजागसर छै[7] । महेवमे जोगीरो आसण वरजाग करायो[8] ।

---

1 सूजे वैणावतको आसरानडो (आसा-रो-नाडो ?) गांव पट्टेमे । 2 नारायणदासको पहले आसरानडो आधा और फिर सम्पूर्ण पट्टेमे । 3 कचरा पीथावत, वैणीदास पूर्णमलोतके यहां नौकर । 4 नारायणके बेटे रा।। लखमणके साथ सागा पीथावत काम आया । 5 राव मालदेवजीने सूर बादशाहके पास एक पुरोहितको और एक वरजाग, दोनो ही को अपनी ओरसे प्रधानके (प्रतिनिधिके) रूपमे भेजा था, लेकिन बादशाहने उन्हे पकड कर जेलमे डाल दिया । जब सूर बादशाह मर गया तब वे छूट कर आये । 6 वरजाग भैरवदासोतको, जब वह जोधपुरमे चाकरीमे रहा तब वैराही और महेव गाव पट्टेमे दिये । 7 वैराही गावमे वरजागके बनवाये हुए वरजागसर नामका एक तालाब और वरजागसर नामका ही एक कुआ है । 8 महेव गावमे वरजागने एक जोगीका आसन बनवाया ।

धारण करने पड़ते हैं, इसलिये साधु धर्म का पालन दुष्कर है।

समया सव्वभूएसु, सत्तुमित्तेसु वा जगे।
पाणाइवायविरई, जावज्जीवाए दुक्करं ॥२६॥

पुत्र ! शत्रु हो या मित्र, सभी प्राणियों पर जीवन पर्यन्त समभाव रखना तथा हिंसा से निवृत्त होना दुष्कर है।

निच्चकालप्पमत्तेणं, मुसावायविवज्जणं।
भावियव्वं हियं सच्चं, निच्चाउत्तेण दुक्करं ॥२७॥

सदा के लिए अप्रमत्त होकर झूठ का त्याग करना और उपयोग पूर्वक हितकारी सत्य वचन बोलना दुष्कर है।

दंतसोहणमाइस्स, अदत्तस्स विवज्जणं।
अणवज्जेसणिज्जस्स, गिण्हणा अवि दुक्करं ॥२८॥

बिना दिये तो दांत साफ करने को तिनका भी नहीं लेना और निर्वद्य तथा एषणीय वस्तु ही लेना अति दुष्कर है।

विरई अबंभचेरस्स, कामभोगरसन्नुणा।
उग्गं महव्वयं बंभं, धारेयव्वं सुदुक्करं ॥२९॥

काम भोग के रस को जानने वाले के लिए, मैथुन से निवृत्त होकर उग्र ब्रह्मचर्य को धारण करना अति दुष्कर है।

धणधन्नपेसवग्गेसु, परिग्गहविवज्जणं।
सव्वारंभपरिच्चाओ, णिम्ममत्तं सुदुक्करं ॥३०॥

८ सुदरदास । ८ मानसिघ । ८ रासो ।

५ ठाकुरसी जगमालोत । समत १६६४ भोवाद पटै ।

६ कलो ठाकुरसीरो । ६ सुरताण ठाकुरसीरो ।

७ हरदास । ७ वीको । ७ तिलोकसी ।

५ सूजो जगमालोत ।

६ ईसरदास सूजावत । भाटी अचळदास सुरताणोत मारियो गांव काभडै[1] ।

७ अखैराज ईसरदासोत ।

८ मेघराज अखैराजोत । अचळदास सुरताणोत साथै काम आयो ।

६ सहसो सूजावत ।

४ खीवो वरजागोत, वागड काम आयो[2] ।

४ गागो वरजागोत । कूपाजीरै वास थो । पछै सूर पातसाह कनै परधान कूपैजी मेलियो । पछै पातसाह सहरवाद थको हीज आप कनै राखियो थो । पछै वेढ हुई तद कूपाजी साथै काम आयो । गागो, कूपा मैहराजोतरो मावळियाई-भाई हुवो[3] ।

५ वरजाग भैरूदासोत ।

४ भैरूदास जेसावत ।

२ वणवीर जेसावत । खैरवो पटै ।

३ तेजसी वणवीरोत । राव मालदेजीरै वास । खैरवो पटै । भागेसररी वेढ राव मालदे की, तठै पूरै लोहडै पडियो, पछै उपाडियो । बाहतर वड-गूजरावाळी फोजदार कर मेलियो हुतो[4] ।

---

1 काभडा गावमे भाटी अचलदास सुरताणोतने ईसरदास सूजावतको मार दिया । 2 वरजागका बेटा खीवा वागडकी लडाईमे काम आया । 3 वरजागका बेटा गागा कूपाजीके यहा रहता था । कूंपाजीने इसे अपना प्रधान (प्रतिनिधि) बना कर सूर बादशाहके पास भेजा । बादशाहने गागाको शहरबद करके (कैदीके रूपमे) अपने पास रख लिया था । जब लडाई हुई तब कूपाजीके साथ गागा भी काम आ गया । गागा, कूंपा मेहराजोतका धर्म भाई (?) हुआ था । 4 तेजसी वणवीरोतको राव मालदेवने वड-गूजरोवाली-बाहतर गावमे फौजदार बना कर भेजा था । राव मालदेवने भागेसरमे लडाई लडी उसमे तेजसी पूर्ण आहत हो कर गिर गया और उठा कर ले जाया गया । राव मालदेव का यह नौकर था और खैरवा गाव इसको पट्टेमे दिया गया था ।

सभी प्रकार के आरम्भ परिग्रह का और धन धान्य तथा नौकर चाकरों का त्याग कर, निर्ममत्व होना महा कठिन है।

चउव्विहे वि आहारे, राइभोयणवज्जणा ।
सन्निहीसंचओ चेव, वज्जेयव्वो सुदुक्करं ॥३१॥

रात्रि में चारों आहार का त्याग करना और घृतादि के संचय का त्याग करना अति कठिन है ।३१।

छुहा तण्हा य सीउण्हं, दंसमसगवेयणा ।
अक्कोसा दुक्खसेज्जा य, तणफासा जल्लमेव य ॥३२॥

तालणा तज्जणा चेव, वहबंधपरीसहा ।
दुक्खं भिक्खायरिया, जायणा य अलाभया ॥३३॥

क्षुधा, पिपासा, शीत, उष्ण डांस और मच्छरों से होने वाला कष्ट, आक्रोश वचन, दुखद शय्या, प्राणादि स्पर्श, मैल परीषह, ताड़ना, तर्जना, तथा वध बन्धन का परीषह, भिक्षाचर्या याचना और अलाभ इत्यादि परीषहों का सहना अति दुखकारी है ॥३२-३३॥

कावोया जा इमा वित्ती, केसलोओ य दारुणो ।
दुक्खं बंभव्वयं घोरं, धारेउं असहप्पणो ॥३४॥

कापोत के समान दोषों से बचने की वृत्ति और केश लुंचन दुःखदायी है। जो महान् आत्मा नहीं है उनके लिए घोर ब्रह्मचर्य व्रत का धारण करना अत्यन्त कठिन है ॥३४॥

६ मनोहरदास । ६ मानसिंघ ।

४ मेहो तेजसीयोत । भलो ठाकुर थो । राव चद्रसेणजी मेहारी बेटी परणिया था । विखामे राव चद्रसेणरै काम आयो[1] ।

४ किसनो तेजसीयोत ।

५ पातळ किसनावत । स० १६४१ तावडियो पटै । पछै समत १६६४ करमसीसर । दोनू पटै था[2] ।

६ मनोहरदास पातळोत । करमसीसर पटै ।

६ अखैराज पातळोत ।

५ सादूळ किसनावत । मोटै राजाजी वडलो पटै दियो, वागडसू आयो तरै[3] ।

६ वलू सादूळोत ।

३ वीसो वणवीरोत । राव मालदेरा विखामे भागेसररी वेढ काम आयो, ऊगा महेवचा भेळो[4] ।

४ रायसिंघ वीसावत ।

५ भाण रायसिंघोत । भाटेर काम आयो । नागोररा साथसू वेढ हुई तठै[5] ।

६ सामदास भाणोत । ६ हरीदास भाणोत ।

५ नरहरदास रायसिघोत । भाटेर कांम आयो ।

५ चतुरभुज रायसिंघोत । भगतावासणी जोधपुररी पटै । पछै स० १६७१ कुवर गर्जसिंघ गोयददासजी राणारी धरती कुभळमेर लियो तठै काम आयो[6] ।

५ लाडखान रायसिंघोत ।

४ पीथो वीसावत ।

---

1 मेहा तेजसीओत अच्छा ठाकुर था । राव चद्रसेनजी मेहाकी बेटी व्याहे थे। राव चद्रसेनके सकट-कालमे काम आया । 2 सम्वत् १६४१मे तावडिया गाव और सम्वत् १६६४मे करमसीसर दोनो गाव पट्टेमे थे । 3 वागडसे आया तव मोटे राजाजीने वडला गाव पट्टेमे दिया । 4 राव मालदेवके विखेमें ऊगा महेवचाके साथ भागेसरकी लडाईमे काम आया । 5 नागोरवालोसे लडाई हुई तव भाटेर गावमे काम आया । 6 जोधपुर परगनेका भगतावासणी गाव पट्टेमे । सम्वत् १६७१मे कुवर गर्जसिंह और गोयददासजीने राणाके देशका (मेवाडका) कुभलमेर लिया वहा काम आया ।

सुहोइओ तुमं पुत्ता, सुकुमालो सुमज्जिओ ।
न हुसी पभू तुमं पुत्ता, सामण्णमणुपालिया ॥३५॥

हे पुत्र ! तू सुख भोगने योग्य, सुकुमार और सदा अलंकृत रहने वाला है । हे पुत्र! तू संयम पालने योग्य नहीं है ।

जावज्जीवमविस्सामो, गुणाणं तु महब्भरो ।
गुरुओ लोहभारु व्व, जो पुत्ता ! होइ दुव्वहो ॥३६॥

जिस प्रकार लोहे के बड़े भार को सदा उठाये रखना दुष्कर है, उसी प्रकार गुणों के महान् भार को जीवन पर्यन्त बिना विश्राम लिए, धारण करना बड़ा ही कठिन है ॥३६॥

आगासे गंगसोउ व्व, पडिसोउ व्व दुत्तरो ।
बाहाहिं सागरो चेव, तरियव्वो गुणोदही ॥३७॥

जिस प्रकार आकाश गंगा की धारा को तैरना और प्रतिश्रोत=धारा के सामने तैरना कठिन है तथा भुजाओं से समुद्र पार करना कठिन है, उसी प्रकार गुणों के समुद्र को पार करना भी कठिन है ॥३७॥

वालुयाकवलो चेव, निरस्साए उ संजमे ।
असिधारागमणं चेव, दुक्करं चरिउं तवो ॥३८॥

रेत के कवल की तरह संयम नीरस है, और तलवार की धार के समान तप का आचरण करना कठिन है ॥३८॥

# रूपसी-भाटियां री साख

भाटिया माहै साख १ रूपसियारी। रूपसी लखमण रावळरो बेटो[1]।

१ रूपसी लखमणरो।

२ विजो रूपसीरो। २ नाथो रूपसीरो। २ पतो रूपसीरो। जूभै। विजा रूपसिश्रोतरो परवार[2]।

३ सागो विजावत।

४ मेळो सागावत।

५ भैरवदास मेळावत। समत १६५१ रामदास चादावतरै वास थो। पछै रावळै वसियो। समत १६७० मेडतै सिकदार थो। समत १६७७ मादळियो पटै[3]।

६ रायसिघ भैरवदासोत। काभडो पटै[4]।

६ सूजो, भाटी गोयददास साथै काम आयो[5]।

७ कूभो। ७ आसो।

६ नरहरदास भैरवदासोत। ६ रामसिंघ भैरवदासोत।

७ कीरतसिघ। ७ सकतसिंघ। ७ हरदास।

६ लाडखान भैरवदासोत।

७ अखैराज। ७ भोजराज।

६ उदैसिघ भैरवदासोत।

७ वीठळ। ७ मुकद।

६ जगनाथ भैरवदासोत। ६ राजसी भैरवदासोत।

५ भीवराज मेळावत।

६ वेणीदास।

---

1 रावल लखमणका बेटा रूपसी जिससे भाटी राजपूतोमे एक शाखा रूपसी-भाटियोकी अथवा रूपसियोकी प्रचालित हुई। 2 रूपसीके बेटे विजैका (विजय का) परिवार। 3 मेलेका बेटा भैरवदास सवत् १६५१मे रामदास चादावतके यहा रहता था, फिर जोधपुरमे राजाजीके यहा रहा। सवत् १६७०मे मेडतेका सिकदार था। सवत् १६७७मे मादलिया गाव पट्टेमे था। 4 भैरवदासके बेटे रायसिहको काभडा गाव पट्टेमे मिला। 5 सूजा, भाटी गोयददासके साथ अजमेरमे काम आया।

अहीवेगंतदिट्ठीए, चरित्ते पुत्त दुक्करे
जवा लोहमया चेव, चावेयव्वा सुदुक्करं ॥३९॥

हे पुत्र ! सर्प की एकाग्र दृष्टि होती है, उसी प्रकार एकाग्र मन रखकर चारित्र पालना दुष्कर है और लोहे के चनों को चवाने के समान संयम पालना अत्यन्त ही कठिन है ।३९।

जहा अग्गिसिहा दित्ता, पाउं होइ सुदुक्करा ।
तहा दुक्करं करेउं जे, तारुण्णे समणत्तणं ॥४०॥

जिस प्रकार जलती हुई अग्नि शिखा को पीना महा दुष्कर है, उसी प्रकार तरुणवय में साधुपना पालना महा दुष्कर है ॥४०॥

जहा दुक्खं भरेउं जे, होइ वायस्स कोत्थलो ।
तहा दुक्खं करेउं जे, कीवेणं समणत्तणं ॥४१॥

जिस प्रकार कपड़े की थैली को हवा से भरना कठिन है, उसी प्रकार कायरता से संयम पालना कठिन है ॥४१॥

जहा तुलाए तोलेउं, दुक्करं मंदरो गिरी ।
तहा निहुयनीसंकं, दुक्करं समणत्तणं ॥४२॥

जिस प्रकार सुमेरु पर्वत को तराजू से तोलना दुशक्य है, उसी प्रकार निश्चल और शंका रहित होकर साधुता का पालन करना दुशक्य है ॥४२॥

जहा भुयाहिं तरिउं, दुक्करं रयणायरो ।
तहा अणुवसंतेणं, दुक्करं दमसायरो ॥४३॥

६ गोयददास ।

७ वीठळदास ।

६ गोपाळदास राणावत । वाघावस पटै । स० १६४१ गुजरात काम आयो[1] ।

७ हरीदास गोपाळदासोत ।

८ जगनाथ ।

९ अखैराज ।

३ राघो नाथूरो । इणरै वासला जेसळमेररै गाव काछै[2] ।

४ चद्रराव ।

५ भाखर काछै रहै[3] ।

६ सेखो । ६ सुरताण । ६ अमरो ।

७ देवीदान ।

५ वरजाग ।

६ सादूळ ।

७ पीथो ।

८ मनोहर काछै[4] । ८ मोहणदास ।

६ नापो वरजागरो ।

६ सहसो । सोढारै मामलै काम आयो[5] ।

७ डूगरसी, जगनाथ कनै[6] ।

७ स्यामदास सोरठ काम आयो[7] ।

३ रिणधीर नाथूरो ।

४ मूळो ।

५ दूदो ।

६ गगादास । ६ नेतो ।

---

1 राणाके बेटे गोपालदासको वाघावस गाव पट्टेमे । सवत् १६४१मे गुजरातमे काम आया । 2 नाथूका वेटा राघो, इसके वशज जैसलमेर परगनेके काछे गावमे रहते हैं । 3 भाखर काछै गावमे रहता है । 4 मनोहर काछै गावमे रहता है । 5 सहसा सोढोकी लडाईमें काम आया । 6 डूगरसी जगन्नाथके पास रहता है । 7 स्यामदास सोरठकी (सौराष्ट्रकी) लडाईमे काम आया ।

जिस प्रकार समुद्र को भुजाओं से तैरना दुष्कर है, उसी प्रकार कषायों को उपशान्त किये बिना, संयम रूप समुद्र का तैरना कठिन है ॥४३॥

**भुंज माणुस्सए भोगे, पंचलक्खणए तुमं ।**
**भुत्तभोगी तओ जाया, पच्छा धम्मं चरिस्ससि ॥४४॥**

हे पुत्र ! अभी तुम शब्दादि पांच लक्षण वाले मनुष्य सम्बन्धी भोगों को भोगो । भुक्त भोगी होने के बाद ही धर्म का पालन करना ॥४४॥

**सो बेइ अम्मापियरो, एवमेयं जहा फुडं ।**
**इहलोगे निप्पिवासस्स, नत्थि किंचि वि दुक्करं ॥४५॥**

मृगापुत्र ने कहा—हे माता पिता ! आपका कहना ठीक है, किन्तु इस लोक से निस्पृह बने हुए पुरुष के लिए कुछ भी दुष्कर नहीं है ॥४५॥

**सारीरमाणसा चेव, वेयणाओ अणंतसो ।**
**मए सोढाओ भीमाओ, असइं दुक्खभयाणि य ।४६।**

मैने शारीरिक और मानसिक भयङ्कर वेदनाएँ अनन्त वार सहन की और अनेक बार दुःख तथा भय का अनुभव किया।

**जरामरणकंतारे, चाउरंते भयागरे ।**
**मए सोढाणि भीमाणि, जम्माणि मरणाणि य ॥४७॥**

जन्म मरण रूपी चार गतिवाली भयङ्कर अटवी में,

९ धनराज जैतावत । रावळ रामचदरै साथ सबळसिघसू वाप वेढ की, तठै काम आयो[1] ।

१० रायमल ।

११ सूजो रायमलोत ।

१० जैतो ।

११ भागचद जैतावत ।

१० सुरताण । १० किसनो ।

८ पतो जैमलरो ।

९ लिखमीदास ।

१० नरहर ।

११ विजो ।

१० भैरवदास ।

११ आईदान ।

१० वीठळदास ।

११ रामचद ।

१० दुरगो ।

११ सामो । ११ सुदर ।

१० रासो ।

११ कानो ।

९ जेसो पतावत । करमसोतारी वेढ काम आयो[2] ।

१० नरसिंघ ।

११ सादूळ ।

९ ईसर पतारो ।

१० अखैराज । १० सहसो ।

९ गोकळ पतावत । पोकरणरी वेढ काम आयो[3] ।

---

1 धनराज जैतावतने रावल रामचदके साथमे रह कर सबलसिहसे वाप गावमे लडाई की, वहा काम आया । 2 पत्ताका बेटा जैसा करमसोतोकी लडाईमे काम आया । 3 पत्ताका बेटा गोकुल पोकरणकी लडाईमे काम आया ।

मैंने जन्म मरण के भयंकर कष्टों को सहन किये हैं ॥४७॥

जहा इहं अगणी उण्हो, इत्तोऽणंतगुणे तहिं ।
नरएसु वेयणा उण्हा, अस्साया वेइया मए ॥४८॥

यहाँ अग्नि में जितनी उष्णता है, उससे अनन्त गुणी उष्णता नरकों में है । मैंने उस कष्ट दायक वेदना को सहन किया है ॥४८॥

जहा इहं इमं सीयं, इत्तोऽणंतगुणो तहिं ।
नरएसु वेयणा सीया, अस्साया वेइया मए ॥४९॥

यहाँ जैसी शीत है, उससे अनन्त गुणी शीत नरकों में है । उस असाता वेदना को मैंने सहन की है ॥४९॥

कंदंतो कंदुकुंभीसु, उड्ढपाओ अहोसिरो ।
हुयासणे जलंतम्मि, पक्कपुव्वो अणंतसो ॥५०॥

मुझ आक्रन्द करते हुए को कुन्दु कुम्भियों में ऊँचे पैर और नीचे सिर करके पहले अनन्त बार पकाया गया ॥५०॥

महादवग्गिसंकासे, मरुम्मि वइरवालुए ।
कलंबवालुयाए य, दड्ढपुव्वो अणंतसो ॥५१॥

महा दावाग्नि के समान तथा मरु देश की वालुका के समान वज्र वालुका में और कदम्ब नदी की वालुका में मुझे अनन्त बार जलाया गया ॥५१॥

# अथ सरवहियांरी पीढी, जादव[1]

१ राव खगार (राव खेगार)

२ गहर (राव गहर, राव गाहर, गाहरियो, राव गारियो)

३ दयाच* (दयाळ, द्यास)

४ कवाट (कहवाट, कैवाट)

५ नवघण ।

६ जैमल ।

७ मडळीक ।

८ रायसिंघ ।

९ प्रथीराज । चोरवाड वसै । राजा जसवतसिघजीरो सुसरो[2] । वात सरवहियारी ।

ऐही जादवै भिळै[3] । सरवहिया आगै गिरनाररा धणी[4] । राव मडळीक वडो रजपूत हुवो । असवार २००००री ठाकुराई हुती[5] । जेसो सरवहियो मडळीकरो लोहडो भाई हुवो[6] । राव मडळीक कहै छै, रोज एक नवो तळाव खणावतो[7] । सासतो गगाजीरै पाणी सापडतो[8] । गगाजळ पीवतो । तिणरै प्रोळ-बारट रवो-सुरताणियो हुतो[9] । तिणरै वैर चारण नागही देवी हुती[10] । तिणरै पेटरो बेटो १ खूट हुवो[11] । तिणनू परणायो[12] । उणरै घरै वैर पदमणी आई[13] । तिणरो बेटो नागारजन, तिको अहमदावाद पातसाह महमद बेगडा

1 सरवहिया यादवोकी वशावली । (यह वशावली अशुद्ध प्रतीत होती है; किन्तु अन्य इतिहासकार भी एकमत नही हैं । क्रम और कालमे भी अन्तर है ।) 2 पृथ्वीराज चोरवाडमे रहता है । यह राजा जसवतसिहजीका ससुरा है । 3 ये (सरवहिये) भी यादवोमे मिलते हैं । 4 सरवहिया पहिले गिरनारके स्वामी थे । 5 बीस हजार सवारोका आधिपत्य था । 6 जैसा सरवहिया राव मडलीकका छोटा भाई था । 7 कहा जाता है कि राव मडलीक नित्य एक नया तालाब खुदवाता था । 8 निरतर गगाजलसे स्नान करता था । 9 उसका पोल-बारहट रवा-सुरताणिया नामका चारण था । 10 उसकी पत्नी चारणी नागही देवी थी । 11 उसकी कोखसे खूट नामका एक पुत्र उत्पन्न हुआ । 12 उसका विवाह किया । 13 उसको पद्मिनी पत्नी मिली ।

*कच्छ, काठियावाड और गुजरात आदिके इतिहास-ग्रथोमे 'रा' दयास नाम भी लिखा है ।

®'रा' नोघण ।

रसंतो कंदुकुंभीसु, उड्ढं बद्धो अबंधवो ।
करवत्तकरकयाईहिं, छिन्नपुव्वो अणंतसो ।।५२।।

स्वजनों से रहित आक्रन्द करते हुए मुझे, कुन्दुकुम्भी में ऊँचा बाँधकर, करवत और क्रकचों से पूर्वभवों में अनन्त-बार छेदन भेदन किया ।।५२।।

अइतिक्खकंटगाइण्णे, तुंगे सिंबलिपायवे ।
खेवियं पासबद्धेणं, कड्ढोकड्ढाहिं दुक्करं ।।५३।।

अत्यन्त तीखे काँटो वाले ऊँचे शालमलि वृक्ष पर मुझे बन्धन से बाँध दिया और काँटों पर इधर उधर खींचा । इस प्रकार कष्टों को सहन किया ।।५३।।

महाजंतेसु उच्छू वा, आरसंतो सुभेरवं ।
पीडिओ मि सकम्मेहिं, पावकम्मो अणंतसो ।।५४।।

अपने अशुभ कर्मों के कारण मुझ पापकर्मी को, अत्यन्त रौद्रता से महायन्त्रों में डालकर इक्षु की तरह पीला गया ।५४।।

कूवंतो कोलसुणएहिं, सामेहिं सबलेहि य ।
पाडिओ फालिओ छिन्नो, विप्फुरंतो अणेगसो ।।५५।।

आक्रन्द करते और इधर उधर भागते हुए मुझे, कुत्तों और सुअरों रूपी श्याम और सबल परमाधामियों ने नीचे गिराया और फाड़ा तथा छेदा ।।५५।।

थाहरी वहू दिखावो[1] ।" तरै नागही वहूनू सिणगार ल्याई । वहूरा पग धरती लागै नही । वहू देवरूप हुई[2] । राव वहूनू हाथ घातियो[3] । तरै देवी रावनू कोप कियो । रावनू सराप[4] दियो । कह्यो–"थाहरो गढ जाजो । थारी मत भ्रष्ट हुई, गढ तुरकानू देईस । तू तुरकारी (वहू)नू सेवीस, अखत पढीस, धूड खातो फिरीस[5] ।" ओ श्राप हुवो । रावरो मुहडो विगडियो । राव घरै गयो । पदमणी जाय केदार गळी[6] । देवी नागही पातसाह महमद वेगडा कनै गई । जायनै कह्यो–"म्हे थानू गिरनार दियो[7] ।" तरै पातसाह कह्यो–"तिका वात क्यु जाणीजै[8] ?" तरै देवी नागही कह्यो–"थे सवाररा सूता ऊठो, तरै थाहरी पाघ माहैसू चावळ रगिया नीसरै तो साच कर जाणीजो[9] ।" तरै सवारै चावळ नीसरिया । तरै पातसाह गिरनार ऊपर चढियो, गढ घेरियो । मडळीक गैहलो हुवो[10] । गढरी कूची राव पातसाहनू आण दी[11] । आप गढसू उतरियो । पातसाहसू मिळियो । पछै मडळीकनू पातसाह तुरक कियो । गाय खवाडी । तुरका भेळो वेठो, खराव हुवो[12] । रजपूत १००० मडळीकरा वाज मुवा[13] । गढ गिरनार पातसाह लियो । पठाणानू गिरनार थाणै राखिया, नै पातसाह परो गयो[14] । तठा पछै पातसाह महमद वेगडो वेगो ही मुवो[15] । तठा पछै

---

1 वह नागहीको कहने लगा कि मुझे तुम्हारी पुत्रवधूको दिखलाओ । 2 तब नागही अपनी पुत्रवधूको शृंगार करके ले आई । 3 पुत्रवधूके पाव भूमिको स्पर्श नही करते, वह दैवी-रूप हो गई । 4 श्राप । 5 उसने कहा—'तेरी मति भ्रष्ट हो गई अत तेरा गढ तेरे अधिकारमे चला जाये, उसे मैं तुर्कोको दूगी । तू तुर्कोकी (स्त्रीकी) सेवा करेगा, म्लेच्छ वाणी पढेगा और धूल चाटता फिरेगा ।' 6 पद्मिनी केदारनाथ जा कर हिमालयमे गल गई । 7 नागही देवी वादशाह महमूद वेगडाके पास गई और जा कर कहा कि हमने तुमको गिरनार दिया । 8 इसका पता कैसे लगे ? 9 तब नागही देवीने कहा कि प्रात जब तुम सोते हुए उठो उस समय तुम्हारी पगडीमे रगे हुए चावल निकलें तो इस वातको सच जानना । 10 प्रात काल वैसे चावल निकल गये, तब वादशाह गिरनार पर चढ कर के गया और गढको घेर लिया । मडलीक पागल हो गया । 11 गढकी चावी रावने वादशाहको ला दी । 12 स्वय गढसे नीचे उतरा और वादशाहसे मिला । वादशाहने मडलीकको मुसलमान बनाया और गाय खिला दी । मुसलमानोके शामिल खाना खाया और भ्रष्ट हुआ । 13 एक हजार राजपूत मडलीकके लड कर मर गये । 14 गिरनारका गढ वादशाहने अपने अधिकारमे किया । पठानोको गिरनारके थाने पर रखा और फिर वादशाह लौट गया । 15 इस घटनाके वाद वादशाह तो जल्दी ही मर गया ।

असीहिं अयसिवण्णेहिं, भल्लीहिं पट्टिसेहि य।
छिन्नो भिन्नो विभिन्नो य, उववण्णो पावकम्मुणा॥५६॥

मैं पाप कर्मों से नरक में उत्पन्न हुआ और अलसी के वर्ण जैसी तलवारों, भालों और पट्टिश शस्त्रों से छेदन भेदन और टुकड़े टुकड़े किया गया ॥५६॥

अवसो लोहरहे जुत्तो, जलंते समिलाजुए।
चोइओ तुत्तजुत्तेहिं, रोज्झो वा जह पाडिओ ॥५७॥

मुझ परवश पड़े हुए को जलते हुए समिला युक्त लोहे के रथ में जोता, फिर चाबुक और जोतों से मारकर हाँका तथा रोज की तरह भूमि पर गिराया ॥५७॥

हुयासणे जलंतम्मि, चियासु महिसो विव।
दड्ढो पक्को य अवसो, पावकम्मेहिं पाविओ ॥५८॥

पाप कर्मों से परवश बने हुए मुझ पापी को, अग्नि से जलती हुई चित्ताओं में, भैंसे की तरह जलाया और पकाया गया।

बला संडासतुंडेहिं, लोहतुंडेहिं पक्खिहिं।
विलुत्तो विलवंतोहं, ढंकगिद्धेहिंऽणंतसो ॥५९॥

मुझ रोते हुए को बलपूर्वक संडासी जैसे और लोहे के समान कठोर मुँह वाले ढंक और गिद्ध पक्षियों द्वारा अनन्ती बार छिन्न भिन्न किया गया ॥५९॥

तण्हाकिलंतो धावंतो, पत्तो वेयरणिं णइं।
जलं पाहिं ति चिंतंतो, खुरधाराहिं विवाइओ ॥६०॥

# वात सरवहिया जेसारी

राव मडळीक तो गैहलो हुवो। तरै जेसो मडळीकरो लोहडो भाई, तिण सारो धरतीरो भार सभायो[1]। धरतीरा सारा रजपूत लेनै भाखरै पैठो[2]। धरतीरो विगाड घणो करै छ। गढ गिरनार माहै पातसाहरो वडो थाणो छै। धरती माहै थाणा ठोड ठोड राखिया छै, पण धरती भोग पड सकै नही[3]। पातसाह धरतीनू राह हुय लागो छै, पण सरवहियो जेसो हाथ आवै नही[4]। पातसाह घणो ही उपाव करै छै। तिण समै किणहीक[5] कह्यो पातसाहनू–'चारण वीरधवळ लागडियो, ओ पातसाही मुलकमे रहै छै। इणसू जेसो घणी मया करै छै। ओ वडो कवीसर छै[6]। इणसू जेसो निपट कावो छै[7]। सु इणरा माणस बेटा बद करो, नै कहीजो–"जेसानू आण दै तो थारी बद छोडा।" ओ जेसानू कहस्यो तठै आण देसी[8]। तरै चारण वीरधवळरो कबीलो पातसाह सरब पकडायो, तरै चारण वासै हुवो आयो[9]। माल उण घणोही धामियो[10], पण पातसाह चारणरो कबीलो छोडै नही। चारणनू पातसाह कह्यो–"माल कितरोही दीयै, थारो कबीलो छूटै नही[11]। तू जेसा सरवहियानू अठै ल्यावै तो थारो कबीलो छूटै।" तरै इण चारण तो घणोही उजर कियो, पण पातसाह हठ पडियो कहै–"एक वार जेसो म्हानू आखिया दिखाव[12]।" तरै चारण वीरधवळ जेसा सरवहिया कनै गयो। सारी वात माड जेसानू कही[13]। तरै जेसै कह्यो–"भली वात, थाहरा माणस छूटसी सु करस्या[14]।" पछै

---

1 तब मडलीकका छोटा भाई जैसा जिसने देशका सारा भार सम्हाला। 2 देशके सभी राजपूतोको लेकर पहाडोमे घुस गया। 3 लेकिन देश आबाद होकर राजस्व-साधनके योग्य नही हो सका। 4 बादशाह राहु होकर देशके पीछे लगा है, पर सरवहिया जैसा हाथ नही आता। 5 किसी एकने। 6 जैसा इसके साथ बडी कृपाका व्यवहार करता है और यह बडा कवीश्वर है। 7 जैसा इससे बहुत ही दबा रहता है। 8 इसका जनाना और बेटोको बद करदो और इसको कहो कि जैसेको लादे तो तेरे बदी छोड दें। यह कहोगे वही जैसाको ला देगा। 9 तब चारण उनके पीछे आया। 10 उसने बहुतेरा धन-माल ले लेनेका आग्रह किया। 11 माल कितना ही दे देने पर तेरा कबीला नही छूटे। 12 एक बार जैसाको मुझे आखोंसे दिखा दे। 13 अथसे इति तक जैसाको सब वात कह सुनाई। 14 अच्छी बात है, जिस बातसे तुम्हारा कुटुब छूटेगा वही करेंगे।

में प्यास से अत्यन्त पीड़ित होकर, जल पीने की इच्छा से दौड़ता हुआ वैतरनी नदी पर पहुँचा। वहां उस्तरे की धारा के समान नदी की धारा से मेरा विनाश हुआ ॥६०॥

**उण्हाभितत्तो संपत्तो, असिपत्तं महावणं।**
**असिपत्तेहिं पडंतेहिं, छिन्नपुव्वो अणेगसो ॥६१॥**

मैं गर्मी से घबराया हुआ असिपत्र महावन में गया। किन्तु तलवार के समान पत्तों के गिरने से अनेक बार छिन्न-भिन्न हुआ। ६१॥

**मुग्गरेहिं मुसुंढीहिं, सूलेहिं मूसलेहि य।**
**गयासं भग्गगत्तेहिं, पत्तं दुक्खं अणंतसो ॥६२॥**

मुद्गरों, मुसंढियों, त्रिशूलों, मूसलों और गदा से मेरे गात्रों का भंग किया। मैंने ऐसा दुःख अनन्त बार पाया ।६२।

**खुरेहिं तिक्खधारेहिं, छुरियाहिं कप्पणीहि य।**
**कप्पिओ फालिओ छिन्नो, उक्किक्तो य अणेगसो ॥६३॥**

में अनेक बार कतरणियों से कतरा गया, छुरियों से चीरा गया और मेरी चमड़ी उतार दी गई ॥६३॥

**पासेहिं कूडजालेहिं, मिओ वा अवसो अहं।**
**वाहिओ बद्धरुद्धो य, बहुसो चेव विवाइओ ॥६४॥**

मृग की तरह परवश पड़ा हुआ मैं, धोखे से पाशों और कूट जालों में बाँधा गया, रोका गया और मारा गया।

मै आणणो कबूलियो थो सु आणियो[1] । हमै पातसाहजी ! म्हारा माणस छोडो । पातसाहरो कवल छै[2] ।" तरै पातसाह कह्यो–"मै छोडिया । थारो कौल पोहतो[3] ।"

तिण समै सको देखै छै[4] । सरवहियो जेसो पातसाह ऊभो छो तठी नाखिया सु घोडै हाथीरै दातूसळा पग टेकिया[5] । जेसै पातसाहरी कडियानू हाथ घालियो[6] । पातसाह तो होदो पकड रह्यो । जेसो पातसाहरै कडियारो कटारो ले गयो[7] । पातसाहर किणही सिपाही जेसानू लोह लगाय सकिया नही[8] । तिण वेळा चारण वीरधवळ दूहो कहै[9]–

'ओ जो जेसो जाय, पाड नही पतसाहरै ।
आयो ऊडळ माय, सरवहियो सुरताणरै[10] ॥ २'

## वात

सरवहियो जेसो इण भात परो गयो[11] । पातसाह चारणरा माणस परा छोडिया । जेसै जीवता धरती पातसाहरै रस पडी नही[12] । जैसारै वासै विजो पण भलो रजपूत हुवो । धरतीरी चाटी भली दीवी । जेसारै आध हेक हुवो[13] ।

---

1 तब चारणने बादशाहको आकर कहा कि यह जैसा सामने खडा है । मैंने उसे लाना कबूल किया था । सो ले आया हू । 2 अब बादशाह ! मेरे कुटुबको छोडिये । बादशाहका कौल है । 3 तब बादशाहने कहा — 'मैंने तेरे मनुष्योको छोडा । तेरा कौल पूरा हुआ । 4 उस समय सभी ताकमे हैं । 5 जिस ओर बादशाह खडा था उस ओर सरवहिया जैसाने अपना घोडा उठाया सो उस घोडेने बादशाहके हाथीके दातोके ऊपर जाकर अपने पाव टिकाये । 6 जैसेने बादशाहकी कमरमे हाथ डाला । 7 जैसा बादशाहकी कमरका कटार लेकर भाग गया । 8 बादशाहका कोई भी सिपाही जैसे पर शस्त्र नही चला सका । 9 उस समय चारण वीरधवल दोहा कहता है । 10 सरवहिया जैसा बादशाहकी सेनाके घेरेमे आया हुआ सकुशल निकल भागता है । बादशाहका कोई वश नही चलता । 11 इस प्रकार सरवहिया जैसा वहासे भाग गया । 12 जैसेके जीवित रहते देश बादशाहके वशमे नही हो सका 13 जैसाके पीछे विजय भी अच्छा राजपूत हुआ । देशकी अच्छी सेवा की । जैसाका एक आधा भागीदार हुआ ।

गलेहिं मगरजालेहिं, मच्छो वा अवसो अहं।
उल्लिओ फालिओ गहिओ, मारिओ य अणंतसो ॥६५॥

मैं परवश होकर बडिश यन्त्र से, और मगर जाल से मच्छी की तरह खींचा गया, फाड़ा, पकड़ा और मारा गया ॥६५॥

विदंसएहिं जालेहिं, लेप्पाहिं सउणो विव।
गहिओ लग्गो य बद्धो य, मारिओ य अणंतसो ॥६६॥

बाज पक्षियों से, जालों से और लेपों से, पक्षी की तरह मैं अनन्तबार पकड़ा गया, चिपटाया गया, बाँधा और मारा गया।

कुहाडफरसुमाईहिं, वड्ढईहिं दुमो विव।
कुट्टिओ फालिओ छिन्नो, तच्छिओ य अणंतसो ॥६७॥

मैं सुथार रूपी देवों से, कुल्हाड़े फरसे आदि से, वृक्ष की तरह अनन्त बार फाड़ा गया, छीला गया और टुकड़े टुकड़े कर दिया गया ॥६७॥

चवेडमुट्ठिमाईहिं, कुमारेहिं अयं विव।
ताडिओ कुट्टिओ भिन्नो, चुण्णिओ य अणंतसो ॥६८॥

जिस प्रकार लोहार लोहे को कूटते हैं, उसी प्रकार मैं भी थप्पड़ मुष्ठि आदि से अनन्त बार पीटा गया, कूटा गया, भेदा गया और चूर्ण के समान पीस डाला गया ॥६८॥

तत्ताइं तंबलोहाइं, तउयाइं सीसयाणि य।
पाइओ कलकलंताइं, आरसंतो सुभेरवं ॥६९॥

छै[1] । तिण आप लाखडी आसण माडियो[2] । तिण आवा २२ आसणरी पाखती वाह्या[3] । तिके कितरैक दिने फळण लागा[4] । सु करनरै वैर दुहागण हुती, तिणसू गरीवनाथ महर करता । वहन कहि बोलाई हुती[5] । तिणरो[6] वेटो गरीवनाथरै जेठ मास माहै आसण आयो हुतो[7] । तरै नाथ चेलानू कह्यो–"भाणेजनू आवा केहेक उतार दो[8] ।" तरै चेले चढनै आवा ५० तथा ६० उतारिया । गरीव-नाथ उण डावडा दुहागणरानू दिया, सु आवा ले डावड़ो घरे आयो[9] । तरै सुहागण वैर करनहै [रे] हुती, तिणरै छोरु वे आवा दीठा[10] । वे जाय मा आगै मागण लागा । तरै सुहागण वैर जामनू कहाडियो[11]– "जोगीरै आवा हुवा छै, डावडानू मगाय दो ।" तरै जाम आवा लेणनू आदमी मेलिया[12], तिणे[13] जाय गरीवनाथनू कह्यो–"जाम आवा मगावै छै, दो ।" तरै गरीबनाथ कह्यो–"म्हे जोगी किणनू आवा द्या, माहरा आवा छै[14] ।" तरै जामरै आदमिया कह्यो– "आसण थाहरो[15], पण आवा धरतीरा धणियारा छै ।" पछै जामरा आदमी आपसू आवा उतारणनै चढिया । तरै गरीवनाथ कुहाड़ियो लेनै आवा वाढणनू ऊठियो[16] । तरै चेले १ कह्यो–"हाथारा पाळिया काय वाढो[17] ? काने मुद्रा छै, आवारो वरण फेरो[18] ।" तरै आ वात गरीवनाथरै दाय आई[19] । तरै कह्यो–"आवारी आवली

---

1 वहा (कच्छमे) धू धलीमलका शिष्य योगी गरीवनाथ एक वडा सिद्धि-प्राप्त महात्मा है । 2 उसने लाखडी नगरमे आकर अपना आसन जमाया । 3 उसने अपने आसनके पास २२ आमके वृक्ष लगाये । 4 कितनेक दिनोंके वाद वे फल देने लगे । 5 धोधा कर्णकी एक उपेक्षिता पत्नी थी, उसपर गरीवनाथ कृपा रखते थे, उसको वहिन कह कर वतलाते थे । 6 उसका । 7 था । 8 तव नाथने अपने चेलेसे कहा– भानजेको कुछ आम वृक्षो परसे उतार दो ।' 9 गरीवनाथने उस उपेक्षिता । (अणमानेतीके) पुत्रको आम दिये सो वह लडका उन आमोको ले कर घर पर आया । 10 तव कर्णके जो मानेती स्त्री थी, उसके लडकेने उन आमोको देखा । 11 तव उस मानेती पत्नीने जामको कहलवाया । 12 भेजे । 13 उन्होने । 14 तव गरीवनाथने कहा– आम हमारे हैं, हम योगी लोग किसीको क्यो आम दें । 15 तुम्हारा । 16 तव गरीवनाथ कुहाडा लेकर आमोके वृक्षोको काटनेके लिये उठा । 17 अपने स्वयके पाले हुए हैं, क्यो काटो ? 18 आप कानोमे मुद्रा धारण करने वाले सिद्ध है, आमके वृक्षोका रूप-रग वदल दें । 19 तव यह वात गरीवनाथके भी मनमे भाई ।

बहुत जोर से अरड़ाट करते हुए मुझे, कल कल शब्द करता हुआ तप्त ताम्बा, लोहा, कथीर, और शीशा पिलाया गया ॥६९॥

तुहं पियाइं मंसाइं, खंडाइं सोल्लगाणि य ।
खाविओ मि समंसाइं, अग्गिवण्णाइं णेगसो ॥७०॥

"तुझे मांस प्रिय था"—ऐसा कहकर मेरे शरीर का मांस काटकर उसे भूनकर, अग्नि के समान करके, मुझे अनेक बार खिलाया ॥७०॥

तुहं पिया सुरा सीहू, मेरओ य महूणिय ।
पाइओ मि जलंतीओ, वसाओ रुहिराणि य ॥७१॥

"तुझे ताड़ वृक्ष से, गुड़ से और महुए आदि से बनी हुई मदिरा प्रिय थी"—यों कहकर, मुझे जलती हुई चर्बी और रुधिर पिलाया गया ॥७१॥

निच्चं भीएण तत्थेण, दुहिएण वहिएण य ।
परमा दुहसंबद्धा, वेयणा वेदिता मए ॥७२॥

मैंने सदा भयभीत, उद्विग्न, दुखित और व्यथित बने हुए अत्यन्त दुःखपूर्ण वेदना सहन की ॥७२॥

तिव्वचंडप्पगाढाओ, घोराओ अइदुस्सहा ।
महब्भयाओ भीमाओ, नरएसु वेदिता मए ॥७३॥

मैंने नरकों में तीव्र, प्रचण्ड, गाढ़, घोर, भीम, अत्यन्त

ले नै आपरा पत्तर माहै घालियो, पाणी भेळो नाईनै पी गयो[1]। नै भीवनू कह्यो–"खीच तै ओ खाधो हुतो तो तू अमर हुवत। म्है तोनूं इण धरतीरी साहिबी दी[2]।" माथै हाथ दिया[3]। कह्यो–"काछरी साहिबी म्हे तोनू दी, पण जोगियारी सेवा घणी करीजै, ज्यू घणा दिन राज रहै।" तरै भीव कह्यो–"राज कहस्यो ज्यू करीस[4]।" तरै जोगिये इतरो कर वतायो–"थारी साहबी राजथान लाखडी करै नै जोगियारो आसण धीणोद करै। देस सिगळै दसे घोडिये घोडी, दसे भैंसे भैंस, दसे साढे साढ, कर कियो। हाट १ महमूदी वरस १ री लागै। जाग्रै, परणियै महमूंदी २ लागै। देस सिगळै हळ १ सेई। इतरो कर धूधळीमल नै गरीबनाथ वतायो। नै कह्यो–"जोगियांरी विसेस सेवा करस्यो तो दिन-दिन सवाई ठाकुराई हुसी। सेवा मिटसी तरै ठाकुराई जासी[5]।" यू करनै भीवनू निवाजिया[6]। तरै भीव जोगियानूँ कह्यो–"धरती माहै घोधा धणी छै, इणा आगै म्हे साहवी किण भात लेस्या[7] ?" तरै जोगी कह्यो–"इणानू माहरो सराप हुवो छै। इणा माथै अजाणकरी कठाहीरी फोज आय पडसी[8]। इणानू मारिया सुणो, तरै थे साथ करनै जाजो[9] थाहरै वासै मॉहरा हाथ छै[10]। साहवी आसान हाथ आवसी[11]। था आगै कोई टिकसी नही।

---

1 पानीके साथ मिला कर पी गया। 2 यह खीच यदि तैंने खा लिया होता तो तू अमर हो जाता। हमने इस देशका राज्य तुमको दिया। 3 सिर पर हाथ रखे। 4 आप कहेंगे वैसा करूंगा। 5 तव योगियोने कहा–'तेरे राज्यकी राजधानी लाखडीमे वनवाना और योगियोका आसन धीणोदमे वनवाना और इतना कर लगाना–सारे देशमे दस घोडियोमे एक घोडी, दस भैंसोमे एक भैंस और दस साढोमे (ऊटनियोमे) एक साढ, यह कर निश्चित किया। प्रति दुकान प्रति वर्ष एक महमूदी और जन्म और विवाह पर दो महमूदी और सारे देशमे प्रति हल एक सेई अनाज। इतना कह कर धूधली-मल और गरीबनाथने बताया और कहा कि योगियोकी विशेष सेवा करोगे तो दिन प्रति दिन ठकुराई सवाई होती रहेगी। सेवा मिटेगी तव ठकुराई चली जायेगी। 6 इस प्रकार भीमके ऊपर कृपा की। 7 देशके स्वामी घोघा हैं, इनसे हम किस प्रकार राज्य लेंगे ? 8 इनको हमारा शाप लगा है। इनके ऊपर अचानक ही कहींकी सेना चढ़ आयेगी। 9 इनको मार दिया सुनो तव तुम अपनी सेना वना कर चले जाना। 10 तुम्हारे पीछे हमारे हाथ है। (हमारा दिया हुआ वरदान तुम्हारे साथ है।) 11 राज्य सरलतासे हाथ आ जायेगा।

पीकर, मृगचर्या करता हुआ अपने स्थान पर चला जाता है।

एवं समुट्ठिओ भिक्खू, एवमेव अणेगए ।
मिगचारियं चरित्ताणं, उड्ढं पक्कमई दिसं ॥८३॥

इसी प्रकार संयम में सावधान और अनेक स्थानों में भ्रमण करने वाला भिक्षु, मृगचर्या का आचरण करके मोक्ष में जाता है ॥८३॥

जहा मिगे एग अणेगचारी, अणेगवासे धुवगोयरे य ।
एवं मुणी गोयरियं पविट्ठे, नो हीलए नो वि य खिंसएज्जा ।८४।

जिस प्रकार मृग, अकेला किसी एक स्थान पर न रहकर, अनेक स्थानों में भ्रमण करने वाला और सदा गोचरी से ही निर्वाह करने वाला होता है, उसी प्रकार गोचरी के लिए गया हुआ मुनि, आहार न मिलने पर किसी की अव-हेलना या निन्दा नहीं करे ॥८४॥

मिगचारियं चरिस्सामि, एवं पुत्ता जहासुहं ।
अम्मापिऊहिं अणुन्नाओ, जहाइ उवहिं तओ ॥८५॥

मैं मृगचर्या का पालन करूँगा। "हे पुत्र ! जैसा सुख हो वैसा करो"। इस प्रकार माता पिता की आज्ञा मिलने पर वह उपधि (गृहस्थी के साधनों) का त्याग करने लगा ॥८५॥

मिगचारियं चरिस्सामि, सव्वदुक्खविमोक्खणिं ।
तुब्भेहिं अब्भणुन्नाओ, गच्छ पुत्त ! जहासुहं ॥८६॥

आया [1]। इणनू सिद्धा दी सु धोधा वेढ हारिया [2]। धोधो हेक भाई काठिया माहै मोरबीरै सेढै [3] गयो, सु उणरै केडरा [4] मोरबी हळोद्र विचै छै। नै वीजा [5] पारकर नै सातळपुर विचै, अठै [6] आया। अठै काथडनाथ जोगी छै। तिणरै पगै लागा [7]। कह्यो–'म्हानू गरीबनाथ श्राप दियो, राज गयो। हमै [8] राजरी [9] मैहर हुवै तो म्हे अठै टिका। तरै काथडनाथ कह्यो–" महारी पादुका ऊपर करावो, नै नीचे कोट कराय नै थे रहो।" सु काथडरी पादुका कराई। नाव लारा काथडकोट* करायो [10]। उठै रया सु अजेस छै [11]। गावा ३०० माहे अमल छै [12]। यारी धरती माहै कथडरै केडरा जोगियारो कर लागै छै [13]।

भीव ठकुराई ली, काछरो धणी हुवो [14]। गरीबनाथनू कोल दियो थो सु सोह [15] पाळियो [16] नै अजैलग कर जोगियानू दीजै छै [17]। धीणोद वा पादुका ऊपर देहुरो करायो। पाखती [18] गढ करायो। उठै जोगियारो आसण वधायो। भीवरै वसरा हमै भुजनगर राव काछरा धणी छै [19]।

---

1 तब धोधे इकट्ठे हो कर भीम पर चढ आये। 2 इनको सिद्धोने सहायता दी अत धोधा लडाई हार गये। 3 सीमा पर। 4 वशके। 5 दूसरे। 6 यहा। 7 उसके चरण स्पर्श किये। 8 अब। 9 आपकी, श्रीमान्की। 10/11 काथडनाथके नाम पर काथडकोट वनवाया और वहा रह गये सो अभी तक वहा पर है। 12 तीनसौ गावोमे उनका शासन है। 13 इनकी धरतीमे काथडनाथके वशके योगियोका कर लगता है। 14 कच्छ देशका स्वामी हुआ। 15 सब। 16 पालन किया। 17 और अभी तक योगियोको कर दिया जाता है। 18 पार्श्वमे, पासमे। 19 इस समय जो भुजनगरके राव कच्छ देश के स्वामी हैं वे भीमके वशके ही हैं।

* कथडकोटकी स्थापनाके सबधमे श्री दुलेराय काराणी अपने 'कच्छ-कलाधर' नामक ग्रथमे लिखते हैं कि कथकोट की नीव जाम मोडने रखी थी। यह दिन मे जितना बन जाता था, योगी कथडनाथ अपने योगबलसे रातको गिरवा देता। मोड उसको वनवा नही सका। मोडके मरनेके बाद उसके बेटे जाम साडने योगीको प्रसन्न करके किलेको वनवानेकी आज्ञा प्राप्त की। कथडनाथके नाम पर उसने किलेका नाम कथडकोट (कथकोट) रखा। साडने किलेके पास कथडनाथका एक मदिर भी वनवाया जो अद्यापि स्थित है।

मृगापुत्र ने कहा–आपकी आज्ञा पाकर मैं सभी दुःखों से मुक्त करने वाली मृगचर्या का आचरण करूँगा। माता पिता ने कहा–पुत्र ! जाओ तुम्हें जैसा सुख हो वैसा करो ॥८६॥

**एवं सो अम्मापियरो, अणुमाणित्ताण बहुविहं।**
**ममत्तं छिंदई ताहे, महानागो व्व कंचुयं ॥८७॥**

यों अनेक प्रकार से माता पिता की आज्ञा लेकर वे उसी प्रकार ममत्व का त्याग करने लगे, जिस प्रकार महानाग, कांचली का त्याग करता है ॥८७॥

**इड्ढी वित्तं च मित्ते य, पुत्तदारं च नायओ।**
**रेणुयं व पडे लग्गं, निद्धुणित्ताण निग्गओ ॥८८॥**

मृगापुत्रजी, वस्त्र पर लगी हुई धुल की तरह, ऋद्धि सम्पत्ति, मित्र, पुत्र, स्त्री और सम्बन्धियों को छोड़कर निकल गये ॥८८॥

**पंचमहव्वयजुत्तो, पंचहिं समिओ तिगुत्तिगुत्तो य।**
**सब्भिंतरबाहिरओ, तवोकम्मम्मि उज्जुओ ॥८९॥**

मृगापुत्र, पांच महाव्रतों से युक्त, पांच समिति सहित, तीन गुप्तियों से गुप्त होकर बाह्य और आभ्यन्तर तप कर्म में सावधान हुए ॥८९॥

**णिम्ममो णिरहंकारो, णिस्संगो चत्तगारवो।**
**समो य सव्वभूएसु, तसेसु थावरेसु य ॥९०॥**

## गीत दूजो

साहिब दूसरो खगार सवाई, दावो सिर दातारा ।
जेहो कवी दियतो जगम, हसियो वेचण हारा ।।१
भूलो नही अजण मायाभ्रम, जिण कीरत हित जाणी ।
सोदागर चेहरिया सामै, मोटेरा मालाणी ।।२
दीपाविया सुदन पर दीपै, रायजादे वड राजा ।
भारमलोत तिके नव दै भड, है चाडै जेहाजा ।।३
ओ ऊनड लाखा अहिनाणै, वसुह उबारणवारा ।
घोडा दे घमडोह घातिया, हेडाऊ हेकारा ।।४

## वात लाखैरी

भाद्रेसर ता कोस ४ किलोकोट छै[1] । तठै वडी ठाकुराई हुई[2] । लाखै पछै कितरीहीक पीढिया हालो नै रायधण बे[3] भाई हुआ । त्यारा छोरू हाला नै रायधण कहाणा[4] । निवळा पडिया[5], तरै घोधारी ठाकुराई माहै मुकाती थका रैहता[6] । रायधणा विचै हालारैं क्यु पाच-दस गाव इधकेरा[7] था । दस माणसारी जोड इधकी थी[8] । भीव हमी-रोत लाखडोरी साहबो ली, तरै हाले जाणियो । भीव ठाकुराईरो धणी हुवो तो म्हे काईक ठोड ओटहा तो रूडा[9] । तरै धाधासू धरती छूटो तरै जाणियो–भाद्रेसर भाद्रावळ जोगीरैं नावै[10] वसियो थो, सु भाद्रेसर खाली देखनै जाय ओटहियो[11] । घोधै आयनै कह्यो–'थे

---

1 भाद्रसरसे किलाकोट चार कोस की दूरी पर है । 2 जहाँ लाखाकी वडी ठकुराई हुई । 3 दो । 4 उनके (पुत्र) वशज हाला और रायधण–इन दो शाखाओमे प्रसिद्ध हुए । 5 निर्बल हो गये । 6 तव घोघोकी ठकुराई मे मुकातीकी हैसियतसे रहते थे । (मुकाती = गाव या खेतकी कर के रूपमे निश्चित रकम (मुकाता) देने वाला । 7 विशेष । 8 दस जोडी मनुष्योकी भी विशेष थी (यह दसके समाहार अर्थमे एक मुहावरा है ।) 9 हम भी किसी जगहको दवा दें तो ठीक है । 20 नाम पर । भाद्रेसरको खाली देख वहा जा कर के अधिकार करने का विचार किया ।

* इसका पुराना नाम कपिलकोट है । कहा जाता है कि यहा कपिल मुनिने तप किया था, इससे इसका नाम कपिलकोट प्रसिद्ध हुआ और कालान्तरमे किलाकोट और फिर केराकोट कहा जाने लगा । यह भी किम्वदती है कि लाखाकी रानी केर(वा)की स्मृतिमे इसका नाम केराकोट रखा गया था ।

वे ममत्व अहंकार और सर्वसंग से रहित हो और गर्व का त्याग कर, सभी त्रस स्थावर प्राणियों पर समभाव रखने लगे।

लाभालाभे सुहे दुक्खे, जीविए मरणे तहा।
समो णिंदापसंसासु, तहा माणावमाणओ ॥९१॥

वे लाभ अलाभ, सुख दुःख, जीवन मरण, निन्दा प्रशंसा और मानापमान मे समभाव रखने लगे ॥९१॥

गारवेसु कसाएसु, दंडसल्लभएसु य।
णियत्तो हाससोगाओ, अणियाणो अबंधणो ॥९२॥

मृगापुत्रजी, निदान और बन्धन से रहित होकर तीन गर्व, चार कषाय, तीन दण्ड, तीन शल्य, सात भय तथा हास्य और शोक से निवृत्त हो गये ॥९२॥

अणिस्सिओ इहं लोए, परलोए अणिस्सिओ।
वासी चंदणकप्पो य, असणे अणसणे तहा ॥९३॥

वे इस लोक और परलोक की आकांक्षाओं से रहित थे। आहारादि मिलने न मिलने पर, तथा चन्दन से पूजने वाले और वसूले से छीलने वाले पर, समभाव रखने वाले थे।

अप्पसत्थेहिं दारेहिं, सव्वओ पिहियासवो।
अज्झप्पज्झाण जोगेहिं, पसत्थदमसासणो ॥९४॥

वे सभी अप्रशस्त द्वारों और सभी आश्रवों का निरोध कर, आध्यात्मिक शुभ ध्यान के योग से, प्रशस्त संयम वाले हुए।

गुदडी माहै आगळ बे[1] बैठी। लाखो पाछो वळियो[2]। रावळ काठिया मामा माहै गयो। लाखो वा असवारा माहै हुयनै भुज आयो। टीकैरा घोडा देनै खगाररै टीको काढियो। लाखो घणा दिन अठै रयो[3]। जाणियो, कदाच खगार मोनू मारै तो म्हारै माथैरी उतरै[4]। तरै खगार कह्यो-" काकाजी ! घरै पधारो। राज जाणो सु म्हे न करा[5]। वा रावळसू हीज व्है[6]। रावळा आसापुरा जाणै[7], था थका क्यु न जाणा[8]। रावळ टीकै बैठे, तरै म्हा नै रावळ वात[9]।

पछै रावळनू लाखो जीवियो ता (सूधो) पगे न लगायो[10]।

पछै कितराहेका दिना[11] लाखो किणही काम गयो थो, सु थोडै साथसू थो, सु धोधा ऊपर आयनै लाखानू मारियो। तरै रावळ टीकै बैठो। तरै खगार कह्यो-"हमै हमीर मांगा[12]।" खगार पण मोटो हुवो। वरस २० तथा २२ माहै हुवो। साहबी सभाही[13]। तरै साथ करनै रावळ नै या विचै सीप नदी छै, तठै आयो[14]। पैली कानीसू[15] रावळ माणस हजार सात-आठसू आयो। हजार आठ-नवासू खगार आयो। पखालद हुई (?) नैडा आया[16]। दीहा वेढ व्है[17]। रात आप-आपरै सको गाडै जाय माणसा माहै सूवै[18]। माहोमाहि पैलारा उलारा डेरा जावै-आवै[19]। सवार हुवै वळै वेढ हुवै[20]। यू बारै वरस वेढ कीवी। आसापुरा देवी विचै दी नै लोपी, तिणसू दिन-दिन रावळनू हार आवती जाइ। पैला जोर चडता जाय। तरै रावळ वजीर

---

1 दो। 2 लाखा पीछा लौटा। 3 लाखा बहुत दिन तक यही रहा। 4 मनमे ऐसा विचार कर के वहा रहा कि यदि खगार मुझे मार दे तो मेरे पर चढा हुआ कलक उतर जाये। 5 आप जो जाने हुए हैं वह मैं नही करूगा। 6 ऐसा तो रावलसे ही हो सकता है। 7 मैं आपकी और आशापुरा देवीकी शपथ खा कर कहता हू। 8 मैं आपके प्रति कोई दुर्भावना नही रखता। 9 तब मेरे और रावलके बीचमे बात है। 10 लाखा जिया तब तक रावलको अपने पावो नही लगने दिया। 11 कितनेक दिनोके बाद। 12 तब खगारने कहा 'अब हमीरको मारने का बदला लेना मागता हू'। 13 राज्य सम्हाला। 14 वहा पर आया। 15 उस ओरसे। 16 निकट आये। 17 दिनमे लडाई होवे। 18 रातको सभी अपने-अपने गाडो और अपने मनुष्योमे जाकर सो जावे। 19 परस्पर इधरके उधरके शिविरोमे आते जाते हैं। 20 प्रभात होते ही फिर लडाई लडते हैं।

एवं णाणेण चरणेण, दंसणेण तवेण य ।
भावणाहिं य सुद्धाहिं, सम्मं भावित्तु अप्पयं ॥६५॥

बहुयाणि उ वासाणि, सामण्णमणुपालिया ।
मासिएण उ भत्तेण, सिद्धिं पत्तो अणुत्तरं ॥६६॥

इस प्रकार ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप से तथा शुद्ध भावना से सम्यक् प्रकार से आत्मा को भावित करते हुए मृगापुत्रजी ने बहुत वर्षों तक श्रमण पर्याय का पालन किया और एक मास का संथारा करके सर्वश्रेष्ठ सिद्ध गति को प्राप्त हुए।

एवं करंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा ।
विणियट्टंति भोगेसु, मियापुत्ते जहामिसी ॥६७॥

वे मनुष्य बुद्धिमान् तत्वज्ञ पंडित और विचक्षण हैं, जो ऋषि - श्रेष्ठ मृगापुत्र की तरह भोगों से निवृत्त हो जाते हैं।

महापभावस्स महाजसस्स, मियाइ पुत्तस्स निसम्म भासियं ।
तवप्पहाणं चरियं च उत्तमं, गइप्पहाणं च तिलोगविस्सुयं ॥

श्री मृगापुत्र, महा प्रभावशाली और महान् यशस्वी थे। उनके तप प्रधान, चारित्र प्रधान और गति प्रधान, ऐसे तीन लोक में प्रसिद्ध कथन को सुनकर, धर्म में पुरुषार्थ करना चाहिए ॥६८॥

वियाणिया दुक्खविवद्धणं धणं, ममत्तबंधं च महाभयावहं ।
सुहावहं धम्मधुरं अणुत्तरं, धारेज्ज निव्वाणगुणावहं महं ।६९।

राव जीवै छै।" वेढ हुता पण घणी वेळा हुई थी[1]। माहोमाही हीचिया था[2]। रावळरो साथ पाछो लियो, डेरै गया, तरै रावळ कह्यो–"म्हे देवी लोपी, तरै आपासू आसापुरा अरूठ[3]। धरती छोडो।" तरै धरती छोडनै कोस तीस ३० तथा ३५, जेठवा, काठिया, वाढेला कोसा ६० तथा ७० माहै सोरठरी धरती खाली थी, अठै रावळ जाम समत १५९६ नवोनगर वसायनै रह्यो[4]। नागनय ऊपर वास कियो। भाद्रेसर वासै खगार ली[5]। तिका अजै भुजरा धणीरै दाखलै छै[6]।

रावळ गिरनाररा धणी चीगसखा[7] गोरीसू मिळियो[8]। उणसू मेळ हुवो। उण कह्यो–"तू गुजरातरै पातसाहसू मेळ मत करै। म्हारै काम अरथ म्हारो थको रहै[9]। थारी पाखती[10] जेठवा केलवै रहै छै, सु त्यानू[11] मार लो। उण हुकम दियो हीज थो, नै जेठवै काठिया भेळा हुयनै[12] कह्यो–"ओ आपणी धरती माहै माडो आय पैठो[13]। पछै ही अठै टिकसी तो आपानू मारसी[14] तो आवो आपै[15] उणसू एक वेढ करा।" तरै अै माणस हजार दस चढियो-पाळो भेळो हुयनै आया[16]। रावळ पण आपरो साथ हजार छव करनै गयो। परगने बरडै वेढ कीवी। रावळरै भाई हरधवळ असवार १००० टाळनै पैला उपर तूट पडियो। पैलारा सरदार सोह कूट मारिया[17]। उठै हरधवळ काम आयो। वेढ रावळ जीती। पैला हारिया। पैलारा सरदार तीने ही जेठवो, भीम, काठी, हाजो, वाढेल, भाण, माणस ७०० सू काम आया। पैला भागा। रावळ यानू धकायनै धरती आप हेठै

---

1 लडाई होते हुए भी बहुत समय हो गया था। 2 परस्पर भिडत हुई थी। 3 हमने देवीको बीचमे दे कर के भी वचनका पालन नही किया, इसलिये आशापुरा अपनेसे रूठ गई। 4 यहा पर रावल जाम नवानगर नामक नगर बसा कर रहा। 5 भाद्रेसर पीछेसे खगार ने ले लिया। 6 वह अब तक भुजके स्वामीके अधिकारमे है। 7 चगेजखा 8 मिला। 9 मेरे कामके लिये मेरे अधिकारमे ही रहना। 10 पासमे। 11 उनको। 12 इकट्ठे हो कर के। 13 यह अपने देशमे जबरदस्ती आ कर घुस गया। 14 पीछे यदि यहा टिक गया तो अपनेको मारेगा। 15 अपन। 16 तब ये दस हजार पैदल और सवार इकट्ठे कर के चढ आये। 17 दुश्मनोंके सभी सरदारोको मार डाला।

हे भव्यों ! धन को दुःख बढ़ाने वाला, ममत्व रूपी बन्धन का कारण, तथा महान् भयदाता जानकर धर्मधुरा को धारण करो, जो सुखदायक और महान् निर्वाण गुणों की देने वाली है ॥९९॥

–: उन्नीसवां अध्ययन समाप्त :–

# महानियंठिज्जं वीसइमं अज्झयणं

–:२०:–

सिद्धाणं णमो किच्चा, संजयाणं च भावओ ।
अत्थधम्मगइं तच्चं, अणुसिट्ठिं सुणेह मे ॥१॥

सिद्धों और संयतों को भावपूर्वक नमस्कार करके मुझसे अर्थ धर्म के यथार्थ स्वरूप को सुनो ॥१॥

पभूयरयणो राया, सेणिओ मगहाहिवो ।
विहारजत्तं निज्जाओ, मंडिकुच्छिसि चेइए ॥२॥

अनेक रत्नों का स्वामी और मगध देश का अधिपति श्रेणिक राजा, विहार यात्रा (घूमने) के लिए 'मण्डीकुक्षि' नाम के उद्यान में गया ॥२॥

नाणादुमलयाइण्णं, नाणापक्खि निसेवियं ।
नाणाकुसुमसंछन्नं, उज्जाणं नंदणोवमं ॥३॥

वह उद्यान, नाना प्रकार के वृक्षों, लताओं, और पुष्पों

साढिया ल्या। खगार विण आपडियो नही रहै।" तरै फेरनै साढि ली नै हळवै-हळवै[1] जाण लागा। रावळ पाछो-पाछो फिर जोवतो जाय। जो खगार अजै आपडियो नही[2]। अठै खगार असवार ५० सू चढियो। काईका[3] मनै कियो-"जु साथ थोडो छै।" तरै खगार कह्यो-" न करै श्री ठाकुर। रावळ साढिया ल्ये नै हू ऊभो रहू।" सु भाखर वारै फेर ऊपरवाडै हुयनै कोसै १६ सामो आयो[4]। अठी रिणधीर थूब[5] चढनै पाछो जोयो, जु खगार नायो[6]। आगै देखै तो सामो साथ झळकियो[7]। तरै रावळनू कह्यो-"आपरै साथनू पैला थोडा दीसै छै[8]। खगार म्हारै डील आया विगर नही रहै[9]।" तरै वीच आप ऊभो रयो नै साथ अढाई सौ ओळ रुखा[18] डावी कानी[11] नै अढाई सौ जीमणी बाजू ऊभा राखिया। कह्यो-"विच मे आवै तरै एक-एक भालो सको वाहिजो[12]। पाच सै भाला लागसी तरै मार लेस्या।" सु पैली कानी खगाररो भाई साहिबनै पीतरयाई फूल, या कह्यो[13]-"आपै खगारनू मरतो न देखा। आवो पैहली मरा।" उतावळा[14] देखनै खगार कह्यो-'जु आहचो[15] मत करो। थे जाणो छो जु म्हे मरण द्या।" यु कही नै पचास असवार जीनसालिया नख-चख सूधा था त्यारो गोळ करनै उपाड नाखिया[16]। सु ओळ रुखा ऊभा हुता, तिके केई भाला वाही सकिया कै न वाही सकिया, नै आय अै भेळा हुवा। तरवारिया झीक दी। रावळरो वजीर आप खगार पाडियो। बीजो पण साथ घणो पाडियो[17]। रावळरो साथ भागो। तरै रावळ निपट भलो हुवो। तीन वेळा उपाड-उपाड खगाररै साथमे नाखिया[18]।

---

1 धीरे-धीरे। 2 खगारको अभी तक पहुच नही पाये (पकडा नही गया)। 3 कुछ लोगोने। 4 सो पहाडसे बच कर निकटके मार्गसे १६ कोस चल कर (रावलके) सामने आया। 5 टेकरी पर। 6 खगार नही आया। 7 दिखाई दिया। 8 आपके मुकाबिलेमे वे कम दिखते हैं। 9 खगार सीधा मेरे पर आये विना नही रहेगा। 10 पक्तिबद्ध। 11 बायी तरफ। 12 बीचमे आ जावे तब एक-एक भाला सभी मार दें। 13 उस ओरमे खगारके भाई साहिब और पितृव्य फूल, इन्होने कहा। 15 आतुर। 16 शीघ्रता, आतुरता। 17 इस प्रकार कह कर के जो पचास सर्वांगावृत कवचधारी अश्वारोही थे, उन सबने अपना एक गोल (समूह) बना कर अपने घोडोको एक साथ उठाया। 18 दूसरे भी कई मनुष्योको मार डाला। 19 तीन बार अपने घोडेको उठा-उठा कर खगारकी सेनामे डाला।

से आच्छादित था। वह नाना प्रकार के पक्षियों से सेवित तथा नन्दनवन के समान था ॥३॥

**तत्थ सो पासइ साहुं, संजयं सुसमाहियं ।**
**निसन्नं रुक्खमूलम्मि, सुकुमालं सुहोइयं ॥४॥**

राजाने वृक्ष के नीचे एक ऐसे साधु को बैठा हुआ देखा, जो सुकुमार होता हुआ भी संयम, शील और समाधि से युक्त तथा प्रसन्न चित्त था ॥४।

**तस्स रूवं तु पासित्ता, राइणो तम्मि संजए ।**
**अच्चंतपरमो आसी, अउलो रूव विम्हओ ॥५॥**

राजा, उस मुनि के अत्यन्त उत्कृष्ट रूप को देखकर, आश्चर्य में पड़ गया ॥५॥

**अहो वण्णो अहो रूवं, अहो अज्जस्स सोमया ।**
**अहो खंती अहो मुत्ती, अहो भोगे असंगया ॥६॥**

आश्चर्य है इसकी भव्य आकृति और सुन्दर रूप को। इस आर्य पुरुष की क्षमा, निर्लोभता और भोगों से निस्पृहता आश्चर्यकारी है ॥६॥

**तस्स पाए उ वंदित्ता, काऊण य पयाहिणं ।**
**नाइदूरमणासन्ने, पंजली पडिपुच्छइ ॥७॥**

राजा ने उनको प्रदक्षिणा और चरणों में वन्दना की। फिर न अति दूर और न अति निकट बैठकर हाथ जोड़ कर पूछने लगा।

खगडै किया खडाक[1], सीगाळै[2] सुरताणसूं ।
छोहिया[3] उतरी छाक[4], मीरा मिलका ऊमरा[5] ॥ २

पीढी

जाम लाखो ।
२ रावळ ।
३ वीभो ।
४ सतो ।
५ अजो[6] ।
६ लाखो । जाम लाखो अजारो[7] ।
७ रिणमल जाम ।
८ सतो । जाम एक वार हुवो । पछै रायसिंघ साहवी ली[8] ।
७ जाम रायसिंघ लाखारो । कुतवखानसूं लड मुवो । नवैनगरसूं कोस ३ सेखपाट ।
८ जाम तमाईची । ८ वभणियो ।
७ जेसो लाखारो । एक वार तो कुतबखान तोत कर मारनै सता रिणमलोतनूं नवैनगर बैसाणियो[9] । नै रायसिंघरो बेटो तमाईची बाहिर नीसरियो[10] । पछै नवानगर ऊपर आयो । जोरावरी तमाईची धरती ली । जाम तमाईची हुवो[11] ।

## गीत लाखै अजैरो

निस-दीह[12] न थाकै क्युहि नाखतो,
अस[13] गज कनक सुनग अतर,

---

1 सीधा । 2 वीर । 3 क्रोध वालोंका, घमंडियोंका । 4 नशा, उन्मत्तता । 5 उमरा, उमराव । 6 कई प्रतियोंमें जैसा लिखा है । 7 अजाका बेटा जाम लाखा द्वितीय । 8 सत्ता एक वार तो जाम पद पर अभिषिक्त हो गया, पर पीछे रायसिंहने राज्य छीन लिया । 9 एक वार तो कुतुवखानने कपटसे जैसा को मार कर के सत्ता रिणमलोतको नवानगरकी गद्दी पर बिठा दिया । 10 और रायसिंहका बेटा तमायची भाग कर बाहिर निकल गया । 11 पीछे तमायची नवानगर ऊपर चढ कर के आया और बलात् देश पर अधिकार किया । जाम पद पर तमायची अभिषिक्त हुआ । 12 रात-दिन । 13 घोडा ।

तरुणो सि अज्जो पव्वइओ, भोगकालम्मि संजया ।
उवट्ठिओ सि सामण्णे, एयमट्ठं सुणेमि ता ॥८॥

हे आर्य ! आप भोग के योग्य इस तरुण अवस्था में ही प्रव्रजित होकर संयमी बन गये हैं। मैं इसका कारण जानना चाहता हूँ ॥८॥

अणाहो मि महाराय ! नाहो मज्झ न विज्जइ ।
अणुकंपगं सुहिं वावि, कंचि णाभिसमेमहं ॥९॥

महाराज ! मैं अनाथ हूँ। मेरा कोई नाथ नहीं है, न कोई मुझ पर कृपा करने वाला मित्र ही है। इसीलिए मैं साधु हुआ हूँ ॥९॥

तओ सो पहसिओ राया, सेणिओ मगहाहिवो ।
एवं ते इड्ढिमंतस्स, कहं नाहो न विज्जइ ॥१०॥

यह सुनकर राजा हँसने लगा। उसे आश्चर्य हुआ कि इस प्रकार की ऋद्धिवाले के भी कोई नाथ नहीं है ॥१०॥

होमि नाहो भयंताणं, भोगे भुंजाहि संजया ।
मित्तनाईपरिवुडो, माणुस्सं खु सुदुल्लहं ॥११॥

हे संजती ! मैं तुम्हारा नाथ होता हूँ। आप मित्र ज्ञाति युक्त होकर भोगों को भोगें। यह मनुष्य जन्म अत्यन्त दुर्लभ है।

अप्पणा वि अणाहो सि, सेणिया मगहाहिवा ।
अप्पणा अणाहो संतो, कस्स नाहो भविस्ससि ॥१२॥

वरस १ हुवो, केलाकोटरी धरती गाव ४००० माहै छाट न पडै, वाणियारो धान सारो विकियो[1]। वाणिया वरतिया हिरणरी खबर लेता रहै छै। यु करता वरस ३ तथा ४ हुवा, मेह न हुवै। सारी परज[2], सोह[3] धान वाळा सको[4] मरण लागा, तरै आ वात हूती-हूती[5] फूल साभळी[6]। तरै वरतिया वाणिया नू कह्यो–"काहू वात साभळीजै[7]" तरै कह्यो–"वात खरी छै।" पछै फूल कह्यो–"वडी वाट पाडी[8]। पण न जाणा ओ हिरण जीवै छै कै मुवो।" तरै इणा कह्यो–"जीवै छै" तरै कह्यो–"ओ हिरण कठै छै ?" तरै कह्यौ–"ओ सामो भाखर छै तठै छै[9]। माहरा आदमी दिन दूजै-तीजै जाय जोइ आवै छै[10]।" तरै फूल उणानू साथ लेनै असवार १००० जाय घेरियो। उणै हिरण दिखायो। तरै वासै दोडिया[11], तरै वरतिये कह्यो–"वरस ५ रो मेह बाधियोडो छै। थे उठै हिरणरा सीग मांहै सू चीठी मत काढीजो। पछै पाछो मेह आय न सकसी। हिरण मुवो जीवतो मो कनै लावज्यो। पण थे नाव मत लेजौ[12]।" फूल कह्यो–"भली बात।"

इण कोसो ५० तथा ६० बरडै, बीलेसर डूगरै[13] जातो मारियो। मारनै सीग माहीथा चीठी काढी[14]। वरजिया था, पण कह्यो मानियो नही[15]। चीठी ले पाणी माहै गाळी नै ऊपर आडग तुरत मडियो[16]। मूसळधार वरसण लागो। तरै इणा घरानू चलाया। तरै सारा तूट रह्या। फूलनू मेह मारियो, सु बेसुध हुय गयो। सु जमलो अहीर खेरडी गाव छै तठै घोडो फूलनू ले आयो, तरै बैर हेकण दीठो[17] तरै जमलानू खबर हुई, कोई राजवी[18] छै। घणै ग्रहणै

---

1 विक गया। 2 प्रजा। 3 सब। 4 सभी। 5 होती-होती, फैलती हुई। 6 सुनी। 7 क्या वात सुनी जाती है ? 8 (१) खूब समय निकल गया। (२) बहुत बुरा हुआ। 9 यह सामा नामका पहाड है, वहा पर है। 10 हमारे आदमी दूसरे-तीसरे दिन देख आते हैं। 11 तब पीछे दौडे। 12 परतु तुम उसका नाम नही लेना (परतु तुम उसको छेडना नही। 13 पहाडो पर। 14 मार करके सीग मेसे चिट्ठी निकाली। 15 मना किया था, परतु कहा हुआ माना नही। 16 चिट्ठी लेकर पानीमे गला दी और इधर तुरत ही घटा छा गई। (आडग=वर्षागम, वर्षागमकी ऊष्मा)। 17 तब एक स्त्रीने देखा। 18 राज-वशका पुरुष।

हे मगध देश के अधिपति श्रेणिक! तुम स्वयं ही अनाथ हो। स्वयं अनाथ होते हुए, दूसरों के नाथ कैसे हो सकोगे।

**एवं वुत्तो नरिंदो सो, सुसंभंतो सुविम्हिओ।**
**वयणं असुयपुव्वं, साहुणा विम्हयन्निओ ॥१३॥**

पहले कभी नहीं सुने ऐसे वचन साधु से सुनकर राजा विस्मित हुआ, व्याकुल हुआ। उसे अत्यन्त आश्चर्य हुआ।

**अस्सा हत्थी मणुस्सा मे, पुरं अंतेउरं च मे।**
**भुंजामि माणुसे भोगे, आणा इस्सरियं च मे ॥१४॥**

हे मुनि! मेरे पास हाथी, घोड़े, मनुष्य, नगर और अन्तपुर है। मैं ऐश्वर्यशाली हूँ। मेरी आज्ञा चलती है। मैं मनुष्य सम्बन्धी सभी भोग भोगता हूँ ॥१४।

**एरिसे संपयग्गम्मि, सव्वकामसमप्पिए।**
**कहं अणाहो भवइ, मा हु भंते मुसं वए ॥१५॥**

हे भगवन्! इस प्रकार प्रधान सम्पत्ति और सब प्रकार के कामभोग होते हुए मैं अनाथ कैसे हूँ? आप झूठ नहीं बोलें?

**न तुमं जाणे अणाहस्स, अत्थं पोत्थं च पत्थिवा।**
**जहा अणाहो भवइ, सणाहो वा नराहिवा ॥१६॥**

हे राजन्! तुम 'अनाथ' शब्द के अर्थ और उसकी उत्पत्ति को नहीं जानते हो कि अनाथ और सनाथ किसे कहते हैं ॥१६॥

गांवमे स्याणा था त्यांनू पूछियो, कह्यो–"कोई उपाव करो, जिणसू ओ जीवै।" तरै किणही कह्यो–"काइक वडकवार बेटी वरस १५ तथा १६ री बैर हुवै तिका जो च्यार पोहर छातीसू लगाय सोवै तो वाहुडै। बीजू तो जीवै नही[1]।" तरै मोनू कह्यो–"बेटा ! तू इणनू सभायनै सावचेत कर।" तरै म्हैं कह्यो–"यू तो मोनू दोखण[2] लागै, नै मोनू इसडो थको ही परणावो तो हू इणरै हाथ लगावू[3], मुंवो तो छै हीज, जो कदाच जीवै तो माहरो भाग, ज्युही हूणहार छै, त्युही हुसी।" तरै इणहीज हवाल परणाया[4], नै मै थारी चाकरी कीवी। परमेसर आछी कीवी, आपरा दिन ऊभा[5], नै मोनू जस आवणहार। रात पोहर १ रही तरै थाहरो[6] चेतो वाहुडियो। तरै थे मोनू पूछियो–"तू कुण ? तरै आ सारी हकीकत माडनै कही[7]।" तरै फूल उणसू बहोत राजी हुवो।

जमलारी बेटीसू अठै बोहत रग-रास हुवो[8]। अठै इणहीज दिन इणरै पेट आसा रही[9]। सवारै फूल चढण लागो। तरै इण जमला अहीररी बेटी अरज कीधी–"माहरै पेट थाहरो कारण रह्यो छै[10]। मोनू हेक रावळै हाथरी सहनाणी द्यो[11], सवारै लोग म्हारे माथै दोनो देसी[12]।" तरै फूल आपरै हाथरी मूदडी[13] दीनी नै लिखत कर दियो।

दिन २ रहिनै फूल चालियो, सु केलेकोट गयो। आगै फूलरी बैर धण पटराणी छै, तिणसू बोहत कारण छौ[14], सु वा वात फूल भूल गयो[15]। वासै[16] इण जमला अहीररी बेटी रै पेट गरभ हुतौ, सु लाखो हुवो।

---

1 नही तो यह जीवे नही। 2 कलक। 3 और मुझे इसकी ऐसी दशामे ही व्याह दो तो मैं इसके हाथ लगाऊ। 4 तव ऐसी ही दशामे आपके साथ मेरा विवाह हुआ। 5 आपके दिन खडे, आपकी आयु शेष। 6 तुम्हारा। 7 तव यह हकीकत विस्तारसे कही। 8 जमलाकी वेटीसे यहां वहुत परिणय-क्रीडा हुई। 9 यहा उसी दिन इसके पेट गर्भ रह गया। 10 मेरे पेटमे तुम्हारा गर्भ रहा है। 11 मुझे आपके हाथकी कोई निशानी दो। 12 कल मेरे पर लोग कलक लगायेंगे। 13 अगूठी। 14 जिससे वहुत प्रीति थी। 15 इसलिये फूल जमलेकी वेटीके साथ विवाहकी वातको भूल गया। 16 पीछे।

सुणेह मे महाराय, अव्वक्खित्तेण चेयसा।
जहा अणाहो भवइ, जहा मेयं पवत्तियं ॥१७॥

हे महाराज ! जिस प्रकार जीव अनाथ होता है और जिस आशय से मैंने कहा है, वह एकाग्र मन से सुनो ॥१७॥

कोसंबी नाम नयरी, पुराण पुरभेयणी।
तत्थ आसी पिया मज्झ, पभूयधणसंचओ ॥१८॥

प्राचीन नगरियों में श्रेष्ठ ऐसी कोशाम्बी नाम की नगरी है, वहाँ मेरे पिता प्रभूतधनसंचय रहते हैं ॥१८॥

पढमे वए महाराय, अउला मे अच्छिवेयणा।
अहोत्था विउलो दाहो, सव्वंगेसु य पत्थिवा ॥१९॥

राजन् ! प्रथम (यौवन) वय में मेरी आँखों में अत्यन्त वेदना हुई, और सारे शरीर में अति जलन होने लगी।

सत्थं जहा परमतिक्खं, सरीरविवरंतरे।
आवीलिज्ज अरी कुद्धो, एवं मे अच्छिवेयणा ॥२०॥

मेरी आँखों में ऐसी असह्य वेदना होती थी कि जिस प्रकार क्रोधित शत्रु, शरीर के मर्म स्थानों में बहुत ही तीखे शस्त्र घुसेड़ रहा हो ॥२०॥

तियं मे अंतरिच्छं च, उत्तमंगं च पीडई।
इंदासणिसमा घोरा, वेयणा परमदारुणा ॥२१॥

इन्द्र का वज्र लगने से जैसी वेदना होती है वैसी घोर

हुवै। सु करहीरो फूल आवतो दीठो[1]। तरै फूल दूहो कह्यो–

"कच्छ करहीरै छडियो कू देसडो कुसत्त[2]।"

तरै आधो दूहो करहीरो कहै—

"लाखो फूल-महेळिया, खिण देवर खिण पुत्त[3]॥"

आ वात धण कहाडी[4]। तरै फूल कह्यो–"तो लाखानू देस माहिसू परो काढीजो।' रजपूतानू कह्यो–"लाखानू देसोटो दियो छै[5]। देस माहिथा परो काढीजो[6]।" तरै लाखै कह्यो–"म्हारो वाप चोथी अवसथा छै[7]। मोनू परो काढो छो। पण जिको ही फूलरी वात आ कहै–'मुवो', तिणरी जीभ वढाऊ[8]। यु कहिनै लाखो वळै खेरडी मामारै गाव दिसी गयो[9]। कितराएक दिन रह्यो। वासै फूल मूवो[10]। वा राणी धण वासै बळी[11]।

लाखो उठै, सु लाखानू आ वात कोई कहै नही। वासै धरती सूनी[12]। लाखो मामा रै। सु लाखो कहै–"किणही कह्यो फूल मुवो तो उणरी जीभ वढाऊ।" तरै बीहतो कोई कहै नही[13]। तरै देसरा सिगळा[14] कामदार महाजन, सिगळै भेळा हुयनै कह्यो[15]–"लाखो आवै नही। धरती सूनी। कोइक उपाव करो ज्यु लाखो आवै।" तरै कह्यो–"जीभ वढावण कुण जावै[16]? तरै सगळै भेळा हुयनै कह्यो–"डाही डूमणीनू मेलो। आ जाय कहसी[17]।" तरै डाहीनू

---

1 सो ऊटनी सवार करहीरोको फूलने आते हुए देखा। 2 (उष्ट्रारोही) करहीरो कच्छ देशको क्यो छोड कर आ रहा है? कोई असत कार्य हो गया दिखता है। 3 हे फूल! तेरा पुत्र लाखा तेरी पत्नीके साथ उच्छृखल देवर की भाति छेड-छाड करता है। 4 यह वात तेरी रानी धणने कहलवाई है। 5 राजपूतोको कहा—हमने लाखाको देश-निकाला दे दिया है। 6 अत इसको देशमेसे निकाल देना। 7 मेरा वाप चतुर्थावस्था (वृद्धावस्था) प्राप्त है। 8 परतु जो भी फूलके सवधमे यह बात कहे कि वह मर गया तो मैं उसकी जीभ कटवा दूगा। 9 यो कह कर के लाखा पुन अपने मामाके गाव खेरडीकी ओर चला गया। 10 पीछे फूल मर गया। 11 वह रानी धण उसके पीछे सती हुई। 12 बिना राजाके, पीछे देश सूना। 13 तव डरता हुआ कोई यह वात कहे नही। 14 समस्त। 15 समस्त लोगोने इकट्ठे हो कर कहा। 16 तव कहा—जीभ कटानेको कौन जाय? 17 डाही नामकी ढाढिनको भेज दो, वह जाकर के कह देगी।

और महा दुःखदायी वेदना, मेरी कमर, हृदय और मस्तक में हो रही थी ॥२१॥

**उवट्ठिया मे आयरिया, विज्जामंततिगिच्छगा।**
**अबीया सत्थकुसला, मंतमूलविसारया ॥२२॥**

मेरी चिकित्सा करने के लिए, विद्या, मन्त्र, मूल और शस्त्र चिकित्सा में कुशल एवं विशारद ऐसे आचार्य उपस्थित हुए थे ॥२२॥

**ते मे तिगिच्छं कुव्वंति, चाउप्पायं जहाहियं।**
**न य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्झ अणाहया ॥२३॥**

मेरे हित के लिए वैद्याचार्य मेरी चतुष्पाद (वैद्य, औषधि, श्रद्धा और परिचारक) चिकित्सा करते थे, किन्तु वे मुझे दुःख से मुक्त नहीं कर सके। यही मेरी अनाथता है।

**पिया मे सव्वसारं पि, दिज्जा हि मम कारणा।**
**न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥२४॥**

मेरे पिता, मेरे लिए वैद्यों को सभी बहुमूल्य वस्तुएँ दे रहे थे, किन्तु फिर भी मैं कष्टों से मुक्त नहीं हुआ। यही मेरी अनाथता है ॥२४॥

**माया वि मे महाराय, पुत्तसोगदुहट्ठिया।**
**न यि दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥२५॥**

राजन्! पुत्र शोक से अति दुखी हुई मेरी माता

तरै लाखैरै मयारी बैर सोढी थी, सु लाखो वागैनू चालण लागो तरै सोढी कह्यो[1]–"मोनू था विना आवडसी नही[2]। मोनू पण साथै ले चालो।" तरै लाखै कयो–"उठै आठ पोहोर चढणो-उतरणो, थाहरो काम नही।" तरै सोढी कहै–"थाहरै डीलरो पछेवडो १ मोनू दीजै[3]। इण पछेवडा रो दरसण करीस[4] नै मोहल मे वैठी रहीस[5]। नै अेक ओ मनभोळियो डूम अठै राखो। ओ मोहल नीचै ऊभो थाहरो जस गावसी, सु सुणीस नै वैठी दिन वोळाइस[6]।"

सु लाखो तो वागोर वलोचारै थाणै चालियो। मास ५ तथा ७ लागा। वासै सोढी घरै छै, सु वरसातरा दिन छै। ऊपर मेह झड लाग रयो छै। वीज[7] चमकै छै। इण समै सोढी रात आधीरा झरोखै आय बैठी छै, सु अत काम व्यापियो छै[8]। सु नीचै डूम मनभोळियो गावै छै। इणनू ऊपर वुलायो। इणसू अठै सोढी चूकी[9]। सु भेळो ले सूती छै[10]। लाखारो पछेवडो सु पगा नीचै विछायो छै। इणसू केइक दिन घरवास रयो[11]।

सु लाखो उठै वागै छै, सु बारै रातरा नाडाछोड करणनू आयो[12], सु ऊचो जोवै छै[13]। तरै दूहो कह्यो[14]—

किरती माथा ढळ गई, हिरणी गई उलत्थ।
सुवै निचिती गोरडी, उर माथै दे हत्थ[15]॥

तरै मावल वरसडो लाखा कनै थो[16] सु मावल कहै–"राज!

---

1 जव लाखा वागेको जाने लगा तो उसकी कृपापात्र (मानीती) पत्नी सोढीने कहा। 2 मुझको तुम्हारे विना यहा अच्छा नही लगेगा। 3 तुम्हारे शरीर परका दुपट्टा एक मुझको दीजिये। 4/5 इस पछेवडेका दर्शन करूगी और महलमे वैठी रहूँगी। 6 सो सुनती रहूँगी और वैठी हुई अपने दिन विताऊगी। 7 विजली। 8 सो अत्यत काम व्यापन हुआ है। 9 यहा सोढी इससे कुकम करवा कर पतित हुई। 10 वह उसको साथमे लेकर सोती है। 11 इससे कई दिन तक घर-वसा चलता रहा। 12 सो रातको पिशाव करनेके लिये वाहिर आया। 13 सो वह ऊपर आकाशकी ओर देखता है। 14 तव उसने यह दोहा कहा। 15 किरती (कृत्तिका नक्षत्रसमूह) शीर्षस्थान (मध्याकाश)से पश्चिमकी ओर चली गई है और हिरणी (मृगशिरा नक्षत्रसमूह) उलट गई है। ऐसे समयमे वक्षस्थल पर हाथ रखे स्त्री (पत्नी) निश्चिन्त सो रही है। 16 पासमे था।

भी अनेक उपाय किये, किन्तु वह भी मुझे कष्टों से नहीं छुड़ा सकी। यही मेरी अनाथता है ॥२५॥

भायरो मे महाराय, सगा जेट्ठकणिट्ठगा ।
न य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्झ अणाहया ॥२६॥

नरेन्द्र ! मेरे छोटे बड़े सगे भाइयों ने भी अनेक प्रयत्न किये, किन्तु वे भी मुझे कष्टों से मुक्त नहीं कर सके। यही मेरी अनाथता है ॥२६॥

भइणीओ मे महाराय, सगा जेट्ठकणिट्ठगा ।
न य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्झ अणाहया ॥२७॥

नरेश ! मेरी छोटी बड़ी सगी बहिनें भी मुझे कष्टों से मुक्त नहीं कर सकी। यही मेरी अनाथता है ॥२७॥

भारिया मे महाराय, अणुरत्ता अणुव्वया ।
अंसुपुण्णेहिं नयणेहिं, उरं मे परिसिंचई ॥२८॥
अन्नं पाणं च ण्हाणं च, गंधमल्ल विलेवणं ।
मए णायमणायं वा, सा बाला नेव भुंजई ॥२९॥
खणं पि मे महाराय, पासाओ वि ण फिट्टई ।
न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥३०॥

महाराज ! मुझ पर अत्यन्त प्रेम रखनेवाली मेरी पतिव्रता पत्नी, मेरे पास बैठकर अपनी आँखों के आँसुओं से मेरे हृदय को भिगोती थी। वह मेरे जानते या अजानते

सवो सोढीरै मोहल गयो[1]। आगै देखै तो सोढी मनभोळियासू गळबाही घातिया सूती छै। जोयनै पाछो बीजी बैरारै घरे गयो[2]। उठै तयारी हुई, तरै अैही जागिया[3]। कयो–"ठाकुर आया नै आपानू दीठा[4]।" डूम ऊठ परो गयो। वात होणहारी थी सु हुइ चुकी। लाखो बीजी हीज बैरारै घरे सुय रह्यो[5]।

सवारै[6] गोखै[7] आय बैठनै डूम मनभोळियै नू बुलायो। कह्यो--"रे! म्है तोनू सोढी दी। तोनू महापसाव करी[8]।" नै सोढीनू कहाडियो[9]--"म्है तोनू डूमनू दी[10]। तैसू जिकू जे नीसरियो जाय सु लेजा[11]। उठै डूम दूहो कहै—

चोर भला ही धन हरै, सापुरसां घर जा'र।
दीठा दोस ज परहरै, लाखा सो दातार[12]॥

डूम मनभोळियो सोढीनू ले गयो। पछै कितरेक दिने लाखो पाटण परणीजण आयो[13]। तठै ओ डूम पण मागणी आयो छै। सोढी पण साथै आई छै। लाखै डूमनू दीठो[14]। तरै कह्यो–"रे! सोढी समाधी छै[15]?" तरै कह्यो–"जी समाधी छै।" सोढी पण लाखानू दीठो। रूप, साहिबी देख, उज लूसनै सोढी कह्यो[16]–'धान-पाणी खाणरो सूस छै[17]।" लाखैनू कह्यो--"थानू सोढी देखनै धान-पाणी खाणरो सूस लियो छै। जो मोनू लाखोजी अेकातमे आप हाथसू

---

1 लाखा ऊटसे उतरते ही सोढीके महलमे गया। 2 देख कर फिर दूसरी स्त्रियोके घरको चला गया। 3 वहा इनके आनेकी तैयारी हुई तब ये भी जग गये। 4 ठाकुरने आकर अपनेको देख लिया है। 5 लाखा दूसरी स्त्रियोके ही घरमे सो गया। 6 दूसरे दिन प्रात। 7 झरोखेमे। 8 अरे (ढाढी)! मैंने तुझको सोढी दी। तुझको इसे महापसाव करदी। (महापसाव = कोडपसाव आदि बडे दानोसे भी बडा दान, महादान)। 9 और सोढीको कहलवाया। 10 मैंने तुझे ढाढीको देदी। 11 तेरे से जो (धन) निकाला जाय सो लेकर चली जा। 12 ऐसे सत्पुरुषोके घर पर जाकर चोर भले ही उनका धन हरण करे, जो उनके (चोरोके) अपराधको देख कर भी अपनी महान् उदारतासे उन्हे उस धनके साथ छोड देते हैं। हे लाखा! ऐसा दातार एक तू ही है। 13 पीछे कितनेक दिनोके बाद पाटणमे विवाह करने को आया। 14 देखा। 15 अरे! सोढी प्रसन्न है? 16 आसू पोछ कर सोढीने कहा। 17 अन्न-जल लेनेकी शपथ है।

भी अन्न-पानी, स्नान, सुगन्ध, विलेपन और माला आदि का सेवन नहीं करती थी, तथा एक क्षण के लिए भी मुझ से दूर नहीं होती थी। किन्तु वह भी मुझे दुःख से नहीं छुड़ा सकी। यही मेरी अनाथता है ॥२८-२९-३०॥

**तओऽहं एवमाहंसु, दुक्खमा हु पुणो पुणो।**
**वेयणा अणुभविउं जे, संसारम्मि अणंतए ॥३१॥**
**सइं च जइ मुच्चेज्जा, वेयणा विउला इओ।**
**खंतो दंतो निरारंभो, पव्वए अणगारियं ॥३२॥**

तब मैंने सोचा कि 'इस अनन्त संसार में मैंने ऐसी दुस्सह वेदना बारबार सहन की है। अब एक बार भी मैं इस महावेदना से मुक्त हो जाऊँ, तो क्षमावान्, दमितेन्द्रिय और निरारंभी अनगार हो जाऊँ ॥३१-३२॥

**एवं च चिंतइत्ताणं, पसुत्तो मि नराहिवा।**
**परियत्तंतीए राईए, वेयणा मे खयं गया ॥३३॥**

हे नरेन्द्र! ऐसा विचार करके मैं सो गया। और रात्रि बीतने के साथ मेरी वेदना भी नष्ट होती गई ॥३३॥

**तओ कल्ले पभायम्मि, आपुच्छित्ताण बंधवे।**
**खंतो दंतो निरारंभो, पव्वइओ अणगारियं ॥३४॥**

दूसरे दिन प्रातःकाल मैंने बन्धुजनों से पूछकर, क्षमावान् दमितेन्द्रिय और आरम्भ रहित अनगार प्रव्रज्या धारण की ॥३४॥

# वात जांम ऊंनड़ सांवलसुध कवि रोहड़ियानूं आऊठ कोड़-सांमई दी तिणरी

लाखा फूलाणी कनै सावळसुध कवि रहै। लाखो वडो दातार छै। तिण ऊनडरै मन आई जु किण हीक[1] वडै पात्रनू मोज[2] दीजै। तरै सावळनू आप कनै सामई तेडियो[3]। तठै[4] आयो तरै सावळरो घणो आदर कियो।

पछै वेळा २. तथा ३ मुजरै आयो तरै कयो-"क्यु जस करो[5]।" तरै लाखारो जस करणो माडियो[6]। तरै पूरो (दै) सुहावै नही। तरै चोथै दिन आयो, तरै कयो-"क्यु जस करो।" तरै सावळ कयो-"म्हे लाखारो जस करा, सु राजनू सुहावै नही। लाखा जिसो और कुण छै[7]?" तरै ऊनड कयो-"लाखो किसो दातार छै? पूतळो सोनारो वाढै छै[8], दान दै छै। मडो घर माहै राखै छै[9]। सूतग लागै छै[10]। दातार होय तो एकण किणूनू परो दै नही तरै[11]?" तरै सावळ कयो-"राज तो आऊठ कोड-बभणवाडरा धणी छो[12]। उणरै इतरी विलायत दे सको नही[13] तो सत बोलै छै। राज आऊठकोड-बभणवाड एकण किणीनू दातार छो तो परी दो[14]।" ऊनड बात दिल माहै राखनै परधानानू कयो--"फलाणी ठोड राजलोक और लोकारी वसी सूधा जात जास्या[15]। तयारी करो।" सिगळा तयारी की[16]। पछै भलो दिन जोय[17], दीवाण वणाय[18] सारा उमराव तेडनै[19] सावळसुध कविनू डेराथी तेडायनै[20] आपरै तखत बैसाणनै[21] आऊठ-लाख सामई

---

1 किसी एक। 2 दान। 3 तब सावलको अपने पास सामई बुलाया। 4 वहा 5 कुछ मेरा यश वर्णन करो। 6 तब उसने लाखाका यश वर्णन करना शुरू किया। 7 लाखाके समान और ऐसा कौन है? 8 सोनेका पुतला काटता है। 9 घरमे शव पडा रखता है। 10 मरणाशौच लगता है। 11 वह यदि सचमुच ही दातार हो तो किसी एकको ही वह सुवर्ण-पुतला दान क्यो नही कर दे? 12 आप तो आउठकोड-बभणवाड प्रदेशके स्वामी हो। 13 उसके जितना प्रदेश आप दे सकते नही। 14 आप भी यदि ऐसे ही दातार है तो आउठकोड-बभणवाड किसी एकको दान कर दें। 15 अमुक स्थान पर रनिवास और अपनी वसीकी प्रजा सहित यात्राको जायेंगे। 16 सबने तैयारी की। 17 देख कर। 18 दरबार भर कर। 19 बुला कर। 20 बुलवा कर। 21 अपने सिंहासन पर बिठा कर।

रो महापसाव[1] करनै आप गाडो जोतराय[2] समदर बेट[3] कराड़ै[4] गयो।

## गीत ऊंनड़रो

कोड दीयण कीधो[5] करणीगर[6], भल दातार कवीचै[7] भाग।
आऊठ लाख तणो छत्र ऊनड, तो विण किणही न दीधो त्याग[8]॥ १
सो-लाखा[9] लग[10] दान समपियो[11], वासै घातैं हतणा विण्याण[12]।
तो जिम गहड[13] तखत वड त्यागी, सुकवि किह न किया सुरताण॥ २
सवा कोड लग आगै सयणैं, पात्र[14] भणावै[15] महापसाव।
लोभाऊ दियो लाखावत, सिध तणो छत्र सामा-राव॥ ३

---

1 महाप्रसाद, बहुत बड़ा दान। 2 जुतवा कर। 3 द्वीप। 4 किनारा। 5 किया, बनाया। 6 ईश्वरने। 7 के। 8 दान। 9 करोड 10 का, तक। 11 दिया, समर्पण किया। 12 अनेक प्रकारकी सामग्रीके साथ। 13 वीर, महान्, गभीर। 14 चारण। 15 यश-गान करवाया।

---

'कच्छ कलाधर' नामक कच्छके इतिहास ग्रन्थमे ऊनडका यह गीत पदच्छेद, वैणसगाई और भाषाकी अशुद्धियोंके साथ पूरा (आठ पंक्तियोंमें) दिया हुआ है। परन्तु जाम ऊनडके जिस महा-पसावकी घटना पर इसमें यह छंद दिया गया है, वह घटना सर्वथा अन्य प्रकारकी है। घटना संक्षेपमें इस प्रकार है—

जाम ऊनडके पाटवी पुत्र सामत ससाको हारस चारणका पुत्र, देवीको पाडाकी बलि देनेके खेलमें मार देता है। हारस चारण इस भयके कारण नगरनसई छोड कर भाग जाता है। लेकिन जाम ऊनड उसके पीछे आदमी भेज कर आदरके साथ बुला लेता है और ढाई दिनके लिये उसे समस्त नवलखी सिंधका राजा बना देता है। स्वयं एक जलपात्रको लेकर महलोंमें चला जाता है। उक्त गीत कच्छ कलाधरमें इस प्रकार है—

> कोल वरस कीया करणीगर, भल दातार कवीचे भाग,
> आवठ कोड तणो छत्र ऊनड, तो वण आपे कवण तेआग।
> सुवो दाओजी केरा ओसामा, सेल गारारा न सूझै माग,
> (सूओ दाव जिके राव सामा, मेळग नरा न सूझै माग)
> दान वडा दातारे दीधा, तखत किणे न कीधा तेआग।
> सा लखा लग दान समपेओ, पोती वखाणा प्रथीसर पाण,
> (सो लाखा लग दान समपियो, पात वखाणे प्रथीसर पाण)
> तो जिम घोड तखत वेसाडे, सो कव कीणे न कीया सुरताण।
> सिंध तणे नें तखत वेसाडे, पात्रा भणाव्यो महा पसा,
> लोभीया तें दीनो लाखाउत, सिंध तणो छत्र साम सा।

—दुलेराय श्रेल. कारणी. (पृ० ३७०) कच्छ कलाधर, प्रथम खंड, द्वितीयावृत्ति, पृ- ३६४ (प्रकरण १७ मुं), 'जाम ऊनड'।

# वात १ जांम ऊंनड़ सांवलसुधरी

जाम ऊनड सावळसुध कविनू आऊठकोड-सामई दी दान तरै आपरा गाडा समदरै बीट कराडा लेजाय छोडिया। आपरी ठाकुराई उठै की[1]। गाव ५०० सो उठै आपरै दाखलै किया[2]। ऊनडरी वडी साह्वी, सु उतरा माहै अमावी हुई[3]।

सु विचै थोडो सो पाणी थो नै नैडा[4] हीज गाव ३०० हुरमझ रै दाखलै[5] रा था, सु वा[6] जाणियो ओ नैडो आयो सु म्हानू मारैनै धरती ल्यै, माल पण ल्यै। ऊनड पण जाणियो थो आनू[7] मारू। वे ता पह्ला अति भयसू हीज माल-वित नावा घालनै हुरमझ गया। गाव ऊनड आपरा किया[8]। नै गाव ७०० कुडळै-गुलाईरा परगना समद्र वार सूमरारा धकायनै लिया[9]। वडी ठाकुराई सिंधसू नजीक भुज दिसीसू जायनै[10]। जिहाज दिन ३ तथा ४ नू जाय।

पछै महड (ऊनड) कनै सू राव खगार हमीरोत कुड नै गुलाईरा परगना चाप लिया भुज वासै[11]।

पछै अकबर पातसाह जामनू तुरक कियो। हमै तुरक छै[12]। वडा दातार छै। चारण आयेरी खबर दै तिणनू ५ महमूदी दीजै[13]। अजै वडी सायबी छै[14]। माणस हजार ८००० तथा ९०००री जोड छै। सिंधरा गाव नजीक छै। वासू कर वधो दै छै।

---

1 वहा अपना राज्य स्थापित किया। 2 वहा ५०० गाव अपने अधिकारमे कर लिये। 3 उतनेमे सतोप नही हुआ। 4 निकट। 5 अधिकारके। 6 उन्होने। 7 इनको। 8 ऊनडने उन गावोको अपने अधिकारमे कर लिया। 9 और समद्रके किनारे-किनारे ७०० गाव सूमरोके अधिकारके कुडलै-गुलाई परगनेके थे, सूमरोको भगा कर अपने अधिकारमे कर लिये। 10 भुजकी ओरसे लगा कर सिंधके निकट तक वडी ठकुराई (राज्य)का स्वामी हुआ। 11 बादमे राव खगार हमीरोतने कुड और गुलाईके परगने भुजके अधिकारमे कर लिये। 12 अब मुसलमान हैं। 13 किसी चारणके आ जानेकी सूचना देने वालेको पाच महमूदी इनाममे दी जाती है। 14 अभी तक वडी ठकुराई है।

## गीत पखालदरी वेढ राव खंगार नै रावल जांम हुई तणरो वारहट ईसर कहै

परा नाख पडिहार पिंड पवग[1] छोडै परा,
परापुड ऊपडी वेढ प्राझी[2] ।
राहिवै हरधवळ हरधवळ राहिवो,
माझियै वाजिया[3] आय मांझी[4] ॥१॥

जिण दिन रावळ नवोनगर लियो, तद हरधवळ हाजारै हाथ रयो[5] नै हाजो नीसरियो[6] जातो हुवो तिणनू[7] जसै हरधवळरै वेटै वांसै[8] आपडनै[9], हाजा वापरा मारणहारनू मारियो[10] ।

---

1 घोडा । 2 (१) अत्यधिक, (२) जबरदस्त । 3 लडे । 4 प्रमुख । 5 तब हरधवल हाजाके हाथसे मारा गया । 6 निकल कर, निकलना हुआ । 7 जिसको । 8 पीछेसे । 9 पकड कर । 10 बापको मारने वाले हाजाको मार दिया ।

## वेढ १ जांम सत्तै नै अमीखांन हुई तिणरी वात

पातसाह अकबर गुजरात आजमखाननू सोवै मेलियो[1]। सु तिण दिन गिरनार अमीखान गोरी हुतो[2]। सु तिणनै जाम सत्तै मुख हुतो[3]। सु आजमखान गिरनार लेवण मतै[4]। तरै जाम इणरो ऊपर करै[5]। तरै आजमखान जामसू हळफळ करी[6]। पिण वजीर जेसो जामरै रस हुवण दै नही[7]। तरै अठी[8] नवाव चढियो। उठी[9] जाम चढियो। नवानगरसू कोस १२ धवळहर छै, उठै उतरियो[10]। नवाव आमरण उतरियो छै[11]। १३००० अमीखान, ४००० काठी, ४००० झाला, ४००० जेठवा, वाढेल ५०००, राव पचायण ल्यायो ५०००। जामरा घोडा हजार १००००। आजमखान कनै पण निपट सखरो साथ[12]। सु वळै कहाव घणा ही हुवा, पण जाम मानै नही[13]। फोजा त्रेऊ चढ आई। तरै अमीखानरै चाकर काठीलो हामो हुतो, सो क्यु उणसू जाम बुरी की थी[14]। सु तिण अमीखाननू कयो[15]—"तू गिरनाररो धणी, काइ पाधरमे मरै[16]? तरै अमीखानरो अणी विगर विढिया हीज मुडियो[17]। बीजो ही साथ घणो मुडियो[18]। तरै उणै घणो जोर कियो तठै जाम सत्तो नीसरियो[19]। तठै कवर अजो वजीर जेसो काम आया। भात्रीज भाणेज जमाई माणस ६७सू काम आया[20]। कवर अजै जेसै घणो पराक्रम कियो। माणस १८०० जामरा खेत

---

1 वादशाह अकवरने आजमखानको गुजरातके सूवे पर भेजा था। 2 उन दिनो गिरनारमे अमीखान गोरी राज्य करता था। 3 उसके और जाम सत्ताके परस्पर प्रेम था। 4 आजमखानका विचार गिरनार लेनेका। 5 तव जाम इसकी (अमीखानकी) सहायता करे। 6 तव आजमखानने (अमीखानको मदद नही करनेके लिये) जामसे वातचीत की। 7 लेकिन वजीर जैसा जाम और उसके परस्पर मेल होने नही देता। 8 इधरसे। 9 उधरसे। 10 वहा जाकर ठहरा। 11 नवाव आमरणमे आकर ठहरा है। 12 आजमखानके पास भी निपट वढिया सेना। 13 पुन कई वार वातचीत हुई परन्तु जाम नही मानता। 14 अमीखानका एक चाकर काठीला हामा नामक था, उसके साथ जामने कभी वुरा वर्ताव किया था। 15 उसने अमीखानको कहा। 16 तू गिरनार का स्वामी है, क्यो व्यथमे मर रहा है? 17 तव अमीखानकी सेना विना लडे ही मुड गई। 18 दूसरी सेना भी वहुत सी लौट गई। 19 तव उसकी (आजमखानकी) सेनाने वहुत जोर मारा तो जाम सत्ता वहासे भाग निकला। 20 भतीज, भानजे और दामादके साथ ६७ मनुष्य काम आये।

पड़िया[1] । आजमखांनरा मांणस ७०० काम आया । खेत हाथ आयो[2] । वीजै[3] दिन आजमखांन नवोनगर लूटियो । पछै जाम वात कर मेळ कियो[4] । घोडा ५ जाम दिया । घोडा १० री जमै आगै की, सु वरसावरस द्यै[5] । आप मिळियो । अमीखान दिसिया कह्यो– "मारल्यो, थाहरो गुनैगार छै[6] ।" हमै घोड़ा ६० वरसावरस द्यै छै[7] ।

## गीत जांम सत्तारो

परी राख पतसाह वळ-बाह[8] अहमदपुरो,
अभग लखधीर इम कियो आगै ।
सतो मागै नहीं धीर साहण समद,
मीरजा मीरसू वाथ[9] मागै ।। १
अमी खगार नह मुदाफर ऊगरै,
हुवा अळगा विना भाटकै हाथ[10] ।
साह राखै सरण साह वीजा[11] सरस,
सूर मागै सतो वाथ समराथ ।। २
आदि लगि सरण साधार लाखा हिमै[12],
भलो सत-साल[13] इम[14] भला भावां ।
मांगी पातसाह मा[15] मांग जुध मीरजा,
आव मैंदान मैदान आवां ।। ३

## गीत

पैसंतां लार[16] लाख दळ पैठा[17],
ढाल वाळिया लोथा[18] ढेर ।

---

1 जामके १८०० आदमी रणखेत रहे । 2 (आजमखाकी) विजय हुई । 3 दूसरे । 4 पीछे जामने सधि कर के मेल कर लिया । 5 दस घोडे और आगे देते रहनेकी शर्त्तकी, जो प्रति वर्ष देता है । 6 स्वय उससे मिला और अमीखाके सबधमे कहा—उसे मार डालो, वह तुम्हारा गुनहगार है । 7 अब प्रति वर्ष ६० घोडे देता है । 8 भुजाओंके बलसे । 9 युद्ध । 10 विना प्रहार किये ही (युद्ध किये विना ही) अलग हो गये । 11 दूसरे । 12 अब । 13 शत्रु-शल्य, शत्रु के लिये काटा रूप । 14 इस प्रकार । 15 मत, नही । 16 पीछे । 17 घुस गये प्रवेश किया । 18 लाशोंके ।

निग्रह[1] फोज फाड नीसरतै[2],
सतै घातिया[3] पाखर सेर[4] ॥ १
सता तणो[5] वढ[6] लोप न सकियो,
लोपी नही लोह-ची-लीह[7] ।
पै[8] पडर[9] घड[10] रा पाडतै,
दरगैरा पडिया तिण दीह[11] ॥ २
सतावीस दी कवण[12] सभारै,
सदी स कवण वधै सग्राम ।
पच हजारी किना पाडिया,
किता हजारी ग्राया काम ॥ ३
त्रिकुट[13] ग्रनै[14] हथणापुर[15] तीजो,
घडा[16] खूह-खग[17] एकण घाय[18] ।
इण निसपति ग्रसपतिसू ग्रवडो[19],
रिण काछियो[20] जु काछी राय[21] ॥ ४

## गीत ग्राढो भरमो कहै

तवल[22] वाज[23] गजराज[24] सकवध ग्रकवर तणा[25],
रहचिया[26] मीर हाल्लै रढाळै[27] ।
सतै ग्राफाळिया[28] भला खुरसाणसू[29]
काछ[30] पचाळ[31] सोराठ[32] काळै ॥ २
सारसी पारसी सिधुरी साईया.
गुडडिया सोर नीसाण गुडिया[33] ।

---

1 युद्ध । 2 निकलते हुये । 3 डाल दिया, वना दिया । 4 छेद नाश । 5 का । 6 (१) प्रहार, (२) शस्त्रकी तीक्ष्ण धार । 7 (१) शस्त्रकी मर्यादा, (१) शस्त्रकी धारा-को । 8 (१) परतु, (२) प्रतिष्ठा, (३) पाँव । 9 मुसलमान, यवन । 10 सेना । 11 उस दिन । 12 कौन । 13 लकाका गढ । 14 और । 15 हस्तिनापुर । 16 सेना । 17 नाश । 18 प्रहार । 19 इतना । 20 लडाईकी युद्ध किया । 21 कच्छके राजाने, कच्छाधिपति सत्ताने । 22 ढोल, नगारा । 23 घोडा । 24 हाथी । 25 का । 26 सहार किया, पराजित किया । 27 वीरने । 28 युद्ध किया, भिडा 29 बादशाहसे । 30 कच्छ देश । 31 पाचाल देश । 32 सौराष्ट्र । 33 वजे ।

ओतरा[1] पाछमा[2] लाख दळ आवटै[3],
जामनू कावनी थाट[4] जुड़िया ॥ २
दहै[5] हीचाळ[6] रत-खाळ[7] खळकै धरा,
जुडै धड पडै भडदड जडाळै[8] ।
सता विण अवर कुण साहसू समवडै[9],
पाधरै पज[10] मैदान पाळै[11] ॥ ३
जाम जु कियो आजीज सु जेहवो[12],
इसो को हुवो भाराथ[13] आगै ।
कियो खळकट[14] दळा काछ-कालवरा,
वीरनो वळै सर घोर वागै ॥ ४

---

1 (१) उत्तरके, (२) आगेके। 2 (१) पश्चिमके (२) पिछले। 3 नाश होता है। 4 सेना। 5 गिरते हैं। 6 हाथी। 7 रक्तका नाला। 8 कटारीसे। 9 समता करता है। 10 (१) मर्यादा, (२) प्रतिज्ञा। 11 रोकता है। 12 जैसा, समान। 13 युद्ध। 14 नाश ध्वंस।

# वात १ झाला रायसिंघ मांनसिंघोत नै जाड़ेचा जसा धवलोत नै जाड़ेचा सायब हमीरोत वेढ हुई तिणरी[1]

झाला रायसिंघ मानसिघोतनू मानसिघ परो काढियो[2], तरै जाडेचो जसो रायसिघरै वैहनेई हुतो, तठै गयो[3]। उठै रायसिंघ वरस १ रयो। सु एक दिन जसो रायसिघ चोपड रमता हुता[4], तितरै[5] १ सोदागर नवैनगर भुजनू जातो थो, सु नगारो साथै थो, सु वाजतो थो। सु गाव धोळहर जसारैं गावरी सीम माहै पेंडै नीसरतो थो[6]। सु जसै नगारो सुणियो नै कह्यो–"ओ नगारो कुण वजावै छै[7]? इसो कुण छै जु माहरै गावरी सीममे नगारो वजावतो नीकळै[8]? पाडवनू हुकम कियो जु घोडो तयार कर ल्याव[9]। साथसू जाबता की–"जु वेगा तयार हुइ आवो[10]। आपा इणसू वेढ करस्या[11]।"

तरै झालै रायसिंघ कह्यो–"म्हारा ठाकुर! इसडी वात हळवी कासू करो छो[12]? पेंडा रो गाव छै[13]। घणा ही पैंडै नीसरसी, थे किण-किणसू वेढ करसो[14]?" तरै जसै कही–"जु जिकोई[15] म्हारी सीव माहै नगारो वजावतो नीसरसी[16] तिणसू[17] म्हे वेढ करस्या।" तरै रायसिंघ कह्यौ–"राज! वेढ नही कर सको।" तरै जेसै ओकर वाह्यो[18]– "जु जाणीजै छै, राज माहरी सीव माहै नगारो वजावसो[19]!" तरै रायसिघ कह्यो–"म्हे रजपूत छा तो थाहरी सीव माहै आय नगारो

---

1 झाला रायसिंह मानसिंहोत और जाडेचा जसा धवलोत तथा जाडेचा साहिब हमीरोतके परस्पर लडाई हुई उसका वर्णन। 2 मानसिंह ने झाला रायमल मानसिंहोतको अपने देशसे निकाल दिया। 3 तब रायसिंह अपने बहनोई जाडेचा जसाके यहा चला गया। 4 सो एक दिन जसा और रायसिंह दोनो चौपड खेल रहे थे। 5 इतनेमे। 6 सो वह जसाके धवलहर गावकी सीमामे हो कर मुसाफिरी करता हुआ निकल रहा था। 7 यह नगाडा कौन वजा रहा है? 8 ऐसा कौन है जो मेरे गावकी सीमामे नगाडा वजवाता हुआ निकलता है? 9 सईसको आज्ञाकी कि वह घोडा तैयार करके लाये। 10 सैनिकोको सूचना की कि जल्दी तैयार हो कर आयें। 11 अपन इससे लडाई करेंगे। 12 मेरे सरदार! ऐसी ओछी बात क्यो करते हो? 13 यात्रियोके लिये आने-जानेके मार्ग वाला यह गाव है। 14 मार्ग पर हो कर अनेक निकलेंगे, आप किस-किससे लडाई करेंगे। 15 जो कोई भी। 16 निकलेगा। 17 उससे। 18 तब जैसेने ताना मारा। 19 मालूम होता है कि आप मेरी सीमामे नगारा वजवायेंगे।

वजावस्या[1] ।' तरै जेसै कह्यौ–'जो थे नगारो वजावस्यो तो हू वेढ करीस ।' आ वारता तो अठै नीवडी[2] ।

सोनागररो पहला नगारो वाजियो थो, तिणरी जेसै खवर कराई, जु कुण[3] छे । जु आदमी खवर दी–'जु वापारी लोक छै । पैडै जाय छे[4] ।' आ वात जेसै सुणनै कह्यौ–'काहु करा[5] ! वापारी लोक हुवा । नहीतर[6] म्हारी सीव माहै नगारो देरावै नै हू वेढ न करू ! सु जांणनें आघो काढियो[7] ।

पछै कितराएक दिना मास ४ तथा ५ झालै मानसिघ राम कह्यौ[8] । तरै रजपूता विचारियो–'जु टीको किणनू देस्या[9] ? रायसिघरा भाई तो नान्हा[10] छै नै रायसिघ वाहिर छै । नै याथी तो धरती रहसी नही[11] । टीका लायक रायसिघ छै । तरै विचारनै रजपूते रायसिघनू वुलायो । इण दिसी ओठी चाढियो[12] नै कह्यौ– 'ठाकुर राम कह्यो छै । धरती थाहरी छै । थे वेगा पधारज्यो[13] ।'

सु जेसो रायसिघ साळो वैहनेई झरोखै वैठा था । तितरै ओठी[14] १ हळोदरै मारग दिसी[15] आवतो जेसै दीठो[16] । तरै रायसिघनू कह्यो–'जु ओठी १ हळोदरा मारग दिसी आवतो दीसै छै[17] । यु वेऊ[18] ठाकुर वात करै छै, तितरै ओठी आय दरवाररै माहै मुहडै-उतरियो आय जुहार कियो[19] । तरै जसै रायसिघ रजपूतनू पूछियो– 'जु थे क्यु आया छो ?' तरै रजपूत कह्यो–'ठाकुरा राम कह्यो[20] नै राजनू रजपूतै वुलाया छै । राज वेगा पधारो । राजरी धरती छै ।' जाडेचै जसै कह्यो–'राज वेगा पधारो ।' जसै रायसिघनू

---

1 यदि हम राजपूत हैं तो तुम्हारी सीमामे आ कर नगारा वजवायेंगे । 2 यह वात तो यहा ही समाप्त हुई । 3 कि कौन है । 4 मार्ग चल रहे है । 5 क्या करें । 6 नही तो । 7 सो जानते हुए भी आगे निकल जाने दिया । 8 फिर कितनाक समय, चार तथा पाच महीने वीत जाने पर झाला मानसिंह मृत्यु-प्राप्त हुआ । 9 राज-तिलक किसको देंगे ? 10 छोटे । 11 और इससे तो देश सम्हलेगा नही । 12 इसके लिये एक उष्ट्रारोहीको भेजा । 13 आप जल्दी आयें । 14 उष्ट्रारोही, शुतुरसवार । 15 से, की ओरसे । 16 देखा । 17 कि एक उष्ट्रारोही हलवदके मार्ग द्वारा आता हुआ दिखाई देता है । 18 दोनो । 19 इतनेमे उस उदास-मुख उष्ट्रारोहीने भीतर आ कर प्रणाम किया । 20 ठाकुरकी मृत्यु हो गई ।

लूगडा[1] कराय दिया, खरच दियो। घोडा दिया। यू करनै चढणरी वेळा हुई तरै जसैनू रायसिघ सीख करतै कह्यो–'जु राज मोनू ओकर बोलियो थो[2], सु हू रजपूत छू, तो सही राजरी सीव माहै नगारो देराइस[3]।' तरै जसै कह्यो–'जिण ही दिन थे नगारो म्हारी सीव माहै दिरावसो, तद हू आडो आय ऊभो रहीस[4]।' सु पहली तो आ वात अदावदरी हुई थी, तरै तो सारा ही जाणियो थो–'ऐ साळा वैहनेई थका रामत करै छै[5]।' नै आ वात रायसिघ हालता[6] कही तर तो सारे ही जाणियो–'जु आ वात साची हुई। कोई उपाव उपद्रव हुईसी।'

सु झालो रायसिघ तो चढनै हळोद आय टीके बैठो। पछै मासा ४ धरती रस पडी[7], तरै रायसिघ साराही रजपूतानू कह्यो–'म्हारै श्री रिणछोडजीरी जात छै, सु करणरो मन छै[8]। सकोई[9] साथ तयार हुवो।' तरै देस माहै भलो रजपूत, भलो घोडो थो, सु सोह भेळो कियो[10] जात सारू[11]। हळोदसू असवार हजार २०००, पाळा हजार २००० सगळो साथ छै सु गाव धवळहररी सीव[12] माहै आया, तरै नगारो दिरायो[13]। तरै जाडेचै जसै कह्यो–'इसो कुण छै जिको म्हारी सीव माहै नगारो दै?' आदमी मेल खवर कराई। आदमी कह्यो–'जु झालो रायसिघ छै।' तरै जसो आपरा साथसू चढनै साम्हो आयो। तरै रायसिघ जसानू कहाडियो[14]–'जु था कनै साथ थोडो छै[15] नै म्हारै पण श्री रिणछोडजीरी जात करणी छै। सु हू जात करनै वळतो था माहै नीसरीस तरै वेढ करीस[16]। तितरै थे पण थाहरै देसरो साथ

---

1 वस्त्र। 2 आपने मुझे एक वार ताना दिया था। 3 तो अवश्य आपकी सीमामे नगाडा वजवाऊगा। 4 तव मै (युद्धके लिये) आडा आ कर खडा रहूँगा। 5 ये साला-वहनोई हैं इसलिये हसी-मजाक कर रहे है। 6 रवाना होते समय। 7 देशमे शासन-व्यवस्था जम गई। 8 मेरे श्री रणछोडजीकी जात (यात्रा) वोली हुई है, सो करनेका मन है। जात = कार्यकी सिद्धि होने पर सकल्पित भेंटके साथ की जाने वाली किसी देवमूर्तिके दर्शनकी पूर्व-निश्चित यात्रा। 9 सभी। 10/11 उन सबको यात्रामे साथ चलनेके लिये इकट्ठा किया। 12 सीमा। 13 तव नगाडा वजवाया। 14 कहलवाया। 15 तुम्हारे पास सेना कम है। 16 सो मैं यात्रा करनेके वाद लौटता हुआ तुम्हारी सीमामे हो कर निकलूगा और तव लडाई करूगा।

भेळो करो[1] ।' आ वात जसारै पण दाय आई[2] ।

झालो रायसिंघ पछै रिणछोडजीरै दरसण गयो। कटारो ठाकरारी कमर माहीसूं छिटक पड़ियो[3], सु रायसिंघ लियो। रुपिया १५००) रो, इण रुपिया २०००) हजार दिया। दरसण कर पाछा खड़िया[4]।

अठै जसो आपरा देसरा साथसूं चढिया-पाळा[5] आदमी हजार सात ७००० भेळा किया[6]। झालो रायसिंघ श्री रिणछोडजीरी जात कर वळतो[7] नवैनगर रावळ जाम कनै आयो, मिळियो। रावळ जाम घणो आदर भाव कियो। महमानी कर सीख दी[8]। माणस २ रूडा मेलनै रायसिंघनूं कहाडियो[9]-'थे नै जसै वेई वाद कियो छै[10]। थे स्याणा छो, जसो मोटियार छै[11]। थे नीसरता धोळहरथा कोस ४ अळगा नीसरजो[12]।' आ वात जाइ आदमिया रायसिंघनूं कही। तरै रायसिंघ कह्यो-'वा वात तो नीवडी[13]। घणा माणसां सुणी[14]।' तरै उणे आदमिये जामजीनूं कह्यो। तरै जाम ही तमकियो[15]। कह्यो, ये जाय कहो-'जसो म्हारो भत्रीज छै। जो थूं धोळहर जाईस, तो म्हारा रजपूत ४ हुसी सु जसा भेळा हुसी[16]।' तरै उणे रायसिंघनूं कह्यो-'जु जाम यूं कहै छै।' तरै रायसिंघ कह्यो-'आ वात तो हूं जाणूं छूं, पण कासूं करूं? पहली वात कही[17]। हिमैं जाम आप धोळहर पधारै तो हूं टळूं नहीं[18]।'

यूं कहिनै रायसिंघ धोळहर नजीक आयो। नगारो दियो[19]।

---

1 जितनेमें तुम भी अपने देशकी सेनाको इकट्ठी करलो। 2 यह बात जसाके भी जंच गई। 3 ठाकुर श्रीरणछोडरायकी कमरमें से एक कटार नीचे गिर पड़ा। 4 दर्शन कर के पीछे रवाना हुए। 5 सवार और पैदल। 6 इकट्ठे किये। 7 लौटता हुआ। 8 आतिथ्य कर के विदाई दी। 9 दो भले आदमियोंको भेज कर के रायसिंहको कहलवाया। 10 तुम और जसा, दोनोंने एक विवाद खड़ा कर लिया है। 11 तुम समझदार हो और जसा जवान है। 12 तुम लौटते हुए धवलहरसे चार कोस दूर हो कर के निकलना। 13 वह बात तो खतम हुई (वह बात तो पक्की हो गई)। 14 बहुतसे मनुष्योंने सुन ली है। 15 तब जाम भी क्रोधित हुआ। 16 मेरे चार राजपूत होंगे सो जसाकी सहायतामें होंगे। 17 परन्तु अब मैं क्या करूं? जब कि पहले बात कर चुका हूं। 18 अब तो जाम स्वयं धवलहर पधार जायें तो भी टलनेका नहीं। 19 नगाडा बजवाया।

धोळहर डेरो कियो। जसानू आदमी मेलनै कहाडियो[1]–'हू आयो छू। राज तयार हुय रहीजै। आपै परभातरा वेढ करस्या[2]।' जसो पण आपरा साथसू तयार हुवो छै। बीजो[3] दिन हुवो तद रायसिंघ आपरा साथसू चढ आयो। जसो पण आपरा साथसू चढ आयो। गावरा मुहडा[4] आगै तळाव छै, तिणरै पाछै मैदान छै। तठै वेऊ कानीरो साथ आय चढियो छै[5]। अणी मिळिया छै[6]। वेढ भली भातसू हुवै छै। वेऊ कानीरो साथ पागडा छाडिया पाळो थको विढै छै[7]। तिण माहै जसो असवार २०० सू आपर साथ माहै चढियो ऊभो तमासो जोवै छै। तरै रायसिंघ दीठो[8]–'जु म्हारो साथ थोडो नै जसारो साथ घणो, जु काइ घात करू[9]।'

रायसिंघ आदमी मेलनै[10] जसारी खवर कराई–'जु कठै छै, किसी आणी माहै छै[11]?' सु आदमी खवर ले पाछो आयो। कह्यो–'पैली कानै सानै (छानै) साथ चढियो ऊभो छै, तठै छै।'

तरै रायसिंघ आपरा साथ माहै भलो रजपूत, भलो घोडो थो त्या माहै टाळनै असवार ४०० लेनै जसो ऊभो थो तठै जसा ऊपर तूट पडियो। जसो निपट ससवो मुवो[12]। जसारो साथ भागो। अठै जसा रायसिंघरो घणो साथ काम आयो। खेत रायसिंघरै हाथ आयो[13]।

पछै गावनू हल्लो कियो। तरै रायसिंघरी वैहन जसारै घर हूती सु आडी फिरी। कह्यो–'थे घणो ही काम कियो, गाव मोनू काचळीरो बगसो[14]।' तरै गाव मारियो नही[15]। नै आपरो साथ खेत पडियो थो, सु सभायनै हळोद पाछा आया[16]।

---

1 जसाको आदमी भेज कर कहलवाया। 2 अपन कल प्रात लडाई करेंगे। 3 दूसरा। 4 मुह, साम्हने। 5 वहा पर दोनो ओरकी सेनाएँ चढ़ आई हैं। 6 दोनोकी सेनाए आमने-साम्हने हो गई हैं। 7 दोनो ओरकी सेनाए अपने-अपने वाहनोको छोड कर पैदल युद्ध कर रही हैं। 8 तब रायसिंहने देखा। 9 इसलिये कोई आक्रमण करनेकी घात करू। 10 भेज कर। 11 वह कहा और कौनसी अनी (टुकडी) मे है? 12 जसा बडी सरलतासे मार दिया गया। 13 रायसिंहको विजय हुई। 14 तुमने बहुत अच्छा काम किया, अब यह गाव तो मुझको कचुलीके रूपमे बख्शीश करदो। 15 तब गावको नही लूटा। 16 और अपने सैनिक जो युद्ध भूमिमे काम आ गये थे, उनकी अन्त्येष्टि करके हलवद लौट आया।

तिण वातरी साखरो गीत वारहट ईसर कहै[1]—

### गीत

पख किसू भखै, की अगन प्रकासै,
लाअै किसू संकर गळ लेअ ।
वप जसराय तणो घाय वहतां,
लोह धार रहियो लागेअ ।। १
अमिख अमिखचर मगन आई,
उतवग ईस न उपगरियो ।
सामा तणो सरीर सरव ही,
आवध धारा ऊतरियो ।। २
विहगा हुवो न चीनो विसनर,
भव ही तणै न आयो भाग ।
अग जसराज तणौ आफळता,
लिख-लिख गयो अगारा लाग ।। ३[2]

### वात

जसानू गयसिंघ मारियो, जिण ऊपर[3] जाडेचा ठाकुर सको[4] भेळा होयनै नवानगर जामजी तीरै गया[5] । आय कह्यो—'राज

---

1 इस युद्ध-वार्ताकी साक्षीका गीत बारहठ ईश्वरदास इस प्रकार कहते है। 2 गिद्ध आदि पक्षी क्या भक्षण करें और अग्नि क्या जलाये ? शंकर अपनी रुंडमालाके लिये किसका सिर प्राप्त करें ? शरीरका कोई भी अंग किसीके हाथ नहीं लगा । जसराजके शरीर पर इतने अधिक शस्त्रो के प्रहार लगे है कि उसके शरीर का प्रत्येक अवयव छोटे-छोटे टुकडे हो कर शस्त्रोंसे ही लगा रह गया ।। १

गिद्धिनी और चील आदि मांसभक्षी पक्षी मांस भक्षणके लिये आये । शिव अपनी रुंडमालाके लिये सिर लेनेको आये । परंतु किसीको कुछ भी हाथ नहीं लगा । सामी जसराजका समस्त शरीर शस्त्रोंकी धाराओंसे ही लगा रह गया ।। २

पक्षियोंको उनके शरीरका कुछ भी भाग प्राप्त नहीं होने से निराशा हुई । वैश्वानर उनके शरीर को देख ही नहीं पाये और भगवान् शंकरको अपना भाग—वीरका मस्तक भी प्राप्त नहीं हो सका । जसराजके अंगके युद्धमें शस्त्रोंके प्रहारोंसे हुए छोटे-छोटे टुकडे जो शस्त्रो ही मे लगे रहे, उन्हे छुडा कर, मात्र उनका ही दाह-संस्कार किया गया ।। ३

3 जिस पर, जिस बातके लिये । 4 सभी । 5 पास गये ।

जाडेचारा ठाकुर छो। झाले रायसिघ जसानू मारियो छै। राज माहरी ऊपर करो[1]।'

तरै जामजी जाडेचा साहव हमीरोतनू विदा कियो। तावीन[2] घोडा हजार २०००० दिया। कह्यो–'थे जाय रायसिघनू मारि लेग्रो।' तरै ग्रा वात रायसिघ साभळी[3]। तिण ऊपर हळोदरो कोट सवरायो[4]। ग्रापरो साथ भेळो कियो। मरणीक हुय वैठा छै[5]। कोट सझियो छै[6]। जाडेचारो कटक हळोदथा कोस १० ग्राय उतरियो छै।

हळोदथा कोस ५ साहिवरो सासरो छै[7]। सु रातरै-पोहर[8] साहिव ग्रसवार ५००सू सासरै ग्रायो। सु झालो रायसिघ ग्रापरै साथ माहै[9] ऊभो खवरदारी ल्ये छै[10]। तितरै[11] रायसिघरो मागणिहार[12] गाव जाडै साहिवरो सासरो थो, तठै ग्रो पण परणियो थो[13], सु सासरै गयो थो, सु साहिव रायसिघ ऊपर ग्रायो सुणनै ग्रो ही[14] रायसिघ तीरै ग्रायो। ग्रासीस दी। तरै डूमनू पूछियो–'थे काई वात सुणी ?' तरै कयो–'बीजी काई वात तो सुणी नही[15], नै जाडेचो साहिव ग्राज सासरै ग्रायो छै।' तरै रायसिंघ कयो–'ग्रा वात तो हू मानू नही। मो इतरै नैडै थकै[16], साहिव कदै कटक माहिथा सासरै जाय नही।' तरै डूम कयो–'हुकम करो तो घोडारा सहनाण वताऊ।' तरै कह्यो– वताव[17]।' तरै इण सहनाण कह्यो। तरै वात मानी[18]। तरै रायसिघ ग्रापरो साथ थो तिण माहैसू भलो रजपूत, भलो घोडो थो, तिण माहै ग्रसवार ५०१ टाळवा[19] था तिके लेनै साहिव ऊपर दोड़ियो।

---

1 ग्राप हमारी सहायता करें। 2 ग्रधिकारमे, तावेदारीमे। 3 सुनी। 4 जिस पर हलवदका कोट तैयार करवाया। 5 मरनेको तैयार (ग्रत्योत्साहसे युद्धमे मरणातुर) होकर वैठे हैं, मरणीक = मरणशील मरणधर्मा। 6 योद्धा ग्रौर शस्त्रो ग्रादिसे कोटको सभी प्रकार पूर्ण कर लिया है। 7 हलवदसे पाच कोसकी दूरी पर साहिवकी ससुराल है। 8 रातके समय। 9 ग्रपनी सेनामे। 10 खडा हुग्रा देख-भाल कर रहा है। 11 इतनेमे। 12 याचक। 13 वहा यह भी व्याहा था। 14 यह भी। 15 दूसरी तो कोई वात नही सुनी है। 16 मेरे इतने निकट होते हुए भी। 17 वतला दे। 18 तव वातको सच माना। 19 चुने हुए।

सु जाडेचो साहिब सासरियासू सीख करनै हालतो थो[1]। रात पोहर १ वासली थी[2], सु सासरिया हालण दै नही[3]। कह्यो–'सीरावणी करावा छा[4]। राज सीरावणी अरोगनै पधारो[5]।' तरै साहिब तो रहतो न थो, पण सासरिया माडा राखियो[6]।

परभात हुवो तरै साहिब अमल करनै फराकत तळाव पधारिया[7], सु साहिब आप घोड़ै असवार हुवो छै। मुहडै आगै माणस ५०१ पाळा-तरवारिया गिरिया साथे छै[8]। तळावरी पाळ[9] पाणीरी तीर पूगा[10], तितरै पैली कानी साथ आवतारी वरछी झळकी सु दीठी[11]। तरै खवर कराई। तितरै रायसिघ ही आय भेळो हुवो[12]। अणी मिळी[13]। अठै वेढ निपट सखरी हुई[14]। रजपूत रजपूतारै मुहडै आया[15]। रायसिंघ नै साहिब माहोमाही वाजिया[16]। रायसिघ साहिवनू मारियो। रायसिघनू पण साहिवरै हाथरा पूरा लोह लागा। रजपूत वेहाईरा घणा काम आया[17]। छोकरो १ पाछो नायो[18]। झालो रायसिंघ एकण खानहडी माहै पडियो थो, सु जोगिये उपाडियो[19]। पाटा वाधिया[20]। रायसिंघ तो जीवियो। साहिव नै साहिवरो साथ, रायसिघरो साथ काम आयो, आ वात जाडेचारै कटक सुणी तरै कटक पाछो गयो।

---

1 सो जाडेचा साहिव अपनी ससुराल वालोंमे आज्ञा प्राप्त कर रवाना हो रहा था। 2 उस समय पिछली एक प्रहर रात शेप थी। 3 अत ससुराल वाले उस समय प्रस्थान करनेकी आज्ञा नही देते। 4 मनुहार कर के कहा—कलेवेकी तैयारी करा रहे हैं। 5 श्रीमान् कलेवा अरोग कर पधारें। 6 परतु ससुराल वालोने हठात् रोक कर रख लिया। 7 प्रभात हुआ तव अफीम ले कर के शौच-निवृत्तिके लिये साहिव तालाव पर गया। 8 उसके आगे-आगे तलवार धारण किये हुए ५०१ योद्धा साथमे चल रहे है। 9 ऊचा किनारा कगार। 10 पहुचे। 11 इतनेमे दूसरी ओरसे आती हुई सेनाकी वरछियाँ चमकती हुई देखी। 12 इतनेमे रायसिंह भी आ पहुचा। 13 दोनो सेनाएँ आमने-सामने हुई। 14 यहा वहुत जवरदस्त लडाई हुई। सखरी = अच्छी। 15 दोनो ओरके रजपूत एक-दूसरेके सामने आ कर भिडे। 16 रायसिंह और साहिव परस्पर भिडे। 17/18 दोनो ओरके सभी रजपूत काम आ गये। एक छोकरा भी वापिस नही आया। 19 झाला राय-सिंह एक खड्डेमे गिर पडा था, उसे योगियोने उठाया। 20 घावो पर पट्टे वाँधे।

तिण वातरी साखरो दूहो[1]—

कण बे हूता काछ, साहिब जसवत सारिखा ।
झालो झमेडै गयो, पाछै रहियो पाछ ॥[2]

## गीत साहिब हमीरोतरो

भड[3] घणा तोय आजूणो[4] भाजै
विढवा ऊठियो वाकम-वीख[5]
साहिब एको लाख सरीखो
साहिब एको कोड सरीख ॥ १
झालै[6] क्यु साहिब झाला ग्रै[7]
मयद[8] ऊठियो निभै-मणो[9]
मुह झालिग्रो न जाग्रै मिळग्रै
त्रिणे घणे ही मगळ तणो[10] ॥ २
हामावत एको हारवसी[11]
दळ-ग्रर[12] दाख[13] दहण खग[14] दाहि
कुजर कोड मिळै जो कारी
सीह झडफतो सकै न साहि[15] ॥३
खग बधव पेखै खळ-खोहण[16]
खत्री ऊठियौ धूणै खाग[17]
गुरड तणो मुह तोय न ग्रहिजै[18]
नव-कुळ जो मिळ ग्रावै नाग ॥ ४

---

1 उस वातकी साक्षीका दोहा । 2 झाला रायसिह, साहिब ग्रौर जसवत, दोनो ग्रोरके वीरोकी सेनाग्रोमे परस्पर ऐसा भयकर युद्ध हुग्रा कि उसमे रायसिहके सिवा कोई शेष नही रहा । साहिब ग्रौर जसवतने रायसिहकी सेनाका ग्रौर रायसिहने साहिब ग्रौर जसवत सहित उनकी समस्त सेनाका खातमा कर दिया । 3 वीर । 4 ग्राज, ग्राजका । 5 वाकी चाल वाला, वाकी तौर वाला । 6 पकडते है । 7 ये । 8 मृगेन्द्र, सिह । 9 निर्भय मन वाला, निडर । 10 का । 11 हारेगा, हरावेगा । 12 शत्रु दल । 13 देख कर । 14 खड्ग । 15 सहन करना, धारण करना । 16 शत्रुग्रोका नाश करने वाला । 17 खड्ग । 18 पकडा जा सके ।

मंगळ[1] त्रिणेग्र[2] न मयंद मैंगळै[3]
पनगे[4] गुरड न सकियो पाल[5]
एको कळह[6] घणै ऊठतो
झालौ साहि(ब)न सकियो झाल ॥ ५

**वात १ जीवै रतनूं धरमदासांणी कही नै पहला सुणी थो तिका तो लिखी हीज हुती । वात जाड़ेचा साहिबरी नै झाला रायसिंघरी फेर लिखी[7]**

जाडेचो साहिब पहला भारै भुजनगररै धणियांरो चाकर थो। सु किणीक वास्तै रीसाणो हुवो, तरै छाडनै अहमदावादरा धणीरो चाकर मूसाखान तिण कनै गयो[8]। उठै मास ७ रहिनै सातलपुर पटै करायनै पाछो वळतो[9] हळवदथी कोस ८ माळियो गाव राय-धणारो तिणरै काठै[10] असवार ५००सू आय उतरियो थो।

सु आ खबर रायसिंघनू पासवाथा वाघेलै रिणमल सगो थो उण खबर मेली[11]–'जु पोहर ४ रातरो साहिब गाव माळियै रहसी[12]।' सु रायसिंघ किणीनू वात जणाई नही[13]। असवार-पाळा[14] हजार ३००० चढनै खडियो[15] सु भाख-फाटती[16] रायसिंघ माळियै आयो।

साहिबनू घडी एक पहला रायसिंघरै परधान भाटी गोविंददास खबर दी थी। सु अै चढ तयार हुइ ऊभा रया था[17]। सु साम्हां आय। तळाव १ माहै दविया ऊभा था। साहिब साथै पवो जाडेचो वडो

---

1 अग्नि। 2 तृण-समूह। 3 हस्ति-समूह, हाथियोंका झुंड। 4 पन्नग-समूह, सर्प-समूह। 5 वर्जन, रोक। 6 युद्ध। 7 जाडेचा साहिब और झाला रायसिंहके युद्धकी वात जो पहिले लिखी गई है वह तो सुनी हुई लिखी गई थी। इनके इस युद्धकी एक और वात धर्मदानके पुत्र रतनू-बारहठ जीवाने (प्रकारान्तरसे) इस प्रकार कही सो वह भी यहा और लिखी जा रही है। 8 वह उससे किसी कारण रुष्ट हो गया, तव वहासे छोड कर के अहमदाबादके स्वामीका चाकर मूसाखान था उसके पास चला गया। 9 लौटता हुआ। 10 रायधनोका मालिया गाव उसके किनारे। 11 रायसिंहका सवधी (समधी) वाघेला रिणमल था, उसने पासवा गावसे यह खवर भेजी। 12 रातके चारो पहर (रात भर) साहिब मालिया गावमे रहेगा। 13 रायसिंहने किसीको भी इस वातकी सूचना नहीं दी। 14 सवार और पैदल। 15 चला, रवाना हुआ। 16 प्रभातके समय। 17 जो ये भी चढ कर तैयार खडे थे।

राजपूत थो। रायसिंघ साथै वीको ईडरियो नै पठाण हबीब वडा रजपूत था, सु वाजिया[1]। वीको पत्रो वाजिया[2]। रायसिंघ नै साहिब वाजिया[3]। बेऊ खेत रया[4]।

राव खंगार घोडा हजार-बार[5] १२०००सू कोस ७ परै आजोर उतरियो थो[6]। नै जाम वीभो हळवदथी कोस १ उतरियो छै। तिण समै आ वेढ हुई[7]। बेऊ काम आया सु राव जाम चढि परा खडिया[8]।

साहिब तो काम आयो[9]। रायसिंघनूं जोगिया उपाडियो माणस ६०सू[10]। वासै टीकै रायसिंघरै चंद्रसेन बैठो। वरस १० हुवा छै। हालासू लाख महमूदी बेटी २ देता रायधण अळगेरा, तिण वैर भागो नही[11]।

तिण समै रायसिंघ जोगी १०० लेनै हळवदरै तळाव आय उतरियो। दिन २ हुवा। राणा चंद्रसेन रायसिंघोतनूं खबर हुई—'कोई वडा जोगेश्वर आया छै।' तरै चंद्रसेन दुपहरीनूं सुखपाळ[12] १ माहै बैस[13] डीकरा[14] २ नाना सुखपाळ माहे बैसाण[15] असवार १० तथा १२, पाळा ५ तथा ७ साथै ले जोगियारै पगे-लागण गयो। पगे लागो। पछै बूवना[16] १० उण माहिला ऊठनै चंद्रसेन कनै आय बैठा। चंद्रसेननूं कहण लागा—'औ आयस[17] कुण छै?' तरै चंद्रसेन कहण लागो—'कोई वडा सिध छै।' तरै उणै कयो—'सिध न छै। थारो

---

1 साहिबके साथमे पत्वा जाडेचा वडा वीर राजपूत था और रायसिंहके साथमे वीका ईडरिया और हबीब पठान दोनो वडे वीर राजपूत थे—ये परस्पर लडे। 2 वीका और पत्वा लडे। 3 रायसिंह और साहिब परस्पर लडे। 4 दोनो वीर-गतिको प्राप्त हुए। (यहाँ रायसिंह और साहिब दोनोका खेत रह जाना बताया गया है, किंतु आगेके विवरणमे पता चलता है कि रायसिंह मरा नही, घायल हो गया था और उसे आहत अवस्थामे जोगी उठा कर ले गये।) 5 बारह हजार। 6 आकर ठहरा था। 7 उस समय इनके परस्पर यह लडाई हुई। 8 दोनो काम आ गये तब राव जाम चढ कर चला गया। 9 साहिब तो मर गया। 10 रायसिंहको उसके ६० आदमियोके साथ जोगी उठा कर ले गये। 11 एक लाख महमूदी और दो कन्याएँ देते हुए भी हालोमे रायधण राजी नही, इसलिये शत्रुता मिटी नही। महमूदी = एक सिक्का। 12 पालकी। 13 बैठकर। 14 लडके। 15 बैठा कर। 16 साधु, जोगी। 17 योगी, सन्यासी।

बाप छै।' बूबने चद्रसेननू झालियो[1]। नै साथै हुता तिणा पाचा-सातानू कूट मारिया[2]। बीजा नास गया[3]। बूबना चद्रसेननू बाधनै सुखपाळ माहि नांखनै[4] घोडै चद्रसेनरै रायसिघनू चाढियो। बीजा[5] जोगी घोडै चढ हळवदरा कोट माहै अजाणजकरा[6] आय, रजपूत ७ वळै मरण वाळा हुता सु मारिया[7]। बीजा नास गया। रायसिघरी जोगियां आण फेरी[8]। चद्रसेननू छोडनै माणस साथै देनै गाव माल-णियाळ दे सीख दी[9]। आप साथै जोगी ५७ ऊपडिया हुता, तिणारो जोग उतराय आप-आपरा गाव दे घरे मेलिया[10]। झाला आय सोह मिळिया[11]। रायसिघ आपरी राई-वाई की[12]। वेटा भगवानदास नारणदास कनै राखिया।

रायसिघनै आयो ससार सुणियो। वरस १ हुवो। साहिबरै भारै असवार १५००० हजार, १५००० पाळासू अजार कोसा २० उतरियो इण माथै[13]। उठाथी दूजो भीव पचाइणरो साहिबरा पोतरा साथे फोज दै रायसिघ ऊपर भारै असवार हजार १००००, पाळा हजार १०००० विदा किया[14]। हळोद उतरियो। रायसिघ साम्हा असवार २०००, पाळा २०००सू आय उतरियो। वेढ हुई[15]। रायसिघ माणस ३५०सू काम आयो[16]। आदमी १४० जाडैचारा काम आया। भारै चद्रसेननू पगे लगायो। हळवद बैसाणियो[17]।

—०—

1 पकडा। 2 और जो साथमे थे उन पाच-सात आदमियोको पीट कर मार दिया। 3 दूसरे भाग गये। 4 डाल कर के। 5 दूसरे। 6 अचानक, एकदम। 7 सात राजपूत लड कर के मरने वाले थे उनको और मारा। 8 जोगियोने रायसिहकी आन-दुहाई फिरा दी। 9 चद्रसेनको छोड दिया और उसको मालणियाल गाव पट्टेमे देकर और कुछ आदमी साथ दे कर रवाना किया। 10 इन लोगोका जोगी-भेष उतरवा कर और अपने-अपने गांव वापिस देकर इनको अपने घर भेजा। 11 सब झाले आकर मिले। 12 रायसिहने अपनी शासन-व्यवस्था जमा ली। 13 साहिबका लडका भारा १५००० सवार और १५००० पैदल सेना लेकर इसके (रायसिहके) ऊपर अजारमे २० कोस दूर आकर ठहरा। 14 वहासे (अजारसे) पचायनके बेटे भीम दूसरेको साहिबके पोतोके साथ दस हजार पैदल सेना देकर भाराने रायसिहके ऊपर रवाना किया। 15 लडाई हुई। 16 रायसिह ३५० मनुष्योके साथ काम आया। 17 भाराने चद्रसेनको अपने पांवो लगाया और हलवदकी गद्दी पर बिठा दिया।

## झालांरी वंसावली लिख्यते

झालो सुरताण प्रथीराजरो। प्रथीराज, चद्रसेन, रायसिघ मानसिघरा, तिको वाकानेर वसियो[1]। ईडर राव कल्याणमलरी भतीजी, केसोदास नारायणदासोतरी वेटी परणियो थो[2]। सु ईडर छडवडै साथ जातो हुतो[3]। पछै राणा आसकरणनू खवर हुई। गाव माथकै हळोदथा कोस ७ उतरियो हुतो सु तठे आदमिया १२सू मारियो[4]।

१ मानसिघ हळोद धणी।

२ रायसिंघ हळोद धणी। वडो रजपूत, जिण जसो साहिव मारिया।[5]

३ राणो चद्रसेन रायसिंघरो। डणनू मोटै राजारी वेटी सतभामावाई परणाई हुती। घणा दिन जीवियो। पछै वेटै आसकरन अमर कैदमे कियो[6]।

३ नारणदास।

३ भगवानदास।

राणा चद्रसेन रायसिघोतरो परवार आक ३

४ प्रथीराजनू पातसाह जाहगीर पकड ग्वालेर चाढियो[7]।

५ सुरताण प्रथीराजरो।

४ भोजराज। ४ राणो।

५ प्रतापसी।

५ राणो आसकरण वापनू झाल आप टीकै वैठो[8]। सतभामारो

---

1 पृथ्वीराज, चन्द्रसेन और रायसिंह तीनो मानसिंहके पुत्र, वह (मानसिंह) वाकानेरमें जा वसा। 2 मानसिहका ईडरके राव कल्याणमल्लकी भतीजी, उसके भाई केशवदास नारायणदासोतकी वेटीके साथ विवाह हुआ था। 3 वह छुटपुटे साथको लेकर ईडर जा रहा था। 4 हलवदसे सात कोस दूर माथके गावमे ठहरा हुआ था, वहा पर १२ आदमियोके साथ आसकर्णने मानसिंहको मार दिया। 5 रायसिंह हलवदका स्वामी। यह वडा वीर राजपूत हुआ। इसने जसा और साहिवको मारा। 6 पीछे उसके (चन्द्रसेनके) वेटे आसकर्ण और अमरने चन्द्रसेनको कैद कर दिया। 7 वादशाह जहागीरने पृथ्वीराजको पकड कर ग्वालियरके किले पर चढा दिया। 8 राणा आसकर्ण अपने वापको पकड (कैदमे डाल) कर स्वय गद्दी पर वैठ गया।

वेटो[1] । भाई अमरानू धरती माहै हैसो[2] दियो हुतो । पछै चूक करनै अमरानू ही झलायो[3] । आसकरणरी वैहन वीच हुय छुडायो । पछै अमरै एकलै मोहल माहै जाय आसकरणनू मारियो[4] । उणरै वेटो कोई नही । टीकै अमरो वैठो ।

५ रांणो अमरो । भाई आसकरणनू मार टीको लियो । पछै वरसे २ वाकळिग्रै अमरानू कटारी ३सू मारियो[5] ।

६ राणो मेघराज ।

७ गजसिघ श्रीजीरै वास । गुजरात रुपिया २००००)रो पटो ।

---

1 यह मोटे राजा उदयसिहकी पुत्री सत्यभामाकी कोखसे उत्पन्न राणा चन्द्रसेनका पुत्र । 2 हिस्सा । 3 पीछे दगा करके अमराको भी पकडवा लिया । 4 पीछे अमरा इकल्लेने महलमे जा कर आसकर्णको मार दिया । 5 पीछे दो वर्षोके वाद वाकलियेने तीन वार कटारीका वार कर के अमराको मार दिया ।

## वात झालांरी

गुजरातरै देस झालावाडरा गाव १८०० कहीजै । मुदै तो गाव हळवद ही मे छै[1] । नै अै पाटरिया कहीजै । सु पाटरी हळोदथी कोस ८ छै । आगै तो इणारो उतन पाटरी हुतो[2] । झालो महमद सोळकी मूळराज पाटणरा धणीरो चाकर थो । सु राठोड सीहै नै मूळराज जाडेचै लाखैनै मारियो, तद कहै छै[3], लाखो जाडेचो हाथीरै होदै वेढ माहै वैठो थो[4] । सु लाखानू झालै महमद वरछी लगाई । तिण रीझरी मूळराज महमदनू झालावाड गाव १८००सू दीवी[5] । तद इतरा परगना लागता । झालावाड कहावै[6]—

गाव ७४७ वीरमगाव । निपट वडी ठोड[7] । रुपिया ३०००००) आज उपजै छै । दाम १००००००० ), गाव ७४७[8] ।

२५२ गाव वीरमगाव वासै । २१६ वीरमगाव, दाम ६९८५७३५ । ३६ मूळ (मूळी)रा दाम ३८५९६८[9] ।

१६२ भोमिया नीचै जोर-तलव[10] ।

११२ हळवद ।

---

1 खास गाव तो हळवदके तात्लुकेमे ही हैं । 2 पहले तो इनका निवास पाटडीमे था । 3, 4 तब ऐसा कहा जाता है कि जब युद्ध हो रहा था तब लाखा जाडेचा हाथीके हौदेमे वैठा हुआ था । 5 उस साहसिक कार्यसे प्रसन्न होकर मूलराज सोलकीने झाला महमदको १८०० गाँवोका झालावाड प्रान्त इनायत कर दिया । 6 झालावाड कहे जाने वाले प्रान्तमे तब इतने परगने लगते थे । 7 वीरमगाँव जिलेके ७४७ गाव हैं, यह वहुत उपजाऊ और वडा प्रदेश है । 8 आज (ख्यात-लेखकके समयमे) इसकी उपज तीन लाख रुपये है और उन ७४७ गावोका कर एक करोड दाम है । दाम = दामका मूल्य देशकालानुसार न्यूनाधिक रहा है । राजस्थान और गुजरातमे एक पैसेमे २५ दाम तदनुसार एक रुपयेमे १६०० दामोके हिसावसे फलावट करनेका प्रचलन अधिकतर रहा है । इस हिसावसे (वीरम-गाँव जिलेके ७४७ गावोका राजस्व) एक करोड दामोके ६२५०) रुपये होते हैं । वीरमगाव जिलकी उपज (उत्पादन) तीन लाख रुपये और उसके साथ एक करोड दामो (६२५० रुपयो)का उल्लेख उपज पर उत्पादन-शुल्क या राजस्व ही होना सभव है । 9 (वीरमगाव जिलेमे) वीरमगाव परगनेके पीछे २५२ गाव, जिनमे उप-प्रान्त तरीके २१६ गाव वीरम-गावके, जिनका राजस्व दाम ६९८५७३५ (रु० ४३६६।≡। १०) और शेष ३६ गाव मूळी उप-प्रान्तके जिनका राजस्व ३८५९६८ दाम (रु० २४१≡॥ १८) हैं । 10 १६२ गाव भोमियोके अधिकारमे हैं, जिनकी तलवी सख्तीसे वसूल होती है ।

४६ गांव जुदा परगना वासै गया[1] ।

६ पाटण ।

३७ मुजपुर ।

६२ सूना वरस ४० तथा ५० हुवा[2] ।

पाटरी हळोदथा कोस ८ । तठै घर २०० तथा २५० कोळी, वोहरा, वाणिया, ग्रासिया वसै छै । लूणरो आगर उठै छै । रुपिया ७०००) उपजे छै । वीरमगांवनू लागै[3] ।

झाला मकवाणा भिळै[4] ।

१ मांनसिंघ । २ रायसिंघ ।

३ चद्रसेन । ४ आसकरण ।

४ अमरा । ५ मेघराज ।

गाव १५२ वीरमगांव तालकै[5] ।

४० गाव कोळी कान्हा हेठै । अमल न दे । दांम ३६०७६२२[6] ।

८७ तालकै भोमिया । जोर पोहता हासल दे[7] ।

३६ मूळी, रायसल पंवार[8] ।

८६ हासलीक । चूडो-राणपुर, वढवाणनू लागै[9] । वाचणथा[10] कोस ३०, वीरमगावथा कोस ३० । तठै आजमखा सखरो[11] कोट करायो ।

२२३ वढवांण लारै जुदा किया । दाम ५५४३४८[12] ।

२७ चूडा-राणपुर ।

---

1 गाव ऐसे है जिनका एक अलग परगना बना । 2 ६२ गाव ४०-५० वर्षोंसे उजडे हुए हैं । 3 (पाटडी गाव) वीरमगाव परगनेको लगता है । 4 झाला राजपूत मकवानोंमे शामिल होते है । 5 इनके १५२ गाव वीरमगाव तालुकेमे है । 6 ४० गाव कोली कान्हाके अधिकारमे हैं, जिनका राजस्व ३६०७६२२ दाम (रु० २२५४।।।≡ २२) हैं, किन्तु अमलदारी नहीं होने देते । 7 ८७ गाव भोमियोंके तालुकेमे हैं । सख्ती पहुचने पर राजस्व देते हैं । 8 ३६ गाव मूली परगनेके, जिनका भोमिया-जागीरदार रायसल (रायसिंह) पवार है । 9 चूडा-राणपुर और वढवानके अतर्गत है । 10 वाचणसे । 11 अच्छा । 12 २२३ गाव वढवानके अन्तर्गत और किये, जिनका राजस्व ५५४३४८ दाम अर्थात् रु० ३४६।≡। २३ है ।

४५ भोमिया हेठै[1] ।

४० वेरान[2] ।

११० हासलीक[3] ।

३ मूळीरो परगनो । वीरमगाव वासै गाव ३६ लागै । गाव ४ पातसाही दाखल[4] । बीजा गाव काठिया दबाया[5] । पवार रायसिंघ भूमियो छै । धधूको, धवळको, मोरवी, काठीवाड, वाचारावाळी, भुभूवाडो[6] ।

चूडा-राणपुररी वस्ती–

७० वाणिया, १५० भरवाड, पटेल, १०० सिपाई ।

कोट हेठै नदी देराणी-जेठाणी सदा वहे छै[7] । कोटरो किलादार पातसाही तरफसू मिलकवेग सदा रहे छै। मु गाव २ पावै छै। सहरसे चूगी पावै छै। वीरमगाव जिणरी जागीर माहीं हुवै सो असवार ५०० चूडै-राणपुर काठियारै मुहडै राखै[8] ।

हळवद सहर झालारो उतन । अहमदावादथी कोस ४० । नवानगर हालारासू काकड[9] नवोनगर कोस ३० छै । हळवद पाधर माहै छै[10] । तळाव ऊपर कोट छै । चोडो घणू । माहै माणस हजार २००० रहै तिसडी[11] ठोड छै । कोट माहे कूवो १ मीठो पाणी । हळवदरी पाखती[12] झाडी थोडी, मैदान छै । खेती ज्वार, वाजरो, तिल, कपास हुवै । ऊनाळी-पीयल कसवै काई नही[13] । सैवज घणो हुवै[14] । पाखतीरा गावा कूवा छै ।

---

1 ४५ गाव भोमियोके अधिकारमे है। 2 ४० गाव वीरान हैं। 3 ११० गाव हासिल-वसूलीके है । हासलीक = वे गाव जहाके कृषक सिचाई द्वारा कृषि करते हैं और उस कृषिका हासिल (कृषि-कर) भरते है। 4 ४ गाव वादशाहके अधिकारमे हैं। 5 दूसरे गावो पर काठी-राजपूतोने अधिकार कर लिया। 6 छहो गावोके नाम है। 7 कोटके नीचे देरानी-जेठानी नामकी नदी निरतर बहती है। 8 वीरमगाव जिसकी जागीरीमे होता है उसे चूडा-राणपुरके काठी-राजपूतोके प्रतिरोधके लिये ५०० सवार रखने होते हैं। 9 हाला-राजपूतोके नवानगरसे सीमा लगती है। 10 हलवद शहर मैदानमे है। 11 जैसी, जितनी। 12 आजू-वाजू, आसपास। 13 कसवेके आजू-वाजू सिचाई द्वारा होने वाली खेती (रवीकी) फसल कोई नही होती। 14 विना सिचाईकी खेती-फसल बहुत होती है। सैवज = आश्विनमे अधिक वर्षा होनेसे जमीनके अदरकी नमीसे हो जाने वाली गेहू, चनो आदिकी (विना सिचाईसे होने वाली) फसल।

सहररी वस्ती समत १७१६—

१००० बामण, ७०० वाणिया, ४०० महेसरी, ३०० ओसवाळ,* ३०० रजपूत, १०० मोची, १० घांची[1], ५० छीपा, २० सोनार।

हळवदसू इतरा सहर इतरै कोसै छै–[2]

८० अहमदावाद, २० वीरमगाव, ३० नवोनगर, २० वाकानेर, १५ वढवाण ३० दसाडो, १५ मोरबी।

हळवदनू बीजी ठोड वाकानेर छै, सु हळोदनू लागै छै[3]। तिको वाकानेर हळवदसू कोस २०, काठीवाड नजीक छै। तिणनू गाव १२० लागा छै। तिणमे गाव २३ हमार वस छै[4]।

देवतकही सू झाला छींडे छूटका तो मारवाड माह छै[5]। नै जेसळमेररै देस खाडाळ दिसी गाव ४ तथा ५ देवतरा छै[6]।

डावर, जेसळमेरसू कोस २० खाडाळ मे गरसवास, लाठीहर सीताहर कनै[7]। सेवे मारवलेरै गाव कनै, कोस ५१।

मागणी-रो-तळो[8], डावरथा कोस ०१।

जूजळ-रो-बेरो[9] डावरथा कोस १।

लाठीहर, डावरथा कोस २ खाडाळमे।

---

*माहेश्वरियोके ४०० ओसवालोके ३०० व्यक्तियो या घरोका योग ७०० वाणिया (बनिये) प्रतीत है।

1 हिन्दू तेली। 2 हलवदसे इतने शहर इतने कोसो पर हैं। 3 हलवदसे दूसरे स्थान पर वाकानेर है, जो हलवद परगनेके अतर्गत है। 4 जिनमे इस समय २३ गाव आबाद है। 5 देवतकहीके झाला छूटे-बिखरे तो मारवाडमे हैं। 6 और जैसलमेर देशके खाडाल प्रान्तकी ओर देवतकहीके देवतोके चार-पाच गाव हैं। 7 पास। 8 मागणीका कुआं। 9 जूजनका कुआं।

## मेवाडरै झालारी वात

मेवाडरै दरबार झाला वडा रजपूत हुवा । राणारै अै सिरै चोकी उमराव छै[1] । इणा ऊपर कोई बेसण न पावै[2] । सु राणा सागारी वार माहै आया अजो सजो[3] । इणानू भाया-ग्रासिया हळवदथी काढिया, तरै मेवाडमे आया[4] ।

१ राणो राजो ।

२ अजो राजारो । मेवाड हळवदथी आयो । राणै सागै नै बाबर पातसाह सीकरी-पीळियेखाळ वेढ हुई तरै राणो सागो भागो, तठै अजो काम आयो[5] ।

३ सिघ अजारो । वहादर पातसाह माडवरै हाडी करमेतीरै फेरै चीतोड लियो, तद काम आयो[6] ।

२ सजो राजारो । परगनो हाडोतीरै मेऊरो परगनो अेक ठोड छोटी सी झालावाड अठै ही कहीजै[7] । गाव ४० तथा ५० वे कहीजै तठै झाला वसै छै । रजपूत वस्ता भोमिया तिणानू नवसेरीखान तोड नाखिया[8] । सु उण झालावाडरा मुदै गाव अै[9]—

१ उरमाळकोट । १ सूडल । १ रायपुर ।

सिघ अजारो आक ३

४ सुरताण । ४ मालो । ४ पूरो । ४ कान्ह ।
४ लूणो । ४ किसनो ।

---

1 ये (झाले) राणाके दरबारमे सबसे ऊचे आसनके (मिसलके) उमराव हैं। 2 इनके ऊपर कोई बैठने नही पाता। 3 राणा सागाके शासन-कालमे अजो और सजो आये। 4 इनको इनके ग्रासिया-भाईयोने हलवदसे निकाल दिया तब ये मेवाडमे आये। 5 राणा सागा और बादशाह बाबरके परस्पर सीकरी-पीलियाखालमे लडाई हुई जिसमे राणा सागा तो भाग गया और अजा उसमे काम आ गया। 6 हाडी करमेतीके लिये माडवके बादशाह वहादुरने चित्तौड पर अधिकार कर लिया, उस समय अजाका लडका सिंघ काम आया। 7 हाडोतीका यह एक मऊ परगना भी यहाँ पर छोटी झालावाड कहा जाता है। 8 भोमिया राजपूत यहा रहते जिनको नवसेरीखाने मार भगाया। 9 उस झालावाडके खास गाँव ये हैं।

मुरताणसिघरो आक ४

५ वीदो ।

६ देदो ।

७ हरदास वडो रजपूत । राणारै सिरै चोकी उमराव । झाडोळ पटै[1] । एक वार पातसाहरै वास वसियो थो[2] । पातसाह मनसोर पटै दी । पछै राणै फेर मनायो । पछै सीसोदियै माधोसिघ, स्याम नगावत मारियो[3] ।

८ रायसिघ हरदासरो । वडो रजपूत हुवो राणारै । हरदासरो पटो पायो । एक वार पातसाहजीरै वरस १० वसियो थो । पातसाह कूडोरो पटै दियो । पछै राणै मनायो । मोत मुवो[4] ।

९ मुरताण मेवाड वास ।

९ भावसिघ जोधपुर वसियो । रेख ३५००० गूदवच पटै[5] ।

९ वीरमदे हरदासरो ।

९ वरसो हरदासरो । पातसाही चाकर । जाजपुर पटै[6] ।

९ अखैराज ।

९ मडळीक । झालो वीदो, देदो ।

७ स्याम देदारो ।

८ चद्रसेन । ८ महासिघ ।

७ रामसिघ ।

८ रिणछोड । ८ नाहरखा ।

७ रतनसी ।

वाघ वीदारो आक ६

हाथी सुरताणरो आक ५

६ माधोदास । ६ महेसदास । ६ रायमल ।

---

1 झाडोल गाव पट्टेमे । 2 एक बार बादशाहके यहा नौकर रहा था । 3 मार दिया । 4 अपनी मौतमे मरा ( किसी युद्धमे काम नही आया ) । 5 भावसिह जोधपुरमे बस गया, वहा उमे ३५०००)की रेखका गूदोच पट्टेमे मिला । 6 हरदासका पुत्र वरसा बादशाही चाकर और जहाजपुर पट्टेमे ।

सिघ ग्राक ३ ।

४ मालो । ५ सावळदास । जोधपुर वास । गाव १५सू गोमळियावास पटै ।[1]

६ नरहरदास ।

७ दयाळदास रावत ।

८ प्रतापसी रावत ।

६ वळभद्र ।

७ सुजाणसिघ ।

४ पूरो सिंघरो ।

५ सत्रसाल ।

६ केसोदास ।

४ कान्ह सिघरो ।

५ सकतो ।

४ स्यामदास ।

६ नारण ।

७ वाघ ।

४ किसनो सिघरो ।

५ मेघ ।

६ करमसी । ६ नगो ।

सजो राजारो ग्राक २

राणो सांगो सीकरी भागो तद नीसरियो[2] ।

३ जैतो जोधपुर चाकर हुतो । खैरवो पटै । सरूपदे राणीरो वाप[3] ।

४ मानो ।

५ कल्याणदास ।

६ राघवदे ।

७ प्रथीराज ।

६ केसरीसिंघ ।

५ ग्रासो मानारो । प्रथीराज जैतावतरो दोहीतरो[4] ।

६ राजसिघ । ६ प्रथीराज

५ सत्रसाल, नानारो टीकाइत[5] ।

६ कान्ह ।

७ जसवत ।

६ नाथो ।

७ सवळो ।

४ जेसो जैतारो ।

५ भोपत राणा ग्रमरारै काम ग्रायो[6] ।

---

1 सावलदासका निवास जोधपुर । १५ गावोके साथ गेमलियावास पट्टेमे । 2 राजाका वेटा सज्जा सीकरीकी लडाईमे जव राणा सागा भाग गया था तव यह भी निकल गया था । 3 जैता जोधपुरमे चाकर था । खैरवा गाव पट्टेमे । यह राणी स्वरूपदेवीका वाप था । 4 मानाका वेटा ग्रासा, यह प्रथीराज जैतावतका दोहिता है । 5 शत्रुसाल ग्रपने नानाकी गद्दीका ग्रधिकारी हुग्रा । 6 भूपति राणा ग्रमराके लिये काम ग्राया ।

## मेवाड़रा झालांरी पीढी आढै महेसदास लिख मेली संमत १७२२रा असाढ सुद ७[1]

१ रांणो सेखो दोलारो।
२ रांणो गीगन ।
३ राणो ब्रह्मदेव ।
४ रांणो जालप ।
५ राणो मरीच ।
६ राणो वीसम ।
७ राणो गोग ।
८ राणो मक ।
९ राणो हरपाल ।
१० राणो केहर ।
११ राणो हरी ।
१२ राणो सातल ।
१३ राणो क्कान्ह ।
१४ राणो सूर ।
१५ रांणो विजैंपाल ।
१६ राणो मुध ।
१७ राणो पदम ।
१८ राणो उधीर ।
१९ राणो वेगड ।
२० राणो राम ।
२१ राणो वरसिंघ ।
२२ राणो भीम ।
२३ राणो सत्तो ।
२४ राणो रणवीर ।
२५ राणो वाघ ।
२६ राणो राजो ।

।। इति मेवाडरा झालांरी ख्यात वारता सपूर्णम ।।
दसकत चौढू पनैरा। वाचै जिणसू जै श्रीरुघनाथजीरी वाचजो ।

—✦—

1 आढा महेशदासने वि० सवत् १७२२के आसाढ शुक्ल ७को मेवाडके झालोकी वशावली इस प्रकार लिख कर भेजी ।

श्रीगणेशायनम

# अथ रावजी श्री सीहैजीरी वात लिख्यते

राजा सिघसेन[1] कनवज[2] सू जात्रा करण द्वारकाजीनै पधारिया। आप गोत्र-कदव[3] बहुत कियो हुतो, तै[4] मन विरक्त हुवो। राज वेटानू सूप अर आप कापडीरै रूप हुवा[5]। साथै आदमी १०१ हुवा आप जात्रा चालिया। रजपूत ठाकुर साथै हुवा। पगै प्यादो हालियो सरव साथ[6]। कोस-कोस ऊपर सौ-सौ गाय दान देवै छै। जठै डेरो हुवै तठै वावडी[7] अथवा कूवो करावै। ईयै जिनस[8] आप तीरथ पधारिया।

आगै सोळकी[9] गुजरात माहै राज करै। चावडा[10] पण गुजरात माहै राज करै। पाट-तखत वैसणो पाटण[11]। मारू लाखो जाम सिंध राज करै[12]। सु चावडा नै लाखै वैर। एक धरतीरो वेध[13]। आपसमे सीम[14] ऊपर युद्ध हुतो रहै। वीजो[15] राखाइतरो[16] वाप लाखै

---

1 राव सीहाका अपर नाम। 2 उत्तर-प्रदेशके फर्रुखावाद जिलेका कन्नौज नगर। 3 गौत्र हत्या, वश-सहार। 4 जिममे। 5 पुत्रको राज्य सौप कर, खुदने साधुका रूप धारण कर लिया। 6 मभी साथ पैदल चला। 7 वावली, वापिका। 8 इस प्रकार। 9 सोलकी = एक क्षत्रीवश, जिमका राज्य काठियावाड (सौराष्ट्र), गुजरात और राजस्थानमे था। 10 'चावडा' या 'चावोडा' = एक क्षत्रीवश, जिसका राज्य दक्षिण, गुजरात, सौराष्ट्र और राजस्थानमे था। शिलालेख और सस्कृत ग्रन्थोंमे 'चालुक्य', 'चापोत्कट' और 'चावोटक' नाम भी लिखे मिलते हैं। साभरमे (राजस्थानमे) 'मूलराज चालुक्य'का एक शिला-लेख प्राप्त हुआ है, जो सम्वत् ९९८का है। इस शिलालेखसे (जिसमे 'वसुनद निधौ' = ९९८, सम्वत् उल्लिखित है) वाम्बे-गेजेटियरमे उल्लिखित मूलराजका समय सन् ९६१ = (वि० सम्वत् १०१७) ठीक नही प्रतीत होता। 11 पट्ट-सिहासन (राजधानी) अणहिलपुर-पाटणमे। 'अणहिलपुर-पट्टन' उत्तर-गुजरातका सरस्वती नदीके किनारे पर वसा हुआ इतिहास-प्रसिद्ध प्राचीन नगर है। इसे वनराज चावडाने ९वी शतीमे वसाया था। आजकल केवल 'पाटण' नामसे ही यह नगर प्रसिद्ध है। पश्चिम-रेलवेके महसाना-जकशनसे रेलकी एक शाखा पाटनको जाती है। 12 मारू लाखा-जाम सिधमे राज्य करता है। (सिंधके कुछ भागके अतिरिक्त लाखाका कच्छमे भी राज्य था। सिंध और कच्छके मरु-प्रदेशो पर अधिकार होनेसे लाखाको मारू लाखा कहा गया है।) 13 (१) शत्रुता, (२) टटा, झगडा। 14 सीमा। 15 नाम है। 16 राखायत लाखाका भानजा था।

मारियो । लाखैरो वैहनेई अर लाखैरै वास हुतो[1] । सु वै[2] लाखैरो आव वाढियो, तैं ऊपर लाखै मारियो[3] । सु वेध पड़ियो[4] । सु आपसमे चावडा अर लाखै युद्ध हुवै । सु चावडा हारै अर लाखो जीपै । सदा जुध हुवै सु लाखो जीपै[5] ।

तिकै समईयै रावजी श्रीसीहोजी द्वारकाजी पधारता पाटण पधारिया[6] । सु लाखैरै इष्ट कुळदेवीरो अर चावडारै इष्ट खेत्रपाळरो[7] छै । सु देवी सवळ अर खेत्रपाळ निवळ[8] । तिण वास्तै लाखो जीपै[9] ।

तिण वार चावडै राजा मूळनू सुपनैमे खेत्रपाळ कह्यो[10]—जु राव सीहो कनवजरो धणी[11] राठवड[12] आयो छै । तिणनू श्रीमहादेवजीरो वर छै, सु थे मिळो, ज्यु थाहरो वैर घिरै[13] । इणारै हाथा[14] लाखो मरसी । ताहरा[15] चावडा एकठा हुय राव सीहैजी कनै आया । आय अर भक्तरी[16] वीनती कीधी । वीनती रावजी मानी । चावडा भली भात भगतरी[17] तयारी कीवी । आप पधारिया । ताहरा मूळराजरी मा कडूवैरै[18] वेटारी वहुवा जिकै वरस १५, १६, १७री वाळराडा[19] हुती, तियैनू[20] कह्यो—'जाहरा[21] रावजी अठै आरोगै[22], ताहरा थे परुसारै माहै[23] तरकारया[24] ले-ले अर मो[25] आगै आण-आण मूकज्यो[26] । ताहरा रावजी वात पूछसी, ताहरा हू सरव वात कहीस ।"

---

1 राखाइतका वाप लाखाका वहनोई था और लाखाके यहा ही रहता था । 2 उसने । 3 जिस पर लाखेने उसे मार दिया । 4 जिससे परस्पर शत्रुता हो गई । (कई प्रतियोमे 'सु वेध पड़ियो'के स्थान 'सु वेसुव पडियो' पाठ भी लिखा मिलता है ।) 5 सदा युद्ध होते रहते हैं, जिनमे लाखा ही जीतता है । 6 उस समय रावजी श्रीसीहाजी द्वारकाजी जाते हुए पाटनमे आये । 7 क्षेत्ररक्षक देवता, क्षेत्रपाल । 8 तुलनामे देवी सवल और क्षेत्रपाल निर्बल । 9 इसलिये लाखा जीतता है । 10 उस समय स्वप्नमे क्षेत्रपालने मूलराज चावडेको कहा । (मूलराज सोलकी सम्वत् ९९८मे अपने मामा सावतसिंह चावडाको मार कर पाटनका राजा वना था ।) 11 कन्नौजका स्वामी । 12 राठौड । 13 वैरका वदला लिया जाय । 14 इनके हाथोमे । 15 तव । 16 भोजनके लिये प्रार्थना की । 17 भोजनकी सामग्री । 18 कुटुम्बके । 19 वाल-विधवाएँ । 20 उनको । 21 जव । 22 भोजन करे । 23 परोसनेकी सामग्रीमे । 24 शाक आदि व्यजन पदार्थ । 25/26 मेरे आगे ला-ला कर रखना ।

पछै रावजी पधारिया, ताहरा मूळराजरी मा कहाडियो– 'रावजीनू हू पुरसीस[1] । म्हारै हाथै[2] जीमाडीस । बीजा ठाकर भूजाई आरोगै[3] ।' ताहरा राव सीहोजी माहै पधारिया । विछायत हुई । आप आरोगण बैठा[4] । पुरसण विरिया विधवा अस्त्रिया बाळ-वय आण-आण सरब वसता मूकण लागी[5] । ताहरा रावजी पूछियो मूळराजरी मानू ओ कहि विरतत[6] ? इतरी वहु विधवा, सु कासू[7] ?' ताहरा मूळराजरी मा कह्यो–'महाराज ! लाखै फूलाणीसू म्हारै वैर छै[8] । सु इयारा[9] घरधणी[10] लाखै मारिया । जाहरा म्हा अर लोखै वेढ[11] हुवै, ताहरा माहरो साथ मिटै[12], अर लाखैरो साथ[13] जीपै । वरस एकमे दोय वार वेढ हुवै[14] । सु रावजी पधारिया छो, आप म्हारी मदत करो ।' ताहरा रावजी कह्यो–'हू जात्रा जाऊ छू, आवता आवस्या[15], ताहरा थे कहिस्यो[16] ज्यु करस्या । हमारू तो मै तरवार छाडी[17] छै । द्वारकाजी परस[18] आवता लाखैनै मारू तो सेत-रामरो जायो[19] ।' ताहरा रावजी कह्यो–'साथ एकठो करज्यो, अर लाखैनू कहाडज्यो[20], जु म्हे आवा छा[21], तयार हुय रहिज्यो ।' पछै चावडासू विदा हु करनै[22] राव सीहोजी द्वारकाजीनू चालिया छै[23], जाय द्वारकाजी नै[24] रिणछोडजीरा दरसण किया, गोमती सनान[25] कियो, घणो धर्म कियो, मास १ द्वारकाजीमे राव श्री सीहोजी रह्या ।

---

1 रावजीको मैं परोसूगी । 2 मेरे हाथसे भोजन कराऊगी । 3 दूसरे ठाकुर भोजन तैयार हुआ है वह भोजन करें । 4 स्वय भोजन करनेको बैठे । 5 परोसनेके समय बाल अवस्था वाली विधवा स्त्रिया ला-ला कर भोजनकी सर्व वस्तुएँ रखने लगी । 6 यह क्या वृत्तान्त है ? 7 इतनी वहुएँ विधवाएँ ! यह क्या बात है ? 8 फूलके पुत्र लाखासे हमारे वैर है । (मारवाडके पश्चिम प्रदेशकी भाषामे अपत्य अर्थमे 'आणी' प्रत्यय लगाया जाता है । जैसे फूलका पुत्र 'फूलाणी' । चत्ताका पुत्र और वशज 'चत्ताणी' । 9 इनके । 10 पतियोको । 11 लडाई । 12 तब हमारा जन-समुदाय नष्ट हो जाता है । 13 लाखाका दल विजय पाता है । 14 एक वर्षमे दो बार लडाई होती है । 15 लौटते हुए आवेंगे । 16 कहोगे । 17 अभी तो मैंने तलवार रखना छोड दी है । 18 द्वारकानाथके चरण स्पर्श कर के । 19 पुत्र । 20 कहला देना । 21 हम आते हैं । 22/23 चावडोसे विदा हो कर राव सीहोजीने द्वारकाजीको गमन किया । 24 और । 25 स्नान ।

घणो धर्म करनै, अपूठा पधारिया[1]। कितरैहेकै[2] दिने था[3] पाटण पधारिया। ताहरा सोळकिया, चावडा साम्हा जायनै रावजी सीहैजीनू नारेळ दियो[4]। घणै हरख[5] रावजीनू पाटण ल्याया।

अठै साथ भेळो करनै[6] लाखैनू आदमी मेलायो। ताहरा लाखै साथ भेळो कियो हुतो, सु आदमी आवत समा[7] लाखै चढणरी तयारी कीवी। लाखै कहियो–'आगै चावडा सदाई भाजता[8], अवकै ईयै भात[9] चालिया आवै छै सु कासू जाणी जावै[10]।' ताहरा आदमी मेल समझ कराई[11]। ताहरा खबरदार आइ खबर दी[12]–'राव सीहो कनवजियो[13] कटक माहै छै।' ताहरा लाखो पण सकियो[14]। हळवै-हळवै[15] हालण लागो[16]।

मु आगै एक दिन राखायत लाखारो भाणेज रजपूतां माहै बैठो हुतो, सु रजपूतै भाणेजनू पूछियो[17]–'भाणेज! लाखोजी प्रभातरी विरिया[18] दरबार पधारै ताहरा मुहडो[19] उतरियो लागै सो कासू छै[20]? आज परमेश्वररी कृपासू रावळै[21] धरती बरकरार छै[22]। देस पण वणो लायो छै। अर जुद्ध माहै जीप[23] पण लाखैजी री हुवै, तो वेदल[24] क्यु रहै छै?' ताहरा भाणेज कह्यो–'मोनू खबर काई[25] नहीं।' ताहरा रजपूत कहै–'भाणेज! लाखैजीनू तू पूछ अर खबर कर।' ताहरा राखायत रजपूतानू कहै[26]–' हू पूछ अर मामोजी

---

1 पीछे लौटे। 2 कितने एक। 3 दिनो मे। 4 नारियल दिया। (१ राजपूतोमे नारियल देना विवाह संबध पक्का करनेका संकेत है। यह नारियल कन्याके पिताकी ओरसे वरके पिताके पास भेजा जाता है। जब वरका पिता उस नारियलको ले लेता है तब विवाह सम्बन्ध दृढ समझा जाता है। २ तीर्थ-यात्रासे लौट आने पर यात्रीको स्वागत व बधाईके रूपमे भी नारियल दिये जानेकी प्रथा है।) 5 अत्यन्त आनन्दसे। 6 सेना इकट्ठी करके। 7 मनुष्यके (दूत) आते ही। 8 भागते थे। 9 इस समय इस तरह। 10 क्या जाना जाये? 11 तब आदमी भेज कर दर्याफ्त करवाया। 12 खबर-नवीसोने (गुप्त दूतों) आ कर खबर दी। 13 कन्नौजका राठौड। 14 शकित हुआ। 15 धीरे-धीरे। 16 चलने लगा। 17 राजपूतोने लाखाके भानजे राखायतको पूछा। 18 समय। 19 मुख। 20 कातिहीन उदासी लिये मालूम होता है सो यह क्या बात है? 21 आपके पास। 22 बहाल अथवा वैभव सहित विद्यमान है। 23 जीत। 24 उदास। 25 कुछ। 26 कहता है।

मो ऊपर रीस कर मोनू मराडै तो कुण छोडावै[1] ?' ताहरा रज-पूत वोलिया–'जे[2] लाखोजी तोनू काढै[3] तो साथै नीसरा[4], मारै तो साथै मरा। पण[5] तू आ वात पूछ।'

ताहरा राखायत एक दिन लाखैजीनू पूछियो–'मामाजी! आज ठाकुररी कृपा कर[6] अर[7] रावळै[8] सोह[9] थोक छै[10], अर धरती बरकरार छै, पण परभातरै पोहर[11] राज[12] दरवार करो छो, ताहरा रावळो मुह उतरियो लागै सु कासू जाणीजै ? ताहरा लाखैजी कह्यो–'रूडा भाणेज[13]! तोनू कहीस[14], पण एकात कहीस। इण वातरो विवरो छै[15]।' सु यु करता[16] दिन तीन चार आडा[17] घातनै[18] लाखैजी भाणेजनू साथ ले अर चढिया सु समुद्र पधारिया। रजपूत पण सोह[19] साथै लिया। तठै समुद्र माहै पैठा[20]। पैस[21] अर एक वडो पाटलो[22] तिण ऊपर भाणेजनू वैसाण अर पाटलानू धकाय अर वहतै पाणी माहै वहाय दियो[23]। ताहरा रज-पूतै दीठो, माहरो जोर कोई पूजै नही[24]। अर भाणेजनू लाखै वहाय दियो। जाहरा भाणेज निजर हुता[25] अलोप[26] हुवो, ताहरा लाखोजी अपूठा पधारिया[27]। अर भाणेज, आगै अपछरा[28] रहै छै, तेथ[29] जाय पहुतो। तेथ लाखोजी आगै अपछरावानू कहि राख्यो हुतो[30]–'भाणेज राखायत आवसी, थे सोहरो[31] राखिया[32]।' तिण जवाव ऊपर अपछरा आई। आयनै भाणेजनू ले गई। ले जायनै घर माहै सोहरो राखियो। रात उठैहीज भाणेज वसियो[33]। परभात हुवो,

---

1 और मामाजी मुझ पर क्रोध कर के मरवा डालें तो मुझे कौन छुड़ावे ? 2 यदि। 3 तुमको निकाल दे तो। 4 निकल जायें। 5 परन्तु। 6 ईश्वरकी कृपासे। 7 और। 8 आपके राज्यमे। 9 सब। 10 वैभव हैं। 11 प्रभातके प्रहरमे। 12 आप। 13 अच्छे (योग्य) भानजे! 14 तुझको कहूँगा। 15 इस वातके पीछे एक विवरण है। 16 ऐसे करते-करते। 17 वीचमे। 18 डाल कर। 19 सब। 20 प्रवेश किया। 21 प्रवेश कर के। 22 लकडे का तखता। 23 तखतेको धक्का दे, दूर निकाल, वहते हुए पानीमे बहा दिया। 24 लगे नही, पहुँचे नही। 25/26 दृष्टिसे बाहिर हो गया। 27 पीछे लौट आये। 28 अप्सरा। 29 वहाँ। 30 था। 31 सुखपूर्वक। 32 रखना। 33 वास किया।

ताहरा वळै[1] लाखोजी समुद्र पधारिया, रजपूता समेत। ताहरा राखायतनू अपछरावा तखत वैसांण नै[2] चलाय दियो, सु तखत वैठो राखायत आयो। आय लाखाजीनू मिळियो। ताहरा लाखाजी पूछियो–'क्यु भाणेज ! तमासो दीठो[3] ?' ताहरा कह्यो–'मामाजी ! अपछरावारा मोहल दीठा[4]।' ताहरा लाखैजी कहियो–'भाणेज ! वापरै[5] वैर, नै मामरै[6] काम जिकै आपरौ जीव[7] दियो[8], सो[9] वा मोहला[10] जावस्यै[11]।' अरु कहियो–'भाणेज ! म्हेई रातरा अोथ जावा छा[12]। तमासो देखअर आवा छा तै अोजगै[13] लियै[14] मु ह उतरियो दीसै छै।' ताहरा भाणेज पूछियो–'मामाजी ! उला[15] मोहल दीठा, पण पैला महल घणा सखरा[16], अतही[17] ऊचाती दीठा[18], तिकै महल कियैरा छै[19] ?' ताहरा लाखैजी कहियो–'घणो[20] साम-धरमी मरै, तिकेरा महल वे छै[21]। वापरै वैर नै धणीरै काम आवै[22], तियारी भाणेज ! वा जायगा छै[23]। ताहरा राखायत वात साभळ चुप कर रह्यो[24]। इण प्रस्ताव रात पडी[25]। ताहरा राखायत लाखैजीरी असवारीरो घोडो[26] साहणी[27] कना[28] ले, अर राजा सिघसेन अर चावडा कनै गयो[29]। जाय मिळियो नै कह्यो– 'आ वेळा छै। जे लाखैनै मारस्यो तो वेगा हालो।' ताहरा राजा सिघसेन नै सोळकिया चावडांनू चाढिया[30]। रात थकी असवार कराडिनै[31] अपूठो[32] आयो। घोडो ताजो[33] कर ले जाय, साहणीनू[34]

---

1 फिर। 2 लकडीके पट्टे पर विठला कर। 3 तमाशा देखा। 4 अप्सराओंके महल देखे। 5-6 पिताके वैरके वदलेमे और स्वामीके लिये। 7-8 जिन्होंने अपने प्राण दिये है। 9 वे। 10-11 उन महलोमे, जायेगे। 12 हम भी रातको वहां जाते हैं। 13-14 उस जागरणके कारण। 15 इधरकी तरफ के। 16 वहुत ही अच्छे हैं। 17 अत्यन्त ही। 18 ऊचाई पर देखे। 19 किसके है ? 20 अत्यन्त ही। 21 स्वामी-धर्मसे मरते हैं उनके महल वे हैं। 22 वापका वैर लेवें और अपने स्वामीके काम आवें। 23 भानजे ! उनकी वह जगह है। 24 तव राखायत वात सुन कर चुप हो गया। 25 इसी प्रसगमे रात हो गई। 26 लाखाके चढनेका घोडा। 27-28 घोडेके तवेलेके दरोगेके पाससे। 29 राव सीहा और चावडोंके पास गया। 30 तव राजा सिहसेन और सोलकियो चावडोको युद्धके लिए रवाना किया। 31-32 रातमे ही सवको चढवा कर पीछा आया। 33 घोडेका श्रम रहित कर के। 34 तवेलेके दरोगेको।

सूपियो[1]। जठै खोलियो हुतो[2] तठै ले जाय बाधो[3]। बीजो घोडेनू सरब[4] झाटक[5] खुररो करन[6] ताजो कियो हुतो[7], नै फुरणा[8] आछा न किया[9]। परभातरा[10] लाखोजी घोडा देखणनू पधारिया, ताहरा घोडो देखनै कह्यो–'रे घोडो किणी ही छोडियो नही हुतो ?' ताहरा साहणी कह्यो–'जी, कुण छोडै ?' ताहरा लाखजी घोडै ऊपर पछेवडी फेरी[11]। पछेवडीसू घोडो लूह्यो[12]। पछै नाकमे पछेवडी फेरी, ताहरा माहिसू राती पुडी नीसरी[13]। ताहरा राखायतनू पूछियो–'भाणेज ! सिद्धपुर पाटण गयो हुतो ? राजा सिघसेन, चावडा, सोळकियानू खवर दीनी ?' ताहरा कर सलाम[14], अर कह्यो–'मामाजी ! कहेनै[15] हू आयो हुतो[16]। बापरै वैर, स्यामरै कामनै दोडियो छू।' ताहरा लाखोजी बोलिया–'भाणेज ! ऊचा महलारो ध्यान राखिया।' ताहरा कह्यो–'मामाजी ! ऊचा महला री मनसा राखी तो छै।' ताहरा लाखोजी बोलिया–'भाणेज ! साथ कियो[17] ?' 'मामाजी ! साथ आयो, थेई असवार हुवो[18]।' लाखोजी चढिया। कटक मुकालवै आयो[19]। ताहरा लाखैजी कुळदेवी समरी[20]। ताहरा कुळदेवी प्रगट हुय कह्यो–'हिवै म्हारै जोर कोई नही। ओ राजा सिघसेन आयो। इयनू[21] श्रीमहादेवजीरो वर छै। सु महादेवजीसू म्हारो जोर नही।' ताहरा लाखै देवीनू कह्यौ–'मोनू मीच[22] भली देई[23]।' ताहरा देवी कह्यो–'मीच भली देईस[24]। पण[25] जीप नही हुवै[26]।' यु करता दळ आमा-सामा मडिया[27]। ताहरा राखायत

---

1 सौंप दिया। 2 जहामे खोला था। 3 वही लेजा कर बाध दिया। 4 दूसरा घोडेका सब अग। 5 झटक (पोछ) कर। 6 खुर्रा कर के। 7 ताजा बना दिया था। 8 नासिका छिद्र। 9 साफ नही किया था। 10 प्रात काल मे। 11 पिछौरी (चद्दर) घोडेके शरीर पर फिराया। 12 पिछौरीसे घोडेका शरीर पोछा। 13 लाल मिट्टीकी पपडी निकली। 14 प्रणाम कर के। 15-16 कह कर मैं आया था। 17 भानजे ! क्या उन्होने सेना तैयार करली ? 18 मामाजी ! सेना तो चढ कर आ गई, आप भी चढ कर तैयार हो जायँ। 19 सेना मुकाबलेमे आ गई। 20 तब लाखाजीने कुलदेवीका स्मरण किया। 21 इसको। 22-23 मुझे मृत्यु अच्छी देना। 24 देऊगी। 25-26 परन्तु विजय नही होगी। 27 एक दूसरेके मुकाबलेमे खडे हुए।

कह्यो–'मामाजी ! मै रावळा मूग खाधा[1], हू रावळै मुहडै आगै लडीस[2]।' ताहरा राखायत जण-जणरै मुहडै आगै लड़तो दीसै[3]। राखायत काम आयो[4]। लाखो काम आयो। राजा सिंघसेन लाखैनू मार अपूठा पधारिया[5]। चावडारै पाटण पधारिया।

पछै लाखैरी मा, लाखैरो राजलोक आयो[6]। खेत माहै लाखो पोढियो छै[7]। जीव नही नीसरियो छै[8]। ताहरा राखायत निजीक पडियो दीठो[9]। ताहरा लाखैरो राजलोक कहण लागो–'ओ हरामखोर[10] अठै क्यु पडियो ? दूर करो। तरै लाखोजी बोलिया–'ओ राखायत सामधरमी[11] छे। हरामखोर नही छै। माजी[12] ! आ ग्रीझ[13] देखो पडी छै, सु म्हारै मुह ऊपर आय बैठी, आख काढणनू[14]। ताहरा राखायत दीठी। आपरो फीफर वाढि[15] अर ग्रीझ मारी छै। नही तो ग्रीझ म्हारी आख काढत। थे मोनू कठै देखता[16] ? माजी ! थे म्हारो मुह दीठो जीवतैरो। हिवै राखाइत म्हारै कनारै ल्यावो[17], ज्यु हू हाथ लाऊ, ज्यु इयैनू मुगत हुवै[18]।' 'ताहरा राखाइतरो जीव नीसरियो नही हुतो। सत्रकतो हुतो[19]। ताहरा लाखैजी राखाइतनू नजीक अणायो[20], माथा ऊपर हाथ दियो। जीव मुक्त हुवो[21]। इतरै पण लाखैजोरो जीव मुक्त हुवो। राजलोक[22] सत्या हुई[23]। लाखोजी सरग[24] पधारिया। राखाइत पण सरग लोग हुवो।

ताहरा ऊचा महल सोनैरा रतनमय कागुरा, तिया[25] घरा[26] तो

---

1 मैंने आपका अन्न खाया है। 2 मैं आपके मुखके आगे लडूगा। 3 तब राखायत हर एकके मुखके आगे लडता हुआ दृष्टिमे आता है। 4 राखायत मारा गया। 5 सीहोजी लाखाको मार कर पीछे लौटे। 6 जनाना (स्त्रीजन) आया। 7 रणक्षेत्रमे लाखा सोया हुआ है। 8 जीव नही निकला है। 9 तब राखायतको समीपमे पडा देखा। 10 अधर्मी (अस्वामीभक्त)। 11 स्वामीभक्त है। 12 हे माताजी !। 13 गृध्र पक्षी। 14 आख निकालनेके लिये। 15 फेफडा काट कर। 16 आप मुझको कहा देखती ? 17 अब राखायतको मेरे पास लाओ। 18 ज्योही मैं इसके हाथ लगाऊगा, त्योही इसके प्राण निकलेंगे। 19 मृत्युके सूचक अतिम श्वास लेता था। 20/21 तब लाखाजीने राखाइतको समीप मगवाया, सिर पर हाथ लगाया, तब राखायतका जीव निकला। 22 स्त्रीजन। 23 अपने-अपने पतियोके साथ अग्निमे जल गई। 24 स्वर्ग। 25/26 उन घरोमे तो लाखाजी गये।

लाखोजी पधारिया। तळैरा[1] महल रूपैरा अर सोनेरा कागरा, तिया घरां जायनै राखइत अवतार लियो। एक दिन लाखोजी ऊपरलै घरा झरोखै वैठा हुता[2], अर राखाइत ऊँचो जोयो। देखै तो लाखोजी वैठा छै। देख अर वेदल हुओ[3]। तरै लाखोजी वोलिया—'भाणेज! वेदल क्यु हुवो?' कह्यो—'मामाजी! ईयानू घणो ही दोडियो, पण आया नही। लाखोजी वोलिया—'भाणेज! दोडिया आवै छै?'

दूहो

लिखियौ लाभै लोय, पर-लिखियौ लाभै नही।
पर सिर पदम हि जोय, जे विह विहवै अप्पियो[4] ॥ १

हिवै राव सिहैजीनू चावडा परणाया, घणो सतोप कर[5]। अर राव सिहोजी कनवजनू चालिया। साथै चावडीरो चकडोळ लेनै चालिया। चावडीरी चाकर गोलिया साथै लेइ सुखै-समाधै कनवज पधारिया[6]। भली भात कनवज माहै राज करै छै।

एक दिनरो समाजोग छै[7]। रातरै विखै पोढिया छै[8]। तरै राणी चावडी सुहणो लाधो[9]—'जु नाहर ३ आया छै[10]। राणी जाणै छै, माहरो पेट फाड, आतरा काढ, नाहर आतरा ले ले अर पहाडै गया[11] छै। अळगा-अळगा[12] आतरा लिया जाय छै।' इसो राणी चावडी सुहणो लाधो। तद राणी जागी। जागनै रावजीनू कह्यो—'महाराज! म्है इसो सुपनो पायो।' कह्यो—'कासू दीठो?'[13] कह्यो—'जाणू छू म्हारो पेट फाड नाहर आतरा परवतै ले ले जाय छै। इसो म्है सुहणो

---

1 नीचेके। 2 लाखा गोखमे वैठा था। 3 खिन्न चित्त हुआ। 4 लोकमे (भाग्यमे) लिखा हुआ मिलता है, दूसरेके भाग्यमे लिखा नही मिलता। दूसरेके सिर परकी लक्ष्मीको देख कर लोभ मत करो। जो विधाताने वैभव दिया है उसमे सतोप करो। 5 अब चावडोने अत्यन्त सतोपके साथ सीहाजीको अपनी कन्या व्याह दी। 6 सीहाजी चावडीका डोला साथमे ले कर कन्नौजको चले, दास और दासियोके साथ सुख-शान्तिसे कन्नौजको पधार गये। 7 एक दिनकी घटना है। 8 रातमे सोये हुए हैं। 9 तव चावडी रानीको एक स्वप्न दिखा। 10 तीन सिंह आये हैं। 11 रानी जानती है कि उसका पेट चीर कर सिंह अतडिया ले ले कर पहाड पर गये हैं। 12 अलग-अलग। 13 क्या देखा?

दीठो ।' ताहरा रावजी चावडीनू ताजणा २-३ वाह्या[1]। ताहरा चावड़ी बैठी रही । नीद न पडी[2]। वेदले थका दिन ऊगो[3]। ताहरा राव सीहो वोलियो-'चावडी ! तू मन मे अप्रीत मत जांणै[4] । म्है तोनू ताजणा इतरै वासतै वाह्या छै जु तोनू नीद न पडै[5] । नीद पडिया सुहणारो फळ मिटै छै[6] । थारै तीन पुत्र हुसी, सु सीह सारीखा हुसी । घणी धरती लेसी । वडो वधारो हुसी । इतरी वात सुणै राणी खुसी हुई[7] । बहुत हरखित हुई छै । कितरैहेकै दिनै पुत्र हुवा ।

---

1 तव रावजीने चावडीको दो-तीन चावुक मारे। 2 नीद नही आई। 3 उदासीमे दिन निकल आया। 4 तव राव सीहाने कहा—चावडी ! तू अपने मनमे हमारी नाराजी नही समझना। 5 मैंने तेरेको चावुक इसलिये मारे हैं कि तेरेको नीद न आये। 6 नीद आजानेसे स्वप्नका फल वृथा हो जाता है। 7 इतनी वात सुन कर रानी हर्षित हुई।

## राव ग्रासथांनजी री वात

चावडीरै तीन पुत्र हुवा छै, ग्रतुळीवळ[1], महा पराक्रमी। यु करता रावजी सीहोजी देवगत हुवा[2]। सु वडो वेटो टीकै वैठो।

चावडीरै वेटा नान्हा[3]। ताहरा चावडी वेटा लेग्रर पीहर ग्राई छै[4]। हिवै राणी चावडी ग्रठै पीहर रहै[5]। वेटा दिन-दिन मोटा हुवै छै। प्रतापवान, तेजवत, महा बळिप्ट। कुवर जवान हुवा।

एक दिनरो समाजोग छै। कुवर तीनेही चोगान रमै छै[6]। रमता थका[7] गेद जाइनै एक डोकरी छाणा चुगती हुती, तियेरै पगा मांहै जाय पडी[8]। ताहरा कुवर गेद लेण ग्रायो। डोकरीनू कह्यो-'गेद दे।' डोकरी कह्यो-'म्हारै माथै भार छै, थे[9] उतरनै ल्यौ।' ताहरा लेता थका डोकरीनू धको ग्रायो नै छाणा विखर गया[10]। डोकरी बोली-म्हांईजरा घरा माहै[11] मोटा हुवा, ग्रर ठकुराई[12] माडी[13], मामारै परसाद खाय[14] ग्रर मोटा हुवा छो, ग्रर वळै मामारा लोकानूई मारो छो[15]। ग्रापरै तो ठोड न थी।'

इतरो सुणनै घरै ग्राया। ग्राय ग्रर मानू पूछियो। 'मा! म्हो[16] कवण[17] छा[18]? कठै म्हारो पिता छै? कठै पळा छा[19]? लोक कहै छै, ग्रापरै तो ठोड नही।' तद मा कहै-'लोक भख मारै[20]।' पण ईयै ग्राग्रह कियो[21]। त्यौ मा कह्यो-'जु थे नानेरै[22] पळो छो।' तद पाधरा मामै गोढै जाए सीख मागी[23]। मामै घणो ही ग्राग्रह कियो, पण ग्रासथान रह्यो नही। सीख कीवी। सु उठारा चालिया ईडर[24]

---

1 ग्रतुल्य बलशाली। 2 देवगतिको प्राप्त हुए, मर गये। 3 छोटे। 4 तब चावडी अपने पुत्रोको ले कर मायके ग्रा गई है। 5 ग्रब रानी चावडी यहा पीहरमे ही रह रही है। 6 तीनो ही कुमार मैदानमे खेल रहे है। 7 खेलते हुए। 8 एक बुढिया कडे बीन रही थी, उसके पावोमे जा कर गेंद पडी। 9 तुम। 10 बुढियाको घक्का लग कर उसके कडे बिखर गये। 11 हमारे ही घरोमे। 12 ठाकुरपन (मालिकी)। 13 करना शुरू किया। 14 मामाका ग्रन्न खा कर। 15 फिर मामाकी प्रजाको ही मारते हो? 16 हम। 17 कौन। 18 हैं। 19 हम कहाँ परवरिश पाते हैं? 20 लोकोके कहने पर ध्यान मत दो वे यो ही बकते हैं। 21 परन्तु इन्होने हठ किया। 22 नानाके घरमे। 23 तब सीधे मामाके पास जा कर जानेके लिये ग्राज्ञा मागी। 24 गुजरातमे महीकाठा प्रान्तमे एकनगर है।

आया । उठासू पाली[1] आय डेरा किया । तठै कान्है[2] मेररी[3] ठाकुराई[4] तैंसु लोका पास हासल पण लै, अर अनीत[5] पण करै । जिका कुवारी परणीजै, जिको दिन ३ आपरै महल राखै[6] ।

मु आसथानजीरो डेरो एकै वाभणरै घरै[7] । तिणरी वेटी मोटियार[8] । तैनू आसथानजी देख अर कहण लागा–'जु आ विधवा छै ?' तद ब्राह्मण वोलियो–'राज ! आ कुवारी छै ।' पूछियो–'किसै वासतै[9] ?' तद ब्राह्मण अरज कीवी–'जु राज ! अठै आ अनीत छै ।' आसथानजी पूछियो–'जु मेर कनै साथ कितरोहेक छै[10] ?' इण अरज कीवी–'महाराज ! पाळा[11] हजार २०००० हुसी ।' तद आसथानजी वोलिया–'जु वेटी थारी परणाय, म्हे जाणा[12] ।' तद ब्राह्मण वेटी परणाई, फेरा लिया[13] । पछै कानैरा आदमी ब्राह्मणरी वेटीनै वैहल वैसाण ले हालिया[14]। ज्यौ आसथानरै डेरै गोढै[15] आया, त्यौ ब्राह्मणरी वेटी भाज[16] अर डेरै मे आय वैठी । त्यौ वे जोर सो करण लागा[17] । तद आसथानजी रा चाकरा उहानू[18] मार काढिया । आ खवर कानडदेनू हुई । कान्हो साथ ले पाली ऊपर आयो । आसथानजी नीसरिया[19] । कानै पाली मारी[20] । लूटेरू[21] लोग वित ले चालता रह्या[22] । कान्हो लारै[23] थोड़ा सा माणसासू[24] रह गयो । यू करता

---

1 पाली मारवाडमे एक नगर है, जो जोधपुर से १८ कोस है। 2 'कान्हा' एक मेरका नाम है। 3 पर्वतोमे रहने वाली एक कौम। 4 स्वामित्व। 5 अन्याय भी करता है। 6 क्वारी (अपरिणीता) का विवाह हो तो उसको ३ दिन अपने महलमे रखता है। 7 ब्राह्मणके घरमे। 8 तरुण। 9 किसलिये ? 10 मेरके पास मनुष्य कितने हैं ? 11 पैदल। 12 तेरी पुत्रीका विवाह करदे, फिर हम जाने। 13 भावरी ली, (अग्निकी चार प्रदक्षिणा की। इससे विवाह पूर्ण हुआ समझा जाता है। तीन परिक्रमामे कन्या आगेडी और चौथी परिक्रमामे वर आगेडी रहता है। तदन्तर कन्याको वरके वाम अगकी ओर विठाई जाती है। चतुर्थ परिक्रमाके समय यह गीत गाया जाता है–'चौथै फेरै रे वाई हुई पराई।' तात्पर्य यह है कि चतुर्थ परिक्रमा होने पर पिताका स्वत्व मिट कर पतिका स्वत्व हो जाता है और फिर वह उसकी पत्नी कहलाने लग जाती है।) 14 कान्हा मेरके मनुष्य ब्राह्मणकी वेटीको जनाना वैलगाडीमे विठला कर ले चले। 15 पास। 16 भाग कर। 17 तव वे वल दिखाने लगे। 18 उनको। 19 पाली छोड कर चले गये। 20 कान्हाने पालीको लूट लिया। 21 लूटने वाले। 22 धन और मवेशी लेकर चले गये। 23 पीछे। 24 मनुष्यो से।

आसथानजी माणस पांचसौ सू आण वतळायौ[1], नै लडाई हुई। कान्हैनू मारियो। वितरो वासो कियौ[2]। मेर ज्यु ज्यु लाधा[3], त्यु मारिया। वित सरब पडायो[4]। पाली चौरासी गावासू लीवी। पासै भाद्राजण पिण चोरासी गावासू लीवी[5]। ओरू[6] पसवाडै[7] खेड[8] गोहिल[9] राज करै सु गोहिलारै परधान[10] डाभी[11], सु रीसाणा हुवा[12]। गोहिलारो वडो धोम राज[13], अर डाभी पण डीला घणा[14] सिरीखा[15] परधान, सु रीसाणा थका छाड गया[16]। जाहरा आसथानजीरो राज भारी पडियो[17]। तद डाभिया जाणियो, गोहिल मरावा। तद डाभी आसथानजी कनै गया। सारी ही हकीकत कही[18] वात कीवी। ताहरा आसथानजी कह्यौ–'कूकर लेस्या[19]।' तद डाभिया कह्यो–'म्हे थानै समचो करस्या[20]। ताहरा थे चूक करिया[21]।'

इतरै गोहिला पिण आलोच कियो[22]–'जो राठोड जोरावर[23]। सिराणै आय राजस्थान माडियो[24]। जो कू ललो-पतो कीजै तो टिग सगीजै[25]।' ताहरा सारा ही आलोच कर परधान मेलियो। सु परधाननै कह्यो–'थे जाय वात कर आवो, अर मनुहार करज्यो, जो उठै खेड पधारो। देस देखो। थे राम-राम[26] कर आवो। अर जे पधारै तो भगत रो कह्या[27], अर म्हानू खबर मेलिया[28]। ज्यु

---

1 आकर ललकारा। 2 पीछा किया। 3 मिले। 4 धन सब पीछा लेलिया। 5 चौरासी गावोके साथ पाली लेनेके अनतर समीपवर्ती भाद्राजण और उसके ८४ गाव भी ले लिये। 6 अन्य भी। 7 पार्श्ववर्ती। 8 खेड, एक प्राचीन नगरका नाम। 9 गोहिल जातिके राजपूत खेडके स्वामी थे। 10 प्रधान (मुख्य मत्री)। 11 डाभी, राजपूतोकी जाति। 12 अप्रसन्न होगये। 13 गोहिलोका वैभव वाला राज्य था। 14 और डाभी सख्यामे अधिक (डील = शरीर)। 15 समान कक्षाके। 16 नाराज हो करके छोड कर चले गये। 17 प्रबल होगया। 18 सब वृत्तान्त कहा। 19 कैसे लेवेंगे ? 20 सकेत कर देंगे। 21 तब तुम धोखेसे मार डालना। 22 इस अवसर पर गोहिलोने भी विचार किया। 23 क्योकि राठोड बलवान हैं। 24 मस्तकके ऊपर ही आकर राजधानी कायम करली है। 25 यदि कुछ खुशामद की जाय तो टिके रह सकते है। 26 राजस्थानमे, प्रणाम, सलाम आदिके स्थानमे भेंटके समय 'राम-राम' कहनेका भी रिवाज है। 27 यदि आयें तो मिहमानीका कहना। 28 और हमको खबर भेजना।

भक्तरी तयारी करा[1] ।' ताहरा डाभी जाय आसथानजीसू मिळिया। सरव हकीकत कही। आदमी मेलियो खेडनू[2]–'भगतरी तयारी करज्यो[3] । रावजी आसथानजी पधारसी ।'

इया भगतरी तैयारी कीधी । आगै डाभिया गोहिलानू कह्यो– 'जु थे ठाकुर छो[4], म्हे थाहरा चाकर छा, म्हे थांसू बराबरी करा तो कासू होवै ? आखर तो म्हे थाहरा चाकर छा। जीमणी वगल गोहिल ऊभा रहै[5], डावी वगल डाभी ऊभा रहसी । ज्यु पहली राव आसथानरो साथ थासू मिळै[6], पछै म्हे मिळस्या।' डाभियासू गोहिल खुसी हुवा[7]। यु करता राव आसथानजी पधारिया। डाभिया गोहिलासू चूक करायो[8]। माहै पधारिया। ताहरा डाभिया कह्यो[9]– 'जी[10], डाभी डावै, गोहिल जीमणै।' ताहरा जीमणी तरफ उतरिया। गोहिल सरव मारिया । डाभी सरव उवारिया[11] । खेड राव आसथानजी लीधी। पछै आप खेड हीज रह्या। खेड राज कियो। तठासू खेडेचा कहाणा[12] ।

॥ इति वात सपूर्ण ॥

---

1 जिमने मिहमानीकी तैयारी करें। 2 3 डाभियोने खेडको मनुष्य भेजा और कहलाया कि मिहमानीकी तैयारी करना। 4 आप मालिक हैं। 5 दाहिनी तर्फ गोहिल खडे रहे, और बाई तरफ डाभी खडे रहेंगे। 6 पहिले आसथानजीका लोक आपसे मिले। 7 प्रसन्न हुए। 8 डाभियोने गोहिलोको धोखेसे मरवाया। 9 भीतर आये तब डाभियोने आसथानजीने कहा कि महाराज ! (बडे आदमीको उसके नामसे सवोधन नही करके 'जी' शब्दसे किया जाता है) डाभी बाई तरफ है, गोहिल दाहिने हाथकी तरफ हैं। (इसमे यह भी स्वारस्य है कि शत्रु दाहिने हाथको हो तो हाथका दाव बहुत अच्छा रहता है)। 10 तब दाहिनी ओर तलवार चलाई। 11 बचा दिया। 12 तबसे 'खेडेचा' कहलाये। (अन्य ख्यातो और गीत छदो आदिसे पता चला है कि आसथानजीसे गोहिलोके प्रधान आमा डाभीने, गोहिलोको मरवा कर खेडका राज्य उन्हे दिला देनेका षड्यंत्र रच कर, आसथानजीको खेडके स्वामी प्रतापसिंह कल्याणमलोतकी बेटी व्याहने का निश्चय किया। आसथानजीने वहां पर कुछ विवाद उपस्थित कर गोहिलोको मार कर खेड राज्य गोहिलोसे छीन लिया। आमा डाभीको अपने कब्जेमे कर खेडका राज्य छीन लेने का एक पुराना सोरठा भी प्रसिद्ध है—

गोहिल गळ हथियेह, खेड धरा खागा मु है।
आमो अपणायेह, गह मरियो वळ गजियो ॥

## वात राव कांनडदेजीरी

कानडदेजी[1] महेवै[2] राज करै छै। अर सलखोजीनू[3] गांम १ दियो। तेथ[4] सलखावासी कहाणी, उठै रहै छै।

एकदा प्रस्ताव राव सलखोजीरै राणी गुर्विणी[5] हुती। ताहरा राव सलखो महेवै आयो। आय अर किरियाणो[6] लियो। एक राठी[7] वेगार लियो। तियैरै माथै सरव असवाव दे अर आप चढि घोडै अर पूठै हुवो[8]। मारगमे जावता च्यार नाहर नळा खायनै वैठा छै। भख आपरो बैठा खाय छै[9]। ताहरा त्यानू देख सलखोजी घोडैसू उतरनै धरती वैठा, नै वे राठी कह्यो[10]–'हू पूछ आऊ।' ताहरा सलखै कह्यो–'पूछि आव।' ताहरा राठी दोडियो-दोडियो राव कानडदे कनै गयो। कह्यो–'जी, सलखोजी पधारिया हुता, सु किरियाणो लियो गूढै[11] जावता हुता। सु म्हारै माथै पाड[12] हुती सु सुगन[13] हुवो। जिका राणी किरियाणो खासी तैरो बेटो धणी[14] हुसी, सु थानूं कहण आयो छूं। किरियाणो अपूठो घेरीजै[15], अर सलखैजीनूं अपूठा घेरीजै। ताहरा कान्हडदेजी आदमी मूकिया[16]–'जावो सलखैजीनै अपूठा ल्यावो।' आगै सलखोजी बैठा घडी १ दीठो, राठी न आयो[17]। ताहरा आप गाठ किरियाणैरी घोडैरै आगै हानै[18] दे अर घरै पधा-

---

1 राव तीडाके तीन पुत्र थे, कान्हडदे, सलखो और त्रिभुवणसी। त्रिभुवणसीकी पुत्री कुमरदे जैसलमेरके रावल केसरिदेवको व्याही थी। स० १४५३ मे केसरिदेवके स्वर्गवास करने पर कुमरदे सती हुई। इस विषयका यह शिलालेख जैसलमेरमे उपलब्ध हुआ है। **ओं सवत् विक्रमे १४५३ वर्षे माह सुदी ८ राजश्री त्रिभूणसी राठड पुत्री महाराजाधिराज श्री केसरिदेव भार्या ।। राज्ञी श्री कुमरदे नाम ।।** महाराजा श्रीकेसरिदेव सह स्वर्गता श्री ।। (जैसलमेर पर्यटनके समय प्राप्त।) 2 महेवा मारवाडके मालानी प्रांतका एक भाग। 3 सलखा राव तीडाका मध्यम पुत्र। 4 वहा। 5 गर्भवती। 6 किरियाणो = सोठ, अजवाइन, पीपरामूल, खाड, गुड आदि पसारटकी वस्तुए। 7 एक क्षुद्र श्रेणीकी जाति। 8 उसके सिर पर सामान देकर स्वय घोडे पर चढ गया और उसके पीछे-पीछे चलने लगा। 9 मार्गमे चार नाहर बैठे हुए अपना भक्ष खा रहे हैं। 10 उस राठीने कहा। 11 गूढा = निवास स्थान, रक्षा स्थान। 12 गठडी। 13 शकुन। 14 स्वामी। 15 वापिस लौटा लेना चाहिये। 16 भेजे। 17 एक घडी तक राठीकी प्रतीक्षा की लेकिन वह नही आया। 18 घोडे या ऊटकी काठीका एक अग्र भाग।

रिया । आदमी आया, देखै तो सलखोजी नही । ताहरा आदमी अपूठा फिर गया । राठी सलखावासी[1] गयो । जाइ रावळै कपडो लियो । कह्यो–'जी, रावळै[2] वेटा ४ हुसी । सु धरतीरा धणी[3] हुसी। धरती थाहरै घरै हुसी[4]। अर थाहरै कुरसी दर कुरसी[5] ठकुराई हुसी। थांरा कर दस दिसा पसरसी[6] । दीकरा[7] थारा घणा सकरमण[8] हुसी।' इसो राठी सगुनरो फळ कह्यो । आप हरखित हुयनै राठीनू पाघ वधाई । वीजाही सवणियानू[9] पूछियो । तिया कह्यो–'जिकै राणीरै प्रसूत हुसी तियैरो वेटो धरतीरो धणी हुसी ।' आप राजी हुवा । मालोजी जाया[10] । घणो हरख हुवो । घणी वधाया वैह्ची[11] । मालो[12] दिन दिन वधै । महा प्रतापवान हुवो । वीजो वेटो वीरम, तीजो जैतमाल, चोथो सोभत । वीरमनै सोभत एकै मा-रा[13] । मालो नै जैतमाल एकै मा-रा । यु करता वेटा वडा हुवा । जाहरा मालोजी वारह वरसांरा हुवा, ताहरा मालोजी महेवै गया, जायनै राव कानडदे[14] नू मुजरो कियो । राव मालैनू वोलायो[15] । दिहानगी करदी[16] । भेळो जीमै[17] । मालो भलीभात चाकरी करै । कानडदे मालै ऊपर मया करै[18] ।

एक दिनरो समाजोग छै । रावळ कानडदे सिकार चढिया छै । सरव रजपूत साथै छै । मालो पण साथै छै । सिकार रमी, अर अपूठा वळिया[19] । ताहरा राव कानडदेरो पलो[20] मालै पकडियो । कह्यो– 'कांनडदेजी ! धरतीरो हैसो[21] मागू, छोडू नही । घणोही कह्यो, पण छोडै नही। रजपूत अळगा ऊभा हुइ रह्या[22] । नैड़ो कोई न आवै[23] ।

---

1 सलखावासी = मल्लखाका आवाद किया हुआ गाव । 2 आपके । 3 स्वामी । 4 आपके घरमे धरती होवेगी अर्थात् आपके अधिकारमे धरती आजावेगी। 5 पीढी दर पीढी वश परवश । 6 आपके हाथ दशो दिशाओमे फैलेंगे । 7 लडके, पुत्र । 8 सकर्मण्य, श्रेष्ठ कार्य करने वाले । 9 शकुन-वेत्ताओको । 10 मल्लिनाथजी जन्मे । 11 वहुत वधाइया दीगई । 12 मल्लिनाथजी । 13 वीरम और सोभत एक माताके उदरसे जन्मे । 14 कान्हडदे, मल्लिनाथजीके पिता सलखासे वडे थे, इमीसे राज्याधिकारी हुए । 15 वतलाया, वातचीत की । 16 प्रतिदिन-देय द्रव्य नियत कर दिया । 17 कान्हडदेके शामिल भोजन करते हैं । 18 कृपा करते है । 19 पीछे लौटे । 20 वस्त्रका छोर । 21 हिस्सा, अश, वट । 22 दूर खडे रह गये । 23 कोई निकट नही आता है ।

कह्यो–' जी, काको भतीजो समझल्यो[1] । म्हे कासू जाणा[2] ?' ताहरा राव कानडदे कह्यो–'माला ! तोनू धरती मे तीजो हैसो देइस[3] ।' ताहरा कह्यो–'जी, मोनू एथ[4] लिखाय द्यो, अर थाहरा रजपूत पट्ट[5] द्यो तो छोडू ।' ताहरा ओथहीज[6] कागळ[7] लिख दियो । रजपूत पट्ट दिया ताहरा छोडिया । आइनै धरती मालैनू वैहच दीधी । मालो कानडदेरी खिजमत[8] भलीभात करै । ताहरा कानडदे मालैनू बुधवत[9] जाणनै प्रधान थापियो । ताहरा अमराव कहण लागा–'जियै ठाकुरै[10] आपरा भाई प्रधान थापिया, तियारी ठाकुराई जावणहारी[11] छै ।' हिवै[12] मालै धरती माहै आपरो अमल करायो । राज भलीभात चालण लागो[13] । पण रजपूतारै वात दाय न आवै ।

एकदा प्रस्ताव । दिलीरै पातसाह सारी धरती माहै डड घातियो[14] । गढ किरोडी मूकिया[15] । ताहरा महेवै ही किरोडी[16] आयो । ताहरा कानडदे सरब रजपूत तेडिया[17] । कामेतिया, मालेजीनू तेडिया । तेडनै मत्रणो कियो[18]–'जु, कासू करस्या[19] ?' ताहरा मालोजी बोलिया–'करोडीनू मारस्या । डड नही दा । 'सिगळा ही ठाकुरारै वात दाय आई[20]–जु किसी विध मारस्या ? मिसलत करो[21] ।' ताहरा कह्यो–'जु इयानू[22] जुदा-जुदा कर मारस्या, गावै लेजायनै मारस्या[23] ।' आ वात सिगळारै ही दाय आई । ताहरा किरोडी तेडनै कह्यो–'थाहरा आदमी गावै मूको[24], ज्यू पईसा[25] ल्यावै । ताहरा इसी मिसलत कीधी–'आजहू[26] पाचमै दिहाडै[27] दोपहररी विरिया[28] सरब काम करस्या ।' आ मिसलत करि ऊठिया ।

---

1 चचा भतीज परस्पर समझलो । 2 हम क्या जाने ? 3 तुझको धरतीमेसे तीसरा हिस्सा देदू गा । 4 यही । 5 जामिन, प्रतिभू । 6 वही । 7 कागज, स्वीकार पत्र । 8 सेवा, नौकरी । 9 बुद्धिमान । 10 जिस ठाकुरने । 11 उनकी ठकुराई जाने वाली है । 12 अब । 13 राज्यका कार्य अच्छी तरह चलने लगा । 14 दड डाला गया । 15 किलोके लिये किरोडी भेजे गये । 16 किरोडी = दड उगाहने वाला । 17 बुलाया । 18 सलाह की । 19 क्या करेंगे ? 20 सब ही ठाकुराके बात पसद आई । 21 गुप्त परामर्श करें । 22 इनको । 23 गावोमे लेजा कर मार देंगे । 24 भेजो । 25 पैसे (द्रव्य) । 26 आजसे । 27 दिन । 28 समय ।

ताहरा सिरदार हुतो तियैनू [1] मालो लेगयो। बीजा बीजी ठोडै मेल्हिया [2]। ताहरा बीजै ठाकुरै लेजाय करोडीरा आदमी मारिया। अर मालै सिरदारनू घरै लेजाय अर घणा हीडा [3] किया। दिन पाचमै पछै कह्यो—'जु, कानडदे मराया छै। पण हू तो तोनू मारू नहीं [4]। बीजा थारा सरब कानडदे मारिया छै।' ताहरा किरोडी कह्यो—'जे माला ! हू दिली जीवतो पहुतो तो तोनू धरतीरो धणी कराईस [5]।' वाह बोल दियो [6]। मालै आपरो साथ साथै दे अर किरोडीनू दिली पहुचतो कियो [7]। ताहरा किरोडी दिली जाय पातसाह आगै पुकार घाली [8]—'जु कानडदे सरब आदमी मारे। अरु मेरी ताई मालै जीवता उबारया। माला हजरत का खासा बदा है। बडा सामधरमी है। लायक है।' ताहरा पातसाह हुकम कियो—'मालेकू मंहेवा दिया।' ताहरा किरोडी आदमी मूकियो। मालैनू तेडियो [9]। मालो साथ भेळो करनै दिली गयो। जाय पातसाहरै पावे लागो [10]। पातसाह मालैनू निवाजियो [11]। रावळरो टीको दियो [12]। उठै कितराइक दिन रह्यो।

वासै कानडदेजी देवगत हुवा [13]। ताहरा त्रिभुवणसी टीकै बैठो। ताहरा मालो पातसाहसू विदा हुयनै देस आयो। त्रिभुवणसी साथ भेळो करनै मालैनू लडाई कीवी। त्रिभुवणसी घावै पडियो [14]। साथ भागो। ताहरा त्रिभुवणसी ई दारै परणियो हुतो सो ई दा लेगया। लेजायनै घाव बधाया [15]। ताहरा मालै दीठो [16]—'त्रिभुवणसी जीवता राज आवै नहीं।' ताहरा त्रिभुवणसीरो भाई पदमसी हुतो [17], तियैनू भखायो [18]—'तू त्रिभुवणसीनू मारै तो तोनू [19] टीको देवा।' ताहरा

---

1 उसको। 2 दूसरेको दूसरी जगहोंमें भेजा। 3 सेवा। 4 परन्तु मैं तो तुझको मारूंगा नहीं। 5 माला ! यदि मैं दिल्ली जीवित चला गया तो देशका स्वामी तुझको बनवा दूंगा। 6 परस्पर वचनबद्ध हुए। 7 मालाने अपने मनुष्योंको साथमें दे कर करोटीको सुरक्षित दिल्ली पहुँचवा दिया। 8 तब करोटीने दिल्ली जाकर बादशाहके आगे पुकार की। 9 मालाको बुलवाया। 10 जाकर बादशाहके पावों लगा। 11 बादशाहने मालाके ऊपर कृपा की। 12 रावलकी पदवी देकर तिलक किया। 13 पीछे कान्हडदेजी परलोक पहुँच गये। 14 त्रिभुवनसी घायल हुआ। 15 लेजा करके घावों पर पट्टे बंधवाये। 16 तब मालाने देखा। 17 था। 18 उसको बहकाया। 19 तेरेको।

पदमसी लोभायौ थकै जाइनै त्रिभुवणसीनू पाटा माहे सोमल नीव माहै भेळियो[1]। पाटै माहै विस हुवो[2]। त्रिभुवणसी देवगत हुवो[3]। पदमसी मालै कनै[4] आयो। कह्यो–मोनू टीको द्यो।' माले कह्यो–'टीको यु नही आवै।' कह्यो–'जी, दोय गाम ल्यो, बैठा खावो[5]।' ताहरा पदमसीनू दोय गाव महेवैरा दे विदा कियो।

---
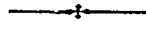
## रावल मालोजीरी* वात

हिवै रावळ मालोजी महूर्त जोवाड़िनै महेवै आयो[6]। आयनै महेवै टीकै बैठो। सरव रजपूत आय मिळिया। धरतीमे आण सगळै फेराई[7]। सरब भूमिया साभिया[8]। ठाकुराई वधी। भाई सरव आय मिळिया। धरती माहे मालैरी धाक पडण लागी[9]। बीजो भाई जैतमाल, तियैनू सिवाणो दियो[10]। जैतमाल सिवाणै राज करै छै, पण मालैरो चाकर हुवो रहै। वीरम सोभत अै पण महेवैरै पासै

---

1 तब पदमसीने लालचमे आकर और वहा जाकर नीमके पट्टोमे सोमल विष मिला दिया। 2 पट्टोमे जहर होगया। 3 त्रिभुवनसी मर गया। 4 पास। 5 दो गाव लेलो और बैठे खाओ। 6 अब मालाजी मुहूर्त दिखा कर महेवे आया। 7 देशमे सर्वत्र अपनी आन-दुहाई फिरवाई। 8 समस्त भोमियोको अपने अधिकारमे किया। 9 देशमे मालाकी धाक जमने लगी। 10 दूसरा भाई जैतमाल, उसको सिवाना दिया।

*'माला' रावल मल्लिनाथका साहित्यिक नाम है। जैसाकि 'तेरह तूगा भाजिया मालै सलखाणी' सलखाके पुत्र मल्लिनाथने बादशाही सेनाके तेरह दलोका नाश कर दिया। लोक-मान्यता है कि इनकी रानी रूपादेकी अडिग भक्ति और चमत्कारोसे प्रभावित होकर रावल मल्लिनाथ भी उस ओर प्रवर्त होगये। निरतर भक्तिमे तल्लीन रहनेके कारण इन्हे वचन-सिद्धि प्राप्त थी। लूनी नदीके किनारे तिलवाडा ग्रामके सामने तिलवाडा-फेयर नामक रेलवे स्टेशनके पास थान गावमे रावल मल्लिनाथका बडा मदिर बना हुआ है। रूपादे रानीका मदिर भी कुछ दूरी पर मालाजाल गावमे बना हुआ है। रावल मल्लिनाथकी स्मृतिमे थान और तिलवाडाके बीच लूनी नदीके पाटमे प्रत्येक वर्ष चैत्र कृ० ११से चैत्र शु० ११ तक एक बडा मेला लगता है, जिसमे लाखो रुपयोके मूल्यके ऊट, घोडे, बैल आदि पशुओका और वस्त्र आदि अन्य व्यापारिक वस्तुओका क्रय-विक्रय होता है। कहा जाता है कि साधु-सन्यासी और भक्तजनोके वार्षिक धार्मिक सत्सगका रूपान्तर यह मेला है।

गूढा किया रहै[1] । हिवै मालोजीरै वेटा हुवा । सो पिण वडा जोरा-वर ऊठिया, सु वीरमनू रहण न दै । ताहरा वीरमजी जाइ जोईए रह्यो[2] । रावळ घडसी पण रावळ मालैरै चाकर रह्यो । विमळादे परणाई[3] । जगमाल मालावत, रावळ घडसी, हेमो सीमाळोत, ईंया वडो संतोख[4] । रावळ मालैजी सरव धरती लीवी छै । दोय पातसाह भागा । एक दिलीरै पातसाहरी फोज भागी । एक माडवरै पातसाहरी फोज भागी । मालो सिद्ध हुवो[5] । नव वेटा हुआ । वडा सिरदार हुवा । राव चूडैनू पिण मालैजी ठाकुर कियो । माथै हाथ दिया[6] ।

एकदा प्रस्ताव । कुवर जगमाल वोलाय हेमै सीमाळोतनू कह्यो–'वरसात छै, देस सुहामणो लागै छै । रावळजी हुकम करै तो थळ माहै सिकार रमा[7] ।' हेमै रावळजी कना[8] हुकम लियो । अै ठाकुर सिकारनू चढिया । दिन १५ तथा २० कह्यो जी रहिस्या[9] । ताहरा रावळ घडसी, जगमाल, हेमो सीमाळोत, सिकारनू चढ

---

1 वीरम और सोभत ये दोनो भाई भी महेवेके पास ही अपना गुढा वना कर रह रहे है । 2 तब वीरमजी वहासे जाकर जोईयोके यहा रहा । 3 रावल घडसी भी मालाका चाकर रह गया और उसे विमलादे व्याह दी गई । 4 इनके परस्पर वडा स्नेह । 5 माला भक्ति कर के सिद्ध हो गया । 6 राव चूडेके सिर पर हाथ रख कर उसे भी ठाकुर वना दिया ।

'माला' रावल मल्लिनाथका साहित्यिक नाम है । जैसा कि 'तेरह तूंगा भाजिया मालै सलखाणी' सलखाके पुत्र मल्लीनाथने वादशाही सेनाके तेरह दलोका नाश कर दिया । लोक-मान्यता है कि इनकी रानी रूपादेकी अडिग भक्ति और चमत्कारोसे प्रभावित होकर रावल मल्लिनाथ भी इस ओर प्रवर्त हो गये । निरंतर भक्तिमे तल्लीन रहनेके कारण इन्हे वचन-सिद्धि प्राप्त थी । लूनी नदीके किनारे तिलवाडा ग्रामके सामने तिलवाडा-फेयर नामक रेल्वे स्टेशनके पास थान गावमे रावल मल्लिनाथका वडा मदिर वना हुआ है । रूपादे रानीका मदिर भी कुछ दूरी पर मालाजाल गावमे वना हुआ है । रावल मल्लिनाथकी स्मृतिमे थान और तिलवाडाके वीच लूनी नदीके पाटमे प्रत्येक वर्ष चैत्र कृ० ११से चैत्र शु० ११ तक एक वडा मेला लगता है, जिसमे लाखो रुपयोके मूल्यके ऊट, घोडे, वैल आदि पशुओका और वस्त्र आदि अन्य व्यापारिक वस्तुओका क्रय-विक्रय होता है । कहा जाता है कि साधु-सन्यासी और भक्तजनोकी वार्षिक धार्मिक सत्सगका रूपान्तर यह मेला है ।

7 रावलजी यदि आज्ञा करें तो थल प्रदेशमे (जगलमे) जा कर शिकार खेलें । 8 पास, से । 9 कहा कि १५ तथा २० दिन वहा रहेंगे ।

नीसरिया[1] । जठै घणा जाळ, घणा खेजड, सूरज दीसै नही, ग्रैडी झगी तेथ गया[2] । वसती कठै लाभै नही[3] । इयै भात सिकार रमै ।

एक दिन प्रभातरा चढि नीसरिया । एकै ठोड आया । आगै देखै तो कोहर तेविनै, धाव पायनै मरद तो सोह गाम गया छै[4] । एक बैर[5] जावै छै । सु साठीको कोहर, तियैरी वरत छै मु वरत सावटिनै काख माहै घाली छै[6] । कोस पजाळी वाह माहै घातिया छै[7] । माथै बिघडियो भरियो पाणीरो छै[8] ग्रर मारग चाली जाय छै। ताहरा पूछियो–'महेवैरो मारग कठै छै[9] ?' ताहरा लाबो हाथ करनै मारग दिखायो । ताहरा सारा कहण लागा–'देखो ठाकुरे, छोकरीरो वळ ! देखो, कितरो[10] भार उठाये जावै छै ।' ताहरा एक ग्रसवार घोडै हू[11] उतरनै ढाल भार भरनै उपाडण लागो[12], सु कळाईसू ढाल उपडै नही । ताहरा सारा बोलिया–'धन्य वा छोकरी, जियै इतरै भार थका बाह लाबी कीधी[13] ।' ताहरा हेमो सीमाळोत वोलियो–'जावो, खबर करो कुँवारी छै कना परणी छै[14] ?' ताहरा एक ग्रसवार दोडनै खबर कर आयो, 'जु कुवारी छै ।' ताहरा ग्रै ठाकुर वै पगै-पगै

---

1 अपने-अपने वाहनो पर सवार होकर शिकारके लिये निकल गये। 2 जहा पर घने जाल वृक्ष और घने शमी वृक्ष, झाडी ऐसी कि सूर्य भी नही दिखे, ऐसे स्थान पर गये। 3 कही वस्ती देखनेको नही मिले। 4 आगे देखते हैं कि कुएँको सीच कर और अपने पशुओंको पानी पिला कर मर्द तो सब ही अपने गाव को चले गये है। 5 स्त्री। 6 साठीका कुआँ, जिसके मोटे रस्सेको समेट कर काखमे डाले हुए है। साठीको कोहर = साठ पुरुषका गहरा कुआँ। वरत = चरसेको पानी से भर कर के कुएँमेंसे खेचनेके लिये चरसेके बधा हुआ चमडेका मोटा रस्सा। 7 कोश (चरसा) और पजाली बाहमे डाल रखे हैं। पजाळी = कुएँमेसे पानी निकालनेके लिये चरसेमे या बैलगाडीमे जुते हुए दो बैलोको एक दूसरेसे अलग नहीं होने देनेके लिये उनके कधोमे डाला जाने वाला जूएकी तरहकी लकडीका एक चौखटा। 8 सिर पर पानीसे भरा हुआ बिघडिया है। बिघडियो = बि+घडियो, दो घडे या दूसरा घडा। घडेके ऊपर दूसरा छोटा घडा। सिर पर उठाया जाने वाला पानीसे भरा वडा घडा और उसके ऊपर रखा जाने वाला दूसरा छोटा घडा। 9 महेवेका मार्ग कहा पर है? 10 कितना। 11 घोडेसे। 12 उठाने लगा। 13 धन्य है उस लडकीको जिसने इतना बोझा होते हुए भी अपने हाथको लबा कर दिया। 14 जाओ और पता लगाओ कि यह कवारी है अथवा व्याही हुई है?

गया[1]। आगै वसती आई। देखै तो एक रजपूत बरछो लिया ऊभो छै[2]। ताहरां वै रजपूतनू पूछियो–'आ किणारी वसती छै[3] ?' ताहरा रजपूत बोलियो–'जी वसती सोळकियारी छै।' कह्यो–'ठकुराळा[4] ! आ बेटी किणरी छै[5] ?' ताहरा ऊ रजपूत बोलियो–'जी, ईयै रजपूतरी डावडी छै[6]।' वळै पूछियो–'थे कि जातिया छो[7] ?' कह्यो–'जी, हू सोळकी छू।' ताहरा उठै उतरिया, डेरा किया[8]। गावरा लोक हीडा करण लागा। ताहरां वै रजपूतनू तेडनै हेमै कह्यो–'थांरी बेटी जगमालजीनू परणाव।' ताहरा रजपूत बोलियो–'राज ! म्हे मालैजी रा रजपूत छा। म्हां सरीखारो साहिवासू सगपण किसो[9] ? म्हे खिलहरी लोक छा[10]। जगळरा वसणहार भूछ लोक छां[11]। माहरा टावर राज-रीत-सार काई जाणै[12] ? अै तो राजा छै, माहरा छोरू गवार लोक छै[13]।' ताहरा हेमोजी बोलियो–'जी टावर रावळा छै।' ताहरा आथण वास रोपाय, अर चवरी वाध, जगमालजीनू परणाया[14]। दिन ३, ४ रह्या। उठै सोळकणीनू आसा रही[15]। उठाहू जगमालजी* चढि अर महेवै आया[16]। सोळकणी

1 तब ये ठाकुर (उस लडकीके) पांवोको खोजते-खोजते गये। 2 खडा है। 3 तब उस राजपूतको पूछा कि यह किनकी वस्ती है ? 4 हे ठाकुर ! 5 यह लडकी किसकी है ? 6 जी ! यह इस (मुझ) राजपूतकी लडकी है। 7 पुन पूछा कि तुम कौन जातिके हो ? 8 तब वही उतर कर डेरा लगा दिया। 9 हम सरीखोका बडोसे कैसा सबध ? 10 हम तो ऊट आदि पशु चराने वाले जगली लोक हैं। 11 जगलमे रहने वाले अपढ लोक है। भूछ = असभ्य, असस्कृत, अपढ। 12 हमारे बच्चे राज-रीतिकी बातोमे क्या समझें। 13 हमारे बच्चे ग्रामीण लोक है। 14 तब मध्याको वास खडे कर (मडप बनाय) और चंवरी बाध कर जगमालका विवाह कर दिया। 15 वहा सोलकनी गर्भवती हुई। 16 वहासे जगमालजी चढ कर महेवे आये।

*जगमाल बडे वीर पुरुष थे। ये गुजरातके बादशाहकी बेटी गींदोलीको उडा कर ले आये थे। जगमालको मार कर गींदोलीको वापिस ले जानेके लिये बहुत बडी सेनाके साथ बादशाह स्वय जगमाल पर चढ कर आया था। जगमाल युद्धमें बडी वीरतासे लडा और उसने ऐसी तलवार बजाई कि बादशाह और उसकी सेनाको रणागणसे भाग कर प्राण बचाने पडे। गींदोलीको प्राप्त करनेके लिये फिर वह साहस नही कर सका। प्रसिद्ध है कि—'गींदोली बाबी गळै, जिका न दे जगमाल'। इस ऐतिहासिक घटनाके सम्बन्धमे गींदोलीरी बात' नामक कथानक प्रसिद्ध है। जगमालकी इस अभूतपूर्व विजयसे राजस्थानका लोक-साहित्य भी बहुत प्रभावित हुआ है। स्त्रियो द्वारा गाया जाने वाला—'गींदोली जगमाल म्हालै, गींदोली किस दीजै हो राज।' लोकगीत आज भी प्रसिद्ध है।

उठै हीज राखी, साथै ल्याया नही[1] ।

कितरैहेकै दिने सोळकणी बेटो जायो[2] । नाव[3] कूभो दियो । नानाणै हीज[4] मोटो हुवै ।

एकदा प्रस्ताव । रावळ मालैजी महेवै राज करता थकां पातसाही फोजा महेवै ऊपर विदा हुई[5] । ताहरा मालैजी अमराव तेडिया । कह्यो–'कासू करस्या[6] ?' ताहरा आलोच कियो[7] । कह्यो–'जी आपै लडाई किया पहुचा नही । ताहरा हेमो बोलियो–'जी रातीवाहो देस्या[8] ।' ताहरा मालोजी बोलिया–'भली कही ।' ताहरा रातीवाहो थापियो[9] । ताहरा मालैजी हुकम कियो–'सिरदारांरा नाव माडो ।' ताहरा सातवीसी सिरदार नावै मडाया[10] । इतरा ठाकुरांनू हुकम कियो–'थे रातीवाहो द्यो[11] ।' सु तुरकारै हाथिया ऊपर कनाता चालै, काठरा थाभा चालै । जाहरा उतरै, ताहरा घर वणाय लै । सिरदार तो घर माहै उतरै । इसो जतन करै । यु करता महेवैरै नजीक आय उतरिया । ताहरा ईया ठाकुरा रातीवाहैरी तयारी कीनी । ताहरा जगमाल मालावत, कूपो मालावत, हेमो सीमाळोत, घडसी रतनसीओत–ईयां ठाकुरा सिरदार मारणो अटकळियो[12] । सिरदारा आपस मे कह्यो–'ठाकुरे ! मुगल तो घर माहै छै । सु थाभो तोड अर घर माहै घोडो घालणो, अर सिरदारनू घाव करणो[13] । अर आप थाभो तोड गळी करनै घोडो घालणो[14], अर घाव करणो । बीजैरी सेरी माहै घोडो घालणो नही[15] ।' इसो वयण

---

1 सोलकनीको वही रखा, अपने साथ नही लाये । 2 कितनेक दिनोंके बाद सोलकनीको पुत्र उत्पन्न हुआ । 3 नाम । 4 ननिहाल । 5 मालाजी जिन दिनो महेवामे राज्य करते थे, तब महेवे पर बादशाही सेना रवाना हुई । 6 क्या करेंगे ? 7 तब परामर्श किया । 8 रात्र्याक्रमण करेंगे । 9 तब रात्र्याक्रमणका निश्चय किया । 10 तब एक सौ चालीस (७×२०, सात बीसी = १४०) सरदारोंके नाम लिखे गये । 11 इतने ठाकुरोको आज्ञा की गई कि तुम रात्र्याक्रमण करो । 12 इन ठाकुरोंने सरदारको मार देनेकी तजवीज सोची । 13 और सरदार पर प्रहार करना । 14 अपने आप कनातके थंभको तोड कर गली बना ले और उसीमे अपना घोडा डाले । (दूसरेकी बनाई हुई गलीमे नही डाले ) । 15 एककी बनाई हुई गलीमे दूसरा कोई अपना घोडा उधर नही डाले ।

दिनरो कियो[1]। बीजा असवार फोज ऊपर नांखो[2]। ताहरां रात पोहर १ गई, ताहरा ईयां ठाकुरां रातीवाहो दियो[3]। ताहरां हेमै सीमाळोत जाइ पैहली तोडि कनात, भाज थाभो[4], अर मुगलनू घाव कियो। मारनै माथैरी कुलह लीधी[5]। अर जगमाल मालावत घोड़ो दावियो, मु थाभो खिसियो नही। खस रह्यो[6]। ताहरा हेमैरी गळी कीधी[7] तियैमे घोडो घाल अर घाव कीधो, सु हेमै दीठो[8]। अै ठाकुर सिरदार मुगल मार बीजो[9] साथ सरव भांज, अै ठाकुर ऊभा रह्या। मुगल नाठा[10]। ईया साथ लूटियो। पछै आय रावळजीनू सलाम कीधी। दरबार जोड रावळजी बैठा। सारैही साथरो मुजरो लियो। ताहरां कुवर जगमाल कहै–'सिरदारनू म्हारो घाव छै[11]।' 'ताहरा हेमो सीमाळोत कहै–'कोई सहनाण द्यो[12]। ताहरां रावळ मालोजी बोलिया–'जिया सिरदार मारियो, तियां कनै सहनाण हुसी[13]।' ताहरां हेमै सिरदाररै माथैरी कुलह काढ दीधी। कह्यो जी– 'जगमालजी ! म्हां मारियो मु थाईज मारियो छै[14]। पण थांनू आ बात चाहीजै नही[15]। म्हे तो थांहरां रजपूत छा। म्हांरो थे वांनो वधारो तो भलो छै, किना यु करचा भलो ? पहली तो थां म्हारी गळी कीधी, माहै घोड़ो घालियो, पछै था मारियैंनू घाव कियो, सु थां मांहै जगमालजी चूक छै[17]। आपा बोल किसो कियो हुतो[18]।'

---

1 दिनमें सभीने इस प्रकार वचन दिया। 2 दूसरे सवार सेना पर आक्रमण करें। 3 तब इन ठाकुरोंने रात्र्याक्रमण किया। 4 थभेको तोड़ कर। 5 मार कर सिर परकी कुलह ले ली। कुलह=लोहेकी टोपी, शिरस्त्राण। 6 खूब पच रहा, किन्तु थभा नही खिमा। 7 तब हेमेकी बनाई हुई गलीमे अनुसरण किया और उसके भीतर अपना घोडा प्रवेश करके प्रहार किया। 8 हेमेने ऐसा करते हुए देख लिया। 9 दूसरा। 10 मुगल भाग गये। 11 सरदार पर घाव मैंने किया है। 12 कोई निशान हो तो दो। 13 जिसने सरदारको मारा है, उसके पास कोई निशान होगा ही। 14 जगमालजी ! हमने मारा है सो तो आपहींने मारा है। 17 लेकिन आपको यह बात नही करनी चाहिये। 16 हमारा स्वरूप (प्रतिष्ठा) बढाना अच्छा है अथवा यो करना अच्छा ? आपही सोचें। 15 देखिये ! पहले तो, मैंने जो गली बनाई थी उसीमे आपने अनुसरण किया और अपना घोडा अंदर प्रवेश किया। मेरे द्वारा मारे हुए पर आपने प्रहार किया। जगमालजी ! यह आपकी भूल है। 18 अपनने निश्चय कौनसा किया था ?

ताहरा जगमाल हेमैसू रीसाणा[1]।

'दिन ५ तथा ७ आडा घातिनै एक दिन जगमाल कह्यो–हेमाजी ! घोडो थे मोनू द्यो, थे मो कना बीजो घोडो ल्यो[2]। 'कह्यो जी–म्हा कनै घोडा, रजपूत छै सु थाहरा हीज छै। थांहरै कामनू ही छै[3]।' कह्यो–'था माहरै कामनू तो छो, पण घोडो मोनू द्यो।' ताहरा हेमो कहै–'राज ! घोडो न द्यु[4]।' तो कह्यो–'थे माहरा चाकर नही।' ताहरा हेमै कह्यो–'नही तो नही[5]।

हेमै वास छोडियो। हेमो जाय घूघरोटरै पहाडा पैठो। हिवै हेमो मेवासी हुवो[6]। महेवैरी धरती उजाडै। सातवीसी गाव महेवैरा माहि धुवो धुखै नही[7]। इसो जोर घालियो कै के जाळोररी मांहै वसिया, के जेसळमेररी माहै वसिया[8]। रईयत सरब गई। धरती हेमा आगै वस सगै नही[9]। कितराहेक वरस युही धोकळ रह्यौ[10]। हिवै रावळ मालोजी कुटेवा पडिया[11]। यु करता घट घणो वेचाक हुवो[12]। ताहरा दान पुण्य कियो। जाहरा मालोजी अतकाळ आया। ताहरा बेटा, पोतरा, भाई सरब उमराव एकठा हुवा छै। ताहरा मालोजी बोलिया–'इतरा दिन तो हेमै देस मारियो[13]। हिवै हू घरै न हुवो, ताहरा हेमो महेवैरै किवाडै घाव करसी[14]। प्रोळ आय ठाहोकसी[15]। इसडो कोई रजपूत छै जु हेमैरी पूठ राखै[16]?' वार २-३ रावल मालैजी कह्यो, पण कोई बोलै नही। ताहरा कुभो जगमालोत बोलियो–'ठाकुरे ! बोलो काई नही। खेडरा ऊपना

---

1 तब जगमाल हेमेसे नाराज हो गया। 2 अपना घोडा मुझे दो और मेरे पाससे दूसरा घोडा ले लो। 3 तुम्हारे कामके लिये ही है। 4 राजकुमार ! घोडा नही दूगा। 5 नही तो नही सही। 6 अब हेमा लुटेरा हो गया। 7 महेवेके १४० गावोमे धुआँ नही निकलता है। अर्थात् सभी घर खाली हो गये। 8 ऐसा आतक जमाया सो भयके मारे कई जालोर प्रान्तमे और कई जैसलमेर प्रान्तमे जाकर बस गये। 9 हेमाके आतकमे देश आबाद नही हो सकता। 10 कितनेक वर्षों तक यह उपद्रव योही चलता रहा। 11 अब रावल मालाजी रोगग्रस्त हुए। 12 इस प्रकार रोग-निवृत्त नही होनेसे शरीर अधिक अस्वस्थ हो गया। 13 इतने दिन तो हेमेने देशको लूटा। 14 अब ज्योही मैंने कूच किया नही, त्योही हेमा महेवेके दर्वाजे पर आकर घाव करेगा। 15 पौलि पर आकर छापा मारेगा। 16 ऐसा कोई राजपूत है जो हेमेका पीछा करे।

घोड़ा, खेडरा ऊपना रजपूत छो । बोलो क्यु नहीं छो ? रावळजी कहै छै[1] ।' ताहरां रजपूत बोलिया । कह्यो–'जी, आगै हेमै ऊपर बीड़ो उठावणो छै । अर घूंघरोटरा पहाड छै । थेई कूभाजी बोलो नहीं, पाटवी कुवररा बेटा छो[2] ।' ताहरा कूभै कह्यो–'वाह ! वाह !' ताहरा कूभै ऊठनै रावळ मालैजीनू सलाम करनै कह्यो–'बाबाजी ! आगै हेमै उजाड़ कियो, हिवै हेमो उजाड करै सो कूभो इग्यारह गुणो सोळै ।[3] ।' ताहरां रावळजी बोलिया–'सावास ! कूभा !' हू जांणतो हुतो, तू हेमा ऊपर बीडो उठाईस[4] । ताहरा रावळ मालैजी आपरी कटारी तरवार कूभैनू वधाई । कूभै ऊपर राजी हुवा । आपरी असवारीरो घोड़ो वगसियो । आप जीव सोरो कियो[5] । कूभो वाहुडियो, ताहरां वांसै रजपूत हसण लागा[6] । 'जाणा छा कूभोजी नानांणै जाइ अर हुड़ियारै माथै कटारी भाजसी[7] ।' आ कूभैनू खवर हुई । 'रजपूत वांसै हसण लागा ।' यु करता रावळजी देवगत हुआ[8] । रावळजीरो कृत्त कियो[9] । जगमालजी टीकै बैठा । हेमै पण आ वात साभळी[10] । रावळ मालोजी विसरामियो[11] । अर आप फुरमायो जु–'हेमो आवसी ताहरा ?' कूभै सलाम कीवी–'हेमो हू पालीस[12] ।' ताहरा हेमो पण वैस रह्यो । हेरा लगाइ फीटा किया[13] । जु 'कूभो कठैई जावै अर

---

1 ठाकुरो ! आप कोई बोलते ही नहीं । खेड जैसी वीरप्रसू धरामे आप उत्पन्न हुए है, आपके घोडे भी खेडमे ही उत्पन्न हुए हैं, फिर भी आप क्यों नहीं बोल रहे हो ? रावलजी आपको पूछ रहे हैं । 2 तब राजपूतोंने कहा—आगे हेमेके ऊपर बीडा उठाना है (कोई ऐसा-वैसा व्यक्ति नहीं है) और जहा घूघरोटके पहाड हैं । आप भी कु भाजी बोल नहीं रहे हो, आप तो पाटवी कु वरके पुत्र है । 3 पहले तो हेमाने जो उजाड किया सो तो कर ही दिया, किन्तु अब यदि उजाड करेगा तो कुंभा उसका ग्यारह गुणा भरेगा । 4 मैं जानता था कि तू हेमाके ऊपर बीडा उठायेगा । 5 स्वयको (मालाजीको) सतोष हुआ । 6 कु भा जब वहासे लौट गया तो पीछे राजपूत हसने लगे । 7 जानते हैं, यह ननिहाल जाकर भेडोंके ऊपर अपनी कटारी तोड़ेगा । अर्थात् हेमेके विरुद्ध इसका कुछ कर सकना असभव वात है । 8 इस प्रकार रावलजी देवगतिको प्राप्त हुए (मर गये) । 9 मृतक सस्कार और भोज आदि किये गये । 10 हेमेने भी यह वात सुनी । 11 कि रावल मालाजी स्वर्ग पहुच गये । 12 हेमाको मैं रोकू गा । 13 तब हेमा भी चुप रह गया और धावे बोलने बंद कर दिये ।

हू चढ़ू[1] ।' अर कूभो पण सावचेत रहै । आठो पोहर हथियार बाध्यां बैठो रहै । घोडा २ पलाण माडिया रहै[2] । च्यार पोहर घोडारी चोकी । एक घोडो चरै, एकै घोडै पलाण माडियै रहै । ईयै भात कूभो रहै । इसी कूभैरी धाक । तैसू हेमो देसमे पैसण पावै नही[3] । आ वात सिगळै कोटै सुणी[4] ।

ताहरा राणो माडण सोढो ऊमरकोटरो धणी, तिये आ वात सुणी, अर कह्यो–[5]'कूभो वडो रजपूत, जियेरी धाकसू हेमो वैस रह्यो[6] । महेवैरी धरती वसी[7] । फेर हेमो महेवैरीमे न आयो[8] । इयेनू परणाईजै इसो रजपूत छै[9] । ताहरा सिगळां ही रजपूता कह्यो–'वाह ! वाह !' ताहरा बाभण तेडनै नारेळ दियो[10] । कह्यो जी–'कूभै जगमालोतनू महेवै जाय नाळेर वदावो[11] । बाईरी सगाई कूभैसू कीवी छै[12] ।' ताहरा बाभण नाळेर ले हालियो नै महेवै आयो[13] । पछै भलो मोहरत जोवाड[14] कूभैनू प्रोहित नाळेर दियो, ताहरा कूभै ऊठ, सलाम कर नाळेर लियो[15] । कूभै कह्यो–'राणैजी मोनू रजपूत कियो । हिवै हू रजपूत हुवो । मोनू मोटो कियो[16] ।' बाभणनू भलीभात विदा दीनी । अर कह्यो–'मोनू रावळजी देस भळायो छै, जे हू हिमारू परणीजण आऊ तो हेमो तुरत महेवै

---

1 इस टोहमें रहता है कि कुभा कही जाये और मैं चढाई करू । 2 दो घोडे हर दम जीन कसे तैयार रहते हैं । 3 कुभेका ऐसा आतक कि हेमा देशमें (महेवेकी धरतीमे) प्रवेश ही नही कर पाता । 4 यह वात सभी गढोंने (गढपति राजाओंने) सुनी । 5 तव यह वात ऊमरकोटके स्वामी राणा माडण सोढाने भी सुनी और उसने कहा । 6 कुभा वडा वीर राजपूत है जिसकी धाकसे हेमा जैसा वीर भी चुप वैठ गया । 7 महेवा प्रदेश पुन वस गया । 8 हेमा फिर महेवा प्रदेशमे नही आया । 9 यह ऐसा राजपूत है कि इसका विवाह (अपनी लडकीको देकर) कर दिया जाय । 10 तव सभी राजपूतोने कहा—'वाह ! वाह ! (वहुत अच्छी वात है) । तव व्राह्मण को वुला कर नारियल दिया । 11 उसे कहा कि महेवे जाकर कुभे जगमालोतसे इस नारियलका वदन कराओ (नारियल-वदन द्वारा सम्वन्ध स्वीकृत कराया जाय ) । 12 कि वाईकी सगाई कुभेसे की है । 13 तव व्राह्मण नारियल लेकर चला और महेवे आया । 14 दिखा कर । 15 तव कुभेने उठ कर नारियलको प्रणाम किया और नारियल ले लिया । 16 कुभेने कहा—'राणाजीने मुझको राजपूत वनाया और अव मैं राजपूत वन गया । मुझको वडा वनाया ।

आवै । हूं आय न सकूं[1] ।' ताहरा आदमी अमरकोट गयो । जायनै राणै माडणनूं हकीकत कही । ताहरा राणै माडण कह्यो–'ठाकुरे ! कूंभो इसो रजपूत, जियेनूं घरै ले जायनै परणावीजै[2] ।' ताहरां माडण कहाडियो–'अमरकोटसूं नौ कोस महेवो छै । पचास कोस म्हे आवा छा, पचास कोस थे आवो ।' इसो कहाडियो[3] । ताहरा आदमी आयो नै कूंभैनूं कह्यो । कूंभै आदमी अपूठो मूकियो, अरे कहाडियो–'छाना-छांना आवज्यो[4] । ताहरा राणै माडण सेजवाळ तयार कराया । लोक साथ ले अर हालिया[5] । कूंभैनूं आदमी मूकियो[6] । कूंभो वर वण चालियो[7] । आय राणा माडणसूं मिळियो । माडण कूंभानूं देख राजी हुवो । कूंभो परणियो । हथळेवो छोडियो, अर कूंभै कह्यो–'मोनूं विदा द्यो[8] ।' ताहरा कह्यो जी–'दोय पोहर रहो, राजलोक कहै छै[9] । यु वात करता वार लागी[10] । तितरै[11] आदमी आय कह्यो–'जी हेमो आयो । आई नै महेवैर किवाडै घाव दियो[12] । 'हेमैरा हेरा फिरता हुता[13] । कूंभो चढे और महेवै आवै । सु हेमो आयो, ताहरा कूंभै विदा मागी । घोडै असवार हुवो । ताहरा रायसिंघ माडणरो बेटो, पाटवी कुंवर तिको बोलियो, कह्यो–'जी जिका वीदणी तियैरो मूंहडो देखो[14] । ताहरा घोडै चढियै हीज वैहलरी खोळी ऊंची करनै मूंहडो जोयो[15] । कह्यो–'जी जोयो छै, सुख पावज्यो ।[16] ।'

---

1 मुझको रावलजीने देश सुपुर्द किया है । यदि मैं इस समय विवाह करनेको आ जाऊं तो हेमा तुरत ही महेवे पर चढ कर आ जाये । अतः मैं इस समय नहीं आ सकता । 2 तब राना माडणने कहा—'ठाकुरो ! हेमा ऐसा वीर राजपूत है उसे उसके घर जाकर कन्याको व्याही जाये । 3 इस प्रकार कहलवाया । 4 कुम्भेने आदमीको पीछा लौटाया और उसके साथ कहलवाया कि 'चुपचाप गुप्त रीतिसे आना' । 5 आदमियोको साथ लेकर चला । 6 कुंभेको आदमी भेजा । 7 कुंभा दूल्हा बन कर चला । 8 कुंभेका विवाह हो गया । ज्योंही हथलेवा छूटा त्योंही कुंभेने कहा—'मुझे आज्ञा दीजिये । 9 स्त्रीजन कह रही हैं कि दो पहर ठहरें । 10 इस प्रकार बात करनेमें देर लग गई । 11 इतनेमें । 12 अजी ! हेमा आ गया और उसने आकर महेवेके किवाडो (दर्वाजे) पर घाव किया । 13 हेमेके जासूस फिरते थे । 14 अजी ! जो दुलहिन है उसका मुंह तो देख लो । 15 तब घोडे पर चढे हुए ही वहलीकी खोल (पर्दा, आवरण) उठा कर मुंह देखा । 16 और कहा कि 'देख लिया है, सुख की प्राप्ति हो ।

ताहरा रायसिघ पण साथ हुवो छै। सु रायसिंघ वडो बाणा-वळी[1]। रायसिघरो वाह्यो (बाण) खाली न पडै[2]। ताहरा दोनू चढि खडिया। ताहरा रायसिघ बोलियो–'कूभाजी! महेवै जाय कासू करस्या? अडोअड़ हालो, ज्यु घूघरोटरा पहाडनू खडो। ज्यु जाइ पहुचा[3]।' ताहरा कूभो बोलियो–थे धाडवी, रायसिघजी! सरब मारग जाणो छो[4]। म्हे कासू जाणा मारगरी सार[5]? ताहरा घूघरोटनू चढ खडिया छै[6]। दोय पोहर रात खडिया, दो पोहर दिन खडिया।

ताहरा आगै सेचाळ कोहर तेवै छै[7]। पणिहार घडो भरियो छै। कहै छै–'रे भाई! मोनू घडो उखरगाय[8]।' ताहरा सेचाळ उखणावै नही। उवा नहोरा करै छै[9]। ताहरा कूभै सेचाळनू कह्यो– रे मुहडै मूछ छै, मरद कहावै छै, इये पिणियारीनू घडो क्यू नही उखणावै छै? ताहरा सेचाळ बोलियो–'उतावळा छो तो राज उखणावो[10]। ताहरा कूभै नैडै हुइ घडैनै हाथ घाति अर ऊचो लियो[11]। अर घोडो आपियो[12]। काछी घोडो हुतो। गजदा २, ३, ४ वार घोडै कुळाछा खाधी[13]। कूभै घडो इमहीज हाथा माहै राखियो[14]। घोडो थाभि ठाढो करनै कह्यो[15]–'बाई! नैडी आव[16]।' ताहरा पणि-हाररै माथै घडो मेलियो छै। ताहरा पणिहार बोली–'वीरा! तू

---

1 रायसिह बाण चलानेमे विशेषज्ञ। 2 रायसिहका चलाया हुआ बाण व्यर्थ नही जाता। 3 कुभाजी! अपन महेवे जाकर क्या करेंगे? अपन तो उसको पहुचते हुए चले और घूघरोटके पहाडकी ओर चलाएँ सो जाकर वहा पहुच जायें। 4 आप तो लुटेरे हैं रायसिहजी! आप सभी मार्ग जानते हैं। 5 मार्गके संबधमे हम क्या जानें? 6 तब घूघरोटके लिये चढ करके चले हैं। 7 सेचाल कुएँमेसे पानी निकाल रहा है। सेंचाल = बैलोको चला कर मोटके द्वारा कुएँमेसे पानी निकालने वाला व्यक्ति, सिचाईका काम करने वाला, सींचक। 8 मुझको घडा उठवा दें। 9 वह निहोरा कर रही है। 10 इतने उतावले हो तो आप ही उठवा दे। 11 तब कुभेने निकट आकर, घडेको हाथसे ऊचा उठाया। 12 और घोडा चमक गया। 13 काछी घोडा था, उसने अपने अगले दोनो पावोको ऊचा और उठा टप्पे भर कर छलागे मारी। 14 इस पर भी कुभेने घडेको उसी प्रकार हाथमे पकडे रखा। 15 घोडेको थाम कर और उसे शान्त करते हुए कुभेने कहा। 16 बाई! निकट आ।

कूभो जगमालोत नही छै[1] ?' नाहरां कह्यो–'कूभो हू छू ।' कह्यो–तू हेमैरै वासै चढियो[2] छै ?' कह्यो–'होवै[3] ।' ताहरा पणिहार कह्यो–'हेमो तो घरै गयो हुसी ।' कह्यो–'रे वीरा ! तूं पुरख मे रतन, हेमैरै वांसै कांई जाय ? हेमो तो जमरी दाढां माहै छै[4] । जो जरडा इण तैंरो कासू मारणो[5] ? तू अपूठो जा[6] । वळै आयो रहसी[7] । कह्यो–'जी म्हे रावळजीनू वोल दियो छै[8] । ताहरा पगै-पगै हालिया[9] । कोस दोयइक परै जावै तो हेमो उतरियो छै[10] । साथ उतरियो छै । सूखड़ी अणाई छै[11] । वैठा रजपूत खावै छै । हेमो डोरडो गावै छै ।

'लाडा ! थारै डोरड़ै वीस गाठ हो'[12]

यु गावतां कूभो आयो । कह्यो–'जी, साथ ! साथ[13] !' यु कहता पैहली जाय ऊभा[14] । ताहरा हेमो वोलियो–'सावास, सावास ! कूभा सावास तोनू ! म्हारो तै पूठो दावियो[15] ! सावास सपूत !' इतरै रायसिंघ आयो । ताहरां हेमो वोलियो–कूभा ! मालांणा ! कटक वाळा वनोडा मतां नाखै ? साइया मिळो[16] ।' ताहरा कूभो घोड़ै हू[17] उतरियो । ताहरा रायसिंघ वोलियो–कूभा ! क्यु उतरै ? म्हारा हाथ देख । सिगळाहीनू कवूतर दाई वीधू[18] ।' ताहरां कूभो

---

1 भाई ! तू कुभा जगमालोत तो नहीं है ? 2 तू हेमेके पीछे चढ कर आया है ? 3 हा । 4 भाई ! तू पुरुषोमे रत्न, हेमेके पीछे क्या जाय ? यह तो यमकी डाढमे ही है ? 5 मरे हुएको क्या मारना ? 6 तू लौट जा । 7 यह तो फिर कभी आया रहेगा । 8 मैंने रावलजीको वचन दिया है । 9 तब उसके खोज सम्हालते-सम्हालते चले । 01 कोस दो-एक परे जाते है तो (देखते हैं कि) हेमा अपना डेरा लगाए हुए वैठा है । 11 मिठाई आदि भोजन-सामग्री मगवाई गई है । 12 हेमा 'डोरडा' गा रहा है—'लाडा ! थारै डोरडै वीस गाठ हो = हे दूल्हे ! तेरे विवाह सूत्रमे वीस गाठें हैं ।' 'डोरडा या काकण-डोरडा' = विवाहके पूर्व दूल्हे और दुलहिनके हाथमे वाधा जाने वाला एक मागलिक सूत्र है जिसमे गाठें दे कर कई मागलिक वस्तुएं वाधी जाती हैं । डोरडाके लोक-गीतोमे विवाह-सूत्रमे वँध जानेके उत्तरदायित्व पर वडा ही महत्त्वपूर्ण प्रकाश डाला गया है । 13 हेमाके साथियो ने कहा—'हमला ! हमला !' साथ = (१) हमला, (२) सेना, (३) मनुष्य, (४) साथी । 14 वे यो कह ही नही पाये थे, जिसके पहिले ही ऊपर जा खडे हो गये । 15 मेरा पीछा तूने किया । 16 तब हेमाने कहा—हे कुभा ! हे मालाणा ! तेरे साथ वालोको व्यर्थमे क्यो वीचमे डालता है ? अपन ही निपट लें । 17 से । 18 मेरे हाथ देख, अभी सबको कवूतरोकी भाति वीध लूगा ।

वोलियो–'रावळ मलीनाथजीरी आण छै, वोलो तो। मोनू उतरण द्यो[1]। ताहरा रायसिघ हू जोरावरी कूभो उतरियो[2]। जायनै डेरै माहै हेमैनू तसलीम कीधी[3]। हेमै कह्यो–'सावास कूभा!' ताहरा हेमो कहै–'कूभा! तू घाव कर।' कूभो कहै–'हेमाजी! थे घाव करो[4]।' हेमो कहै—'कूभा! तू बाळक छै। म्हे घणा नीव वधाया छै[5]।' ताहरा कूभो कहै छै–'हेमाजी! थे घाव करो।' हेमो कहै–'कूभा! थारै अजेस पिंड लोह नही लागो छै[6], बाळक छै। तू घाव कर। हू वडेरो छू, घाव क्यू करू[7]?' कूभो कहै–हेमाजी! वरसै थे वडा, पण पगै म्हे वडा। था माहरौ धान पलैमे लियो, थे माहरा चाकर, तै मे वडा, थे घाव करो[8]।' ताहरा हेमै कह्यो–'हू कासू करू? तू न रहै हीज[9]?' ताहरा हेमै घाव कियो कूभैनू। वढ खपर पैडो वाढि, टोप वाढि, भुहारा वाढि, काणेठै आवती रही[10]। कूभै घाव कियो, सु हेमैरा दोय धडा किया। हेमो पडियो। ताहरा कूभै कटारी काढि हेमैरै हीयैमे मारी। पकडि ताडियानै भाज नाखी[11]। कह्यो–'मालाणा कटकानू कहज्यो, कटारी हेमैरी छातीमे भागी छै, हुडिया ऊपर नही भागी छै[12]। यु कहता कूभैरो हस उडियो।

---

1 तब कुभाने कहा—'तुम्हें रावल मल्लीनाथजीकी सौगध है, यदि बोले तो! मुझे ही उतरने दो।' 2 तब रायसिहसे हठ करके कुभा घोडेसे उतरा। 3 डेरेमे जाकर हेमेको प्रणाम किया। 4 कुभा कहता है कि 'हेमाजी! पहले प्रहार तुम करो। 5 हेमा कहता है कि—'कुभा! तू बालक है। मैं तो अनेक वार प्रहारो पर नीमके पट्टे वंधवा चुका हू। अर्थात् अनेको प्रहार सहन किये है। नीव वधावणो = घावो पर नीमके पट्टे वंधवाना। 6 तेरे शरीरमे अभी तक कोई प्रहार नही लगा है। 7 मैं वडा हू, मैं पहले कैसे प्रहार करू? 8 कुभा कहता है, हेमाजी! वर्षोंमे तुम वडे जरूर हो, परतु पदमे मैं वडा हू। तुमने हमारा अन्न खाया है, हमारे चाकर हो और फिर आयुमे वडे। अत पहले तुम घाव करो।' 9 तब हेमाने कहा—'जब तू मानता ही नही है, तो मैं क्या करू? विवश हू।' 10 तब हेमाने कुभे पर प्रहार किया। तलवारकी बाढ ऐसी चली कि जिससे गोल चक्केकी भाँति खोपडी कट गई, टोप कट गया और भौंहोको काटती हुई कानकी नोक पर आ लगी। 11 कुभेने ऐसा प्रहार किया कि हेमाके दो टुकडे कर दिये। हेमा गिर गया। कुभेने अपनी कटारी निकाल कर हेमेकी छातीमे मारी और फिर उसको पकड कर ऐसा फिराया कि पसलियोकी हड्डिया तोडती हुई उसकी ताडियाँ भी टूट गई। 12 पासमे खडे हुए अपने आदमियोको कहा कि—'मालाणा कटकके सरदारोको कहना कि कटारीको हेमाकी छातीमे तोडा है, मेढो पर नही तोडा है।

हेमो अजूस जीवै छै[1] । इतरै साथ महेवैरो आयो । कह्यो–'जी साथ आयो ।' हेमो बोलियो–'रे कुण छै[2] ?' कह्यो–'जगमाल छै ।' ताहरा हेमै कहाडियो–'राज ! किसै वासतै[3] ?' कह्यो–'जगमाल ! तोमे दोय चूक छै । म्हारो जीव नीसरै ताहरा आए[4] ।' ताहरा कह्यो–'जी, किसो चूक मोमे[5] । ताहरा कह्यो–'एक तो तैं मो सारीखो रजपूत घोडैरै वासतै काढियो[6], सु सात ७ वरस ताई[7] महेवैरी धरती वसण न दीधी । नही तो सातवीस गाव महेवै वासै हुता । अर वळै घणी धरती वासै घालत । राज वधण न दीधो[8] । बीजो, तैं कूभैरी मानै दोहाग दीधो[9] । जे तैं कूभैरी मानै रात दीनी हुवत तो इसडा रतन २।४ पैदा हुवत, तो घर भलो दीसत[10] । तोमे मोटा दोय अवगुण हुआ । जे आपा मेळ हुवत तो कितरी धरती लेवत[11] ।' इतरै हेमैरो ही हस उडियो[12] । जगमालजी उतरिया । साथ सोह उतरियो । दाग दियो[13] ।

एकठा हुयनै महेवै आया[14] । हेमैरै वेटैनू तेडनै वास वसायो[15] । कूभै सोढी परणी हुती सु सेजवाळो आयो । सोढी महेवै आयनै सती[16] हुई । जगमाल महेवै सुखसू राज करै छै ।

दूहा

हेमो होठ डसेह[17], खडग जु आछटचा[18] खत्री ।
भूहारा[19] भांजेह, कूभै काणेठै[20] गई ॥ १

---

1 हेमा तो अभी तक जीवित है । 2 अरे ! कौन है ? 3 आप किसलिये आये हैं ? 4 जगमाल ! तेरे दो अपराध हैं । तू मेरा जी निकल जाय तब आना । 5 मेरेमे कौनसा अपराध है ? 6 एक तो तूने मेरे जैसे राजपूत को एक मात्र घोडेकी वातके लिये निकाल दिया । 7 तक । 8 और और भी बहुतेरी भूमि महेवेके अधिकारमे डालता । तुम्हारा राज्य वढने नही दिया । 9 दूसरी बात, तूने कुंभेकी माताको अमान्य कर दिया । 10 जो तूने कुभेकी माताको सम्मान्य करके ऋतुदान दिया होता तो ऐसे २.४ रत्न और पैदा हुए होते और जिससे तुम्हारा घर शोभा पाता । 11 जो अपने आपसमे मेल होता तो कितनी ही धरती और अधिकारमे कर लेते । 12 इतनेमे हेमेके प्राण-पखेरू उड गये । 13 अग्नि-सस्कार किया । 14 सभी इकट्ठे होकर महेवे आये । 15 हेमाके वेटेको वुला कर अपने यहा रखा । 16 सोढी महेवे आकर सती हुई । 17 होठ डसते हुए । 18 प्रहार किया । 19 भौहे । 20 कनपटी ।

घणू वखाणू घाव, कूभाणा[1] । भागै-कमळ[2] ।
हेमो जिण हाथाव[3] , भुइ[4] पडियौ भख छै जही ।। २
डसै अहर[5] जमदूत, मछर[6] छिळतै मेलियो ।
कूभै वाळो कूत[7], हेमै वप[8] सासर हुवो ।। ३

।। इति वात सपूर्णम् ।।

---

1 हे कुभा । 2 सिर टूट जाने पर, बिना सिरके । 3 हाथोसे । 4 भूमि । 5 अधर, होठ । 6 क्रोध । 7 भाला । 8 शरीर ।

॥ श्री गणेशायनम् ॥

# अथ वात वीरमजीरी लिख्यते

वीरमजी महेवैरै पासै गूढो[1] कर वसिया छै। सु जिकोई महेवै माहे खून कर वीरमजीरै गूढै आवै तियेनू वीरमजी राखै[2]। वासै कोई आवण पावै नही[3]। इयै भात रहै।

एकदा प्रस्ताव। जोईयो दलो गुजरात चाकरी गयो हुतो भाईयासू विढनै[4]। उठै गुजरात घणा दिन रह्यो। ओथ वीमाह कियो[5], घणा दिन रह्यो। उठासू दलारी इच्छा ऊपनी, देस जाईजै[6]। ताहरा उठाहू चालियो[7]। आवतो-आवतो महेवै आय नीसरियो। आय कूभाररै घर डेरो कियो छै। साथै लुगाई छै, कूभारीनै कह्यो–'एक नाई ल्याव, जु म्हारी खिजमत करै[8]। कूभारी नाई वुलाय लाई। नाई खिजमत कीधी। नाई घोडी दीठी[9]। द्रव्य कनारो दीठो[10]। नाई जोयनै जगमालजी माल्लावतनू कह्यो–'एक कोई धाडवी आयो छै[11], कूभारीरै उतरियो छै। उवैरै मखरी घोडी छै[12]। राज ! एक वैर वोहत फूटरी छै, पदमणी छै[13]।' ताहरा आदमी मेलियो। खवर कराई। कह्यो–'जावो खवर करो, कुण छै ?' ताहरा आदमी कुभारीरै घरे आया, जासूस थका[14]। देख अर गया। ताहरा कूभारी वोली–'ठकुराळा ! तो ऊपर चूक छै[15]।' कह्यो–'जो, कैरो[16] ?' कह्यो–'वावा ! तोनू मारसी[17], घोडी नै थारी वैर लेसी[18]। कह्यो–'कुण ?

---

1 रक्षा स्थान। 2 कोई भी व्यक्ति महेवेमे कोई अपराध (हत्या) करके आ जाये उसे वीरमजी अपने यहा रख लेते है। 3 उसके पीछे कोई नही आने पाता। 4 जोईया दला अपने भाइयोमे लड कर गुजरातमे चाकरी करनेको चला गया था। 5 वही विवाह किया। 6 वहा दलाकी इच्छा हुई कि अब देशको जाना चाहिये। 7 तब वहासे रवाना हुआ। 8 एक नाईको वुला ला जो मेरी हजामत वना ले। 9 नाईने दलाकी घोडीको देखा। 10 उसके पासका धन भी उसने देखा। 11 कोई एक लुटेरा आया है। 12 कुम्हारीके यहा ठहरा हुआ है। उसके पास बढिया घोडी है। 13 उसके साथ एक स्त्री वहुत सुदर है, पद्मिनी ही है। 14 तब जासूस होकर कुम्हारीके घर पर आदमी आये। 15 हे ठाकुर ! तेरे पर धोखा है। 16 किसका। 17 तुझको मारेंगे। 18 घोडी और तुम्हारी स्त्रीको ले लेंगे।

कह्यो–'गामरो ठाकुर।' ताहरा कह्यो–'किही ऊबरू हो[1]।' कह्यो–'जी, वीरमजीरै गुढै जावो तो ऊबरो। ताहरा घोडै पलाण माडि असवार हुवो। बैरनै साथै ले वहीर हुवो[2]। वीरमजीरै गुढै जाय पहुतो[3]। खबर हुई, ताहरा साथ अपूठो गयो[4]। कह्यो–'जी, ऊ तो[5] वीरमजीरै गूढै गयो। ताहरा जगमाल बैस रह्यो[6]।

दिन ५।७ वीरमजी दलै नू राख अर विदा दीनी[7]। ताहरा दलै कह्यो–'वीरमजी! आज वाळा दिन थाहरा दिया छै[8]। जे थे माहरै गूढै आवस्यो तो म्हे थारा हीडा करस्या[9]। थाहरा रजपूत छा[10]।' ताहरा दलैनू वीरमजी पोहचतो कियो।

पछै मालैजीरा बैटा नै वीरमजी वणै नही[11]। ताहरा वीरमजी महेवो छाडनै जेसळमेर आयो। जेसळमेर ही टिकियो नही[12]। ताहरा अपूठो नागोर आयो[13]। नागोर ही रह्यो नही। ताहरा नागोररै देसरो उजाड कियो। गाम लूटि अर जागळू आया[14]। ताहरा जागळू माहै ऊदो मूळावत हुतो[15]। कहियो–'वीरमजी! थे आघा खडो। म्हासू थे राखिया न जावो[16]। नागोररो था उजाड कियो। वासै वाहर हू पालीस[17]। थे आगै जोईये पधारो।' ताहरा वीरमजी आघा जोईया पधारिया[18]।

वासै साथ नागोररो आयो। आय जागळू डेरो कियो। ओ कोट जडि वैस रह्यो[19]। ताहरा खान ऊदैनू कहाडियो–'माल ल्यावो, अर

---

1 किसी प्रकार वचू भी। 2 स्त्रीको साथ लेकर रवाने हुआ। 3 पहुचा। 4 जब यह मालूम हुआ (कि दला यहासे चला गया है) तो जगमालका साथ लौट गया। 5 वह। 6 तब जगमाल विवश होकर वैठ गया। 7 पाच-सात दिन रख कर वीरमजीने दलेको जानेकी आज्ञा कर दी। 8 तब दलेने कहा—वीरमजी! ये दिन आपके दिये हुए हैं। 9 तुम हमारे गूढे (निवास-स्थान) पर आवोगे तो हम तुम्हारी सेवा करेंगे। 10 हम तुम्हारे राजपूत है। 11 अब मालाजीके वेटो और वीरमजीके पटती नही। 12 जैसलमेरमे भी टिक नही सका। 13 तब लौट कर नागौर आया। 14 तब नागौर प्रान्तको उजाड कर दिया और वहाके गावोको लूट कर जागलू आ गया। 15 था। 16 वीरमजी! आप आगे चले जायं, हमारेसे आपका रखना वन नही पाता। 17 आपके पीछे वाहर आयेगी उसको मैं रोकूगा। 18 तब वीरमजी आगे जोईयोके यहा चले। 19 यह कोट वद करके वैठ गया।

वीरम ल्यावो[1] ।' ताहरा खानसू ऊदो मिलण आयो । ताहरा खान ऊदैनू पकड लियो । कहियो–'जी ! वीरम ऊदैरै पेट माहै छै।' ताहरां ऊदैरी मानू बोलाई । कह्यो–'वीरम बावडो, नही तर ऊदैरी खाल कढाऊ छू, अर भुस भराऊ छू[2] ।' ताहरा ऊदैरी मा कनै ऊभी राखी छै[3] । अर कह्यो–'जी, खाल काढो[4] ।' ताहरा ऊदैरी मां बोली–'वीरम तो ऊदैरी खाल माहै न छै, वीरम ऊदैरै पेट माहै छै, पेट फाडो ।' ताहरा खांन बोलियो–'देखिया रे ! रजपूताणियाका बळ[5] । बेटै ऊपर कान नही हिलाती है[6] ।' ताहरा खान महरबान हुयनै ऊदैनू छोडियो । वीरमरो गुनो वगसियो[7] । खान उपराठो फिर नागोर गयो[8] । ऊदो जाय जागळू बैठो ।

हिवै वीरमजी जाय जाईये रह्यो[9] । जोईया घणो आदर दियो । घणा हीडा किया[10] । कह्यो–'वीरमजी विखैमे आया छै, वेखरच छै[11] ।' ताहरा दांण माहै विसवो कर दियो[12] । वडी भायप कीधी[13] । अठै वीरमजीरा कामेती दाण ऊपर वैसै[14] रातिरो हैसो वेंहचाइ दै[15] । कदै सरव गोलक मेल आवै । कहै–थे सवारै लेज्यो[16] । जे नाहर बकरी मारै तो एकै बकरीरी इग्यारह बकरी लै । कहै नाहर तो जोईयारो छै[17] ।

---

1 तब खानने ऊदाको कहलवाया कि 'माल लाओ और वीरमको भी लाओ ।' 2 तब ऊदाकी माको बुलवाया और उससे कहा कि 'वीरमको बतलाओ, और नहीं बतलाती हो तो तुम्हारे सामने ऊदाकी खाल खिचवाता हूँ और उसमे भूसा भरवाता हूँ ।' 3 तब ऊदाकी माको पासमे ला कर खडी कर दी है । 4 और कहा कि 'खाल खीच लो ।' 5 तब खान बोला—'अरे देखा तुम लोगोंने ! राजपूतानीके साहसको ।' 6 अपने बेटेके लिये कोई विरोध नही कर रही है । 7 वीरमका अपराध भी माफ कर दिया । 8 खान लौट कर नागोर चला गया । 9 अब वीरमजी जोईयोके यहा जा कर रहे । 10 बहुत सेवा की । 11 वीरमजी आपत्तिके मारे यहा आये हैं, पासमे खर्ची (रुपया-पैसा) नही है । 12 मालगुजारीमे उनका भाग डाल दिया । 13 बडे ही भाईचारेका व्यवहार किया । 14 अब यहा मालगुजारी की वसूलीके लिये वीरमजीने अपने कर्मचारियोको बैठा दिया है । 15 रातको मालगुजारीमें से उनका हिस्सा बाँट कर उन्हे दे देते हैं । 16 कभी सभी आमदनी अपने गोलकमे रख देते है और उन्हे कह देते हैं कि कलकी आमदनी सब तुम ले लेना । 17 यदि कोई नाहर बकरीको मार देता है तो एक बकरीकी जगह ग्यारह बकरी वसूल करते हैं और कहते हैं कि नाहर जोईयोका है ।

एकदा प्रस्ताव । बुकण भाटी आभोरियो, सु जोईयारो मामो छै । सु बुकण पातसाहरो साळो हुतो[1] । सु बुकण नै बुकणरो भाई बेऊ दिल्ली हुता[2] । सु पातसाह कहे–'मुसलमान हुवो ।' ताहरा बुकण नास अर जोईये आयो[3] । अर भाई मुसलमान हुवो[4] । ताहरा बुकण जाईयामे रह्यो । ताहरा बुकणरै पातसाहरै घररो माल, विध-विधरा विछावणा दुलीचा, कपड़ा वीरमजी दीठा[5] । ताहरा बुकणनू कह्यो–'भाटी ! म्हानू भगत कर[6] ।' ताहरा बुकण कह्यो–'वीरमजी ! थानू भगत करीस[7] ।' ताहरा बुकण भगतरी तयारी कीधी[8] । वीरमजीनू तेडिया[9] । ताहरा वीरमजी रजपूतानू कह्यो–'आपे बुकणनू मारिस्या[10] ।' भगतरै मिस जायनै मारिस्या[11] । ताहरा रजपूता कह्यो–'भला राज[12] ।' पछै बुकणरे डेरै आय बुकणनू मारियो । डेरो लूटि माल लियो । घोडा लिया । आपरै डेरै ले आया ।

हिवै जोईयारै मनमे सोच पडियो[13] । 'जोरावर आदमी घरमे आय पैठो[14] । काई ना मारै[15] ?' यु करता दिन ४-५ हुवा । ताहरा फरवास वढायो, ढोलरै वास्तै[16] । ताहरा पुकार गई । 'राज ! फरवास वीरमजीरै लोके वाढियो[17] ।' तोई जोईया गई कीवी[18] । कह्यो–'वीरमजीसू आपा तोडणी नही[19] ।' ताहरा दलैनू वीरमजी तेडायो[20] । 'चूक कर मारू ।' इसी विचारी[21] । ताहरा दलो आयो । खडसलै एकी

---

1 यह बुक्कण बादशाहका साला होता था । 2 बुक्कण और बुक्कणका भाई दोनो दिल्लीमे थे । 3 तब बुक्कण भाग कर जोईयोके यहा आ गया । 4 और उसका भाई मुसलमान हो गया । 5 तब बुक्कणके यहा विविध प्रकारके बिछौने, गलीचे और कपडे आदि बादशाहके घरका माल वीरमजीने देखा । 6 तब बुक्कणको कहा कि–'भाटी ! हमारी आव-भगत करो ।' 7 तब बुक्कणने कहा–'वीरमजी ! मैं आपको गोठ ( प्रीति-भोज ) दूगा । 8 तब बुक्कणने गोठ देनेकी तैयारी की । 9 वीरमजीको बुलवाया । 10 अपन बुक्कणको मार देंगे । 11 गोठके मिस जा कर मारेंगे । 12 तब राजपूतोने कहा–'अच्छी बात है राजन् ।' 13 अब जोईयोको भी चिन्ता हुई । 14/15 जोरावर आदमी घरमे आकर घुस गया । किसीको मार न दे ? 16 तब ढोल बनवानेके लिये एक झाऊका पेड कटवा दिया । 17 राज ! झाऊको वीरमजीके आदमियोने काट लिया । 18 तोभी जाईयोने कोई ध्यान नही दिया । 19 वीरमजीसे अपनेको तोडना नही है । 20 तब वीरमजीने दलेको बुलवाया । 21 मनमे ऐसा विचार किया कि दलेको धोखेसे मार दू ।

तरफ बळद जोतियो नै वीजी तरफ घोडो जोतियो[1]। जाहरा मागळियाणी दलैनू भाई कियो हुतो[2]। मु चूक मागळियाणी लखियो[3]। ताहरां दातण लोटामे उलटो घालियो। घालनै लोटो दातणरो मेलियो[4]। ताहरा दलै दातण देख अर अटकळियो[5]। 'जु, चूक छै।' जितरै दलै चाकरनू कह्यो—'म्हारो पेट कसकसै।' तरै कहियो—'वाहिर भूम चालो।' ताहरा खडिसल वेस अर घरनू चालियो[6]। पछै खडसल छोडि वै होज घोडै चढनै खडियो[7]। खडसलनू एके तरफ वळद जूतो, एके तरफ राठी जूतो। खडसल ले वुहा[8]। दलो घोडै चढ अर घरै गयो। तितरै[9] वीरमजी रजपूत एकठा किया। मसलत करनै आया[10]। पूछियो—दलो कठै?' कह्यो जी—'पेट कसकसतो सु जगळै गयो[11]' ताहरा दलियै गहिलोत कह्यो—'दलो गयो।' ताहरा कह्यो—'खडसल वैठो कितरीइक दूर जासो[12]।' कहियो—'जी खडसल छोडै असवार हुसी[13]। खवर करो।' ताहरा असवार चढियो। जाय देखै तो एक तरफ वळद जूतो छै, वीजी तरफ आदमी जूतो छै। खडसल लीयै जाय छै। आयनै खवर दी—'दलो गयो।' ताहरा रजपूता कह्यो—'चूक थाहरो वै लाधो।' ताहरा रजपूता कह्यो—'सही, जोईया आवसी[14]।' यु करता जोईया साथ करनै गाया लीवी। ताहरा कूक आई[15]। कह्यो—'जी, जोईया गाया लीवी।' ताहरा वीरमजी चढिया। रजपूत

---

1 खडसलमें एक ओर तो वैल जोता और दूसरी ओर घोडा जोता। खडसल = दो वैलों वाली एक सवारी वैलगाडी। 2 उन दिनोमे वीरमजीकी स्त्री मागलियाणीने दलेको अपना भाई वनाया था (धर्म-भाई वनाया था)। 3 इस धोखेकी वातका मागलियाणीको पता लग गया। 4 तव (दलेके लिये दातुन करनेको) एक लोटेमे उलटा दातुन रख कर दातुनका लोटा भेजा। 5 तव दलेने दातुन देख कर (धोखेका) अनुमान कर लिया। 6 इतनेमे दलेने नौकरसे कहा—'मेरे पेटमे दर्द हो रहा है।' तव उसने कहा—'शौच हो आओ।' तव खडसलमे वैठ कर घरको चल दिया। 7 पीछे खडसलको छोड कर उसी घोडे पर चढ कर चल दिया। 8 खडसलमे एक ओर वैल और एक (दूसरी) ओर राठी जुता, इस प्रकार खडसल लेकर चले। 9 इतनेमे। 10 परामर्श करके आये। 11 पूछा कि—'दला कहा?' उत्तर दिया कि पेटमे दर्द हो रहा था सो शौचको गया है। 12 खडसलमे वैठा हुआ कितना दूर जायेगा। 13 खडसलको छोड कर घोडे पर सवार होगा। 14 तव राजपूतोंने कहा कि—'अव सही ही जोईये हमारे ऊपर चढ़ कर आयेंगे।' 15 जोईयोने अपना सगठन करके किसीकी गायें छीन ली। तव पुकार आई।

सरब चढ़िया । लड़ाई हुई । वीरमजी अर देपाळ जोईयो वाजिया[1] । जोईयैनू वीरमजी मारियो । वीरमजी आप ठौड़ रह्यो[2] ।

पछै गाम वडेरणसू वीरमजीरै राजलोकनू ले अर रजपूत नीसरिया[3] । सु चूंडैनू आवता धाय एकै आक हेठै मूकियो हुतो सो वीसर गई[4] । कोस एक परै गया, ताहरा चूंडैनू सभाळियो[5], देखै तो नही । ताहरा हरिदास दलावत घिरियो[6] । आगै देखै तो साप छत्र ऊपर कर बैठो छै । ताहरा हरिदास डरियो । दीठो–'कासू जाणीजै ?' नैड़ो गयो[7] । ज्यु साप सिरक अर बिल पैस गयो[8] । ताहरा हरिदास चूंडैजीनू सभाहिनै ले आयो । आयनै मा री गोदी दियो । जसहड़रो चूंडोजी मागळियारो दोहीतरो[9] । गोगादे, देवराज, जैसिंघ ऐ तीन भाई ।

यु करता मारगमे वहता[10] एक राठी मिळियो । तिकैनू[11] पूछियो । कहियो–'ओ किसो विरतत[12] ?' ताहरा राठी कह्यो–'ओ लड़को छत्रधारी राजा हुसी ।' ताहरा रावळगन भेळो हुवो । पद्रोलाया पत्रारिया[13] । ताहरा चूंडैजीरी मा कह्यो–'म्हारै धणी सेती काम छै, आतरो हुवै छै, हू सती हुईस[14] । ताहरा चूंडोजी धायनू दियो । अर धरती माता सूर्यनू भळाई[15] । अर कह्यो–'आल्हो चारण छै, तिणरै खोळै देज्यो[16] ।' चूंडैजीरी मा सती हुई । मागळियाणी सती हुई । दोय सती हुई । लोक सह कोई विखरै गयो[17] । गोगादे, देवराज,

---

1 वीरमजी और देपाल जोईया परस्पर लड़े । 2 जोईयाको वीरमजीने मार दिया और वीरमजी स्वय काम आ गया । 3 पीछे वडेरण गावसे वीरमजीके जनानाको लेकर राजपूत लोक निकल गये । 4 सो आते हुए मार्गमे चूंडेको धायने एक आकके नीचे रख दिया था सो वही भूल गई । 5 एक कोस आगे निकलने पर चूंडेको सम्हाला । 6 तब हरिदास दलावत उसे लेनेके लिये वापिस लौटा । 7 देखा–'क्या जाना जाय ?' पास गया । 8 ज्योही साप सरक कर बिलमे घुस गया । 9 चूंडाजी, जसहड मांगलियाका दोहिता है । 10 चलते हुए । 11 उसको । 12 यह क्या वृत्तान्त है ? 13 तब सभी राज-परिवारके लोग इकट्ठे हुए और वहासे पद्रोलाया गावको आये । 14 तब चूंडाजीकी माताने कहा–'मेरे तो अपने स्वामीसे ही काम है, अंतर बढ रहा है अतः मै सती होऊगी । 15 तब चूंडाजीको तो धायके सुपुर्द किया और धरती (देश)को सूर्यके सुपुर्द किया । 16 इस बच्चेको आल्हा चारण है उसकी गोदमे देना । 17 और सभी लोग विखर गये ।

जैसिंघ तीनं ठाकुर नानाणे ले गया। चूडोजी आल्है चारण रै घरै पूगतो कियो[1]। आल्हो भलीं भात राखै। घर माहै आसरो धायनू माड दियो[2]। धाइ वैठी पाळै[3]। छानौ राखीजै[4]। ईयै जिनस चूडोजी म्होटा हुवै छै[5]।

---

1 पहुँचा दिया। 2 घरमे एक आश्रय-स्थान धायके रहनेके लिए वनवा दिया। 3 धाय इसमे वैठी हुई चूडेका पालन करती है। 4 गुप्त रखा जा रहा है। 5 इस प्रकार चूडोजी दिन दिन वडे हो रहे है।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

# वात रावजी चूंडैजीरी लिख्यते

चूडैजीनू धाय लै अर आल्है चारणरै घरै काळाऊ गाव जायनै रही[1]। आल्हैनू कह्यो[2]—'वाई जसहड सती हुता थानू आसीस कही छै, अर कह्यौ—'ईयै लडकैनू भली भात राखज्यो, कहीनै जणावो मता। थाहरै खोळै दियो छै[3]।' ताहरा आल्हो लोकानू कहै—'ईयै रजपूताणीरो वेटो छै[4], आय रही छै।' उठै चूडैजीनू धाय पाळै। केहीनू कहै नही—वीरमजीरो वेटो छै[5]। ज्यौ वरसा ८-९ रो हुवो–फिरियो टावरा माहै रमै[6]।

एक दिन वरसातरा दिन छै। सु केरडा जगळ माहै उछर गया[7]। केरडा वाळा नीसर गया। चारण रा केरडा वरै रह गया[8]। ताहरा चारणरी मा वोली–'वेटा चूडा! केरडा आघेरा जगळ माहै टोघडा चरै छै, तिया माहै भेळ आव[9]।' ताहरा चूडो केरडा ले अर भेळण गयो[10]। केरडा कठै ही लाधा नही[11]। ताहरा आप चरावण लागो[12]। तितरै चारण घरै आयो[13]। चूडो घरै नही छै। ताहरा चारण पगैंपगै तेडणनू हालियो। कहियो–'मा वुरो कियो। चूडैनू मेलणो न हुतो[14]।' आगै चूडै केरडा जगळमे ऊभा कर नै आप रूखरी छाह सोय रह्यो[15]। ताहरा सरप विल माहैसू नीसर नै[16] चूडैरै

---

1 धाय चूडाजीको लेकर कालाऊ गावमे आल्हा चारणके घर पर जाकर रह गई। 2 आल्हाको कहा। 3 जसहड बाईने सती होनेके समय तुम्हे आशिष कहा है और कहा है कि—'इस लडकेको भली भाति रखना। किसीको मालूम नही होने देना। तुम्हारी गोदमे (रक्षणमे) दिया है। 4 इस राजपूतानीका लडका है। 5 वहा पर धाय चूडाजीका पालन-पोषण कर रही है और किसी पर यह जाहिर नही होने देती कि—'यह वीरमजीका पुत्र है।' 6 अब जबकि चूडाजी ८-९ वर्षका हो गया, बच्चोके साथ फिरता हुआ खेलता है। 7 बछडे तो जगलमे हॅक गये। 8 चारणके बछडे घर पर रह गये। 9 तब चारणकी मा ने कहा—'वेटा चूडा! इन बछडोको दूर जगलमे जहा बछडे चर रहे हैं, उनमे शामिल कर आओ।' 10 तव चूडा बछडोको उनमे शामिल करनेको ले गया। 11 बछडे कही मिले नही। 12 तब स्वय चराने लग गया। 13 इतनेमे चारण घर पर आया। 14 तब चारण पदानुसरण करता हुआ उसे बुलाने गया। 15 चूडा बछडोको जगलमे (एक जगह) खडे कर के स्वय एक वृक्षकी छायाके नीचे सो गया। 16 निकल कर के।

माथै छत्र कर बैठो। तितरै चारण गयो। देखै तो चूडैरै माथै ऊपर छत्र करनै सरप बैठो छै। ज्यु मिनखरी किडवा हुई त्यु सरप सिळक नै रूंख माहे पैस गयो[1]। ताहरा चारण नजीक जाय नै चूडैनू जगायो। कह्यो–'बावा! तू क्यु आयो जगळमे? घरै चाल।' ताहरा घरै ले आयो। आय मानू कह्यो–'मा! तै बुरो कियो। चूडैनू आज पछै मता मूकै[2]।'

पछै चारण एक घोडो लायो। हथियार लायो। वागो करायो[3]। चूडैनू घोडै चाढि अर महेवै गयो। आग रावळ मालैजीरै सारो मुदो नाई ऊपर छै[4]। ताहरा नाईनू मिळियो। नाईनू घणी भोळावण दीनी[5]। नाई कह्यो–'रावळजीरै पावै घातो[6]।' ताहरा भलो दिन देख नै रावळजीरै पाए लगायो। रावळजी दिलासा दीधी[7]। हिवै चवडोजी रावळ मालैजीरी चाकरी करै। एक दिन रावळजीरै ढोलियै हेठै सोय रह्यो[8]। नीद आय गई। ताहरा रावळजी पोढण पधारिया। ताहरा ढोलिया तळै आदमी दीठो। ताहरां जगायो। रावळजी महरबान हुवा। नाई पण विनती कीधी। कहियो–'राउ! चवँडो भलो रजपूत छै। काई एक खिजमत सापीजै[9]। ताहरा कह्यो–'गुजरात सामी चोकी राखौ[10]।' अर कह्यो–'रजपूत साथै हुवौ।' ताहरां सिखरो बोलियो–'रावळजी! मोनू समभ अर देज्यो[11]।' कहियो–'जी, म्हे हुकम करां छा, थे जावो।' ताहरा ईदा साथै दिया। चवडैनू घोडो, सिरपाव दे विदा कियो। ताहरा चवडो काठै थाणै जाय बैठो। वडा जावता कीधा[12]। कितराइक दिन हुवा, ताहरा एक घोडारी

---

1 जैस ही मनुष्यका पदचाप हुआ, सप रेंग कर के एक वृक्षकी जडोकी खोहमे घुस गया। 2 चूडेको आजके बाद फिर कभी मत भेजना। 3 वागा बनवाया। 4 वहा रावल मल्लीनाथजीका सारा दारोमदार एक नाईके ऊपर है। 5 नाईको बहुत सिफारिश की। 6 इसे रावलजीके पांवो लगाओ। 7 रावलजीने आश्वासन दिया। 8 एक दिन रावलजीके पलगके नीचे सो रहा। 9 इसे कोई सेवा सौंपिये। 10 तब कहा–गुजरातके ओरकी चौकी पर रखा जाय। 11 तब सिखराने कहा–मुझे समझ कर साथमे देना। 12 तब चूडा काठाके थाने पर जाकर बैठ गया और वहा उसने अच्छा प्रबन्ध कर दिया।

सोवत आई[1]। सु सोदागरा कनां घोड़ा खोस लिया[2]। घोड़ा रजपूतानू वकस दिया[3]। एक घोडो आप राखियो। पुकार दिल्ली गई। अहदी आयो। घोडा ल्यावी। मालैजीनू जोर पडियो[4]। घोडा मागीजै[5]। ताहरा मालैजी आदमी मूकिया[6]। कह्यो–'चवडा घोडा ल्याव।' ताहरा कह्यो–'घोडा तो वेंहच दीधा[7]।' घोडो एक हुतो सु कह्यो–'ओ छै, लीयै जावो।' ताहरा मालैजीनू खबर दीनी। घोडा नही। ताहरा मालैजी घोडा सीलिया[8]। अर कह्यो–'चावडो देसमें रहण न पावै[9]।' ताहरा चंवडो ईदावटी आयो[10]। ईदा कनै रहै। अठै साथ कियो। साथ कर नै डीडवाणो मारायो। द्रव्य ले आयो[11]।

हिवै मडोवर राज तुरक करै[12]। ताहरा मडोवररै धणी घास एकठो करावणो माडियो[13]। ताहरा कह्यो–'गाम-गाम[14] दोय दोय घासरी गाडी मगावो।' ताहरां ईदारै गाम घास मगाजै। ताहरा ईदा कह्यो–'ल्यावा छा[15]।' ताहरा ईदे चवडैनू कह्यो–'आपे मडोवर लेस्या[16]।' ताहरा कह्यौ-'भला।' ताहरां रजपूत सरव एकठा हुवा। मन्त्र कियो[17]। ताहरा च्यार-च्यार ठाकुर गाडी माहै वैठा। एक खाडेती हुवो[18]। एक एक आदमी गाडीरै कनारै हुवो[19]। हथियार सिगळारा[20] गाडिया माहै राखिया अर गाडिया चलाई। पाछलै पोहररी[21] गाडिया आई अर[22] गाडिया कोट माहै पैसण लागी[23]। भारा वे-वे गाडा माहै घास हुतो[24]। एक मुसलमान दरोगो हुतो,

1 कितनेक दिन वीत गय, तव एक दिन एक घोडोका काफिला वहा आया। 2 सोदागरोंके पाससे घोडे खोस लिये 3 सभी घोडे राजपूतोको वांट दिये। 4 मालाजी पर दवाव डाला गया। 5 घोडे मागे जा रहे हैं। 6 तव मालाजीने आदमी भेजा। 7 घोडे तो वाट दिये। 8 तव मालाजीने घोडे प्रतिदानस्वरूप दिये। 9 और कहा–चूडा देशमे नही रहने पाये। 10 तव चूडा वहासे ईदावाटीमे आ गया। 11 यहा उसने अपना सगठन वनाया और डीडवानाको लूटा और मालमत्ता ले आया। 12 इस समय मडोरमे तुर्कोंका राज्य है। 13 तव मडोरके स्वामीने घास इकट्ठा कराना शुरू किया। 14 प्रत्येक गावसे। 15 लाते हैं। 16 तव ईन्दोंने चूडाको कहा–'अपन मडोर लेंगे।' 17 परामर्श किया। 18 एक हाकने वाला वना। 19 एक-एक आदमी प्रत्येक गाडीके किनारे (साथमे) होकर चला। 20 सवके। 21 पिछला प्रहर। 22 और। 23 प्रवेश करने लगी। 24 प्रत्येक गाडेमे दो-दो भारे घास भरा हुआ। भारा = घासका वडा भार, वडल।

तियै वरछो मांहै वाही[1]। देखै, घास थोथा तो है नही[2] ? ताहरा वरछो एक रजपूतरै साथळै लागो[3]। अर अपूठी खाची ताहरा कपडैसू वरछोरो लोही पूछ नाखियो[4]। दरोगो वोलियो–'रजपूतां ! क्या खडहरचा सव अैस्या ही होय[5] ? दग-दग गाडिया चाली गई। सरव गाडियारो छेह आयो, ताहरा सञ्या हुई। रात पडी[6]। ताहरां गाडिया माहै थी रजपूत नीसरिया[7]। जाय अर प्रोळां जडी[8]। तुरकानू मार चवडैजीरी आण फेराई[9]। मडोवर लियो[10]। धरती मडोवररी माहैसू तुरक खदेड काढिया[11]।

मालैजी सुणियो–'चवडै मडोवर लियो।' ताहरा मालोजी साथ कर अर चवडेजी कनै आया। चूडोजीसू मिळिया। कह्यो–'सावास सपूत !' ताहरा भगतरी तयारी हुई[12]। मालोजी वोलिया–'लोक घणो छै[13]। इयानू नियारा वैरावो[14]। आपै भेळा जीमस्या[15]।' ताहरा सवणीए वियो पटाभिषेक कियो[16]। राव चवडोजी कहाणो[17]। रावळ मालोजी महेवै गयो। चवडोजी भली-विध[18] मडोवर राज करै छै। चवडैजी वीजी ही धरती घणी लीवी[19]। वीमाह १० किया। १४ वेटा हुवा[20]–

१ राव रिणमल। १ अडकमल[21]।
२ सतो। १ रणधीर।

---

1 एक मुसलमान दरोगा था जिसने गाडी (के घासमे) वरछीका प्रहार किया। 2 देखता है कि, कही घास थोथा तो नहीं है ? 3 तव वरछी एक राजपूतकी जघामे लगी। 4 और जब वरछीको वापस खींचा तो कपडेमे वरछीके लगा हुआ खून पोछ डाला। 5 दारोगेने कहा–राजपूतो ! सभी खडहेरिया ऐसी ही (भरी हुई) हैं न ? 6 जब सभी गाडियोका अत आया, तब तक सध्या हो गई और रात पड गई। 7 तव गाडियोमेसे राजपूत निकले। 8 और उन्होने जाकर पोलें वद करदी। 9 मुसलमानोको मार कर चूडाकी आन-दुहाई फिरवा दी। 10 मडोर पर अधिकार कर लिया। 11 मडोरकी धरतीमे से मुसलमानोको खदेड कर निकाल दिया। 12 तव भोजनकी तैयारी हुई। 13 मालाजीने कहा कि–मेरे साथ वहुत लोक हैं। 14 इनको अलग विठाओ। 15 अपन एक थालीमे भोजन करेंगे। 16 तव शकुनी लोगोने चूडाजीका दूसरा पट्टाभिषेक किया। 17 चूडाजी 'राव' कहलाया। 18 अच्छी प्रकार। 19 चूडाजीने दूसरी भी वहुत-सी धरती अपने अधिकारमे कर ली। 20 दस विवाह किये और १४ बेटे हुए (चूडाजीरा चवदै वेटा, चवदै ही राव कहाणा)। 21 अरडकमल।

| | |
|---|---|
| १ सैहसमल[1] । | १ कान्हो । |
| १ अजमल । | १ राम । |
| १ भीम । | १ लूभो । |
| १ राजधर[2] । | १ लोलो[3] । |
| १ पूनो । | १ मुरतांण । |

चवदै बेटा हुआ । यु करता घणा दिन हुवा[4] । साहवी वधी[5] ।

ताहरा नागोर आया । अठै नागोर खोखर राज करै[6] । खोखररै घरै राव चूडोजीरी साळी हुती[7] । तियै भगतरै वासतै कोट माहै बुलाया[8] । राव चूडोजी कोट माहै पधारिया । दिन ४।५ माहै रह्यो । एक दिन रजपूतासू कह्यो–'आपै नागोररो कोट लेस्या[9] ।'

ताहरा एक दिनरो समाजोग छै । राव चवडो साथ करनै नागोर माहै जाय पैठो । रोज आवतो । अपरचो कोई न हुतो[10] । जायनै खोखरनू मारियो[11] । बीजो लोग सरव नास गयो[12] । नागोर लियो । दुहाई फेरी[13] । हिवै नागोर आय बैठो[14] । सुखसू राज करै । सतैनू मडोवर राखियो । सतो मडोवर माहै राज करै[15] ।

ताहरा राव चवडोजी एक दिन दरवार जोड बैठा छै । जितरै हेक

---

1 सहसमल । 2 'राजधर' नाम केवल अनूप सस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेरकी प्रतिमे मिला है । अन्य कई प्रतियोमे यह नाम नही मिलता । स्थान रिक्त है ।

वि० –प्रसिद्ध है कि चूडाजीने ईंदा-पडिहारोकी सहायता कर के मुसलमानोको मडोरसे मार भगाया । मडोर सम्हाल रखनेमे अपनेको असमर्थ जान और अपने ऊपर किये गये उपकारका ऋण चुकानेके लिये ईंदा-सरदार राय धवलोजीने अपनी कन्या चूडाजीको व्याह कर मंडोर दहेजमे दे दिया—

ईंदारो उपगार, कमधज कदै न पातरै ।
चूडो चवरी चाढ, दियो मडोवर दायजै ॥

3 'लाला' नाम भी अन्य प्रतियोमे लिखा मिलता है । 4 यो करते बहुत दिन बीत गये । 5 वैभव बढा । 6 यहां नागोरमे खोखर राज्य कर रहा है । 7 खोखरकी पत्नी राव चूडाजीकी साली थी । 8 उसने भोजनके लिये उन्हे कोटमे बुलवाया । 9 अपन नागोरके कोट पर अधिकार करेंगे । 10 सदा आता रहता था इसलिये कोई अविश्वासकी बात नही थी । 11 जा कर के खोखरको मार दिया । 12 दूसरे सभी लोग भाग गये । 13 नागोर पर अधिकार कर लिया और अपनी आन-दुहाई फिरा दी । 14 अब (मडोरसे) नागोर आकर बैठ गया । 15 सत्ता मडोरमे राज्य करता है ।

हाळी आयो[1]। आयनै कह्यो–'राज! म्हारै खेत माल छै[2]। हूं हळ वाहतो हुतो सु चरवैरा काना नीसरिया छै[3]। सु माल धरती माहैलो धरतीरै धणीरो छै[4]। तैरै वासतै हूं थानूं कहण आयो छूं[5]।' ताहरा रावजी साथै आदमी दिया। 'जावो, काढो[6]।' ताहरा हाळी साथै आदमी लेनै आयो। धरती खिणी पण घणा ऊंडा छेह न आवै[7]। ताहरा आदमी राव चवडै आगै गया। जायनै कह्यो–'राज! वासण ऊंडा छै, छेह नावै[8]।

ताहरा रावजी हाथी असवार हुइनै पधारिया छै। आयन वेलदार लगाया। कह्यो–'खिणो।' ताहरा वेलदारा ऊंडा खिणनै काढिया[9]। देखै तो भूजाईरा वासण छै। चरवा, देगा, कूंडिया, थाळिया[10]। ताहरा कह्यो–'ठाकुरे! जोवो[11]।' ताहरा रावजी उतरिया। उतरनै जोया। ऊपर नानग चावडैरो नामो छै। यु लिखियो छै–'जिको औ वासण वरतावै सु ईयै भांत भूजाई करै[12]।' ताहरा राव चूंडैजी कह्यो–'वासण परहा बूरो[13]।' ताहरा रजपूत बोलिया–'राज! कोई एक थोक तो लीजै[14]।' ताहरा रावजी पळी १ उठाय लियो[15]। वाकीरा वासण सरब बूरिया[16]।

ताहरा रावजी नागोर आयनै पळी तोलायो सु पचीस पईसा

---

1 जिननेमे एक कृषक आया। हाळी = १ हल चलाने वाला। 2 कृषकके यहा कृषि सबधी कार्यकी नौकरी करने वाला। 2 आ कर के कहा–राज! मेरे खेतमे माल निकला है। 3 मैं हल चला रहा था तब एक देगके किनारे निकले हैं। 4 धरतीमे प्राप्त हुआ वह माल इस धरतीके स्वामीका है। 5 इसके लिये मैं आपको कहनेके लिये आया हूं। 6 जाओ, निकाल लाओ। 7 धरतीको खोदा परन्तु ऊंडे अधिक होनेमे अत नही आता है। 8 वतन ऊंडे बहुत हैं अत अतका पता नही लगता। 9 तब वेलदारोंने गहरा खोद कर के निकाल लिया। 10 निकाल कर देखते है तो चरू, देगें, कूडियें और थालियां आदि भूजाईके वर्तन मिले। 11 तब लोगोंने कहा–ठाकुर! देखिये। 12 जो इन वर्तनोको काममे लाये वह इस प्रकार भूजाई करे। भूजाई = बडा भोज। 13 वर्तनोको वापिस गाड दो। 14 कोई एक वस्तु लेलो। थोक = (१) एक ही प्रकारकी वस्तुओकी राशि। (२) वस्तु। (३) नग, सख्या। 15 तब रावजीने एक पळी लेली। पळी = घी, तेल आदि द्रवपदार्थ नापनेका एक लबी डडी वाला पात्र, टोपरा। 16 शेष बरतन गाड दिये।

भर पळी हुवो[1] । ताहरा रावजी हुकम कियो–'घिरत भूजाईमे ईयै पळी सौ पुरसो[2] । आधो पुरसै तो सुवारनू सभा दीजै[3] । भरियो पुरसणौ रजपूतनू ।' ईयै भात राव चूडौजी राज करै ।

एक दिन अरडकमल चूडावत भैसैनू घाव कियो[4] । भैसैरा दोय टुकडा किया । ताहरा सहु कोई ठाकुर कहण लागा–'वाह घाव कियो[5] । ताहरा रावजी बोलिया–'कासू घाव कियो[6] ?' पसू वाधनै घाव कियो। इसो घाव जो राव राणगदेनू अथवा सादै कुवरनू करै तो जाणू घाव कियो[7] । मोनू भाटी खटकै छै । इया गोगादेजीनू विष्टकारी दी हुती, सु मोनू दूखै छै[8] ।' ताहरा अरडकमलजी मनमे जाण रह्यौ । बोलियो नही । यु करता कितरेहेक दिनै सादै कुवरनू अरडकमलजी मारियो। तै ऊपर राव राणंगदे मेहराज साखलो मारियो[9] । तै ऊपरा मेहराजरो भाणजो सोमो राकसियो राव चूडेजीनू जाय पुकारियो[10] । कह्यो–'सौ घोडा, सौ वीमाह देवा[11] ।' ताहरा राव चूडोजी चढिया । जायनै पूगळ कनारै[12] राव राणगदे मारियो । ताहरा राणगदेनू मार माल लूटि अर[13] नागोर आयो ।

ताहरा मोहिलरै बेटो जायो, सु घूटी न दै[14] । ताहरा रावजीनू खबर हुई । ताहरा कह्यो–'मोहिल कवरनै घूटी क्यु न दो ?' कह्यो–'जी, रिणमलनू विदा देवो तो घूटी देऊ[15] ।' ताहरा रिणमलनू

---

1 तब रावजीने नागोर आ कर उस पळीको तुलवाया तो वह पच्चीस पैसे भर नाप की हुई । पच्चीस पैसोका तोल ४५ तोलोके लगभग होता है । एक पैसा जो ढव्बूसाई पैसा भी कहलाता है, लगभग पौने दो तोलेका होता है । 2 भुजाईमे घी इस टीपरेसे परोसा जाय । 3 यदि सुवार (सूपकार) आधा टीपरा परोसे तो उसको सजा दी जाय । 4 एक दिन अरडकमल चूडावतने एक भैसे पर प्रहार किया । 5 तब सभी ठाकुर कहने लगे–'वहुत अच्छा प्रहार किया ।' 6 तब रावजीने कहा–'यह क्या घाव किया ?' 7 ऐसा घाव यदि राव राणगदे अथवा सादे कुवर पर करे तो घाव किया जाना जाय । 8 इन्होने गोगादेजीको अपशब्द कहे थे (ताना मारा था) सो मुझे सल रहा है । 9 जिस पर राव राणंगदेने मेहराज साखलाको मार दिया । 10 जिस पर मेहराजके भानजे सोमा राकसियेने राव चूडेसे पुकार की । 11 उसने कहा–सौ घोडे देगे और (तुमारा तथा तुमारे लोगोके साथ) सौ विवाह कर देंगे । 12 निकट । 13 और । 14 तब मोहिल रानीने पुत्रको जन्म दिया सो वह उसे जन्मघुट्टी नही देती है । 15 रिणमलको निकाल दें तो जन्मघुट्टी दू ।

तेडिनै[1] रावजी कह्यो–'तू सपूत छै। रिणमल बेटा ! तू विदा कर[2]।' ताहरां रिणमलजी कह्यो–'रावजी ! आ धरती कान्हैनू छै। म्हे ईयेसू कांम कोई नही[3]।' ताहरां रिणमलजी रावजीरै पगा लाग अर नोभत पधारिया[4]।

एक दिन रावजीरै भूजाईगे घिरत आवनो हुतो, गाडी-वाहणा भरिया[5]। रोज भूजाईमे बारह मण घी लागतो[6]। राव चूडोजो वडो दातार। भूजाई भली। चरवै सुकाळ[7]। सु एक दिन मोहिल घी आवतो दीठो[8]। ताहरां मोहिल पूछियो–'रावजीरे कोई वीमाह छै[9] ?' छोकरी मेलनै खबर कराई[10]। कहियो–'जी, बारह मण घी रोज भूजाई लागै छै।' ताहरा छोकरी आय कह्यो। ताहरा मोहिल बोली–'रावरो घर युही लूटीजै छै[11]। ताहरा मोहिल रावजीनू कह्यो–'भूजाई म्हारै सारै कीजै[12]। ताहरा भूजाई मोहिल सारै कीवी छै। ताहरा मोहिल पाच सेर घिरत भूजाई लागै छै। रावजीसू कह्यो–'म्हे थाहरे वडी समार कीवी छै[13]।' ताहरा रजपूत सरब दूमना हुवा[14]। ठकुराई नान्ही घाली[15]।

कितराइक दिन हुवा, ताहरा राणगदेरो बेटो हुतो सु[16] भाटी एकठा किया। पछै मुलतांण जाइनै[17] मुसलमान हुइनै[18] मुलतांणरी फोज आणी। भाटीनै तुरक भिळनै आया[19]। ताहरा रिणमलनू कह्यो–'तू नीसर[20]। जे तू जीवतौ छै तो तू म्हारौ वैर लेईस[21]।

---

1 बुला कर। 2 पुत्र रिणमल ! प्रस्थान कर। 3 तब रिणमलजीने कहा–रावजी ! यह धरती कान्हाके लिये है, मेरेको इसमे कोई वास्ता नही है। 4 तब रिणमलजी रावजीके चरण स्पर्श कर सोजतको चले गये। 5 एक दिन रावजीके यहा भुजाईके लिये बैलगाडियोमे भरा हुआ घृत आ रहा था। 6 प्रति दिन भुजाईमे बारह मन घी लगता था। 7 राव चूडाजी बडे दातार अत भुजाई अच्छी बनती थी और अतिथि-सत्कार भी अच्छा होता था (कोई भी आओ, सबका भोजन उनकी ओरसे ही होता था।) 8 देखा। 9 रावजीके कोई विवाह है क्या ? 10 दासीको भेज कर खबर करवाई। 11 रावका घर योही लुटा जा रहा है। 12 भोजनकी व्यवस्था मेरे अधिकारमे कर दीजिये। 13 हमने तुमारे बडी बचत कर दी है। 14 तब सभी राजपूत नाराज हो गये। 15 ठकुराई कमजोर हो गई। 16 जिसने। 17 जा कर के। 18 हो कर के। 19 भाटी और मुसलमान साथ हो कर के आये। 20 तू निकल जा। 21 मेरे वैरका बदला लेवेगा।

अर अै[1] रजपूत नीसरिया छै[2], तियासू दोख मतां राखै[3]। अै थारै वडै काम आवसी[4]। जेठी घोडो छै सु सिखरै उगमणावतनू देई[5]। अर रजपूत दुचिता छै सु तू सुचिता करै[6]। इयै मोहिल सरब दुहविया छै[7]।' ताहरा कह्यो–'म्है कान्हैनू टीको कह्यो छै, सु इयैनू काहूनीरै खेजड़ै ले जायनै ईयैरै माथै अरळ देईस[8]। ताहरा रिणमल जाणियो–'कान्हैनू राव मगरो दियो[9]। रिणमलनू रावजी विदा दीनी[10]।

रिणमलजी नीसरियो। रजपूत सरब नीसरिया। सिखरो उगमणावत ईदो, ऊदो त्रिभुवणसीयोत राठोड, काळो टीवाणो, अै ठाकुर भेळा नीसरिया छै[11]। जावता एकै जायगा अरहट वहतो दीठो[12]। तेथ आया[13]। आय अर घोडा पाया। घोडारा मुह छाटिया। हाथ धोया। आख्या छाटी अर अमल किया[14]। पाणी पियो। तेथ सिखरो उगमणावत दूहो कहै[15]–

काळो काळै हिरण जिम, गयो टिवाणो कूद।
आयो परब न साधियो, त्रिभुवण थारै ऊद[16] ॥ १

ताहरा ऊदै अर काळै कह्यो–'म्हे सिखरै रै साथै नही जावा, भाडसी[17]। हालो, अपूठा जावा[18]।' जितरै पूनो उठै सामो आयो[19]। पूनो दोला गोहिलोतरो बेटो। इयैनू सिखरै कह्यो[20]–'थे घिरो, अपूठा

---

1 ये। 2 निकल गये हैं। 3 उनसे वैर मत रखना। 4 ये तेरे वडे काम आयेंगे। 5 जेठी घोडा है उसे सिखरे उगमणावतको दे देना। 6 और जो राजपूत नाराज हैं उन्हे तू खुश कर देना। 7 इस मोहिल रानीने सबको नाराज कर दिया है। 8 तब कहा–'मैंने कान्हेको टीका देनेका निश्चय किया है, सो इसको काहूनीके खेजडे लेजा कर इसके मस्तक पर तिलक दूगा। (उत्तरदायित्व इसके सिर पर दूगा।) 9 तब रिणमलने जाना कि कान्हेको रावने मगरा प्रदेश भी दे दिया। 10 रावजी ने (चूडाजीने) रिणमलको जानेकी आज्ञा दी। 11 ये सभी ठाकुर साथ निकले हैं। 12 जाते हुए मार्गमे एक स्थान पर रहँट चलता हुआ देखा। 13 वहा आये। 14 आंखें छाट कर (हाथ-मुह धो कर) अफीम लिया। 15 वहा सिखरा उगमणावत एक दोहा कहता है। 16 दोहार्थ–'काला टिवाणा तो काले हरिणकी भांति कूद गया (अवसर खो दिया) और हे त्रिभुवन तेरे पुत्र ऊदाने हाथ आये पर्वको भी नही साधा।' 17 तब ऊदाने और कालाने कहा–'अपन सिखरेके साथ नही चलें, वह अपनेको वदनाम करेगा।' 18 चलें, लौट जायें। 19 इतनेमे पूना वहा साम्हने आ गया। 20 इसको सिखरेने कहा।

हालो ।' ताहरां पूनो कहै-'हू विरू नही । ओ अवसर कठै लहूं[2] ?' ताहरां काळै अर ऊदै कह्यो-'म्हे अपूठा पूनै साथै जास्या[3] ।' ताहरा सिखरो बोलियो-'थे जावो ना । हूं एक दूहो मोनूंई कहीस[4] । ताहरा दूहो कहै-

छक्कड लेह सिरावणी, फदियो ऊग विहाण ।
ऊगमणावत कूदियो, चढ चगै केकाण[5] ।। १

इण प्रस्ताव पूनो तो रावजी कनै गयो[6] । उठै रावजी नागोररो कोट छोडनै बाहिर आया । भाटियारी फोज आई । ताहरा रावजी साम्हा जायनै लड़िया । रावजी काम आया[7] । सात आदमियासू काम आया[8] । ताहरा भाटिये रावजीरो माथो वाढि वासमे प्रोयो[9], नै वास रोपियो[10] । रोपि नै माथो ऊचो राखियो[11] । आय साम्हा नै जुहार कियो[12] । मुहडै कहियो-'चूडाजी जुहार ।' इसी मसकरी कीवी[13] । ताहरा केलण आप वडो सवणी हुतो[14] । सु केलण बोलियो-'ठाकुरां सुणो, आज पछै भाटी राठोडांरा चाकर हुसो । सिलामी हुसी[15] ।'

ताहरा आगै लोक सरब एकठा हुवा छै । वसी गाडा एकठा कर रिणमलजी ढूढाडनू ले हालिया[16] । रजपूत सारा सुमना किया[17] । जेठी घोडो सिखरैनू दियो ।

ताहरा भाटी केलण सारी फोज लेनै वासो कियो[18] ताहरां एकै

---

1 तुम लौटो और वापिस चलो । 2 यह अवसर कहां पाऊ ? 3 हम तो लौट कर पूनाके साथ जायेंगे । 4 तुम जाओ नही । मै एक दोहा मेरे खुदके सबधमे भी कह दूगा । 5 दोहार्थ-'जो प्रभात होते ही तत्काल एक छकडा भर कलेवा कर लेता है और नित्य एक फदिया ले लेता है, वह सिखरा ऊगमणावत अच्छे घोडे पर सवार हो कर फाद गया ।' 6 इस बात पर पूना तो रावजीके पास चला गया । 7 रावजी (चूडाजी) काम आ गये । 8 सात आदमियोके साथ काम आये । 9 तब भाटी राजपूतोने राव चूंडाजीके सिरको काट करके एक बासमें पिरो दिया । 10 और बांसको जमीनमे गाड कर खडा किया । 11 बासको खडा कर के उसके सिरे पर (चूडेजीका) मस्तक रखा । 12 सामने आ कर जुहार किया । 13 ऐसी मसखरी की । 14 उस समय केलण जो वडा शकुनी था । 15 ठाकुरो ! सुनो, आजके बाद भाटी क्षत्री राठौडोके चाकर होंगे (और भाटियोकी ओरसे राठौडोंको) सलामी होगी । 16 रणमलजी गाडे इकट्ठे कर के अपनी बसीको ढूंढाडको ले चले । 17 सभी राजपूतोको प्रसन्न किया । 18 पीछा किया ।

गाम गया । प्रभात हुवो । ताहरा पिणिहारियां वात कहै छै–'बाई ! कोई एक काळो-तारो आयो छै । तिको आपरो बाप मराडि घरती गमाय आयो छै[1] । लारा[2] कटक आवै छै । हिवै आंपाहीनू मराडिसी[3] ।' औ बोल राव रिणमलजी कानै सुणियौ । साभळनै पिणिहाररो वचन, अर कह्यो–'अठा आगै नही जावां[4] । फोजसू लडाई करस्या ।' ताहरा साथ अपूठो घिरियो । रजपूत ससमा हुआ[5] । वेढ हुई । सिखरै पात-साही ढाल पाडी[6] । मुगल नाठा[7] । भाटी नाठा । रिणमलजी तो फोज मारता-मारता नागोर आया । भाटी तुरक नाठा । रावजी आय नागोर माहै पैठा[8] । राव रिणमलजी टीकै वैठा । वडो राजवी हुवो । २२ वेटा हुवा । राव चूडैजीरै प्रधान सावदू भाटी, ऊंनो राठोड[9] ।'

---
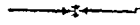
1 कोई एक दुर्भागी (कलकी) आया है । वह अपने बापको मरवा कर और अपनी धरती (देश) खो कर आया है । 2 पीछे । 3 अब अपनेको ही मरवावेगा । 4 यहासे आगे नही जायेंगे । 5 राजपूत तैयार हुए । 6 सिखरेने वादशाही सेना पर विजय पाई । 7 मुगल भाग गये । 8 रावजीने आ कर नागौरमे प्रवेश किया । 9 राव चूडाजीके प्रधान सावदू भाटी और ऊना राठोड थे ।

✻ श्रीरामजी ✻

# अथ गोगादेजीरी वात लिख्यते

गोगादेजी जुवान[1] हुवा, ताहरा वीरमजीरो वैर लेवणनू साथ एकठो कियो[2]। साथ करनै जोईया ऊपर चढियो। आगै जोईयानू खबर हुई, ताहरा जोईया नीसरिया[3]। ताहरा अपूठा आय कोस २० आया। आय हर हरोळ गयो। ताहरा जोईया दीठो[4]–'गोगादे फिर गयो।' ताहरा जोईया फिर आय वसिया। गोगादेजी दबो मार बैठा हुता[5]। इतरै हेरो आयो। कह्यो–'जी, दलो हेरियो छै, धीरदे हेरियो छै[6]। जियै ठोड सूवता तिका ठोड हेर आया छा[7]।' हेरो चौकस कर गया हुता सूवणरी ठोड। सु धीरदे तो परणीजण गयो, नै हेरा जाय गोगादेजीनू कह्यो[8]।

गोगादेजी चढिया। आधो रातरा जायनै पडिया। ताहरा दलै ऊपर गोगादेजी उतरिया। धीरदे ऊपर ऊदो गोगादेओत उतरियो[9]। ताहरा धीरदे तो परणीजण गयो हुतो। धीरदेरै सूवणरी ठोड धीरदेरी वेटी सूती हती[10]; सु ऊदै जायनै घाव कियो[11]। सु तरवार इसडी वुही[12]–वैर वाढि, विछावणा वाढि, माचो वाढि अर घरटीसू जाय रडकी[13]। ताहरा तरवाररो नाम 'रळतळी' कहांणो[14]। गोगादेजी दलो मारियो। गाडा लूटि अर पाद्रोलाया आय उतरिया[15]।

जाहरा[16] गोगादेजी दलो मारियो, ताहरा दलारो भात्रीजो हासू

---

1 युवा, जवान। 2 तब वीरमजीके वैरका बदला लेनेके लिये योद्धाओंको सगठित किया। 3 तब जोईया भी निकल आये। 4 देखा। 5 गोगाजी दबक कर घातमे बैठा था। 6/7 इतनेमे गुप्तचरोंके दलने आकर कहा कि उसने दलाका पता लगा लिया है और धीरदेवका भी पता लगा लिया है एव जिस जगह ये सोते हैं उस स्थानका भी पता लगा लिया है। (धीरदेको कई प्रतियोमे धीरजदे और कइयोमे धारदे भी लिखा है)। 8 इधर गुप्तचरोंने जाकर गोगादेजी को यह सूचना दी उधर पीछे से धीरदे व्याह करनेको चला गया। 9 तब दलाका वध करनेके लिए गोगादेजीने और धीरदेका वध करनेके लिये ऊदा गोगादेओतने निश्चय किया। 10 धीरदेके सोनेके स्थान पर धीरदेकी वेटी सोई हुई थी। 11 सो ऊदाने जाकर उसके ऊपर प्रहार किया। 12/13 सो वह तलवार ऐसी चली कि। उस स्त्रीको काट कर उसके विछौने काटे और फिर खाटको काट कर उसके पासमे पडी हुई चक्कीके जाकर टकराई। 14 तब उस तलवारका नाम 'रळतळी' कहलाया। 15 गाडोंको लूट कर पाद्रोलाया गावमे आकर ठहरे। 16 जब।

पडोहियो चढि अर पूंगलनू दोडियो[1]। धीरदेनू कहण गयो[2]। आगै धीरदे परणीज अर रात सूतो[3]। काकण-डोरा छोडिया न हुता[4]। सु रात पहर १ वासली हुती। ताहरा पडोहियो हीसियो[5]। ताहरा धीरदे जागियो। कहियो–'रे, पडोहियो हीसियो ? कह्यो–'जी, पडोहियो काह[6] ?' तितरै[7] वात कहतां पेहली हासू जोईयो आय पुकारियो। ताहरा धीरदे बोलियो–रे कुसळ छै ?' कह्यो–'जी, कुसळ कठा[8] ? गोगादे वीरमोत आयो हुतो। दलो मारियो। मारनै पाछो जाय छै[9]।' ताहरा धीरदे ऊठियो। जामो पहर, हथियार बाधनै आयो। आयनै घोडै जीण करायो। तितरै राव राणगदेनू खबर हुई। ताहरा आयनै कह्यो–'जी डोरा-कांकण खोलनै चढो[10]। ताहरा धीरदे बोलियो–'आयनै खोलस्या[11]।'

ताहरा राणगदे नै धीरदे जोईयो वेऊ चढिया[12]। आगै गोगादेजी पाद्रोलाया उतरिया छै। घोडा चरणनू छोड दिया छै। साथ सोह पाणी ऊपर टिकियो छै[13]। भाटी नै जोईयारो साथ आघो वुहो[14]। ताहरा घोडा चरता दीठा[15]। ताहरा जाणियो–'जु, अै घोडा गोगादेरा छै[16]।' ताहरा घोडा लिया। घोडा लेनै अपूठा घिरिया[17]। पाद्रोलाया आया सु कटकनू त्रिस पाडियो[18]। ताहरा भाटियै अर जोईयै कहियौ–'पाणी पावो, ज्यु वाताळगो करा, वैर भाजा[19]।' ताहरा पाणी पीवण दीनो। ताहरा पाणी पायो अर घोडा ताजा करनै

---

1 तब दलाका भतीजा हासू 'पडोहियो' नामक घोडे पर चढ कर पूगलको भागा। 2 धीरदेको कहनेके लिये गया। 3 धीरदे विवाह करके (प्रथम-मिलनकी) उसी रात अपनी स्त्रीके पास सोया हुआ था। 4 ककण-डोरडे (विवाह-सूत्र) अभी तक खोले नही गये थे। 5 पिछली एक प्रहर रात थी तब पडोहिया घोडा हिनहिनाया। 6 उत्तर दिया कि पडोहिया कहा है जी ? 7 इतनेमे। 8 उत्तर दिया कि अजी ! कुशल कहा ? 9 मार करके वापिस जा रहा है। 10 अजी ! ककण-डोरडे खोल कर सवारी करो। 11 वापिस आकरके खोलेंगे। 12 दोनो चढ कर रवाना हुए। 13 सारा साथ तालाव पर पानीके किनारे पर ठहरा हुआ है। 14 भाटी और जोईयोका साथ आगे चला। 15 तब घोडे चरते हुए देखे। 16 ये घोडे गोगादेके हैं। 17 घोडोको लेकरके वापिस धिरे। 18 पाद्रोलाया गावके निकट आये तब कटकको प्यासने सताया। 19 पानी पिला दो, जितने अपन बातचीत करें और फिर जा करके शत्रुताका बदला लें।

वेहु रुखा हुय आया[1] ।

ताहरा गोगादेजी कह्यो–'रे घोडा ल्यावो।' ताहरा ढाढी कहै[2]–

चाहोगा नह लब्भए, गोगादे घोडाह् ।
वद्धै तुरी न चारियै, घी घत्तै थोडाह[3] ॥

ताहरां लडाई मडी । भाटी नै जोईया राठोडासू वाजिया[4] । गोगादेजी घावै पडिया[5] । साथळा वेहु वढी[6] । वेटो ऊदो पण पसवाडै पडियो[7] । तरवाररो नांमाण किसूं छै, सु तरवार टेकनै गोगादेजी वैठा घूमै छै[8] ।

तितरै राणगदे चढियो नीसरियो[9] । ताहरां गोगादेजी वोलिया–'राव राणगदे ! तू वडो सगो छै, म्हारो परवाडो लेल्यै[10] ।' ताहरा राणगदे वोलियो–'तो सारीखा विप्टारो म्हे परवाड़ो लेता फिरा छा[11]?' ताहरां राणगदे तो आघो ही वूहो[12] ।

तितरै धीरदे जोईयो आयो । ताहरा गोगादेजी वोलियो–'धीरदे ! आव, तू वडो जोईयो छै । म्हारो परवाडो लै । थारो काको म्हारै पेट माहै तडफडै छै[13] । म्हारो परवाडो लै ।' ताहरा धीरदे घिरियो[14] । नैडो आयनै उतरियो[15] । ताहरां गोगादेजी तरवाररी झडप वाही मु जोईयो कनै आय पडियो[16] । ताहरा ताळी दे अर हसियो । ताहरा धीरदे वोलियो–

---

1 तब पानी पिलाया और घोडोको ताजा करके दोनो ओरसे चले । 2 तव ढाढ कहता है । ढाढी = विरुद गाने वाली जाति । 3 हे गोगादे ! चरनेको छोडे हुए घोडे आवश्यकता पर हाथ नही आते । ऐसे समय पर घोडोको वंधा रख कर थोडा घी दे देना चाहिये, पर चरनेके लिए नही छोडना चाहिये । 4 तव लडाई शुरू हुई । भाटी और जोईये राठोडोंसे लडे । 5 गोगादेजी आहत हुए । 6 दोनो जघाएँ कट गई । 7 उनका पुत्र ऊदाभी पासमे गिर गया । 8 उनकी (गोगादेजीकी) तलवारकी लचक कैसी वढिया है, वे उस तलवारको टिका कर उसके सहारे वैठे हुए घूम रहे हैं । 9 इतनेमे राणगदे सवारी किया हुआ उधरसे निकला । 10 राव राणगदे ! तू हमारा वडा सम्वन्धी है, मेरा प्रवाडा ले ले । प्रवाडा—वीरताका विरुद । 11 तेरे समान नीचके हम प्रवाडे लेते फिरते हैं क्या ? 12 तव राणगदे तो आगे चला गया । 13 तेरा काका मेरे पेटमे छटपटा रहा है । 14 तव धीरदे लौटा । 15 निकट आकर घोड़ेसे उतरा । 16 तव गोगादेजीने झडप कर तलवारका प्रहार किया सो जोईया पासमे आकर गिर पडा ।

वळिया काळा दाद, तू आपै हर मेळियौ ।
गोगादे वेधीर, एका जेही नीवडी ।।
सु हाण महेवै[1] ।

ताहरा धीरदे पडियो, काम आयो ।

ताहरा गोगादेजी बोलिया–'जे कोई सुणतो हुवै तो साभळज्यो[2], गोगादे कहै छै, राठोडै अर जोईयै वैर बरावर हुवो छै । जे कोई जीवतो हुवै तो महेवै जायनै कहज्यो[3] । राव राणगदे विष्टाकारी दीनी छै[4] । ज्यो वैर भाटियां कना लेज्यो[5] । ताहरा झीपो झास माहै छिपियो हुतो, सु झीपै सुणियो[6] । सु जाहरा झीपो महेवै गयो, ताहरा समाचार कह्या[7] ।

तितरै जोगी गोरखनाथ आय नीसरिया[8] । गोगादे वैठो दीठो[9] । ताहरा गोरखनाथ साथळा जोइनै लगाई[10] । एक साथळ ऊदेरी चेढी । एक साथळ आपरी चेढी[11] । ताहरा गोगादेजीनू गोरखनाथजी शिष्य किया । अजेस गोगादेजी चिरजीव छै[12] ।

गोगादेजी वीरमोत थळवट माहै रहै[13] । एक समइयै थळवट माहै काळ पडियो । लोग मऊनू चालियो[14] । थोडो सो लोग रह्यो ।

---

1 तब धीरदेने कहा—'बदला लेने वालोमे अधीर हे गोगादे ! तूने अपनेको और मुझको, दोनोको भगवानसे मिला दिया । (परस्पर क्षत्रियोचित काम कर वीर-गतिको प्राप्त हुए ।) अत अब अपने आपसमे जो भयकर शत्रुता थी, वह खत्म हो गई । महेवेकी हानिकी बात थी सो वह भी अब दोनो ओर एक जैसी बात हो जाने पर खत्म हो गई । अपना बैर बराबर हो गया ।' 2 जो कोई सुनता हो तो सुन लेना । 3/4/5 जो कोई जिंदा हो तो महेवे जाकर यह खबर देना कि राव राणगदेने हमे अपशब्द कह कर ललकारा है सो इस वैरका बदला भाटियोंसे लेना है । 6/7 झीपा कही झाडीमे छिपा हुआ था, उसने गोगादेकी इस बातको सुना और वह जब महेवे गया तो उनके ये समाचार कह सुनाये । 8/9 इतनेमे योगी गोरखनाथ उधर आ निकले । उन्होंने गोगादेको इस हालतमे बैठे देखा । 10 जब गोरखनाथने टूटी हुई जघाओकी तलाश करके गोगादेजीके शरीरमे जोड दी । 11 उनमे एक जाघ ऊदेकी और एक स्वय गोगादेकी चिपकाई । 12 गोगादे अभी तक चिरजीवी है । 13 वीरमजीके पुत्र गोगादेजी थल प्रातमे रहते हैं । 14 एक बार थलमे दुकाल पडा सो लोगोने मऊके रूपमे देशसे प्रस्थान कर दिया । मऊ = दुष्कालके कारण भूखो मरती हुई गरीब प्रजाका वह समूह जो वर्षा बहुल प्रातमे खेती, मजदूरी आदि करनेको जा रहा हो ।

वीजा सरव उचळिया[1]। आप आपरै मतै गया[2]। मजूरी कर खाधो[3] ।

पछै ऊपरसू असाढ़ आयो, ताहरां गावा मांहै लोग आय वसियो[4] । सू वांनर तेजो भलो रजपूत हुतो । आपरो खासो चाकर हुतो सोई मऊ गयो हुतो मु ओ पण पाछौ आयो[5] । दोय साथै टावर—एक बेटो एक वेटी[6] । एक पडतलनू वळद[7] । तिकै रजपूत गाव मीतासर आय वासो लियो । रात रह्यो[8] ।

प्रभात कोहर सांपडणनू गयो[9] । ओ जाणतो न हुतो, पाणीडी माहै वैठो[10] । झूलण लागो सु गावरा धणी मोहिल देख अर उण रजपूतनू वेटीरी गाळ दीवी[11]। अर कह्यो–'रे, पापी ! लोग पाणी पीवै छै ।' अर उवै रजपूतनू चोट वाही । वळदारो जूट वहतो हुतो तिकै पुराणीरी दीवी[12] । सु रजपूतनू वुरी लागी । ताहरा लोका कह्यो–'रजपूत गोगादेजीरो छै, वुरी कीवी[13] ।' ताहरा मोहिलै पुराणीसू इयैरा मगर चीरिया[14] । अर कह्यो–'गोगादे करसी सो देखस्या[15] ।' ताहरां रजपूताणी उण रजपूतनूं वरज राखियो[16] । अर ओ घरनू

---

1 दूसरे सभी लोगोने उचाला कर दिया । 'उचाल' अर्थके लिये देखिये इस दूसरे भागके पृ ११७ की टिप्पणी । 2 अपने-अपने विचारसे भिन्न-भिन्न स्थानोको गये । 3 मजदूरी कर गुजरान किया । 4 फिर जव अगले वर्षका आषाढ मास आया तव वापिस लोग अपने-अपने गावोमे आकर वसे । 5 वानर तेजा एक अच्छा राजपूत था और वह गोगादेजीका खासा सेवक था, वह भी मऊके रूपमे चला गया था, अव वापिस लौटा । 6 एक लडका और एक लडकी, दो वच्चे साथमे । 7 सामान रखनेको एक वैल साथमे । 8 उस राजपूतने मीतासर गावमे आकर विश्राम लिया और रात भर ठहरा । 9 प्रभात समय कुएँ पर नहानेको वैठ गया । 10 इसे पता नही था अत वह पीनेके पानी भरनेकी कुडी (हौज)मे नहानेको गया । 11 जव वह उसमे स्नान करने लगा तो गावके मालिक मोहिलने उस राजपूतको वेटीकी गाली दी । 12 जो वैलोकी जोडी पानी निकाल रही थी, उनको हाकनेकी पुरानी लेकर उसको मारा । पुराणी (पराणी) = वैलोको हाकनेकी एक लकडी जिसकी एक ओर तीखी लोहेकी कील लगी होती है । 13 यह राजपूत तो गोगादेजीका आदमी है, इसे मार कर तुमने वुरा किया । 14 तव मोहिलने पुरानीसे उसकी पीठ चीर दी । 15 गोगादे करेगा सो देख लेंगे । 16 तव एक राजपूत स्त्रीने उस राजपूतको रोक रखा ।

हालियो[1]। घरै आय, घर मांहै रातरी चानणो कियो[2]। ताहरा गोगादे कह्यो–'जावो देखो, खबर करो तेजै वानररै घरै चानणो क्यु छै ? देखो, आयो न छै[3] ?' ताहरा आदमी आय खबर कर गया। कह्यो–'राज ! तेजसी वानर आयो छै।' तद कह्यो–'बोलाय ले आव।' तद बोलाय ले आयो। गोगादेजीसू मिळियो[4]।

बीजै दिन गोगादेजी तळाव सिनान करणनू पधारिया[5]। साराही लोग तळाव माहै भूलणनू पैठा। गोगादेजी आप सिनान करणनू पैठा[6]। पण वानर तेजौ तळाव माहै वड़ै नही[7]। ताहरा गोगादेजी तेजैनू सूस दिराय तळाव माहै भूलणनू तेडियो[8]। माहि गयो। ताहरा गोगादेजी मगरामे पराणीरा घाव दीठा, तद कह्यो–'ओ कासू छै[9]।' ताहरां उठै रजपूत बहुत दिलगीर हुवो[10]। ताहरा गोगादेजी कह्यो–'रे किसै वास्तै[11]? ताहरा रजपूत सारी हकीकत कही। कह्यो–'राज ! थांहरो कर मारियो छै[12]।' ताहरा गोगादेजी कह्यो–'किसो गाम[13] ?' ताहरा ईयै कह्यो–'राज ! मीतासर राणै माणकराव[14]।' ताहरा गोगादेजी कह्यो–'धीरज राखि, देखा, श्री परमेश्वर कासू करै[15] ?'

पछै मोहिला ऊपर कटक कियो। कितरैहेकं दिनै दव-ऊठणी एकादशी आई, तियै दिन आपरो साथ ले गोगादेजी मीतासर ऊपर चढिया[16]। गाव माहै सतावीस वीमाह, रजपूत, जाट, वाणियारै

---

1 और यह अपने घरको चला। 2/3 घर पर आकर जब उसने दीपक जला कर रातको प्रकाश किया, तब गोगादेने कहा—"जाकर देखो तो, पता लगाओ कि तेजा वानरके घरमे प्रकाश क्यो हो रहा है ? वह आ तो नही गया है ?" 4 गोगादेजीसे मिला। 5 दूसरे दिन गोगादेजी तालाव पर स्नान करने को पधारे। 6 साथके सब ही लोग स्नान करनेको तालाबमे घुसे। गोगादेजी स्वयने भी उसमे प्रवेश किया। 7 परन्तु तेजा वानर तालाबमे प्रवेश नही करता है। 8 तब गोगादेजीने शपथ देकर तेजेको स्नान करनेके लिए तालावके अन्दर बुलवाया। 9 अन्दर गया तब गोगादेजीने उसकी पीठ पर परानीके घाव देखे तो उन्होने कहा—"यह क्या बात है ?" 10 तब वह राजपूत वहा बहुत उदास हुआ। 11 तब गोगादेजीने कहा—"अरे किस लिये ?" 12 आपका राजपूत हूँ, ऐसा जान करके मुझे मारा है। 13 कौनसा गाव ? 14 तब उसने कहा—राजन् ! मीतासर गांवके राना माणक-रावने। 15 तब गोगादेजीने कहा—'धीरज रखो, देखो, श्री परमेश्वर क्या करते हैं ?" 16 कितनेक दिनोके बाद जब देवोत्थनी एकादशीका दिन आया, उस दिन अपना साथ लेकर गोगादेजीने मीतासरके ऊपर चढ़ाई कर दी।

हुता सु जानां आवती छी[1]। सु हेकै 'थळी हेठै गोगादेजी पण उतर वैठा[2]। लोका केही दीठा, सु जाणियो जांन छे[3]। पछै वारसरै दिन परभातै मोहिला ऊपर आया। वेढ हुई[4]। सिरदार मोहिलारो नीसर गयो[5]। और सरव मार काढिया[6]। गाव लूटियो। कोहर ऊपर खेजडो छै, सु ऊठै आया[7]। पछै तैनू वगल माहै ले ऊभा रह्या[8]। ऊ खेजडो मरदरी ताल समो छै[9]। गोगादेजी इतरै डील हुता[10]। पछै जाना सतावीसै लूट लीवी[11]। रजपूतरो वैर ले पधारिया[12]।

इति वात गोगादेजीरी सपूर्ण।

---

1 उस दिन उस गावमे राजपूत, जाट और वनियोंके २७ विवाह थे, अत वाहिरसे बारातें आ रही थी। 2 सो (उस गावके पास) एक टीवेके नीचे गोगाजीने भी अपना पडाव डाल दिया। 3 कई लोगोने देखा तो समझा कि कोई बारात है। 4 फिर द्वादशीके दिन प्रभात मोहिलो पर चढ करके आये और लडाई हुई। 5 मोहिलोका सरदार माणकराव भाग निकला। 6 और दूसरे सवको मार डाला। 7 उस कूएके ऊपर एक शमी-वृक्ष है, वहा पर आये। 8 उस वृक्षको वगलके नीचे दे कर खडे रहे। 9 वह खेजडा-वृक्ष पुरुषके ताल समान परिमाण जितना ऊचा है। ताल = पुरुषका खडा हो कर ऊपरको हाथ उठाये हुए—एडीसे हाथकी अगुलियो तकका एक मान। 10 गोगादेजीका शरीर इतना ऊचा था। 11 फिर २७ वारातोको भी लूट लिया। 12 अपने राजपूतके वैरका बदला लेकर गोगादेजी लौटे।

श्री गणेशायनम

# अथ अरड़कमलजी चूंडावतरी वात लिख्यते

अरडकमलजीनू एक दिन नागोर माहै राव चूडैजी बोल वाह्यो हुतो[1]। सु अरडकमलजीरै हीयै खटकतो हुतो[2]। सु अरडकमलरो हेरो ठाम-ठाम रहतो हुतो[3] जु—'कठै ही[4] राणगदे अथवा सादूळ कुवर कठै ही आवै, और हूँ मारू तो धन्य म्हारो जीवियो। मोसू रावजी वचन कह्यो छै।[5]'

एकदा प्रस्ताव[6]। छापर मोहिल राज करै ताहरा मोहिला नाळेर सादूळ राणगदेवोतनू पूगळ मेल्हियो।[7] बाभण[8] नाळेर ले अर पूगळ गयो। जायनै राव राणगदेनू दियो। कह्यो—'जी, मोहिला सादूळ कुवरनू नाळेर दियो छै। ताहरा राणगदे कह्यो—'माहरै राठोडा सू वैर, सु परणीजण कोई नी आवै[9]। ताहरा बाभणनू विदा दीनी[10]।

ताहरा सादूळ सुणियो—'जु रावजी मोहिलारो नाळेर घे[फे]रियो[11]।' ताहरा सादूळ आदमी म्हेल नै बामण बुलायो[12]। बाभणनू तेडाय नाळेर वादियो[13]। बाभणनू घणो खरच दे अर विदा कियो[14]। को रजपूत तेडियो[15]। तेडिनै कह्यो—"रावजीनू कहो, भूडा दीसस्यो[16]। राठोडासू

---

1 नागोरमे एक दिन राव चूडोजीने अरडकमलजीको एक ताना मारा था। 2 वह अरडकमलजीके हृदयमे खटकता था। 3 इसलिये अरडकमलने स्थान-स्थान पर अपने भेदिये रख छोडे थे। 4 कही भी। 5 और मैं उनको मारदू तो मेरा जीना धन्य। रावजीने मुझे ताना मारा था। 6 एक समयकी वात। 7 मोहिलोने राणगदेके पुत्र सादूलसे अपनी कन्याका सबध करनेके लिये पूगल नारियल भेजा। 8 ब्राह्मण। 9 तब राणगदेने कहा—हमारी राठौडोसे शत्रुता है अत विवाह करनेको नहीं आ सकता। 10 तब ब्राह्मणको रवाना किया। 11 जब सादूलने सुना कि—'रावजीने मोहिलोकी ओर से आये हुए नारियल को लौटा दिया। 12 सादूलने तब आदमी भेज कर ब्राह्मणको बुलवाया। 13 ब्राह्मणको बुला कर नारियलको सम्मानपूर्वक वदन कर के ग्रहण किया। 14 ब्राह्मणको बहुत द्रव्य देकर रवाना किया। 15 किसी राजपूतको बुलवाया। 16 बुला कर के कहा कि रावजीको कहदो कि इस प्रकार करनेसे तो अपनी बदनामी होगी।

वीहता कितराइक दिन रहस्यो[1] ? हू मोहिल परणीस[2] ।' ताहरा राव कासू करै[3] ? वेटो न रहै । टीकाइत वेटौ सपूत[4] ।

ताहरा रावजी हुकम कियो—'पधारो ।' ताहरा रजपूत एकठा करनै हालणरी तयारी कीधी[5] । ताहरा राव कन्है मोर घोडो मागियो[6] । ताहरा राव कहै-'तू घोडो जाणा राखसी नही । का गवाडीस, का केहेनू दे आईस । तू घोड़ो मता ले जावै[7] ।' ताहरा' कह्यो–'हू घोड़ो म्हारै जीव हू सोहरो राखीस[8] ।' ताहरा राव कन्हा घोडो लियो[9] । केसरिया करै सादौ कुवार परणीजण चढियो[10] । आइ छापर पहुतो । मोहिल परणियो । राणै माणकरावरै सादो परणियो[11] । गढ द्रोणपुर वीवा करण न दियो । सु माणकरावरै भाटियाणी रावळ केहररी वेटी हुती, सु जोरावर । ताहरा ओडीटमे व्याह माडियो[12] । राणै खेतैरी दोहीतरी, राणा माणकरावरी वेटी सादूळ भाटीनू परणाई[13] ।

ताहरा मोहिलै कह्यो–'चढो । आदमी राखो, सु सेजवाळो ले आवसी । एथ राठौड नैडा छै । थारै वैर छै । थे चढि खडो[14] ।' ताहरां सादूळ कहै–"हू परवाह देनै पछै साथै चढीस । एकलो चढू

---

1 राठोडोसे डर कर कितने दिन रह सकेंगे ? 2 मैं मोहिलानीसे विवाह करूँगा । 3/4 सुपूत टीकायत वेटा रहा, वह जब नही मानता तो राव क्या करे ? 5 तव राजपूतोको इकट्ठा कर के चलनेकी तैयारी की । 6 उस समय रावसे मोर नामका घोडा मागा । 7 तव राव कहता है कि मैं जानता हूँ कि तू घोडा रख नही सकेगा । या तो खो देगा या किसीको दे आएगा । तू यह घोडा मत लेजा । 8 मैं घोडेको मेरे जीसे भी अधिक आराम-पूर्वक रखूगा । 9 तव रावसे घोडा ले लिया । 10 केसरिया वस्त्र पहिन कर के सादूल कुँवर विवाह करनेको रवाना हुआ । 11 आ कर के छापर पहुँचा और राना माणकरावके यहा मोहिल पुत्रीके साथ विवाह किया । 12 रावल केहरकी वेटी भटियानी माणकरावकी स्त्री वडी जोरावर, उसने इस विवाहको ओडीट गावमे किया । 13 राना माणकरावकी पुत्री जो राना खेताकी दोहीती थी, सादूल के साथ व्याही गई । 14 तव मोहिलोने कहा—"तुम रवाना हो जाओ । आदमियोको पीछे रख दो सो वे मोहिलकी पालकी अपने साथ ले आयेंगे । यहा राठौड नजदीक हैं । तुम्हारा उनसे वैर है अत. तुम चढ कर पहिले रवाना हो जाओ ।"

नही[1] ।' यु कहिनै रह्यो। ताहरा हेरै जायनै कह्यो अरड़कमल नू–'सादो मोहिलै परणीजणनू आयो छै[2] ।'

तरै ढाढी कहै[3]–

नागाणाचो विणियं तुणियै,
अरडकमल ओ चदा सुणियै।
हेरू मभि थये परणायो,
सादा ! अरडकमलजी आयो[4] ॥

ताहरा अरडकमलजी साथ करनै चढियो। नागोरसू चढियो। ताहरा वडोकरो सुगन हुवो[5] । सु ताहरा मेहराज साखलो साथ हुतो सु तिणनू अरडकमलजी पूछियो[6]–'सुगनरो फळ कहो।' ताहरा मेहराज कहै–'आपै काळै गोहिलरै घरै हालो[7] । ज्यु जाइ अर जीमण कराड़ा[8] । अर जाहरा कुवरजी ! जीमणनू बुलावै ताहरा काळैनू भेळो बैसांणज्यो[9] । पैहला कवो थे मता भरज्यो[10] । काळैनू भरण देज्यो[11] । जाहरा काळो कवो भरै, ताहरा पूछज्यो–'जु, एक सुगन म्हानू इसोसोक हुवो, तैरो विचार काळाजी कहो[12] ।'

ताहरा जायनै काळैरै उतरिया[13] । काळै भगतरी तैयारी की[14] । ज्यु आरोगण बैठा, ताहरा काळैनू भेळो बैसाणियो[15] । काळै कवो भरियो,[16] ताहरा अरडकमल पूछियो, "काळोजी ! म्हे तो

---

1 तब सादूल कहता है कि मैं यहा त्याग (नेग अ र दान) दे देनेके बाद सबके साथ ही रवाना होऊँगा। अकेला नही जाऊँगा। 2 तब भेदियोने जाकर अरडकमलको कहा कि सादूल मोहिलोंके यहा शादी करनेको आया हुआ है। 3/4 तब ढाढी कहता है—"हे सादूल ! नागोरके भेदियोके द्वारा तेरे विवाहका सब भेद अरडकमलने सुन लिया है। तेरा विवाह उन हेरुओकी उपस्थितिमे ही हुआ है अत अरडकमल तेरे ऊपर चढ़ कर आया ही समझो।" 5 तब अच्छा शकुन हुआ। 6 मेहराज साखला साथमे था, उसको अरडकमलजीने पूछा। 7 अपन पहले काला गोहिलके यहां चलें। 8 वहां जाकर भोजनकी तैयारी करवावें। 9 और जब कुवरजी ! आपको भोजन करनेको बुलाने आवे तब कालेको साथ बिठा कर भोजन करना। 10/11 पहला कौर आप नही लेना, कालेको लेने देना। 12 जब काला कौर भरने लगे तब पूछना कि हमको एक ऐसा शकुन हुआ है, उसका फलाफल कालाजी हमे बताओ। 13 तब जाकर कालेके यहा ठहरे। 14 कालेने भोजनकी तैयारी की। 15 जब भोजन करनेको बैठे तो कालेको सामिल बिठाया। 16 कालेने ज्योही कौर भरा।

सादूळ ऊपर चढिया, अर हालता इसडो सुगन हुवो, तैरो विचार कहो[1]।' ताहरा काळै कह्यो–'सुगन ले जावसी मेहराजरै घरनू[2]। काळो बोलियो–'अरडकमलजी! थे जिए[3] काम पधारो छो सो सिद्ध हुसी। सिरदार हाथ आवसी। थाहरी जैत हुसी। कालै विहाणै इण विरिया मरसी। इयै सुगनरो ओ विचार छै[4]। ताहरा अरडकमल आघा चढि खडिया[5]। महिराज साखलैरो बेटो आल्हणसी राव राणगदे, सादै मारियो हुतो। तैरै वासते मेहराज आगू हुवो। कटक सादै ऊपर लीयै जावै।

आगै सादूळ भाटी परवाह दे, ढोल वजाय, सेजवाळो लेनै पूगळनू चालियो[6]। ताहरा लायारै मगरै अरडकमल जाय पहुतो[7]। ताहरा सादैनू खवर हुई–'अरडकमल आयो।' ताहरा अरडकमल बोलियो–'वडा भाटी! जाहै ना, हू घणी भुयथी आयो हू[8]। ताहरा ढाढी कहै–

'ऊडै मोर करै परळाई, मोर जाइ पण सादो न जाई[9]।'

ताहरा सादूळ अपूठो घिरियो[10]। रजपून साम्हा मडियो। लडाई हुई। रजपूत काम आयो। सादूळनू घोड़ाहू उतर अर इसी तरवार वाही सु घोडारा च्यारै पग अळगा पडिया[11]। सादूळ काम आयो।

---

1 तव अरडकमलने कहा—"कालाजी! हम तो सादूलके ऊपर चढ कर आये हैं। चलते समय हमे इस प्रकारके शकुन हुए है, उसका फलाफल विचार कर कहिए।" 2 तव कालेने कहा—"यह शकुन आपको मेहराज के घर पर ले जायेंगे। 3 जिस। 4 सरदार हाथ आयेगा। तुम्हारी जीत होगी। कल इस समय प्रभातमे वह मरेगा। इस शकुनका यह फल है। 5 तव अरडकमल चढ कर के आगे चला। 6 इधर सादूल भाटी त्याग देनेके वाद ढोल वजवा कर अपनी नववधूकी पालकीको साथ ले कर पूगलको रवाना हुआ। ढोल वाजणो = विवाहके सानन्दपूर्वक सम्पन्न हो जाने और न्योछावर और त्याग आदि नेग एव अन्य प्रथाओके निर्विघ्न समाप्त हो जानेके वाद वारात रवाना हो जाते समय वारात वालोकी ओरसे ढोल वजवाये जानेकी एक आवश्यक और महत्वपूर्ण प्रथा। इसे 'ढोल वाजणो', 'ढोल वजवावणो', 'जीतोडारा ढोल घुरावणा' भी कहते हैं। 7 तव लायाकी पहाडीके पास अरडकमल उसे जा पहुँचा। 8 अरडकमलने कहा—"वडे भाटी सरदार! जाइये नही, मै तो वहुत दूरसे आपके लिए आया हूँ। 9 तव ढाढी कहता है—"मोर घोडा उछलता-कूदता चाहे उड जाये, परतु सादूल कही नही जायेगा।" 10 तव सादूल पीछा फिरा। 11 अरडकमलने घोडेसे उतर कर सादूलके ऊपर ऐसी तलवार चलाई सो सादूल और घोडाके चारो पाव दूर जा गिरे।

ताहरा मोहिल आपरो हाथ वाढि अर सादूळरै साथै बाळियो[1]। आप पूगळ गई। जाय सासूरै पगै लागी[2]। सुसरैनू मुह दिखाळ अर कह्यो—'सुसराजी! म्है थाहरो सासूजीरो मुह देखणो हुतो तैरै वासतै हू एथै आई छू[3]।' पछै सासू सुसरैरो मुह देख, अर सती हुई छै। अरडकमल सादैनू मार नागोर आयो। राव चूडैजीरै पाए लागो[4]। ताहरा अरडकमलजीनू रावजी दूणो वधारो दियो। डीडवाणो पटै दियो[5]।

इति अरडकमलजीरी वात सपूर्ण

---

1 तब मोहिल कुंवरानीने अपना हाथ काट कर उसे सादूलके साथ जला दिया। 2 स्वय पूगल चली गई और वहा जा कर सासूके पांवा लगी। 3 ससुरको अपना मुह दिखा कर कहा—'ससुरजी! आपका और सासूजीका दर्शन करना था इसलिये मैं यहा आई हू। 4 राव चूडाजीके पांवा लगा। 5 तब रावजीने अरडकमलजीको दुगुना वधारा और सम्मान दिया और डीडवाना भी पट्टेमे कर दिया।

# अथ वात रावजी रिणमलजीरी लिख्यते

एकदा प्रस्ताव[1] । राव श्री चूंडैजी मोहिलरैं कहै रिणमल कुवरनू तेड़िनै विदा दीधी[2] । ताहरा रिणमलजी हालियो । रजपूत भला-भला हुता सु रिणमलरै साथै हुवा[3] । ताहरा रिणमलजी ५०० असवारासू हालियो । ताहरा रिणमलजी धणलै गाम जाय उतरियो, नाडूलरै[4] । नाडूल सोनिगरा राज करै छै । रिणमलजी गाडा ले जाय धणलै छोडिया छै[5] ।

अठै रिणमलजीरै तीन वार भूजाई होवै । कडाह थाट रहे[6] । आठ-पोहर सिकार खेलै । वडी साहिबी[7] ।

ताहरा सोनगरै सुणियो[8] । ताहरा सोनगरै चारण मेल्हियो[9] । कह्यो–'जायनै खवर करो । रिणमलरै कितरोहेक[10] साथ छै ?' ताहरा चारण आयो । आयनै[11] रिणमलनू[12] आसीस दीधी[13] । गढवीनू[14] कन्है[15] वैसाणियो[16] । सोनगरा की सु वाता पूछी । तितरै भूजाईरो पधारो हुवो[17] । रिणमलजी ई आया । चारणनू साथै ले आया । भूजाई-वण-देवजी-रोटा,[18] सोहिना । ईयै भात चारण भूजाई जीमियो । कह्यो–'गढवी ! तोनू[19] सवारै[20] विदा देस्या ।' तितरै दिन ऊगो[21] । अर आय सिकारिया कह्यो–'राज ! वासोर डूगरद्या[22] ५ वाराह रोकिया छै । तुरत चढो ।' चढिया । जाय पांचै वाराह

---

1 एक समयकी बात । 2 राव श्री चूंडाजीने मोहिलरानीके कहनेसे कुंवर रिणमलको बुला कर के निकाल दिया । 3 तब रिणमलजी रवाना हुए तो जो अच्छे-अच्छे राजपूत थे वे सब रिणमलजीके साथ हो लिये । 4 तब रिणमलजी नाडूलके धणले गांवमे आकर ठहरे । 5 रिणमलजीने अपने गाडे लेजा कर धणलेमे छोडे । 6 यहा रिणमलजीके दिनमे तीन बार पक्वान्न-रसोई बनती थी । हरदम कडाह चलते ही रहते थे । 7 बडा वैभव और ठाट-बाट । आठो पहर शिकार खेलते हैं । 8 सुना । 9 तब सोनगरोने एक चारणको भेजा । 10 कितना सा । 11 आकर । 12 रिणमलको । 13 दी । 14 चारणको । 15 पास । 16 बठलाया । 17 इतनेमे भूजाई तैयार होकरके आई । 18 मोयन आदि ससाले देकर बनाई हुई एक प्रकारकी बढिया मोटी बाटी । 19 तेरेको । 20 कल सुबह । 21 उदय हुआ । 22 पहाडियोमे ।

मारनै ऊठ घाल ल्याया[1]। भूजाई तयार हुई हुती[2]। आय आरोगण बैठा। पातळा पुरसी छै[3]। सहु को जीमै छै[4]। तिसडै आयनै वाहरुवा कह्यो[5]–'राज! पनोतैरै वाहळै[6] एक वडो वाराह आयौ छै।' युहीज ऊठियो। घोडै पलाण[7] माडियो। तयार हुय तुरत असवार चढियो। चारण साथै चढियो। चढता भोईनू[8] कह्यो–'रे, पनोतैरै वाहळै भूजाई करिज्यो।' भूजाई ओथ[9] जायनै तयार कीधी। आप जाय वाराह मारियो। जितरै[10] अपूठो वळियो[11] तितरै[12] देखै तो भूजाई तयार छै। आय पातिये बैठा[13]। आरोगता हुता[14]। आधोडक जीमिया हुता[15] नै वाहरू आया। आयनै कह्यौ–'कोलररै तळाव एक नाहर नाहरी आया छै।' ताहरा अध-जीमिया ऊठिया[16]। चढि दोडिया। चारण पण[17] साथै चढियो। जावता[18] कह गया हुता[19]– 'कोलररै तळाव भूजाई करज्यो।' वळै[20]भोईयां जायनै[21] कोलररै तळाव भूजाई तयार करी। आप जाय नाहर मार अपूठा आया[22]। आगै भूजाई तयार हुई छै। अर आया। आगै घणो सीरो पुडी देवजी-रोटो[23] तयार हुवो छै। सरब साथ आय भूजाई बैठो। भूजाई जीमनै अपूठा घरै आया[24]।

मारग माहै आवता चारण विदा की[25]। कह्यो–'जी, नाडूळ निजीक[26] छै।' ताहरा चारणनू विदा दी। चारणरै घोड़ै ऊपरची ली[27]। जितरै[28] नाडूळ हू[29] निजीक आयो। कोस १ रही। ताहरा[30] पुकारियो–'वाहर रे! वाहर रे!! वाहर[31]!!! ताहरा लोक

---

1 पाचो वाराहोको मार और ऊटो पर डाल कर ले आये। 2 थी। 3 पत्तलें परोसी गई हैं। 4 सभी भोजन कर रहे हैं। 5 इतनेमे आकर के वाहरुओने (हेरा करने वालोने) कहा। 6 नाले पर। 7 जीन। 8 एक जाति। 9 उधर। 10 जितनेमे। 11 पीछे फिरे। लौटे। 12 इतनेमे। 13 आकर पक्तिमे बैठे। 14 भोजन करते थे। 15 लगभग आधा भोजन किया था। 16 तब आधा भोजन किये हुए ही उठ गये। 17 भी। 18 जाते हुए। 19 थे। 20 फिर। 21 जा कर। 22 लौट आये। 23 एक प्रकारकी वाटी। 24 भोजन कर के वापिस घर पर आये। 25 मार्गमे आते हुए चारण रवाना हुआ। 26 नजदीक। 27 चारणके घोड़ेने ऊपरका (निकटका) मार्ग लिया। 28 इतनेमें। 29 से। 30 तब। 31 पीछा करो, पीछा करो।

नाडूळसू अपलाणै घोड़ै चढि दोडिया[1]। आगै देखै तो चारण कूकतो[2] आवै छै। कह्यौ–'क्यु, खोसियो कै तो नू[3] ?' ताहरा चारण बोलियो–'रे! मोनू न खोसियो, थानू खोसिया। रे! रिणमल नाडूळ लेही[4]...।' कह्यो–'रे, कदी[5] ?' आज लेही[6]। रे, रजपूता! रिणमल एथ आय रह्यो छै[7]। बाप काढियो छै[8], अर ओ[9] खरच करै छै। सु कोहीकारै माथै कडकसी[10]।' 'कोहीका रै, कैरै[11] ?' 'सोनगरारै माथै, नाडूळ लेही[12]। का हूलारै माथै कडकै, सोझत लै[13]। बीजो किणी ही माथै नही[14]। हू पुकारू छू रे, कान दीयै, कोई ऊलै कान सुणज्यो[15]! म्हारो क्यु लीजै नही, पण थाहरी धरती लीजे छै[16]। वाहर करो[17]।'

पछै कितराहेक दिन रिणमलजी अठै रहिनै पछै चीत्रोड पधारिया[18]। चीत्रोड माहै राणो लाखो राज करै। चूडो कुवर छै। सु चीत्रोड छतीस ही राजकुळी चाकरी करै[19]। वडो हिंदुसथान, वडो राज[20]। अठै रिणमलजी पण दीवाणरी चाकरी करै[21]।

एक दिनरो समाजोग छै। राणो लाखो सिकार चढियो छै। चूडो कुवर साथै छै। आगै दरवाजै नीसरता देखै तो एक कुभार परणीज'र आवै छै[22]। दरवाजै माहै पैसै छै[23]। ताहरा दीवाण ऊभो

---

1 तब नाडोलके लोग अपने घोडों पर बिना जीन रखे ही सवार होकर दौडे। 2 पुकार करता हुआ। 3 तेरेको किसीने लूटा है क्या ? 4 अरे! मुझको नही लूटा है, तुमको लूटा है रे! रिणमल नाडोल ऊपर अधिकार कर लेगा। 5 अरे! कब ? 6 आज ले लेगा। 7 रिणमल यहा आ रहा है। 8 बापने उसको निकाल दिया है। 9 यह। 10 सो यह किन्हींके ऊपर आक्रमण करेगा। 11 कोई किनके ऊपर ? 12/13 या तो सोनगरो पर आक्रमण कर के नाडोल लेगा या हुलोंके ऊपर आक्रमण कर के सोजत ले। 14 दूसरे किन्ही पर नही। 15 अरे! मै पुकार कर कहता हूँ, कोई मेरी बात पर कान देना। कोई इधर आकर मेरी बात सुनना। 16 मेरा कुछ नही लिया जा रहा है, परन्तु तुम्हारी धरती ली जा रही है। 17 दौड कर पीछा करो। 18 कितनेक दिन रिणमलजी यहा रह कर फिर चित्तौड पधारे। 19 चित्तौडमे क्षत्रियोंके छत्तीस ही राजवंश चाकरी करते हैं। 20 मान-प्रतिष्ठामे हिन्दुस्थानका वडा राज्य। 21 यहा रिणमलजी भी दीवान (राना)की चाकरी करते हैं। 22 आगे जब दरवाजेसे निकलते हुए देखते हैं तो एक कुम्हार विवाह कर के आ रहा है। 23 दरवाजेमे प्रवेश कर रहा है।

रहियौ–'कुभारनू आवणद्यो[1]। ताहरा कुभार आघो आयो[2]। ताहरा दीवाण कुभारनू देखनै निसासो मूकियो[3]। ताहरा कुवर चवडै दीठो[4]। सिकार रम अपूठा पधारिया[5]। महला माहै पधारिया। अमराव, राव सरब वाहुडिया[6]। ताहरा चवडै कुवरनू कह्यो–'वेटा! थेई जावो। सुख करो[7]।' ताहरा चवडै हाथ जोडि विनती कीधी। दीवाण बोलिया–'चवडा कासू कहे[8]?' ताहरा कह्यो–'दीवाण दरवाजै माहै नीसरता निसासो क्यु मूकियो? किसै वास्तै[9]?' ताहरा कह्यो–'चवडा! ईयै ख्याल मत पडै[10]।' कह्यो–'दीवाण! वात कह्या ही ज वणै[11]।' ताहरा दीवाण वोलिया–'चवडा! यु नही। रजपूतरी वेटी परणीजीजै तैरो कासू[12]? पण आपरा सगारी वेटी परणीजीजै तो वीमाह हुवो जाणीजै[13]। ताहरा चवडै कह्यो–'भला दीवाण[14]।'

ताहरा चवडै सरव अमराव एकठा करनै पूछियौ–'ठाकुरे! किण-हीरै मोटी वेटी छै[15]? ताहरा कह्यो–'राज! रिणमलजीरै डेरै म्होटी बेटी छै[16]।' ताहरा चवडै कह्यो–'रिणमलजी! म्हानू गोठ करो[17]। ताहरा रिणमलजी कह्यो–'वाह वाह!! ताहरा रिणमलजी

---

1 तव दीवान (राना) खडे रहे और कहा कि कुम्हारको आने दो। (राजस्थानमे दूल्हेको, चाहे वह किसी भी जातिका हो, जवकि वह मौड बाधे हुए विवाह करनेको जा रहा हो अथवा विवाह कर के लौट रहा हो—उसे परम्परासे यह सम्मान प्राप्त है कि उस समय यदि वडेसे वडा कोई राजा भी सामने आ जाय तो वह राजा उस दूल्हेके सम्मानमे मार्ग छोड कर खडा रह जाता है। दूल्हा और उसकी वरात मार्ग नही छोडते। राजस्थानमे इसीलिये दूल्हेको 'दूल्हा' नही कहा जाता। "वीदराजा"की सम्मानीय सज्ञासे सवोधन किया जाता है।) 2 तव कुम्हार आगे आया। 3 तव दीवानने कुम्हार दूल्हेको देख कर नि श्वास छोडा। 4 उस समय कुवर चूडेने देखा। 5 जव दीवान शिकारसे वापस लौटे। 6 उमराव और राव सभी चले गये। 7 तव दीवान (राना) ने कुँवर चूँडेको कहा कि तुम भी जाओ और आराम करो। 8 चूँडा तुम क्या कहना चाहते हो? 9 दरवाजेमेसे निकलते हुए दीवानने नि श्वास क्यों छोडा? किसलिये? 10 तव उत्तर दिया कि चूडा! इस वातका कोई ख्याल न करो। 11 दीवान! यह वात तो कहना ही पडेगा। 12/13 किसी राजपूतकी वेटीसे यदि विवाह किया जाय तो उसका क्या महत्व? परतु यदि किसी वरावरीके सवधीकी पुत्रीसे विवाह किया जाय तो वह विवाह—विवाह हुआ जाना जाता है। 14 दीवान! भली वात। 15 किसीके वडी लडकी है? 16 राजन्! रिणमलजीके घर वडी लडकी है। 17 रिणमलजी आप हमको दावत दें।

मदारियारा बाकरा ४०।५० मगाया[1]। घणा गाऊथी अणाया[2]। घणा वाना किया[3]। मार बाकरानै गोठरी तयारी कीवी[4]। चवडैजीनू आदमी मूकियो। 'राज! गोठ तयार छै। जीमणनै पधारो। मेवाडा ठाकुर सोह वैठा छै[5]।'

ताहरा चवडो आयो। बोलियो–'रिणमलजी! दीवाणनू परणावो[6]।' ताहरा रिणमलजी बोलिया–'थानू परणावस्या। दीवाणरी वय अवर छै[7]।' ताहरा चवडो कहै–'रिणमलजी! थे माहरै म्होटा सगा। म्हानू रजपूत करो[8]।' वडी हठ हुई। रिणमलजी मानै नहीं। चवंडाजी छाडै नहीं। यु करता पाछलो पोहर हुओ। ताहरा चवडोजी बोलिया–'रे, कोई चारण बाभण भलो छै ईयारै[9]?' ताहरा कह्यो–'जी, चारण चादण खिडियो छै।' ताहरा चादण खिडियैनू तेडि नै कह्यो[10]– 'थारै ठाकुरनू समझावि। एक छोरु मर ही जाय छै[11]।' ताहरा चादण बोलियो–'राज! राजा था सीसोदियारै वडो वेटो हुवै[12]। वाकीरा फिरता फूघा दो। तै वास्तै न द्या[13]। अर थे वाई मागो छो; अर जो म्हे द्या, अर वाईरे छोरु हुवे सो[14]?' ताहरा चवडोजी बोलिया–'छोरु हुवै सो चीत्रोडरो धणी[15]' ताहरा चारण कहै–'राज! चीत्रोडरी माहिवी कुण छोडे[16]? ताहरा चूडैजी सूस कियो[17]। ताहरा चादण जाइनै रिणमलजीनू कह्यो–'राज! कासू करो छो[18]?'

---

1/2 तब रिणमलजीने बहुत दूरसे मदारियाके ४०-५० बकरे मगवाये। 3 अनेक प्रकारके व्यजन बनवाये। 4 बकरोको मार कर के गोठकी तैयारी की। 5 चूडेजीको आदमी भेज कर कहलवाया कि राज! गोठ तैयार है, भोजन करनेको पधारें। सभी मेवाडा ठाकुर बैठे प्रतीक्षा कर रहे है। 6 रिणमलजी! आपकी पुत्रीका विवाह दीवानसे करिये। 7 तुमको ब्याहेंगे। दीवानकी वय अधिक हो गई है। 8 रिणमलजी! आप हमारे बडे सबधी हैं, आप हमें राजपूत बनाये। (हमे यह सम्मान दें।) 9 इनके यहा समझदार चारण ब्राह्मण भी कोई है? 10/11 तब चादण खिडिये नामके एक चारणको बुला कर कहा कि तुम अपने ठाकुरको समझाओ कि वे ऐसा ही समझलें कि उनकी एक सतान मर गई है। 12/13 राज! तुम सिसोदियोंमें जो बडा बेटा होता है वही राजा होता है। शेष इधर-उधर मारे फिरते हैं, इसलिये हम दीवानको अपनी कन्या नहीं देते हैं। 14 तुम कन्या माग रहे हो, मान लो, यदि हम देदें और उस कन्याके पुत्र हो जाय तो उसका क्या होगा? 15 पुत्र होगा तो वह चित्तोडका स्वामी होगा। 16 राज! चित्तोडका राज्य कौन छोडे? 17 तब चूंडेने इस बातकी सौगध खाई। 18 राजन्! क्या विचार करते हो?

'पुराणोई चदण, नवो कुकाठ[1]' ।

कासू करणो छै ? दीवाणनू परणावो[2] । ताहरा रिणमलजीनूं चादण नीठ पगे किया[3] । तुरत दीवाणनू नाळेर मेलियो[4] ।, दीवाण पधारिया । तियैहीज दिन दीवाणनू परणाया । वडा हीडा किया[5] ।

दीवाण परणिया पछै तेरह मासे मोकल जायो[6] । जाहरा पाच वरसरो मोकल हुवो, ताहरा दीवाण विसरामियो[7] । ताहरा सतिया नीसरी । ताहरा राठोड सती हुवणरी तयारी कीवी । ताहरा चवडोजी जाय पगे पडनै कह्यो[8]–'माजी ! थ्रो कासू करो छो ? थे तो राजवाईरो टीको पावस्यो[9] ।' ताहरा कह्यो–'थां चवडो छै तठै म्हारै वेटैनू टीको कठा हुसी[10] ?' ताहरा चवडै कह्यो–'माजी ! टीको मोकलरो छै । हू मोकलरो चाकर छू[11] ।'

ताहरा चवडै मोकलनू तेडिनै आपरा माथारी पाघ मोकलरै माथै म्हेली । मोकलरी पाघ आपरै माथै म्हेली । अर मोकलनू चवडै सलाम की[12] । सारा अमरावा मोकलनू सलाम कीधी । ताहरा मोकलरी मा चवडैनू दवा दीन्ही[13] । कह्यो–'चवडै कियो ज्यु को करै नही । आ चीतोडरी साहिवी तै मोकलनू दीन्ही[14] । और जे हू

---

1 पुराना होने पर भी चदन, चादन ही कहलाता है, वह काष्ठ नही कहलाता, परतु दूसरा काष्ठ नया ही क्यो न हो, वह कुकाठ है, उसमे कोई सुगध नही होती । 2 सोचना क्या है ? दीवान को व्याह दो । 3 चाँदणने रिणमलजीको बडी मुश्किलसे तैयार किया । 4 तुरत ही दीवानको नारियल भेज दिया गया । 5 उस ही दिन दीवानको व्याह दिया और खूब सेवा-चाकरी की । 6 दीवानके विवाह करनेके १३ मास वाद मोकलका जन्म हुआ । 7 मोकल जब पाच वर्षका हुआ तब दीवान धाम पहुँच गये । 8/9 उस समय जब स्त्रिया सती होनेको निकली तो उनमे मोकलकी मा (रिणमलजीकी पुत्री) राठोड रानीने भी सती होनेकी तैयारी की । तब चूडेने उसके पावो गिर कर कहा—'माताजी ! आप यह क्या कर रही हैं ? आप तो राजमाताका सम्मान प्राप्त करेंगी ।' 10 'चूडा ! तुम मौजूद हो तो मेरे वेटेको टीका कहासे होगा ?' 11 'माताजी ! टीका मोकलको मिलेगा, मै तो उसका सेवक हूँ । 12 तब चूडेने मोकलको बुला कर अपने सिरकी पघडी उतार कर मोकलके सिर पर रखदी और मोकलकी पघडी अपने सिर पर रखदी और फिर चूडेने मोकलको प्रणाम किया । 13 उस समय मोकलकी माने चूडेको आशिष दी । 14 राठोड रानीने कहा–'चूडा ! तूने जो काम किया है वैसा कोई नही कर सकता, यह चित्तौडका राज्य तूने मोकलको दे दिया ।

सती हूं तो म्हारो वचन सत्य छै, आ धरती मेवाडरी थाहरै पेटरा रै रहिज्यो[1]।' इसो वचन राठवड कह्यो, सु आज लग पाळै छै[2]।
राणो मोकल चित्रोड राज करै।

एकदा प्रस्ताव[3]। राव रिणमलजी छडवडै साथसूं जात्रा करण पधारियो हुतो[4]। पछै जात्रा कर पूठो पधारियो हुतो[5]। सु मारगमे आवता[6] ढूढाड माहै राजा पूरणमल हुतो[7]। तियैं कह्यो[8]– 'म्हारा[9] चाकर रहस्यो ?' ताहरा कह्यो—'रहिस्या' ताहरा कह्यौ—'भला'।

एक दिन चोगानमे रमता, पूरणमलरै जोधो नै काधळ साथै हुता। सु काधळ जेठी घोडै चढियो हुतो। सु घोडो पूरणमल दीठो[10]। ताहरा मागियो। ताहरा काधळ कह्यो–'रिणमलजीनू पूछिया विना न देऊ।' ताहरा पूरणमल कहे–'जोर ही घोडो लेईस[11]।' ताहरा जोधो काधळ डेरै आया। रिणमलजी कनै[12] आय घोडारी वात कही।

ताहरा घाटा रोकाया[13]। अर घोडो लेणरी साजत माडी छै[14]। ताहरा रिणमलजी, जोधो, काधळ वीजो ही सरव साथ लेनै पूरणमलरै दरवार आया। जेथ पूरणमल वैठो हुतो तेथ गोडो दावि अर जाय वैठा[15]। वैस अर कणांनू हाथ घातियो। कणो पकड अर ऊभो कियो[16]। वाहिर ले आया। आय अर घोडै चढिया। घोडो वेळास कियो[17]। पूरणमलनू चाढियो। ताहरा पूरणमलरो रजपूत मारणनू आयो। ताहरा कटारी काढी। इसडा हुवा जु पूरणमलनू मारै[18]। ताहरा पूरणमल रजपूत पालिया[19]। ताहरा उठारा चढिया पूरणमलनू

1 मैं जो सती हूँ तो मेरा यह वचन सत्य जानना कि मेवाडकी धरती सदा तुम्हारे वशजोके पास बनी रहेगी। 2 राठौड रानीके कहे हुए इन वचनोका आज तक पालन किया जाता है। 3 एक बारकी बात है। 4 राव रिणमल अपने थोडेसे आदमियोके साथ तीर्थ-यात्रा करनेको गया था। 5 यात्रा कर के लौट रहा था। 6 आते हुए। 7 था। 8 उसने कहा। 9 हमारे। 10 उस घोडेको पूर्णमलने देखा। 11 घोडा जबरदस्तीसे ले लूगा। 12 पास। 13 पूर्णमलने सभी मार्ग रुकवा दिये। 14 और घोडा लेनेकी तैयारी हो रही है। 15 जहा पूर्णमल वैठा था, वहा जाकर उसके घुटनेको दवा कर वैठ गये। 16 वैठ कर के पहुचेमे हाथ डाला। पहुचा पकड कर के उसे खडा कर दिया। (कणो = १ पहुचा २ कमर ३ गरदन) 17 एक घोडेके ऊपर दोनो सवार हुए। 18 ऐसा ढग बनाया कि मानो पूर्णमलको मार रहे है। 19 तब पूर्णमलने राजपूतोको रोक दिया।

लेहीज आया। ढूढाड माहै आयनै उठै पूरणमलनू भक्ति कर घोडो दै अर विदा कियो[1]। कह्यो –'म्हा कना घोडो यु लीजै। ज्यु था लेणो माडियो त्यु न लीजै[2]।

पछे रिणमलजी नागोर आयो। जाहरा राव चूडोजी काम आया, ताहरा टीको रिणमलजीनू हुवो[3]। ताहरा रावजीरो जीव हुतौ जु– 'कान्हैनू टीको देज्यो[4]।' ताहरा रिणमलजी कान्हैनू नागोर दियो[5]। सतैनू राव चूडे मडोर पैहलीहीज दियो हुतो[6]। रिणमलजी सोभत रहता, रावजी दियो हुतो[7]।

ताहरा भाटियासू वैर[8]। सु रोज चढै, धरती भाटियारी मारै[9]। ताहरा भुजो सढायच प्रधान वणाय भाटिया म्हेलियो[10]। ताहरा भुजै राव रिणमलजीनू गुण कह्यो[11]। ताहरा राव रिणमलजी कह्यो– 'हमै न मारू[12]।' ताहरा भाटिया राव रिणमलजीनू परणाया। राव जोधो भाटियारो दोहितो[13]।

ताहरा राव रिणमल, जोधै नरबदसू वेढ कीवी[14]। ताहरा नरबद घावै पडियो। एक आख फूटो। तीर लागो[15]। रजपूत काम आया। रिणमलजी मडोवर लीधी[16]। मडोवर माहै सतो हुतो।

---

1/2 ढूढाडमे आकर के* वहा पूर्णमलको भोजन आदि की खातिर कर के और उस घोडेको देकर उसे अपने घर रवाना किया और कहा कि-'हमारे पाससे घोडा इस प्रकार लिया जाता है, जिस प्रकार तुमने लेनेका इरादा किया था उस प्रकार हमारा घोडा नही लिया जा सकता।' 3/4/5 जब राव चूडोजी काम आ गये तो राज्य-तिलक रिणमलजीको हुआ। परन्तु रावजीने यह इच्छा प्रकट की थी कि टीका कान्हाको देना, अत रिणमलजी ने (अपना अधिकार त्याग कर) कान्हाको नागार दे दिया। 6 सत्तेको राव चूडेने पहिले ही मडोर दे दिया था। 7 राव चडाजीने रिणमलजीको सोजत दे रखा था, सो वे सोजतमे रहने लग गये। 8/9 उन दिनोमे भाटियोसे शत्रुता चल रही थी, सो हमेशा चढाई कर के भाटियोके देशमे बिगाड करते है। 10 तव भाटियोने चारण भुजा सढायचको मुखिया वना कर के रिणमलजीको राजी करने के लिये भेजा। 11 भुजेने राव रिणमलजीका यश-गान किया। 12 तव रिणमलजी प्रसन्न हुए और कहा कि 'अव मैं उनका बिगाड नही करूगा।' 13 इस पर भाटियोने राव रिणमलको अपनी कन्या व्याह दी। राव जोधा भाटियोका दोहिता। 14 राव रिणमल और जोधाने नरबदसे लडाई की। 15 नरबदके तीर लगनेसे उसकी एक आख फूट गई और आहत होकर गिर पडा। 16 रिणमलजीने मडोर पर अधिकार कर लिया।

---

* यहा राव रिणमलका पूर्णमलको लेकर ढूढाडसे बाहिर आ जाना होना चाहिये। ढूढाडमे तो वे थे ही।

आखै जखम हुतो[1]। ताहरा राव रिणमलजी कह्यो–'सतानूं कोट माहैसूं मता काढो[2]।' ताहरा सतानूं कोट माहै राखियो। ताहरा राव रिणमल सतैनूं मिळण पधारिया। रिणमलजी सतैनूं मिळियो। वैठा। पगै लगायो[3]। ताहरा जोधो कुंवर पगै लागो। ताहरा जीनसाल पैहरिया, हथियार वाधिया पगे लागो[4]। ताहरा सतै जोधारै पूठै हाथ दियो[5]। ताहरा जीनसाल हाथनूं लागो[6]। ताहरा सतै पूछियो–'रिणमल ओ कुण[7]।' ताहरा कह्यो–'राज! रावळो गुलाम छै, जोधो[8]।' ताहरा सतै कह्यो–'रिणमल! टीको जोधैनूं देई, धरती जोधो राखसी[9]।' कह्यो–'भला राज[10]।' ताहरा रिणमलजी टीकाइत वेटो जोधो थापियो[11]। आप मडोवर ले जोधानूं दियो। आप नागोर पधारिया[12]।

उठे एक दिन वैठो राव रिणमल वोलियो–'ठाकुरे! चीतोडरा समाचार आजकाल न आवै, कासूं छै[13]?' यु करता एक दिन आदमी आयो[14]। कागद दियो नै कह्यो–'मोकल मारियो[15]।' ताहरा रावजी वोलिया। कह्यो–'रे, मोकल मारियो[16]?' पछै कागळ वचाया। रिणमलजी मोकलनूं पाणी दियो। नै आप चीतोडनूं मतो कियो[17]। ताहरा २१ पावडमाणा हुतो। पावडसाणे ऊभा रहनै कह्यो–'भाई! मोकलरो वैर लीयै पछै काई वात करस्या[18]। सीसोदियारी दीकरचा हू वैरमे राठवडानूं परणाऊ तो हू रिणमल[19]।' ताहरा रिणमलजी

1 मटोग्मे मस्त था और वह आखोंसे लाचार था। 2 सत्तेको कोटमेंसे मत निकालो। 3 मव माथ वालोंको उनके पांवों लगाया। 4 कुंवर जोधाजी कवच पहिने हुये और हथियार वाधे हुए उनके पांवों लगा। 5 तव सत्ताने जोधाकी पीठ पर हाथ दिया। 6 कवच हाथको लगा। 7 तव सत्तेने रिणमलको पूछा—'रिणमल यह कौन ?' 8 उत्तर दिया कि राज! यह आपका गुलाम जोधा है। 9 तव सत्तेने कहा–रिणमल! टीका जोधाको देना। धरतीको जोधा रख सकेगा। 10 वहुत अच्छा महाराज! 11 तव रिणमलजीने अपने पुत्रो मेसे जोधाको टीकायत स्थापित किया। 12 आपने मडोरको लेकर जोधाको दे दिया और स्वय नागोर चले गये। 13 वहा एक दिन वैठे हुए राव रिणमलजीने कहा–'ठाकुरो! आजकल चितोडके कोई समाचार नही मिल रहे है, क्या वात है ? 14 इस प्रकार प्रतीक्षा करते-करते एक दिन आदमी आ ही गया। 15 उसने पत्र दिया और कहा–'मोकल मारा गया।' 16 अरे! मोकल मारा गया ? 17 रिणमलजीने मोकल को जलाजलि दी और खुदने चित्तौड जानेका विचार किया। 18 मोकलके वैर का वदला लेनेके वाद फिर कोई वात करेंगे। 19 सिसोदियोंकी पुत्रियोको इस वैरके वदलेमे राठौडोको व्याह दू तो मैं रिणमल।

कटक करनै चीतोड गया । ताहरा सीसोदिया नासि पईरै भाखरै जाय पैठा[1] । घाटा बाधि अर जाय बैठा[2] । ताहरा रिणमलजी जाय भाखर रोकियो[3] । छव मास हुवा, भाखर भिळै नही[4] । ताहरा भाखर माहिलो मेर ईया काढियो हुतो सु आयनै रिणमलजीसो मिळियो[5] । तियै कह्यो–'जे दीवाणरो परवाणो हुवै तो हू आय मिळा[6] ।' ताहरा रिणमलजी परवाणो कर दियो । ताहरा ५०० जीनसालिया करनै रिणमलजी पहाडनू हालिया[7] । ताहरा मेर कह्यो–'जी, मास १ लग धीरा रहो[8] ।' कह्यो–'क्युजी ?' 'मारगमे नाहरी व्याई छै[9] ।' ताहरा रिणमलजी कह्यो–'नाहरी म्हे जाणा, तू हालि[10] ।' ताहरा आदमी ५०० पाळा जीनसालिया करनै रिणमलजी चढिया छै । आगै मैणो छै । ताहरा हालता-हालता नाहरी नजीक आई, ताहरा मैणो ऊभो रह्यो–'जी, आगै नाहरी छै ।' ताहरा रिणमलजी बेटै अडमालनू कह्यो–'हा !' ताहरां अडमाल नाहरी वतळाई[11] । ताहरा तूट अर आई[12] । ताहरा नाहरीनू कटारीसू फाड नाखी । पछै आघा हालिया[13] । आगै पहाड माहै लेजाइ चाचै मेरैरै घरा माहै ऊभा राखिया[14] । ताहरा केई चाचैरै घरै चढिया, केई मेरैरै घरै चढिया । रिणमलजी महपैरै घरै चढिया । रिणमलजीनू प्रतग्या हुती[15] । 'स्त्री पुरुषरै भेळा थका न जावतो[16] । ताहरा बारणै[17] ऊभा रहिनै कह्यो–'महपा ! आव वाहिर ।' ताहरा महपो स्त्रीरा कपडा पैहर घूघट काढि अर नीसर गयो[18] । ताहरा रिणमलजी कह्यो–'महपा ! आव बाहिरै ।' ताहरा

---

1 तब सिसोदिये भाग कर पहीके पहाडोमे जा घुसे । 2 सभी पहाडी मार्गोको रोक कर के जा बैठे । 3 तब रिणमलजीने भी जाकर पहाडको घेर लिया । 4 छ मास हो गये परन्तु पहाड सर नही होता । 5 पहाडमे के एक मेर को इन्होने निकाल दिया था, वह रिणमलजीसे आकर मिला । 6 यदि दीवानका परवाना हो तो मैं आपमे आकर मिल जाऊ । 7 तब ५०० कवचधारी तैयार कर के रिणमलजी पहाडको चले । 8 एक मास तक धीरज रखो । 9 मार्गमे नाहरीने बच्चे दिये हैं । 10 तब रिणमलजीने कहा–'नाहरीको हम समझ लेंगे–तू आगे चल । 11 तब रिणमलजीने अपने बेटेको कहा–'हा! मारदो !' तब उसने नाहरीको छेडा । 12 तब नाहरी टूट कर सामने आई । 13 अडमालने नाहरीको कटारीसे चीर दिया और फिर आगे चले । 14 पहाडमे लेजा कर सबको चाचा और मेरेके घरोके पास खडा कर दिया । 15/16 रिणमलजीकी प्रतिज्ञा थी कि जहा स्त्री और पुरुष (पति-पत्नी) दोनो एक जगह हो वहां वह नही जाता था । 17 द्वार पर । 18 निकल गया ।

ओळगाणी[1] बोली—'राज ठाकुर तो म्हारा कपडा ले अर पधारिया। हू कपडा बाहिरो बैठी छू[2]।' ताहरा रिणमलजी पूठा पधारिया[3]। चाचो, मेरो मारिया। बीजा ही सीसोदिया घणा मारिया[4]।

दिन ऊगो, ताहरा रिणमलजी सीसोदियारा माथा वाढि चवरी रचाय, तियांरी चोकया कीवी[5]। तिया ऊपर वरछारी वेह माडी। अर सीसोदियारी बेटिया राठोडानू परणाई[6]। च्यार पोहर दिन वीमाह किया[7]। अठै मेवारो भाजि ठोड मेरनू दे अर चीत्रोड पधारिया[8]। रिणमलजी कुंभैनू टीको दियो। बीजा ही जिके सीसोदिया जिके फिरिया हुता तियानू मार, देस माहिसू काढि सावळ किया[9]। रिणमलजी कुंभैनू धरती साभ दीनी[10]। कुभो सुखसू राज करै छै। ईयै जितरा देस सरब रिणमलजी वस कीधो छै। जाणै जियेनू काढै[11]।

एकदा प्रस्ताव[12]। चाचे मेरैरा बेटा राणैजीसू आय मिळिया। महपो पमार आय मिळियो। हिवै[13] महपो पमार राणै कुभनू कहै—'धरती राठोडै लीवी[14]। धरतीरा धणी राठोड हुआ।'

एक दिन राणो कुंभो पोढियो छै। अको चाचावत पगां हाथ दै छै[15]। सु अकैरे आंख्या हू आसू ढळिया[16]। ऊना टिवका राणारे पगा ऊपर ढळिया, ताहरा राणो जागियो[17]। देखै तो अको रोवै छै। ताहरा

---

1 ओळगाणी = १ वियोगिनी। परदेशिनी। २ यश गानेवाली ३ स्त्री। 2 मै वस्त्रहीन बैठी हुई हूँ। 3 तब रिणमलजी वहासे लौट गये। 4 दूसरे भी बहुतसे सीसोदियोको मार दिया। 5 दिन उग जाने पर रिणमलजीने चौरीकी रचना की, सिसोदियोके सिरोको काट कर के उनकी चौकिया बनवाई। 6 उन चौकियो पर वरछोकी वेह स्थापित की और सिसोदियोकी कन्याओका राठोडोमे विवाह किया। [वेह = १ विवाह-मडप २ मगल-कलश। विवाहमे स्थापित घट। ३ नीचेसे ऊपरकी ओर क्रमश छोटे, ऐसे ऊपरा ऊपरी रख कर की जाने वाली मिट्टीके सात घडोकी स्थापना। विवाह-मडपके चारो कोनोमे ऐसी चार घट-श्रेणिया स्थापित की जाती हैं।] 7 चारो पहर दिनमे विवाहोका यही क्रम चला। 8 यहाका ग्रड्डा तोड कर के वह जगह मेरको दी और स्वय चित्तौड पधार गये। 9 दूसरे जो सिसोदिये बागी हो गये थे उनको मार दिया और कइयोको देशमेंसे निकाल दिया। इस प्रकार सबको सीधा कर दिया। 10 रिणमलने देशको निष्कटक बना कर कूभाको सुपर्द कर दिया। 11 इस प्रकार रिणमलजीने सारे देशको अधिकारमे कर लिया है। चाहे जिसको निकाल देते हैं। 12 एक बारका जिक्र है। 13 अब। 14 राठोडोने देश ले लिया। 15 अक्का चाचावत पगचपी कर रहा है। 16 सो अक्केकी आखोसे आसू गिरे। 17 गरम बूदें पैरो पर पडी तो राना जगा।

कहियो–'अका ! क्यो ?' कह्यो—'जी धरती सीसोदिया हू गई, राठ-वडै लई। ते मोनू दुख आवे छै[1]।' ताहरा राणो बोलियो–'अका ! रिणमलजीनू मारस्यो ?' कह्यो–'दीवाणरा पूठै हाथ हुसी तो माररया[2]।' ताहरा राणै हुकम कियो। 'रिणमलनू मारो'। यु रोज आलोच करै।

एक दिन राव रिणमल तळहटी पधारिया हुता[3]। उठै आपरा लोक सर्व एकठा मिळिया[4]। ताहरा रिणमलजीरो डूम हुतो सु बोलियो[5]–'आज कालिह दीवाणरै अर थाहरै किण ही सो चूक छै[6]। ताहरा रिणमलजी कह्यो–'म्हारै तो चूक किण ही सो नही।' तो कहियो–'दीवाणरै थाहीजसो चूक छै[7]। जोधो कुवर तळहटी राखज्यो, थे गढ ऊपर रहो छो, तो कुवर तळहटी राखज्यो[8]।' ताहरा रिणमलजी तो गढ ऊपर रहै। कुवर सरव तळहटी रहे।

एक दिन राणो कुभो बोलियो–'रावजी ! जोधो आज-काल न दीसै, कठै छै ?[9]।' रावजी बोलिया–'तळहटी छै।' घोडानू चारै छै। तो कह्यो–'ऊपर बोलावो।' ताहरा कह्यो–'बोलावस्या[10]।" ताहरा जोधैनू राव रिणमलजी कहाडियो[11]–'म्हे तेडावा तोई जोधा तू मतां आवै[12]।' ताहरा एक दिन राणै कुभै महपै पमार, अकै चाचावत ईया आलोच कियो[13]। आज रिणमलनू मारस्या[14]। रातरा पोढियानू मारस्या[15]।' रातरो चूक कियो[16]। रात कुभो पोढियो

---

1 उमने कहा कि धरती सिसोदियोमे गई, राठोडोने ले ली, इस बातका मुझको दुख हो रहा है। 2 अक्का ! रिणमलको मार दोगे ? तो उमने कहा कि पीठ पर यदि दीवानके हाथ होगे तो मार देंगे। 3 एक दिन राव रिणमलजी तलहटी गये हुये थे। 4 वहा उनके सभी आदमी इकट्ठे होकर मिले। 5 उस समय रिणमलजीका एक डूम था सो वह बोला। 6 आजकल दीवानकी आपके किन्ही पर नाराजी है (किसीको छलमे मार देनेकी बात सुनी जाती है।) 7 दीवानका यह धोखा आप हीके साथ है। 8 आप गढ पर रहते हो तो कुवरको तलहटीमे रखना। 9 जोधा आज-कल दिखाई नही दे रहा है, कहा है ? 10 बुला लेंगे। 11 तब रिणमलजीने जोधाको कहलवाया। 12 हम बुलावें तो भी जोधा तू आना मत। 13 तब एक दिन राणा कुभा, महपा पँवार और अक्का चाचावत,–इन सबने मिल कर परामर्श किया। 14 आज रिणमलको मार देंगे। 15 रातको सोते हुएको मार देगे। 16 रातको धोखा किया।

ऊठै, वैसै महिल हू वारै जावे, फेर माहि आवै।[1] ताहरां राणी पूछियो—'दीवाणजी! आज कासू छै? दीवाण किणहीसौ चूक कियो छै?'[2] कह्यो—'हवै।'[3] ताहरा राणी बोली—देखिया! हराम-खोरारै कहै कोई रिणमलसू चूक करता हुवो?'[4] ताहरा बोलिया 'म्हां तो रिणमल मरायो।'[5] रांणी बोली—'कासूं कियो?'[6] थारै वापरो वैर लियो, थानू टीको दियो, थारी धरती वसाई, तैरै वासतै थे मरावो? थासू रिणमल कासू वुरो कियो छै?'[7] ताहरा दीवांण छोकरी मेल्ही—'जायनै महिपैनू तेडि ल्याव।'[8] कहियो—'थानू काम फुरमायो सु मतां करो।'[9] ताहरा छोकरी जायनै कह्यो—'महपाजी! थांनू दीवाण काम फुरमायो छै सु हिवडा मत करो।[10] थांनू दीवांण वुलावै छै।'[11] ताहरा जाणियो—'रिणमल जीवियो तो म्हे मरस्या'[12] ताहरा छोकरीनू माळा दीन्ही अर कहियो—'तू कहे, काम था फुरमायो हुतो सु कियो।'[13] छोकरी पाछी फिरी। आयनै राणैनू कह्यो।

ईयां जायनै रिणमलजी पोढिया हुतानू घाव कियो।[14] ताहरा कटारीसू एक रजपूत पोढिया ही मारियो। एक लोटैसू मारियो।

---

1 रातको कुभा सोता हुआ कभी उठता है, कभी वैठता है, कभी महलके वाहर जाता है और फिर भीतर आता है। 2 दीवानजी! आज क्या वात है? किसीको दगा कर के मारनेका विचार किया है क्या? 3 हा। 4 देखना! कही हरामखोरोके कहनेसे रिणमलके साथ चूक तो नही कर रहे हो? 5 हमने तो रिणमलको मरवा दिया। 6 रानीने कहा—'यह आपने क्या किया? 7 उसने तुम्हारे वापको मारनेके वैरका वदला लिया, तुम्हारा राज्य-तिलक किया और तुम्हारे देशको फिरसे वसाया—इसीलिए तुम उसे मरवा रहे हो? तुम्हारे साथ रिणमलने कौनसा वुरा किया है?' 8 तव दीवानने दासीको भेजा कि जाकर महिपेको वुला ले आ। 9 कहलवाया कि तुम्हें जिस कामके करनेके लिए आज्ञा दी गई है, वह मत करना। 10/11 तव दासीने जाकर कहा—'महिपाजी! तुमको जिस कामको करनेकी दीवानने आज्ञा दी है उसे अभी तक मत करो। तुमको दीवान वुला रहे हैं। 12 तव उसने सोचा—'यदि अव रिणमल जिन्दा रह गया तो हम मारे जायेंगे। 13 तव दासीको एक माला दे कर कहा—'तू यह कह देना कि जो काम आपने फरमाया था सो कर दिया गया है। 14 इन्होने जाकरके सोते हुए रिणमल पर प्रहार किया। [ऐसा कहा जाता है कि राव रिणमल नींदमे सोया हुआ था। षडयत्रकारियोंने उसे लवे वस्त्रसे खाट सहित लपेट कर खाटके साथ वाध दिया, जिससे वह उठ कर उनका मुकावला न कर सके। परन्तु रिणमलने आहत अवस्थामें भी खाट सहित उठ कर उन लोगोको मार दिया। उसके वाद उसका भी प्राणात हो गया।]

एक लातसू मारियो । जणा तीन मारिया ।[1] रिणमलजी काम आयो ।

ताहरा छोकरी मोहल चढि पुकारी–'राठोडा ! थाहरो रिणमल मारियो ।'[2] ताहरा तळहटी सुणियो । ताहरा जोधो, काधळ, वीजो ही साथ सरब चढ नीसरियो ।[3] वासै फोज आई । लडाई हुई । कितराएक ठाकुर काम आया ।[4] चरडो चद्रावत काम आयो । सिवराज, पूनो, ईंदो, भाटी, विजो । चरडै साद कियो–'वडा विजा !'[5] ताहरा एक बीजो विजो हुतो, तिको वोलियो–'फाड-फाड मुहडो, आप मरता वीजा ई नू ले मरै ।'[6] ताहरा चरडो वोलियो–'हूं तोनू नही कहू छू, हू विजै ईंदैनू कहू छू, कस्तूरियै मृघनू, ऊगमडैरै पोतरैनू ।'[7] अोथ विजो ईंदो चरडैरै कनै काम आयो ।[8] भीमो, वैरसल, वरजाग भीमावत काम आया । भीमो चवडावत पकड़णी आयो ।[9]

मांडळरै तळाव घोडानू पाणी पायो, ताहरां एकै तरफ जोधो नै सतो दोनू हुता । दोय असवार घोडा पावता हुता । एको तरफ काधळ घोडो पावतो हुतो । ताहरा काधळ एकल असवारै घोडै पावतांनू वतळायो ।[10] ताहरा जोधै काधळरो साद अोळखियो ।[11] ताहरां जोधै काधळनू बोलायो । बेऊ भाई एकठा हुवा ।[12] जोधै काधळनू रावतपणैरो टीको दियो ।[13] अै ठाकुर मारवाड माहै आया[14] ।

---

1 उस समय राव रिणमलने उस हालतमे सोते-सोते ही एक राजपूतको तो कटारीसे, एकको लोटेसे और एकको लात मार कर मार दिया, तीन जनोको मार दिया। 2 तब दासी महल पर चढ कर पुकारी—'राठोडो ! तुम्हारा रिणमल मारा गया है।' 3 तब जोधा और काधल आदि दूसरा सब ही साथ सवार हो कर वहासे भाग निकले। 4 उनके पीछें फौज चढ कर आई, लडाई हुई जिसमे कितने ही ठाकुर काम आ गये। 5 चरडेने आवाज दी—'अरे ओ ! वडा विजा !' 6 तब एक दूसरा विजा था सो वोला—'मुंह फाड-फाड कर क्यो वकता है, खुद मरता हुआ दूसरोको भी ले मरता है ? 7 तब चरडेने कहा—'मै तुझको आवाज नही दे रहा हूँ, कस्तूरीमृग वाले ऊगमडेके पोते विजा ईंदेको पुकार रहा हूँ। 8 वहा चरडेके पास विजा ईंदा तो काम आ गया था। 9 भीमा चूडावत पकडा गया। 10 तब काधलने घोडेको पानी पिलाते हुए एक सवारको वतलाया। 11 तब जोधेने काधलकी आवाज पहिचान ली। 12 दोनो भाई मिले। 13 जोधेने वही काधलको रावताईका टीका दे दिया। 14 फिर ये सभी ठाकुर मारवाडमे आ गये।

दूहा

आगै सूर न काढिया, तुगम काढी आय ।
जे मिस राणो सजडी, लेई रिणमल राय ।। १

राय रिणमल नीद भरै, आवध लोह घण ऊबरै ।
कटारी काढी मरद घणो, तिम आगें सूर न तुग किणी ।। २
तो दिन्न मेवाड, तो वियप्प कापिय सीस ।
ना ऊ रयण वहीजै, वेंसास कुभकरण कृतघ्न ।। ३
जे रिणमल होवत दळ अतर, कुभकरन्न वहत केणि पर ।
माथा सूळ सही सुरताणा, ओ समुद्रा वरतावत आणां ।। ४

जे वरतावी आंण वेहू सिंघा वीचाळै,
हिंदू अनै हमीर मीर जे लुळिया भाळै ।
जे भग्गो पीरोज, खेत्र जेत्राई खेडै,
जे मारें महमद, गज मारै सभेड़ै ।
रिणमल्ल राव विसरामियौ, कुभा की मन विक्कसै ?
छळियो छदम तैं कूड कर, जेम सीह आगै ससै ।। १

**रावजी श्री रिणमलजीरी वात सपूर्ण ।**

।। शुभ भवतु ।। कल्यांणमस्तु ।।

---
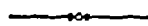
(इन छन्दोमे राव रिणमलकी वीरताका, मोकल और कुभकर्णके साथ मेवाडमे किये गये राव रिणमल्लके उपकारोका एव कु भकर्णकी कृतघ्नता और विश्वासघातका वर्णन किया गया है । छन्द अशुद्ध हैं ।)

GOVERNMENT OF RAJASTHAN

# RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE

JODHPUR (INDIA)

Hon. Director, Padmashree Muni Jinvijaya, Puratattvacharya

# PUBLICATIONS

## RAJASTHAN PURATANA GRANTHAMALA

General Editor

PADMASHREE MUNI JINVIJAYA, PURATATTVACHARYA

DECEMBER, 1961

# PUBLICATIONS

*Up to July, 1961*

## RAJASTHAN PURATAN GRANTHAMALA

( General Editor—Padmashree MUNI JINVIJAYA, Puratattwacharya )

Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur November 1961.

### A SANSKRIT

1. Praman-manjari—by Sarvadeva, with commentaries by Advayaranya, Balbhadra and Vaman Bhatt, ed by Pattabhiram Shastri, Ex-Principal, Maharaja's Sanskrit College, Jaipur, *now* Prof of Darshan, University of Calcutta —Rs. 6 00

2 Yantraraja-rachana—An astrological work written under orders of Maharaja Sawai Jai Singh of Jaipur, ed by Late Pt Kedar Nath Jyotirvid, Editor, Kavyamala Series —Rs 1 75nP.

3 Maharshikul-vaibhavam Pt I—by Late Vidyavachaspati Madhusudan Ojha, ed by Mahamahopadhyaya Pt Giridhar Sharma Chaturvedi —Rs 10 75 nP

4. Maharshikul-vaibhavam Pt II, Text—by Late Vidyavachaspati Madhusudan Ojha, ed by Pt. Pradumna Ojha. —Rs 3 50 nP

5 Tarksamgrah—by Annam Bhatt with commentary of Kshmakalyan Gani, ed by Dr Jitendra Jetli, MA, Ph D, Prof, Ramananda Arts College, Ahemdabad. —Rs 3 00

6 Karakasambandhodyota—by Rabhas Nandi, ed by H P Shastri, M A, Ph D., Vice Principal, B J Institute Vidya Bhawan, Ahemdabad —Rs 1 75 nP.

7 Vrittidipika—by Mouni Krishna Bhatt, ed by Purushottam Sharma Chaturvedi, formerly Prof, Mayo College, Ajmer. —Rs 2 00

8 Shabdaratnapradipa—by an unknown author ed by H P. Shastri, M A, Ph D, Vice Principal, B J Institute Vidya Bhawan, Ahemdabad. —Rs 2 00

9 Krishnagiti—by Somanatha, ed by Dr Priyabala Shah, M A, Ph D., D. Litt, Prof., Ramanands Arts College, Ahemdabad. —Rs 1 75 nP.

10. Nritt-samgrah—a treatise on Indian Dance—by an unknown author, ed by Dr. Priyabala Shah, MA, Ph.D, D Litt, Prof, Ramananda Arts College, Ahemdabad. —Rs 1.75 nP.

11 Shringarharavali—by Shri Harsha Kavi, ed by Dr Priyabala Shah, M A., Ph D, D Litt., Prof, Ramananda Arts College, Ahemdabad —Rs 2 75 nP.

12. Rajvinod Mahakavyam—by Udairaj, a medieval Sanskrit poem on the life and achievements of Mahmud Begra, Sultan of Ahemdabad, ed by G. N. Bahura, M A, Dy Director, Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur. —Rs 2 25 nP

13 Chakrapanivijaya Mahakavyam—by Lakshmi Dhar Bhatt, a romantic Sanskrit poem based on the love story of Usha and Aniruddha, ed. by K K Shastri, Curator and Prof, B, J. Institute, Gujrat Vidya Sabha, Ahemdabad. —Rs. 3.50 nP.

14 Nrityaratna—Kosha Pt I—by Maharana Kumbhakarna Deva of Chittore, a long awaited authentic treatise on Indian Dance, ed by R C. Parikh, Director, B J Institute, Gujrat Vidya Sabha, Ahemdabad —Rs. 3 75

15 Uktiratnakar—by Sadhu Sunder Gani, ed by Puratattwacharya Muni Jinvijayaji, Hon. Director, Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur. —Rs 4.75 nP

16 Durgapushpanjali—by Late Mahamahopadhyaya Pt Durga Prasad Dwivedi, ed by G. D. Dwivedi, Lecturar, Maharaja's Sanskrit College, Jaipur —Rs. 4 25 nP.

17 Karnakutuhal and Shri Krishnalilamritam —by Mahakavi Bholanath, a protege of Sawai Pratap Singh of Jaipur, ed by G N Bahura, M A., Dy Director, Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur. —Rs 1 50 nP.

18 **Ishwarvilasa Mahakavyam**—by Kavikalanidhi Shri Krishna Bhatt, a work based on the History of Jaipur, written under orders and in the time of Maharaja Sawai Ishwari Singh, son of Maharaja Sawai Jai Singh of Jaipur The work bears an eye-witness description of the Ashwamedha yajna performed by Sawai Jai Singh, ed by Mathuranath Bhatt, Sahityacharya, with a foreword by late Dr P K Gode, M A ,D Litt , Curator, B O. R Institute, Poona. —Rs 11.50 nP

19. **Rasadeerghika**—by Vidyaram Kavi, a rare and abridged work on Sanskrit rhetorics, ed by G N Bahura, M A , Dy Director, Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur —Rs. 2 00

20 **Padya-muktawali**—A compilation of Literary and Historical poems of Krishna Bhatt, a contemporary of Sawai Jai Singh of Jaipur, ed. by Mathuranath Bhatt, Sahityacharya —Rs 4 00

21 **Kavyaprakash**—of Mammata, with Samketa by Someshwar Bhatt, found in Jaisalmer Grantha Bhandar. Edited by R C Parikh, Director B J. Institute, Gujrat Vidya Sabha, Ahemdabad Pt I, Rs 12 00

22 ,, ,, ,, Pt II, Rs 8.25 nP

23 **Vasturatnakosha**—by an unknown author, Edited by Dr Priyabala Shah M A , Ph D., D Litt. Prof Ramanand Arts College, Ahemdabad. —Rs 4 50 nP

24 **Dashkantha Vadham**—by late Mahamahopadhyaya Durga Prasadji Dwivedi, a poetical work on Ram-Charitra. Edited by Shri Gangadhar Dwivedi, Prof Maharaja Sanskrit College, Jaipur. —Rs 4 00

25 **Bhuwaneshwari Mahastotram**—by Prithwidharacharya, with commentry of Padmanabha, edited by Shri G N Bahura, M A Dy. Director, Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur —Rs 3 75 nP

B. RAJASTHANI AND HINDI

1. **Kanadhade Prabandha**—by Mahakavi Padmanabha, a famous

Rajasthani Historic Poem dealing with the chivalry of Kanadhade Chouhan at the time of the attack of Alauddin Khilji on the fort of Jalore, ed. by Prof K B. Vyas, M A , Elphinstone College, Bombay. —Rs 12 25 nP.

2. Kyamkhan Rasa—by Alaf Khan, Nawab of Fatehpur (Shekhawati), a Poetical History of Kayamkhanis, the Muslim Rajpoots of Rajasthan, ed. by Dr. Dashrath Sharma, M. A. D , Litt , Professor, Hindu College, Delhi and Shri Agar Chand Nahata, Bikaner —Rs 4 75 nP.

3 Lava Rasa—by Gopaldan Kaviya, a contemporary description of the battle of Madhorajpura between the Chief of Lava and Ameerkhan of Tonk, ed by Mehtab Chand Khared, Jaipur. —Rs 3 75 nP.

4 Vankidas-ri-Khyat—a History of Rajasthan, writen in Rajasthani prose by Vankidas, the famous Historian of Jodhpur, ed by Prof Narottamdas Swami, M.A Vice Principal, Maharana Bhupal College, Udaipur. —Rs 5.50 nP.

5 Rajasthani Sahitya Sangrah Pt I—A collection of old Rajasthani literary prose, ed by Prof. Narottamdas Swami, M A. Vice Principal, Maharana Bhupal College, Udaipur. —Rs 2 25.

6 Rajasthani Sahitya Sangrah Pt II—Three old Rajasthani stories i e. Bagdawatan Ri Vat, Pratap Singh Mahokam Singh Ri Vat and Veeramde Soneegara Ri Vat, edited by P L Menaria M A , Sahitya Ratna, Offg. Senior Research Asst. Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur. —Rs. 2 75 nP.

7 Kavindra Kalpalata—by Kavindracharya Saraswati, a contemporary of Emperor Shahajahan, ed by Rani Shrimati Lakshmi Kumari Chundawat, Jaipur —Rs 2 00.

8 Jugal Vilasa—a poem by Maharaja Prithvi Singh of Kushalgarh, ed by Rani Shrimati Lakshmi Kumari Chundawat, Jaipur. —Rs 1 75 nP.

9 Bhagat Mala—a poetical work in Rajasthani by Charan

Brahma Dasji Dadupanthi, ed by Udairaj Ujjwal, Jodhpur —Rs 1 75 nP.

10 A Classified List of Manuscripts Pt I—a list of 4000, manuscripts collected in The Rajasthan Oriental Research Institute upto the year 1955 —Rs 7 50 nP

11 A Classified List of Manuscripts Pt II—a list of 3855 Mss collected in the Rajasthan Oriental Research Institute from Apr. 1956 to March 1958 Edited by Shri G N. Bahura, Dy Director, Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur —Rs. 12 00.

12 A List of Rajasthani Manuscripts Pt. I—Collected in the Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur upto March 1958. Edited by Padmashri Muni Shri Jinvijaiji —Rs 4 50 nP

13 A List of Rajasthani Manuscripts—Pt II—Mss collected during the year 1958-59. Edited by Purushottamlal Menaria M A Sahitya-Ratna —Rs 2 75

14 Munhata Nensiri Khyat Pt I—by Munhata Nensi of Jodhpur History of Rajasthan in Rajasthani prose, edited by Shri Badri Prasad Sakaria —Rs 8 50 nP

15. Raghuwar Jas Prakash—by Charan Kishnaji Adha A work on Rajasthani rhetorics, edited by Shri Sitaram Lalas —Rs 8 25

16. Veer Van—by Dhadhi Badar, a Rajasthani poem relating a few heroic events of Veeramji Rathod of Jodhpur Edited by Smt Rani Laxmi Kumari Chundawat of Rawatsar —Rs 4 50 nP

17 A Catalogue of Late Purohit Harinarayanji B A Vidyabhooshan Manuscripts Collection—edited by Shri G. N Bahura. Dy Director Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur and Shri L N Goswami, Senior Research Asst Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur —Rs 6 25 nP.

18 Sooraj Prakash Pt I—by Charan Karnidan Kaviya History of the Rathods of Jodhpur in Rajasthani Poem, edited by Shri Sita Ram Lalas —Rs. 8 00

19. Nehatarang—by Raoraja Budha Singhji Hada of Bundi A work on rhetorics, edited by Shri Ramprasad Dadheech M. A Lecturer, Hindi Dept. Jaswant College, Jodhpur —Rs 4 00

## RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

### B WORKS IN THE PRESS

| | | *Editor* |
|---|---|---|
| 1. | Tripura Bharati Laghustawa by Laghu Pandit | Muni Shri Jinvijayaji |
| 2 | Balshiksha Vyakaran by Sangram Singh | " |
| 3 | Padarth Ratna Manjusha by Krishna Mishra | " |
| 4 | Karnamritaprapa by Someshwar | " |
| 5 | Prakritanand by Raghunath Kavi | " |
| 6 | Shakun-pradeep | " |
| 7. | Hameer Mahakavya of Naya Chandra Soori | " |
| 8 | Ratna paretekshadi of Thakka Pheru | " |
| 9 | Vasant Vilasa Phagu | Shri MC Modi |
| 10. | Chandra Vyakaran by Chandra Gomi | Shri B D Doshi |
| 11 | Swayambhoochhanda | Shri H D Velankar |
| 12. | Nritya Ratna Kosh Pt II by Maharana Kumbhakarna | Prof R C. Parikh & Dr Priyabala Shah |
| 13 | Nandopakhyan | Shri B. J. Sandesara |
| 14 | Vrittajatisamuchchaya by Kavi Virahanka | Shri H D. Velankar |
| 15 | Kavi Darpan | " |
| 16 | Kavi Kaustubha by Kavi Raghunath Manohar | Shri M N. ori |
| 17 | Gora Badal Padmini Chaupai by Kavi Hemratan | Shri Udai Singh Bhatnagar |
| 18 | Indra Prastha Prarbandh | Dr Dashratha Sharma |
| 19 | Vasavdatta of Subandhu | Dr Jaideva Mohan al Shukla |
| 20 | Ghatkharparadi Panchalaghu Kavyani | Pt. Amrit Lal Mohan Lal |
| 21 | Bhuvan deepak of Yavnacharya | Pt Purshottam Bhatt |
| 22 | Rajasthan Men Sanskirt Sahitya Ki Khoj by Dr Bhandarkar | Translation in Hindi by Shri Brahma Dutt Trivedi |
| 23 | Munhata Nensi ri Khyat Pt II | Shri Badri Prasad Sakaria |
| 24 | Rathore Vanshri Vigat | Muni Shri Jinvijayaji |
| 25 | Puratattva Samshodhan Ka Itihasa | " |

| | |
|---|---|
| 26 Sooraj Prakash Pt II | Shri Sitaram Lalas |
| 27 Rathodan Ri Vanshawali | Muni Shri Jinvijayaji |
| 28. Rajasthani Bhasha Sahitya Grantha Suchi | Muni Shri Jinvijayaji |
| 29 Mira Brihat Padawali, complited by Late Pt Hari Narayanji Purohit Vidya Bhooshan | Padmashri Muni Jinvijayaji |
| 30 Rajasthani Sahitya Samgrah Pt III | Shri L N Goswami |
| 31. Sthulibhadra Kakadi | Dr A R Jajodia |
| 32 Matsya Pradesh Ki Hindi Ko Den, | Dr Moti Lal Gupta, M.A Ph D. |
| 33 Rukmini Harana by Sayanji Jhoola | P L Manariya M.A , |
| 34 Vrittamuktawali by Shri Krishna Bhatt | Bhatt Shri Mathuranathji |
| 35 Agamrahasya | Shri G D. Dwivedi |

# SOME COMMENTS

**1—Kanadhade Prabandha**—by Mahakavi Padmanabha, ed by Prof K B. Vyas M. A , Elphinstone College, Bombay

We are indeed grateful to the Rajasthan Puratattva Mandir for giving to the interested world this beautiful edition of a very fine work which should be known all over India

SUNITI KUMAR CHATTERJI
*M A, D Litt*
*Chairman,*
Govt of India Sanskrit Commission

★

**2—Rajavinoda Mahakavyam**—by Udairaj, ed by Shri Gopalnarayan Bahura, M. A , Dy Director, Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur.

The series of important rare Sanskrit and Prakrit texts called the Rajasthan Puratan Granthamala started by Muniji under his General-Editorship is doing valuable service to Indology With his characteristic vision and historical insight Muniji has selected for this series some rare texts of great historical, literary and cultural value These texts in Sanskrit will facilitate the search for similar texts...The manuscript of the Rajavinoda Kavya in praise of Mahamud Begda was acquired by Dr. Buhler in 1857 for the Govt of Bombay

Muni Jinvijayaji was the first to realise the importance of the poem and make arrangements for its editing and publication in the series of the Rajasthan O. R Institute Accordingly he entrusted the work of editing this poem to Shri Gopalnarayan and I am happy to find that this learned editor has spared no pains in giving us an edition worthy of the series in which it appears.. I have to convey my hearty congratulations to Muni Jinvijayaji upon the wise planning of his scheme of Rajasthan Puratana Granthamala and its successful execution by entrusting different works in it to competent scholars like Shri Gopalnarayan, who also deserves the best thanks of all lovers of Indian

History and Sanskrit by making available to them a new text, hitherto unknown and unpublished.

Annuals of the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona Vol XXXVII, 1957 — P K GODE, *M A., D Litt.*

★

3—Ishwarvilasa Mahakavyam—by Kavikalanidhi Krishna Bhatt, ed by Shri Mathuranatha Bhatt, Sahityacharya, Jaipur.

The publication of an 18th century poem of Krishna Bhatt, a Jaipur-court bard, brings out interesting fact that the 'Ashvamedha Yajna' was organised by rulers to assert their supremacy over neighbouring princes as late as 200 years ago.

Bhatt in his book 'Ishwarvilasa Kavya' describes the 'Ashvamedha Yajna' performed by his friend and master Raja Ishwari Singh some time after he ascended the Amber gaddi in 1743 on the death of his father Sawai Jai Singh II, who founded Jaipur.

Bhatt himself attended the Yajna Besides describing the 'Yajna' in detail, he names the persons who witnessed the cermony.

7th November 1959 — TIMES OF INDIA

*

4—Classified List of Manuscripts Pt. II—ed by Shri G N Bahura M A Dy Director Rajasthan Oriental Research Inst Jodhpur.

A All students in Indology will be glad to consult this excellent catalogue, containing many rare and precious Sanskrit works.

Director Indian Institute, Paris 16th Feb 1960 — LOUIS RENOU

*

B It is evident from the list that the Institute possesses a rich collection of Sanskrit Manuscripts on almost all subjects and branches of learning cultivated in ancient India, and also a large number of Prakrit, Rajasthani, Old Gujarati and Hindi manuscripts, and these lists will undoubtedly prove to be important tools of research to scholars doing textual work in Sanskrit and derived languages

Journal of The Oriental Institute, Baroda December 1960 — B. J SANDESARA

C. The catalogue adds to our knowledge of the manuscript material still existing in the Indian libraries

IsMEO
Via Merulana
248 Rome

Giuseppe Tucci
East and West
June-September, 1961

*

D. Die Rajasthan Puratna Granthamala, welche im Auftrag der Regierung von Rajasthan Werke in Sanskrit, Prakrit, Alt-Rajasthani, Gujarati und Hindi herausgibt, ist in Europe bisher wenig bekannat Sie hat jedoch bereits eine grobe Reihe schoner Veroffentlichungen herousgebracht, darunter manche bisher unbakannte Werke Der vorliegende Band enthalt ein Handschriftenverzeichnis Der erate Teil dieses Verzeichnisses behandelte die bis 1956 erworbenen Handschriften Der vorliegende zweite Teil verzeichnet die Neuerwerbungen von April 1956 bis Marz 1958, zusammen mehr als 4000 Nummern. Angegeben sind in hergebrachter Weise Tital, Verfasser, Datum und Beatterzahl der Handschrift und, wenn notig, sind kurze Bemerkungen beigefugt Im ersten Anhang sind Anfang und Schlub einer Anzahl wichtigerer Handschriften wiedergeben Der zweite Anhang enthalt ein alphabetisches Verzeichnis der Verfassernamen Ein dritter Anhang bringt ein Verzeichnis der ehemaligen Palastbiblithek von Indra-gardh, die nunmehr unter die Obhut des Oriental Research Institute in Jodhpur gestellt ist Druck und Ausstattung des Bandes sind sehr gut Von einigen besonders wertvollen Handschriften sind einzelne Blatter abgebildet

Journal of the Institute of Indology,
University of Vienna

E. FRAUWALLNER

*

" I appreciate them very much, for their being at rue enrichment to any library specialised in the Orientalistic field "

Prisident IsMEO (Oriental Institute)
Rome (Italy)

Prof TUCCI

*

" I am very glad to know that the Institute is so actively engaged in editing the unpublished manuscripts of Rajasthan in Sanskrit and other languages This is a valuable contribution to Sanskrit studies "

Indian Institute University of Oxford
26 July 1961

Prof. T BURROW

5—Dasakanthvadham, by M M Pandit Durgaprasad Dwivedi, edited by Shri Gangadhar Dwivedi

"The author of the work under review has depicted the life of Rama from the spiritual point of view in his work called Dasakanthvadham on the lines of Yogavasistha, a well-known extensive philosophical treatise on Advaita Vedanta The author is a gifted poet of a very high order The treatment of the theme especially in the first chapter is highly elaborate and the descriptions abound in rich poetical imagery of high aesthetic value"

Journal of the Oriental Institute Baroda
Vol X No 3, March 1961

H C METHA

*

६—श्रीभुवनेश्वरीमहास्तोत्रम्—पृथ्वीधराचार्यविरचित, कविपद्मनाभकृत भाष्यसहित, सम्पादक श्रीगोपालनारायण बहुरा एम ए, उपसञ्चालक राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर।

क "मूल स्तोत्र की प्रबोधिनी टीका और पाद-टिप्पणियो मे जो अनेकानेक पाठान्तर दिये गये हैं, उनसे इस प्रकाशन की उपयोगिता तथा महत्त्व बढ गया है।

२६ जून, १६६१

महाराजकुमार डा० रघुवीरसिंह
एम ए, एल एल बी, डी. लिट् एम पी
सीतामऊ

ख "इस स्तोत्र मे भुवनेश्वरी के स्वरूप, ध्यान और मत्रो का सम्यक् रूप से विवेचन है। साथ ही अन्य १२ स्तोत्रो के द्वारा भुवनेश्वरी के माहात्म्य की पर्याप्त सामग्री एकत्र की गई है। यथासभव उपासनासम्बन्धी कई ज्ञातव्य विषय दिए गए हैं। प्रारभ मे 'प्रास्ताविक परिचय' नाम से श्रीगोपालनारायण बहुरा ने विद्वत्तापूर्ण भूमिका लिखी है। उससे इस स्तोत्र तथा इसके विषय को समझने मे बडी सहायता मिलती है।

ता० २० अक्टूबर, १६६१

—दैनिक हिन्दुस्तान, नई दिल्ली

७—राजस्थानी साहित्य सग्रह—

भाग १ सम्पादक श्रीनरोत्तमदास स्वामी, एम ए

भाग २ सम्पादक श्रीपुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम ए., साहित्य-रत्न।

"..... साहित्य और भाषा की दृष्टि से ही नही, इतिहास-सम्बन्धी भी बहुत

अधिक सामग्री उक्त वार्ता-साहित्य मे प्राप्य है। तत्कालीन आचार-विचार, रहन-सहन, धार्मिक भावनाओ और अध विश्वासो आदि की ठीक-ठीक जानकारी प्राप्त करने के लिये इस प्रकार के गद्य साहित्य का गहरा अध्ययन सर्वथा अनिवार्य हो जाता है।.. ..पाद-टिप्पणियो मे दिये गये पाठान्तरो और साथ ही आवश्यक शब्दार्थो से इस सस्करण का विशेष महत्त्व हो गया है। इन दोनो भागो मे दी गई भूमिकाये भी उपयोगी और विचार-प्रेरक हैं।

ता० २९ जून, १९६१

**८—स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण-ग्रंथसग्रह-सूची**—सम्पादक श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम.ए और श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी दीक्षित।

स्वर्गीय पुरोहित हरिनारायणजी स्वय ही एक सजीव सस्था थे। उन्होंने एकाकी जो काम किया, वह अनेकानेक सस्थाओ के मिल कर काम करने पर भी उतनी पूर्णता और तत्परता से किया जाना कठिन ही होता। अत उनके निजी पुस्तकालय के राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान को सौंपे जाने से वस्तुत एक बडी सास्कृतिक निधि की सुरक्षा हो गई है, जिसके लिये राजस्थान ही नही भारत का समूचा शिक्षित समाज पुरोहितजी के सुपुत्र श्रीरामगोपालजी का सदैव अनुगृहीत रहेगा। अत ऐसे महत्त्व के पुस्तक-सग्रह की यह पुस्तक-सूची अवश्य ही विद्वानो, सशोधको आदि सब ही के लिये बहुत ही उपयोगी होने वाली है। प्रतिष्ठान का यह प्रकाशन सग्रहणीय है।

ता० २९ जून, १९६१

**९—सूरजप्रकाश भाग १**—कविया करणीदानजीकृत, सम्पादक श्रीसीताराम लालस।

साहित्य-प्रेमियो के साथ ही इतिहासकारो के लिये कविया करणीदानकृत "सूरजप्रकास" का विशेष महत्त्व है। मारवाड के इतिहास के प्रमुख आधार-ग्रथ के रूप मे इस ग्रथ का अध्ययन किया जाता है। अत उसको प्रकाशित करने का आयोजन कर प्रतिष्ठान ने एक बडी कमी को पूरा किया है।

ता० २९ जून, १९६१

महाराजकुमार डॉ० रघुबीरसिंह
एम ए, एल एल. बी, डी लिट्, एम पी.

—+—